

بلددوم : سِللم چشتب

حربية الأصمار

مصنّف مفتی غلام سرر لا ہوئی

رمورتيب. بزار بتراقبال خموروي

مكنية نبولير- كيج بخش وط المو

| خزينة الاصفياء | نام کتاب |
|--------------------------------------|--------------------|
| مفتی غلام سرورلا بوری رحمة الله علیه | نام بولّف |
| بیرنداده ا قبال احدت روقی | مترجم |
| سندكره خانواره چثبته | موصفوع |
| | مخزن |
| المات | تال ماليف |
| فارسی المعالم | سال لمباعث |
| 2001 | سالِ طباعت ترجمه _ |
| كميا ئن پركسي لا بور | طابع |
| كتند نبويه كنج تخبيش رو دلا مكو | ناشر |
| r9r | صفحات |
| IAXY" | 1/2 |
| | |
| _ 135 روپ | قیمت کتابت |
| يهدرى محدد بيركا بلوائه صوم كنج لابر | نابت |

. 1

فهرست مضائين

| صفح | مًا م مضمول | نمرثفار | صفح | نام مضمول | نبرثار |
|-----|--------------------------|---------|-----|-------------------------|--------|
| 34 | صرت فوا جا حرشتي الم | 14 | 11 | اسمائے گای چیشت اولیائے | 1 |
| 00 | حرت شاه محود سنجال | 10 | 11 | حفرت حس لجرئ | + |
| ۵۵ | صرت ماجی شراعیت | 14 | 10 | صرت عبدالوا مدين زيرا | ٣ |
| 04 | مضرت فواج فقال مادفية | 14 | ۲. | صرت فواح ففيل عياض | 4 |
| 41 | صرت نوام ميل لدين سي خري | 10 | ۲۳ | حضرت سطال اياسم ادسم | ٥ |
| -24 | صرت تطب لدين بخبتيارة | 19 | ٣٢ | حفرت فذلفيته المرعشي | 4 |
| 9. | صرت شاهم الدين المشن | 4- | 44 | حفرت فاجربيرة البصري | 4 |
| 94 | מות ביש בעול וגים הקנטי | 11 | ٣٣ | صرت فاج علود منيورك | ٨ |
| 1-1 | صر تعدد كساد في | 44 | ٣2 | حضرت الداسحاق شامية | 9 |
| 1.4 | صرت فيزالدين فيتيا | ۲۳ | ٣9 | حزت الداحر حثيتي الم | 1- |
| 1-1 | वं वही क्रेक्टर पंदर हो। | 44 | ۴۲ | حضرت الوحدث تي | . 11 |
| 1.0 | صرت فيخ عبدالدين فزنى | ro | 44 | صرت الولوسف يتيتىرا | 11 |
| 1.0 | صرت شيخ جمال بالسوا | 74 | 49 | שון בי מנפ ברים בין | 17, |

| صفح | نام مفتمول | نيرثمار | مفحر | فام مضمول | نمرشار |
|-----|-------------------------------|-----------|------|--|--------------|
| 144 | حزت شخ شرف الدين دعي قلندار | P/L | 1.4 | حرت شخ احر نبرواني | 44 |
| 140 | حزت عاج نظام الدين مداوني | | 1-1 | صرت شيخ فرمد الدين كني شكرا | YA |
| 191 | صرت فاجام رضرة | 49 | 114 | صرت شخ نجب الدين توكل | 14 |
| 191 | حضرت مولاتا مويدا لدين | 0. | 141 | حضرت شخ نظام الدين الوالمويد | p. |
| 199 | حفرت وجهير الدين لوسف | 01 | IMM | حضرت شيخ حميدالدين صوفي ال | |
| ۲ | حضرت فواجهامام حيثتي" | 24 | 164 | مضرت قاصى عميدا لدين ماكوري | ٣٢ |
| ۲ | حزت صام الدين لماتي | 04 | 101 | حزت محرصا برحشتي ا | |
| 4-4 | حفرت فواج فخ الدين روزك | 00 | 101 | صرت يخ دا دُريا كئ | 10 10 10 |
| 1-m | वर्ट न्यूटि अपर में रे | 1 | 101 | حضرت عبدالعزيز فالوك | DE TRANSPORT |
| 4.4 | مصرت مولانا صنيارا لدين البية | | 101 | حفرت سيدام على تاحق رم | The second |
| 1.4 | صرت شخ بربال الدين فرية | 04 | 101 | صرت يخ بربال الدين محود | W4 |
| 1.0 | حزت ينخ صام الدين سوفعة" | DA | 104 | THE STATE OF | 1 |
| 1.4 | حزت عربة الدين صوفي ال | 1 3 6 | 109 | 0.00.00 | |
| Y14 | | 5 7 1 2 3 | 141 | حفرت فعاج متحف كدين حشيتي ال | 100 |
| 414 | | 4.38 | 144 | صرت سيد محد كرما في ١١ | MI |
| +11 | صرت شيخ دانيال شيتي الم | 1 | 145 | | 175 |
| 414 | حضرت ولانافخرالدين زرائي | 71 | 144 | حرت شخ مم الدين باني تي | 44 |
| 110 | صرت ضياء الدير بخشبي | 40 | 149 | صرت قاصى محى الدين كاشافي | 44 |
| 414 | حضرت فرمالدين ماگوري | 40 | 14. | صرت فواج علاؤ الدين في ١١ | 40 |
| MIA | صرت يشخ كمال الدين علامة | 74 | 141 | معزت قاجمن الدين شيق | 44 |

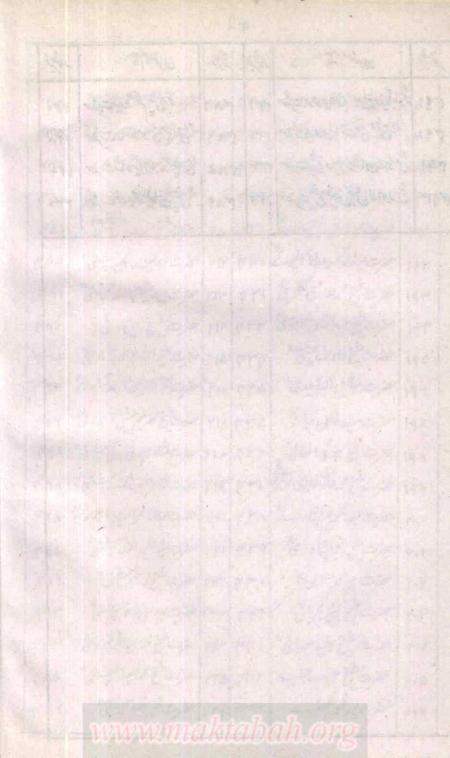
| صفحر | نام مضمون | نبرشار | صفح | ناً مفتمول | نمرثفار |
|------|--|--|---|----------------------------|---|
| 446 | · 图14.10 (中国) 经产品的产品的公司 | 10 CH E | PPEA | صرت في الدين واغ دبلي ا | 100000000000000000000000000000000000000 |
| 444 | صرت شيخ فتح الله اودسي | M 1841 THE 7 ST | MC20 G-4. | صرت افي سراج الدين بداوي | 44 |
| 144 | AND AND DESCRIPTION OF THE PARTY OF THE PART | 1 B 2025 THE 125-AC | ALC: UNKNOWN | | 49 |
| 444 | حفرت سيد محد كميودرا زا | 9- | 119 | معزت قطي لدين منورا | 4- |
| 141 | حضرت محدمتو كل منتورئ | W 65 TO THE S. | THE REAL PROPERTY. | حضرت خواج معيل لدين خورد | - 41 |
| 144 | * ** | A COLUMN TWO IS NOT THE OWNER. | 10000 | طفرت علاؤ الدين فيكية | 44 |
| 144 | THE CONTRACTOR OF THE PARTY OF | | | حضرت سراج الدين يتي الم | 44. |
| PEA | صرت شخ سترفال كمصيتي | Mark House | | صرت جلال لدين في في بتي ال | 123-31111-1 |
| 14. | حفرت شخ قوام الدين شيئ | | | صرت شيخ حميد قلندار | DELIZED STORY |
| TAI | حزت شخ سارنگ حشتی | | | حزت سيدمحد بن ميارك | 1. |
| MAR | حفرت قاضى شهاب الدين | | | حزت يوست حيثي ال | 44 |
| 100 | حفرت مرسيد بداللدهيتي ال | 95 5 50 | | حرت تاج الدين شرسوارا | TO SHAPE IN |
| PAY | حضرت شيخ فورالدين قطب المرا | | | صرت شيخ عيد المقتدرة | |
| MAA | حضرت شيخ شبلي ياني تيئ | F-178-778-7 | 100000000000000000000000000000000000000 | حرت في علادالدين شكالي | 31-1-1311-123 |
| 119 | حضرت علا وُالدبن قريشي ال | 35.5 | | حضرت صام الدين فتي ورك | 10000-1-19 |
| 19- | حفرت بهرام حشتيدا | Company of the Compan | AND THE RESERVE | حزرت قامنى ساوى ا | |
| 191 | حفزت كبيرجينتي الم | 1-10 | 10- | حضرت سدا للدكسيد والأ | 44 |
| 191 | حضرت الوالفة عونبورئ | 1-1 | 401 | صرت يدافرن جالكرماك | 1 |
| 494 | حفرت شيخ عارف حيثي الم | 1.0 | 747 | صرت افتيارالدين عمرايري | 10 |
| 490 | صرت الوالفتح قريشي الم | 1-4 | 744 | व्यं च्या विषित्र के विष्ट | 44 |

| صرت شيخ بيارا من ١٩٩ من ١٢٨ صرت شيخ محد سي شيخ بيارا من ١٩٩ من ١٢٨ صرت شيخ محد القدير لكوم من ١٩٩ من ١٢٨ صرت شيخ محد القدير لكوم من ١٩٩ من ١٢٨ صرت شيخ محد القدير القرير أي من ١٣٨ صرت شيخ معد القدير القير الي من العلم من الدين ما من الدين من الدين من العلم من الدين من الدين أو ١٣٠ من ١٣٠ صرت من الدين أو الد | برشمار |
|---|--------|
| صرت شمس الدين طام رُرِّ ١٩٩ من الدين الله يرافي بي الما الدين الله يودي الما الله الله الله الله الله الله الله | |
| صفرت شمس الدين طائر آل ٢٩٩ حفرت عبد الكبير بالله بيرياني بي السه الدين جنبوري المسلم الدين جنبوري المسلم الدين جنبوري المسلم الدين جنبوري المسلم حفرت شاه كاكو كلا بهوري المسلم الله الله الله الله الله الله الله ال | 1-4 |
| حضرت جلال الدين تجراتي ١٣٠ س. ١٣٠ حضرت بباء الدين جنيودي السهم الدين جنيودي ١٣٠ س. ١٣٠ حضرت خالو كوالياري جودي ١٣٠ هم ١٣١ حضرت خالو كوالياري جودين ١٣٠ هم ١٣٠ حضرت من الدين الميودي ١٣٠ س. ١٣٠ حضرت بعلاق الدين قريش ١٣٠ هم ١٣٠ حضرت بعد ملال الدين قريش ١٣٠ ١٣٠ حضرت بيد ملطان المرايي مم ١٣٠ حضرت بيد ملطان المرايي المراي ١٣٠ ١٣٠ حضرت بيد ملطان المرايي ١٣٠ مم ١٣٠ حضرت بيد على قوام ١٣٠ حضرت بيد على قوام ١٣٠ من من بيد على قوام ١٣٠ حضرت بيد على قوام ١٣٠٠ حضرت بيد على قوام ١٣٠ من بيد على من بيد على قوام ١٣٠ من بيد على قوام ١٣٠ من بيد على من ب | 1.4 |
| صرت شاه كاكو لا بهوري السب ۱۳۱ صرت خالو كوالياري المهدي ا | 1-9 |
| صرت ما الدين المكيودي م. ١٣٢ مرت شيخ علادًالدين جوسني المهم المهم من الدين الميودي المهم | 11. |
| صرت سعالدین خیر آبادی می ۳۰۰ سه ۱۳۳ صرت ملال الدین قرایشی مهم ۳۰۰ صرت ملال الدین قرایشی مهم ۳۴۰ صرت میدسلطان فهرایجی ۲ مهم ۳۴۵ صفرت میدهای قدام ۲ مهم ۳۲۵ صفرت میدهای قدام ۲ مهم ۳۲۵ صفرت میدهای قدام ۲ مهم ۳۲۵ صفرت میدهای قدام ۲ مهم ۲ مسلطان فیرام ۲ می مهم ۲ می | 111 |
| صرت شاه میا نجه ۱۳۸ سرت بدسطان برایجی اسم ۱۳۸ صرت بدسطان برایجی اسم ۱۳۸ صرت بدسطان برایجی اسم ۱۳۸ صرت بدعی قدام اسم ۱۳۸ صرت بدعی قدام اسم ۱۳۸ سرت بدعی اسم ۱۳۸ سرت بدار اسم ۱۳ | 111 |
| حفرت بيدهد بن صفر كي الله ١٣٥ حفرت بيدعلى قوام الما ما | 111 |
| | 111 |
| 1) | 110 |
| صرت سيد محد فلا و" ١١٦ ١٣١ حفرت عبد المرزاق جبنجانة ١٣٦ | 114 |
| ا حضرت منيد صارك ١٣١ م ١٣١ حضرت شيخ يوسف حيثى ١٣٠ | 114 |
| ا صرت حين لاگورئ ١٣٨ م١١ صرت شخامان باني يتي ١٣٨ مم | 111 |
| صرت راجي حامد شائ ١٣٩ ١٣٩ صرت شيخ جمزه دم رسور الم | 119 |
| صرت شيخ حس طامراه . ١٨٠ مرت صام الدين شكة ٢ ٢٥٠ | 11. |
| حضرت فيخ بختيار حشيق ا ١٣١ من ا ا ا حضرت ميرسد عبدالاول حثيق ا ١٣١ من ا | 141 |
| 2 | 144 |
| 21 10 11 20 11 20 12 12 12 | 114 |
| ا حضرت البرداد جونبوري الم ١٣١١ حضرت شيخ على متنقرم ١٣٨١ | itr |
| ا صرت فيخ احرم فيباني ١٦ ١٣٥ صرت فيخ اومن ونبول في ١٣١٠ | 140 |
| ا عفرت شاه سيدوً ١٣٣١ ١٣١١ صفرت شيخ اسليم شيق ١٨١١ ١ | 144 |

| صفحہ | نام مفنمون | نبرخار | صغر | نام مضمول | نبرثغار |
|------|------------------------------|--------|-----|-----------------------------|---------|
| 494 | حزت شخ سيدجيون | 1000 | | حفرت شيخ حمل محد" | الد |
| 490 | معزت شاه لغمال حيثي | | | حضرت شخ تقى حاكمات | 164 |
| 494 | حضرت فاجي اولس وتوزئ | 149 | 244 | صرت سيخ طا بر كواتي ١٠ | 164 |
| 499 | حضرت افوندسوير شورياني" | 14. | 249 | | 10. |
| ٣ | صرت نظاً) الدين ما في يي الم | 141 | 121 | صرت شخ پاراحتی | 101 |
| p-1 | حفرت دعمت شور بالي | 144 | 121 | معزت شيخ جلال لدين تعانميرك | 104 |
| p.+ | حفرت شيخ محدين فضل التأدا | 144 | MO | حفرت شيخ رزق المدر | 100 |
| p. m | حضرت شيخ احد شورياني مو | 125 | ٣٤٩ | حفرت يشخ المحاق حيثى | 100 |
| hal | حفرت فيسليم لا بودي | | | حضرت عمال دنده پرره | 100 |
| 4.0 | حرت ميرسد خدكاليوسية | 144 | 449 | مضرت شيخ وانيال حيثي الم | 104 |
| 4-4 | صرت شاه اعلى بإنى يقية | 144 | ٣. | حفرت فتح المدسنهال | 104 |
| r-9 | مون بالزيد تبك ذي | 141 | TAT | حزت شخ نظام نارفدلي | 101 |
| MIL | صرت واج نظام الدين ملخي | 149 | 124 | حفرت فيخ طا ماحيشتي ال | 109 |
| 414 | حصرت شخ جال الله لا الدالة | 14- | 140 | حزت شخ مطر كاكر وني ا | 14- |
| MIN | صرت سيدعلى فواص ترمذي | INI | 700 | حفرت ينخ كبيرة لا بهر | 141 |
| KIV | صرت يدة مهدي | | | حفرت شيخ ولي حيثتي" | 171 |
| 619 | حفرت فنخ محراعظره | IAM | 146 | حضرت عبداللدالفاري | 141 |
| P4. | حضرت ما جي گلن | INP | MA | صرت افتيادالدين مردات | 140 |
| 744 | حفرت عبد الجليل كصنوى | IND | 449 | مفرت جلال الدين كاسي | 140 |
| 444 | حضرت ماجى عبدالكريم لا بوك | 144 | 292 | صرت سيدمز مل حيثي رم | 144 |

| صفح | نام مضمون | مزينهار | مفح | نام مفتول | نبرخار |
|-----|------------------------------|---------|--------|------------------------------|-------------------------|
| מער | حفرت شيخ محدصد لي حيثي ال | 4-4 | 440 | حفرت درويزه بيتا ورك | 144 |
| LLO | صرت سيخ محددا ودحشيق | 4-4 | 444 | حزت بندكى شيخ الوسيدي | IAA |
| LLE | صرت شاه الإالمعالي" | 4-9 | MAN | صرت شخ الدادد لاذي | 149 |
| ro. | حزت بنخ عبداوليد جالندهري | 71. | 449 | معزت مل محد جاني | 19. |
| 100 | حفرت شخ موند باحشتي | 111 | 449 | صرت مدالرفيد ونورك | |
| 400 | مزت يديران بكرية | 414 | ۳۳. | حضرت يدحركسيو درازكاليوث | 70.0 |
| 411 | حزت بيدعتين الله حيثتي" | 414 | الملم | حفرت شيخ محدصادق كلكوسى | |
| 444 | حزت شخ يي مدني ١١ | | | صرت شخ عبدالغالق لا يوئ | |
| 444 | | | | حفرت ينخ عارف حيثي الم | The same of the same of |
| 444 | حرت نظام الدين وراكم بادئ | | | | THE STORM |
| 444 | صرت شخ عرسليم في لا بودى | 414 | 440 | حزت سيدفان ميانة | |
| 446 | صرت شاه بيول بركي شيتي" | 412 | ٢٣٦ | مفرت شخ بهدگی افغالی و | 194 |
| NYA | صفرت شاه لطف للرحيثي | 119 | مسر | حفرت شخ محد عاد صابرى لا بود | 199- |
| MAN | حضرت مولان فخزالدين لا بو دي | 44. | 224 | حفرت عبدا مريم الثيا وري | 4 |
| 444 | صرت سيدعليم التدحيث ي | 771 | 449 | صرت سنخ بنجولينا ورئ | P.1 |
| 749 | حرت شخ لور فرشتی ۱۱ | 777 | hh. | حضرت بيرغد سلوان | 1.1 |
| 444 | حزت ميعلى شاه پشتى" | 224 | 441 | صرت شخ يحيي كجراتي | 4.4 |
| WAT | صرت شيخ عرسود شرقتودي | 22 | الماما | صرت شخ منيد موباني | 4.4 |
| 640 | حزت شخ محرسيد حيث يا | 110 | par | حزت یخ مبیب مبرے | 1.0 |
| 444 | صرت خرفاه حضتيا | 444 | LLA | حفرت بير محر لكهنوس | 4.4 |

| صفح | نام معنمون | زخار | صفح | نام مضمول | نپشار |
|-----|--------------------------------|------|-----|-------------------------|-------|
| 791 | صرت وادى غلام مصطف وزيراً ادئى | ١٣١ | 714 | صرت تيداعظ حيني رو | 444 |
| 791 | مصرت مولوی مانت علی حیثتی " | 444 | PAY | مفرت ما تظروسي حيثة يما | YYA |
| 44 | حفرت شيخ عاجى بيضال لا ووري | ۲۳۳ | PAL | صرت شاه نیازا حرمیتی | 449 |
| | حضرت شيخ فيف تخش لا موري | | | | |
| | | | | | |



WEST STEEL OF THE PROPERTY OF THE STATE OF T

Verticularly high-recommendation

سلسلة جيث ابل ببشت

تواجر سن لصرى رحمة الدعليد و رضى الدعنه بين البيقطب الاقطاب قدوة المقتقين سراج الطالبين مقدلت المركانية وقبلا البيابية و المركانية وقبلا البيابية و الطالبين مقدلت المركانية وقبلا البيابية والطالبين مقدلت المركانية وقبلا البيابية المركانية والمركانية والمركانية والمحالية والمركانية وال

نواج صن بھری دھ تا اللہ علیہ بڑے کوا مات اور مقا مات کے مالک تھے آپ کے فضائل بے ستار کتا بول میں ملتے ہیں۔ آپ نصیحت اور وعظ کے علاوہ کوئی بات نہ کرنے تھے اور صفور کی سنت برشب وروز عمل کرتے۔ آپ کا جذئہ قلب اتنا زیادہ تھا کہ اگر کوئی گنہ گاریا کوئی فاہر محفل میں حاصر ہوتا تو توج کئے لیغیر نہ دہتا۔ آپ کی والدہ ما جدہ حضرت آم المونین ائم ملمہ رضی اللہ صفح الدہ میں جا کی حالدہ میں اور آپ کے والدہ وسی درجال کی وجہ سے آپ کوحس لولوی آپ مریئے منورہ میں بیدا ہوئے تظاہری حسن وجال کی وجہ سے آپ کوحس لولوی

دموتی، کیتے آپ نے تجارت میں بڑی دولت عاصل کی۔ اور آپ موتیوں اور مروار پیکا کاروبار
کیا کہتے تھے جی دنوں آپ الند کی طوٹ راغب ہوئے تواپنی ساری دولت کینوں غریری
اور فقیروں میں تھتیم کردی بحثی کہ آپ کے پاس ایک دن کی روٹی کاخرج نہ رہا۔ ہب
صفرت امیر المومنین علی کرم الندوجہ ہوئے مقدمت میں عاصر ہوئے اور آپ کا دامن بیکو اکر
کا ملان دفت میں نشامل ہو گئے آپ زمدوریاضت میں اس قدر شفول رہتے تھے۔
کرسات سات دن تک کھا تا متہ کھا تے اس طرح آپ نے انتشار سال با وضورہ کر المندکی
عبادت کی۔

جس دن خاج سی لیمری پیدا ہوئے تو آپ کی دالدہ جھولی ہیں کے حضرا مرا لوئین میں مرضی المتری فارم سے مرضی المتری فارم سی معاضر ہو میں ۔ بچے کو دیکھتے ہی صفرت عرفے فرمایا یستوا خون المنظم المنظم المنظم واللہ میں المؤید اس کا نام حس رکھو یہ تو بہت ہی خولمبورت بچے ہے، آپ شیر خوا رک کی حالت میں اپنی دالدہ سے جو گھر کے کام میں شغول ہو تیں علیارہ ہوتے تو لعض دقات مجوک کی وجہ سے رو سے حضرت ام سلما اپنے پتان مبارک کو بچے کے مذہب لگالتیں تو غیب سے دو دو ھے جو خورت ام سلما اپنے کے مذہبیں شیکتے اور اس طرح صراحی خاموں ہو تو غیب المنظم ہو تا اللہ علیہ سے دو دو ھے جو خورت ایس کے حق میں دعا نے شرکر تیں اور فرما تیں ۔ اللی ہوجا نے حضرت اُم سلما ہما نا جہا تچے کی دعا سے ایس ہی اور خورت حس ام ری میں اس بچے کو مسلما نوں کا در منا بنا نا جہا تچے آپ کی دعا سے ایس ہی اور خورت حس ام ری میں ہو جو اللہ علیہ نے ایک سلم تیں صحابہ کرام کی نہ یا دت کی تھی جی میں سات وہ صحابی تھے جو اللہ علیہ نے ایک سلم نہ کو کرتے رہے ۔

حفرت نواج حن بعرى الجمى بي تقدي بي أمسلم كرهم من الكري المسلم كرد المراكم المراكم المراكم الكرد المراكم المرا

علم اس کے وجود میں سرایت کرگیا ہے بعنور خواج من بھری کو نہایت مجبت کے ساتھ اپنی گود میں اعظاکر بیار کرتے۔

ایک دات خواج من بھری اپنے مکان کی جیت پراللہ کی عبادت میں مشنول تھے
آپ اس قدرروئے کہ انکھوں کا پانی پرنا ہے سے نیچے بہنے لگا۔ گی سے کوئی شخص گردر
دما تھا اُس کے کیڑوں پر قطرے پڑے تو میندا دازسے کہنے لگا۔ اے اللہ کے مبندو
پر یانی پاک ہے یا پلید خواج من بعری نے مبندا وازسے کہا گرا نے کیڑے دھولینا پر
ایک نہایت ہی گنہگاری انکھوں کے النسووں کا پانی ہے یہ

ایک دن فاجرص لیمری نے اپنے الازم کو کہا کہ میرے لئے بازارسے نان او کیلی لاؤ جب وہ نوکر لا یا اورسائے رکھی تو آپ نے فرما یا معافرالٹد گنہ گار نبدے کو ایسالڈیڈ کھانے سے کیا سروکا رہے نوکرنے کہا صفور میں تو آپ کے ارشاد پر نان اور کھیلی لا یا تھا۔ آپ نومزاد گل کا کہ بیں نے لڈیڈ عام کی خواہش کی تھی۔ آپ کو مزاد گل گا کہ بیں نے لڈیڈ عام کی خواہش کی تھی۔

ایک دفعہ تواج سن اجری ایک قاضلے کے ساتھ کے کو جارہ سے تھے یہ قافلہ ایسے

بیابان سے گزر ا جہاں دور دکور تک پانی کا نام دنشان نہ تھالوگ تلاش کرتے

کرتے ایک جگہ پہنچے جہاں کنواں تو تھا مگر رسی اور ڈول نہ تھا۔ بڑی پرلیتانی ہوئی۔

موجے مگے اب کیا کیا جائے ، خواج سن بھری نے کہا تھوڈا سامبر کرو۔ بیں نماز بڑھ

لوں تم پھر پانی پی لینا آپ اُسٹے نماز بیں کھڑے ہوگئے اُدھ کنواں کے پانی میں جوش

ایاا وروہ کناروں تک اچھنے لگا۔ تمام لوگوں نے پانی پی لیا۔ ایک شخص نے لا بیج

کرتے ہوئے پانی سے ایک شکیزہ مھر لیا تو پانی پھر کنویں کی تہ بین چلاگیا۔ خواج سن

مناز سے فارغ ہوئے تو فر ما یا۔ اگر یہ دوست مشکیزہ نہ بھر تا تو کنویں کا پانی کھی

نیجے نہ جاتا۔

نیجے نہ جاتا۔

حرت خاج ص لجرى كالك بمايه تقاج اتش بيستى كرتا تقااس كانام شمعون تقاءايك دفعه وه اليابيار بهواكرموت كيقريب بنج كيا مصرت خواجركواس كى جرون توبياريس كے لئے اس كے كرتشرايف لے كئے -اور فرما يا الے محمول تم نے ساری عرا تش رستی میں گزار دی ہے اب چند کھے زندگی باتی رہ گئی ہے اگر تم الشدكى توحيدا ورحضوركي رسالت كااقرار كرلوتومين بقين دلاتا بهول كردوزخ كي الگ سے مبینے کے محفوظ ہوجاؤ گے۔اس نے کہا بات توسی ہے مگر میں چاہتا ہوں دوزخ سے آزادی کا ایک خط اکھ دیں اور اس برا نے وتخط کر دیں پھر میں کلم والم الله مفرت فواج من لمرى نے الى دقت الي تحريد لكھ دى كما ج تم دوزخ كى آگ سے آزاد موا در بہتت كى نعمت سے مالاومال موشمون اسلام ہے آیا اور وصیت کی کہ بیر قعدمیرے کفن میں رکھ کردنیا یا جائے مرتے کے بعد خرت خواج نے اُسے خواب ہیں دیجیا کہ وہ شاہی تاج سرمید کھے ہوئے اور بہتنی لباس ين بوئ شهل ماب فاجمناس سه مال يوهيا تو كن لكاتب ك خطاكى وجرسے اللہ نے مجھے کخش دیاا دراپنے العامات سے مجھے نوازا ہے۔

سندالاقطائے معنقت نے کھا ہے کہ صرت خواج کی فدمت میں جو وں کی ایک جاعت ما مزجوا کہ تھے۔ آپ اپنیں دین کی تعلیم دیتے تھے۔ صرت خواج کے دوستوں میں قود کھا ایک دن سی کی معلیم دیتے تھے۔ صرت خواج کے دوستوں میں گیا تو دیکھا کم مجد کا دروا زہ اندرسے بند ہے میں نے دروا زہ کی سوراخ سے اندر دیکھا توسا دی مسجد لوگوں سے بھری ہوئی ہے اور صرت خواج دُعا ما نگ دہے میں سب لوگ آئین کم مدہ ہے ہیں۔ میں نے دروا زہ کھٹا کھٹا یا۔ صرت خواج محراب میں اسے اُسے اور مورت حضرت خواج محراب سے اُسے اور دروا زہ کھٹا کھٹا کھٹا کو جو رہے اور دروا زہ کھٹا کھٹا کو جو ایس مون حضرت خواج تہا موج د ہیں۔ اور دوسرے میں آدمی غائب ہیں۔ میں نے صورت حال دریا فت کی تو صرت

www.makiaban.org

خواج نے فرمایا یہ تمام جی تھے جو دینی علم کے لئے میرے پاس آتے ہیں ایا در کھو بیرایک دانے میری زندگی میں کسی کو مذتبانا۔

صرت خواجرص کے پانچ کا مل خلفاء ہوئے ہیں پہلے خواجر عبدالواحدین زید دوسرے این زرین سیرے عبیب عجی جوتھے شیخ عتبہ بن غلام پانچویں شیخ محدواسع رحمۃ النّدعلیہم تھے۔ یہ لوگ صرت خواجری وفات کے بعد کندار شاد پر بیٹے اور مخلف سلسلول میں طریقت کو جادی کرتے دہے بی بی دالجہ بھری دحمۃ النّدعلیہ ابھی خواج سی بھری کے خلفاء میں سے تقییں۔

خواجر سی لجری چہارم ماہ محرم الحرام ایک سوگیارہ ہجری کو قرت ہوئے۔ مخبرالداصلین کے مصنف نے لکھا ہے کہ آپ بروز مجعہ پانچے رجب المرجب ایک مو بارہ ہجری میں فدت ہوئے تھے۔لیکن ہارے نزدیک پہلا قدل ورست ہے بہتاریخ وفات سیرالاقطاب اور مفینہ الاولیا واور تذکرہ گالعاشقین کے معتبر مصنفین نے بھی کھھ سر

تاریخ و فات :ر

خواجه دور زمن آن محن اُحسن حُسن زمیب بهره زبینت دبن مقتدا دمتقی سال وصلش قطب گواعلی بدان سال نجوال سال وصلش قطب گواعلی بدان سال نجوال بهم ولی امجد بهایول با دی ماک علی

کے علادہ آپ کو خواج کمبل بن زیاد سے بھی خرقہ ترک طائفا خواج بدا توا مدہمیشہ روزہ رکھتے اور رات بھر جاگتے۔ تین تین دن کے بعدا فطادی کرتے۔ اُس برجی تین لفتوں سے زیادہ نہ کھاتے تھے۔ آپ کی جبیعت پر تجریدا ور تفریداس قدر خالب تی کہ انہیں جو کچو ملیا اللہ کی راہ میں لٹا ویتے تھے۔ اگر کسی وقت کسی فقر کورو پیر بہید یہ تے ۔ اگر کسی وقت کسی فقر کورو پیر بہید یہ تے ۔ اگر کسی وقت کسی فقر کورو پیر بہید یہ تھے۔ اگر انہ نہ رہنا میصرت عبدالوا مدمر مد بوئے کا اثر نہ رہنا میصرت عبدالوا مدمر مد بوئے سے پہلے چالیس سال مک مجا بدہ اور دیا ضبت میں شغول رہے۔ آپ نے ظاہری علوم بھی صفرت علی کرم اللہ وج بئرسے ماصل کئے تھے۔

فواج عبدالواحد في ايك وفعدا يك غلام خزيدا أس علم دياكه وه رات بحرجاكما رب اورمیری فدمت کرتا رہے۔ دات ہوئی مگر علام فائب عقا صبح آیا توصوت غواج كے با تقريس ايك دويير لاكر ديا ريداليا سكر تقاجس يرباد شاه كى مهركى بجائے مورة اخلاص تھی ہوئی تھی۔ اور ماتھ ہی عرض کی کہ اگر مجھے ہردات میٹی وے دیا كريس تومين بررات آب كواليابى ايك دينارد ياكرون كا غاج عبدالواحدف یہ بات مان لی۔ایک عصت یک وہ لات کے وقت چلاجا تا اور ایک و بنارلا کر دیتا۔ جس ربیورة الاخلاص مع وقد ایک دن صرت خواجر کے پاس ایک شخص آیا اور اس فے تبایا کہ آپ کا بی غلام ات کوسونا بنا تا ہے اور سکوں برکھ مکھتا رستاہے۔ آپ رات کے وقت اسے چیٹی مذویا کریں۔ آپ نے س کر فرمایا کمیں آج رات اس کا امتحان لول گاا ورد مجيول كاكروه كهال جاتا ب اوركياكرتاب رات بورئ غلام حب معمول خواج کے گھرسے نکلاا ور روانہ ہوگیا بنواج بھی اس کے پیچے بیچے علی بڑے حتی کہ وہ شہرسے با ہر حا تکلا حقواری دورایک قبرستان تھا۔غلام نے اپنے کیا ہے اتارديية ادرلوريا كالباس بين ليا-اورالتركي باركاه مين نمازير صفي كموا الوكيا ساری دات صبح مک نما زیر هنار ما فیرکی نماز پیر صفے کے بعد اپنے وونوں ما تھا تعمان

كىطرف أتظاكر كمنے لگا-كرمير بي خواج كى تھيٹى كاحق مجھے عطا فرما - أسى دقت ايك دینار ہوا سے اُٹر تا ہوا زمین برگرا جواس نے اُٹھا لیا اورلیاس بدل کرشہر کی طرف روا نہ ہوگیا بھٹی کرخواجر کی نظرسے غائب ہوگیا۔ خواجر بڑے حیران ہوئے۔ روشنی ہوئی تولوگ سے اپنے شہر کا بتہ بوچھا تو اُنہوں نے بتا یا کدوہ شہرتو بہاں سے دو سال مافت بردُور ہے حضرت خواجر دہیں بیٹھ گئے اور سالادن حیرانی اور بریشانی میں گزار دیا۔ رات ہوئی تومقررہ وقت پرغلام اُسی قبرشان میں حاضر ہواا ورعبادت مین مشغول بهوگیا خارع بهواتو دینار بهواسے گرا اس فے اعظایا اورخواج کی خدمت میں حاضر ہوا عرض کی یہ دو دینا ردوراتوں کائ فدمت ہے بصرت فواج نے کہا عادُ مِن تبين آزاد كرنا بول علام نے زمین سے چند سچھرا تھائے اور خواج كى جولى مي ڈال دینے اور کہا کہ بیمبری آزادی کاصلہ ہے۔ یہ کہد کرروانہ ہوا آ پ بھی اس غلام كے پیچے على بار اور چيد لموں ميں اپنے شہر ميں پہنچ گئے۔ اپنے گركے دروانے كے ياس سنع توغلام نظرت غائب بوگيا يجولى مين مكريزت ويجه توده تيميتي موتى تصانبين بازار بين بيج دياا ورلا كهول دوب كسكر فقرول مي تقييم رديئه و نيا كو هيور دياا در ريات ومجابدہ میں مصردت ہو گئے بعثیٰ کہ کا ملال حق میں شمار ہونے لگے۔ آپ کی تبدیلی کی یہ حالت سيرالا قطاب اوردوسري شهوركم بول ميل يائي جاتى ب

ایک دن تواجر میدالوا حدو عظ فرما رہے تھے۔ آپ نے اعلان کیا جوشخص اپنے مال و دولت سے مائی کی اسے جنت ہیں اسے میں قربان کرد ہے گا۔ اُسے جنت ہیں بڑا بلند درج ملے گا۔ وہ جنت میں ایک بلند محل میں رہے گا اوراُس کے نکاح میں ایک الین درج ملے گا۔ وہ جنت میں ایک بلند محل میں رہے گا اوراُس کے نکاح میں ایک ایسی حوراً کے گی حس کا نام عیں المرفید ہوگا۔ وہ زندگی میں ہی اپنے بہشتی محل کو دیکھ سے گا۔ آپ کا یہ اعلان سی کرایک شخص محلس سے اُسٹا اور کہنے لگا کہ میں اپنا تمام مال ومتاع الشد کے داستے میں قربان کرتا ہوں آپ

نے فرمایا کہ پہلے عمل کرد بھر ہمارے پاس آؤ۔وہ گھر گیاا ورسب کچھ اللہ کی راہ میں گٹا آیا۔واپس آیا توصرت خواجرنے اسے اسم اعظم سکھا یا اوراقسے مراتبے ہیں مبطیا دیا ائس نے دیکھاکدایک بہت ہی دلکش کھلا باغ ہے اُس میں ایک اوسنچا محل نظراتر ہا ہے اس کی انیٹیں مروارید کے موتیوں کی نبی ہوئی ہیں یمل کے صحن میں ایک خولھیوت حور حلوه فرما ہے جس كاحس وجال تقريه و تحريبين نبين اسكتا وه تخف د يكھتے ہى اس بدندا ہوگیا۔ آگے بڑھا اس حور پر ہا تھ لگانا چا ہتا تھا عگراس نے کہام جہاری ہول اور تم میرے ستو ہرلیکن ابھی میرے اور تمہارے درمیان کھے فاصلہ باتی ہے بعضینی و بے قراری بنیں ہونی جائے یہ بات سنتے ہی اُس کی استحیس کھل گئیں۔ دیواندوار لوشف لكا واسمل بيندك كاطرح ترشيف لكا حضرت فواجرف اس ترشيق ديجا توفرهايا يبية قرادى اورزرب كيول ب الجي تقور اسا فاصله باتى ب تنسلى ركهو . تمارى مراد لورى ہوجائے گی اہتی دنول کفار کا ایک شکر شہر رجملہ آور ہوا سلمانوں نے سہرے باہر تكل كم كا فرول سے جنگ كى وہ شخص تھي سلمانوں كى فرج ميں جنگ كرنے كے لئے نكلا اور شہید ہوگیا مضرت خواجہ نے اُس کی شہادت کی خررشی بذاتِ خود زنشر لین لائے جنازہ پڑھااور دفن کیاا ورائس کے حق میں دعائے مغفرت کی۔ ایک دل صرت خواج عیدالوا عددریا کے کنارے پہنچے۔ لوگ دریاع بور کرنے کے مع کشتی پرسوار ہورہے تھے۔ ملاح استخص کوسوارکرتا جو اگسے بہلے اجرت فے دیّنابعن غریب لوگ کوایدنه دے سکتے تقے وہ کنارے پر کھڑے ہے۔ حزت نواج نے اُل عملین اور تشکسته دلول کو دیجا تو فرمایا که حکر مذکرو دریا کو میری طرت سے کہو کہ عبدالواحدكها بالمانيا بافي ختك كروك كرم في يارجا ثاب لوكول في اليا بى كبا أسى دقت درياكا پانى كم بوگيا-تمام لوگ درياعبوركرگفة اوركشى سے پہلےبى دوسرے کنارے جا پہنچے

ایک باردرد انتول کی ایک جاعت صفرت خواج عبدالوا حد کی فدمت میں حاضر ہونی اور آتے ہی کہا کہ مہیں حلوہ کھلا ئیں۔ مصرت خواج کے پاس اس وقت کچر نہ تھا اسمان کی طرف مندا کھنا کہ کہنے لگے بیا التّدمیرے مہمان آگئے ہیں۔ اُسی وقت سونے کے مرفر نے مرفوں منگوا کے مرفر نے کھے صفر ورت ہو علوہ منگوا میں زیادہ لالجے نہ کہ یں۔ درولشوں نے چنڈ مرفرے اسمانے علوہ منگوا یا اور بیٹ بھر کرکھا ہیا۔

ایک دن آپ کی فدمت ہیں جید مفلس اورغریب ہوگ ما فرہوئے اور آگر کہنے
گاکہ ہم اہل وعیال والے ہیں بہمارے یاس فرج نہیں ہے آپ بہماری امداد فرائیں
آپ نے فرمایا بہت اچا۔ آج تمہارے گھروں میں وا فررزق پنچے گاتیس کی رکھیں۔ وہ
غریب ہوگ اپنے اپنے گھر پنچے و کھا کہ اُن کی عورتمین فوش و خرم رنگار نگ لذید کھنے
کھار ہی ہیں اور اپنے بچیل کو بھی کھلار ہی ہیں اور دستر فوان ریسونے کی تھیلیاں ٹی ی
ہوئی ہیں۔ انہوں نے بوجیا کہ یہ نعمت کہاں سے آئی کھنے گیں کہ کچے دیر پہلے ایک شخص
آیا۔ اور سہیں بے شار دینا رویتا گیا اور سے کہا کہ برعبد الواحد بن ندید نے بھیے ہیں آئیل
خرچ کر واور کھائے کی چنریں منگوا کر کھاؤ۔

یہ بات یا در کھیں کہ خوا جرعبدا لواحد کے بین کا مل خلفاء تھے۔ ایک خوا جر فضیل بن عیاض دوسر نے اجرابوالفضل بن ردین اور میسر نے خوا جر انسان اسلام جوشنے البخبیب سہروردی کے موسی رحمتہ اللہ علیہم تھے شنے اسمائیل تصری کا سلسلہ جوشنے البخبیب سہروردی کے مرید تھے اور شنے نجم الدین کبری کاسلسلہ بھی خواج البو یعقد ب سوسی سے متاہبے نحواج عبدالواحد نے خواج موسی سے متاہد خواج عبدالواحل عبدالواحل میں عود رضی اللہ عنہم سے خرقہ خواد مسل کیا۔

من عود رضی اللہ عنہم سے خرقہ تبرک حاصل کیا۔

من عود رضی اللہ عنہم میں خرات کے میں عرب کے میں میں حرکت کی اسمال کیا۔

من عور من خواجہ عبدالواحد نہایت ہما رہوگئے۔ آپ کے صبم میں حرکت کی

طاقت بھی مذرہی ۔ ایک دن فادم موجود نہیں تھاجو وضوکر وا آیا۔ دعائی۔ اے اللہ الیا
دقت آگیا ہے کہ نماز کے لئے وضو کرنے کی بھی ہمت نہیں رہی ۔ نجھے کم از کم اتنی صحت
بخش دے کہ بیں وضو کرے نماز تو بڑھ لیا کروں اس کے بعد جو تیرا حکم ہوگا دہ بجب لا قرل گا۔ آپ اسی وقت اسٹے ۔ اپنے یاوُل برکھڑے ہوئے وضوکیا نمازا داکی نماز سے فارغ ہوکر پھر بیما رہوئے اور فوت ہوگئے۔

سیرالاقطاب کے مصنف نے لکھا ہے کہ آپ سائیس ماہ صفر ایک مؤلمتر ہجری میں فرت ہوئے سفین آلاولیاء اورا خبارالاولیا مرکے مصنف نے آپ کی وفات ایک سوستر مکھی۔ ہمارے نزدیک ہی بات معتبرا ورسیح ہے۔ تاریخ وفات

عبدوا عدى زدينارخ البت مال وصل آل شه والا مكان زبدهٔ دين عبدوا عد كن رئت م هم الم عبدوا عد كن بيان زبدهٔ دين عبدوا عد كن رئت م تعرب نواج في لبن عياض رحمة المدعلية وين سے تھے - ابوعلی

اورالوالفیض کنیت تھی کہتے ہیں آپ کے آبا دا جداد کو فدیس رہتے تھے لیکن آپ سے تھے۔الوعلی سے تھے لیکن آپ سے تھے الوعلی سے تھے لیکن آپ سے تھے۔الوعلی سے قدریا نجارا میں پیدا ہوئے فرقہ فلافت فوا جرعبدالوا عدین فریدسے عاصل کیا۔
یشخ المثا کخ ابی عیاض بن مصور بن محرسلی کو فی سے بھی فلافت ملی تھی۔ا نہیں محرب مسلم سے اورا نہیں محرح جربیب علم قرشی سے اورا نہیں حضرت سید نا ابو بجرصدیات رہنی الندعن سے خرقہ فقر ملا تھا۔فواج فضیل مجیشہ روزہ رکھتے اور پانچ دنوں بعدا فطاری کرتے سارے دن میں پانچیونفل اواکہتے اور سرروز قرآن پاک دو بارضتم کرتے۔ تذکرہ الاولیاء ایرالاقطاب اور میرالمتقد میں میں لکھا ہے کہ فواج فضیل جرائی میں ڈاکے ما داکرتے تھے۔علاقے کے بہت سے ڈاکو آپ کے پاس جمع رہتے اور میں داری میں دانے۔

آپ کی نگرانی میں ڈاکے مارتے میا فرول سے لوٹا ہوا مال دمتاع آپ کے پاس لاکر جمع کرتے۔ ایک دن ایک قاتلے پر حملہ کیا۔ قافلے کو گھیرے میں لیا۔ قافلہ والوں کوتیل کرنا چاہتے تھے کہ ایک شخص نے ہیں ایست بڑھی۔

اکے میان لیے دین آمنوااک تُخشَعُ قُلُو مَہم لمذِ کمالله رزم کیا ایمی ان ورگ کے لئے وہ وقت نہیں آیا۔ کمان کے ول التٰرکے سیکانہ اعلیہ

ذكرس كانب اعين

یہ آیت سنتے ہی خاج نفیس نے محوس کیا جیسے آسمان سے بجلی چک کمان کے دل پرگر پڑی ہے۔ قافلے کو دہیں جھجوڑا۔ بیا بان کالاستہ لیا اور زور زور سے رونا شروع کر دیا۔ داستے میں ایک اور تعافیہ طلا انہوں نے نصنیل سے پوچھا کہ اس طرف فیضل ڈاکو تو تہیں ہے جھڑت فیضل نے فرما یا فکر نذکر و فضیل ڈاکو نے تو بہ کر لی ہے پہلے تم اس سے ڈراکر نے تھے اب وہ تم سے ڈرتا ہے یہ بات کہہ کروہ ولی طور پر تم ایع ہوگیا اور جان و دل سے اللہ سے محبت کرنے لگا۔

خواج نفیل می دنوں ڈاکر زنی کرتے تھے تو دونا ہوا مال الگ دکھ لیتے اوراس
ہوتا نظے والوں کا نام کھ لیتے جن دنوں آپ نے تو بہی جہاں کہیں کسی قاضے والے
کے متعلق معلوم ہوا۔ اُس کے پاس جاتے اوراس کا مال والیس دے دیتے اورائے
راضی کرتے ۔ ایک دن ایک الیستخض کے پاس گئے جو بہودی تھا۔ وہ ایٹامال ایس
لینے کے لئے تیار نہ تھا۔ کہنے لگا کہ میرے مال میں تو آتنا خالص سونا تھا کہ بہلے وہ
لائی بھر میں راضی مہوں گا بصرت خواجہ نے تسم کھا کہ کہا کہ اِس مال میں سونا تہیں تھا
بڑی عاجری وانکساری کی۔ دو سری طوف بہودی نے کہا کہ میں نے بھی قسم کھائی ہے
کہ جب تک مجے میراسونا نہ دوگے۔ میں راضی شہیں ہوں گا۔ میرے گھرکے اندر چلے
جاؤ طاقی میں سونے کی بھری ایک تھیلی بڑی ہے آسے اٹھا لاؤا ور مجھ دے دو۔
جاؤ طاقی میں سونے کی بھری ایک تھیلی بڑی ہے آسے اٹھا لاؤا ور مجھ دے دو۔

تاكرميرى تسم لورى ہوجائے بھر ميں تم سے داخى ہوں گا نيوا جائس كے گھريں گئے تھيلى اٹھائى ۔ ائسے لاكر دى جب ائسے كھولاگيا تواس ميں خالص سونا موجو دتھا بيۇى سے مان ہوگيا ہے كہ اب تو نے سچى تو ہى ہے ۔ اس حضوان ہوگيا ہے كہ اب تو نے سچى تو ہى ہے ۔ اس تھيلى ميں ميں سنے دريت بھرى ہوئى تقى - بميں نے تو دات ميں پڑھا تھا كہ نبى آخر زمان كے دين ميں اليسے لوگ بھى ہول كے كہ جيب وہ تو ہم كہ يں گے۔ اگر وہ مٹى بو ہا تھ كھيں كے دين ميں اليسے لوگ بھى ہول كے كہ جيب وہ تو ہم كہ يں گے۔ اگر وہ مٹى بو ہا تھ كھيں كے تو وہ بھى سونا بن گئى ہے ليہ تو وہ كى بركت سے سونا بن گئى ہے ليہ تامي ليقين ركھتا ہوں كہ تم نے سے تو بركى يہ كم كواس بيم دى نے بھى كلمہ بيا ھو ليا اور الشكام مقبول بندہ بن گيا۔

اس واقعہ کے لید صخرت خواج نفیل کو فہ ہیں چلے گئے اور صفرتِ امام عظم کی خدمت میں حاصر ہونے۔ خدمت میں حاصر ہوئی۔ خدمت میں حاصر ہوئے۔ وہاں آپ کو ہہت سے اولیاء اللہ کی زیارت ہوئی۔ وہاں سے لھرے آئے ان کا ارادہ تھا کہ خواج میں لیم می خدمت میں پہنچ کو مزید ہوجا میں۔ مگر اُن و نول خواج میں لیم می وفات پاچکے تھے۔ چانچہ آپ حید الواحد کی خدمت میں آئے اور مرید ہوگئے۔

جی دنوں ہارون الرشید مکہ میں آیا۔ تواپنے وزیر کو لے کر مختف بزرگوں کی
زیارت کے لئے لکل پڑا سب سے پہلے عبد الرزاق منغانی کی خدمت میں حاضر ہوا اور
عرض کی کہ آپ کے ذمہ کچے قرضہ ہو مجھے حکم دیں میں اوا کر دول۔ آپ نے اشارہ کیا
توہارون الرشید نے آپ کا قرضہ اوا کر دیا۔ آس کے بعد ہارون الرشید حضرت بفیان
بن غیز کے پاس گیا اور ان کا قرضہ اوا کر دیا۔ اپنے وزیر کو کہنے لگا ابھی تک میرے
دل میں اولیا وافتہ کو دیکھنے کی خواس ش ہے۔ وزیر ہا دون الرشید کو خوا جرفنیل برجیاف
کی فدمت میں ہے آ یا۔ آپ اس وقت جرہ میں مبیٹے چرائے کی روشنی میں قرآن پڑھ
دہے سے جب کسی کے آنے کی آ وا زشنی۔ جرے کا وروا زہ بند کردیا۔ اور آ وا ذدی
دہے سے جب کسی کے آنے کی آ وا زشنی۔ جرے کا وروا زہ بند کردیا۔ اور آ وا ذدی

کراس اندهیری رات میں کوئ آرہ ہے۔ وزیر نے تبایا کہ امرالمومنین ہارون الرکتید

میں صرت خواج نے دیا بچا دیاا ورج ہے کا دروازہ کھولا ہارون ج ہے اندرا کیا
اور صرت خواج کوڈھو نڈھنے لگا۔ اُس کا ہا تقصرت خواج کے بدلی کولگا تو خواج نے چلاکہ کہا
ہارون تہارے ہاتھ بڑے نہم ہیں۔ یہ تو دوزخ کی آگ کی کھڑی بننے و الے صبیں۔
ہارون الرشیدرو نے لگا اور کہنے لگا کہ صرت مجے نفیجت فرما ہیں آپ نے فرما یا کہ تہا کہ
والدصور کے چیا تھے کوئشش یہ کرو کہ قیامت کے دن اپنے باب اور چیاسے شرمندہ تہ
ہونا پڑے۔ ہادون الرشید نے کہا مجھے اور نصیحت کریں نے وایا اللہ سے ڈرواورا للہ
کی مخلوق بررهم کر و ادب سکھوا ور آپ رسول اور صحابۂ رسول کی عزت کیا کہ وطرون
الرشید نے کہا کہ اگر آپ ہیہ کوئی قرصہ ہے تو حکم کریں ہیں ادا کردوں۔ آپ نے فرما یا تھی۔
وریہ ہوا صرت خواج سے مجما ہوکہ گھر آپ گیا۔

خواج ابوعلى دا ذى فراتے ہيں كرمي تمين سال تك خواج فضيل كى فدرت ہيں دام ميں نے خواج كو كھي سنتے تہيں ديجا اس اس دن ہنے حس دن آپ كے بيلے مبادك على كا وصال ہوا۔ اس بللے كى وفات كى وجربيہ ہوئى كہ وہ خان كھيہ ہيں ذم كى كؤول كے پاس مبطيا ہوا تھا اور ايك تحق نے يہ آيت پڑھى۔ وَضَعَ الكتاب فَ تَرى المجرب مين مشفقين على فيسه ويقولون يا و يكت ما المذا الكتاب ترجر رجن دنوں مجروں كے سامنے نا مراعال دكھا جائے گا۔ وہ كہيں گے۔ الم علما المدن الكتاب كا مال ہوا عال مذمانا الله في الكتاب من المراعال من ملتا الكتاب الكت

خواج نفیل کے بانچ خلفاء تھے۔ پہلے سلطان اہاہم بن ادھم دوسرے سینے محرشراندی تمیسرے خواج دلیاری میں اور پانچوان خواج دلیاری محرشراندی تمیسرے خواج دلیاری

رحمۃ النَّدُعليهم تقے۔ يہ پانچو ل منہور شائع اپنے اپنے وقت کے قطب الاقطاب ورکيّائے روزگار ہوئے ہیں ۔

خواج فضيل سوم ماہ ربيع الاقل عث المجرى بين قوت موت آب كامزار پُرانواد كم منظم بين قبرسنان جنت المعلى بين ہے۔ يہ مقام صرت أم المومنين فديولكرى بضى النّدتعالیٰ عنها کے مزاد کے پاس ہے۔ اگرچ مخرالوصلين کے معنّفت نے آپ كاسال وصال ايك سوجھياسى لكھا ہے گر ہمارے نزديك پيلا قول سيح ہميال قطاب اورسفينة الاولياء كے معنّف سجى اسى قول كومعتر جائة بين

يدل نضيل از دارفاني رفت ربعة رسم مارا لعترار

ماه عالم دال وصال آنجناب بيدالاقطاب <u>دواقف كن شمار</u>

سلطان ابرابيم اوهم رحمته التدعليه وعظام ادر مقتدامان ذوالاحترام مي آپ بیران کبار اولیاء نامدار مثنائخ شار موتے تھے کنیت ابواسحاق تھی۔ آپ کانسب یا نج واسطول سے مفرت میلومنین عمرابن الخطاب رصني التدعمة سع متنا ب سلطان الراسيم بن ادهم بن بليان بن نامري عبدالتدين فليعة نانى صرت عمرابن الخطاب رصى الترعند حضرت ابراسيم فيخرقه نقر وخلاقت فوا حرففيل بن عياض سے يا با-ال كے علاوہ آب كوفوا جرعمران بن موسى بن زيدراعي يشخ متصور سلمي اورخوا جراويس قرني قدس سربم سع بعي خرقه تبرك ملاتها -آپ یا نے و نول لبدا فطار کیا کرتے تھے۔ افطار میں بھی بیٹر کائی استعال کرتے تھے۔ كم سوتة. بيوند شده كيرك بينة شك ياؤل جلة تق حضرت امام اعظم صني المدعد، ى مجانس مين حاحزى دياكرت يحزت امام اعظم آب كوسيدنا وسندنا براسم بن اوهم كهركر بإدكياكرت تق حضرت منيد بغدادى رحمة التدعليه في آب كومفتاح العلوم كہا ہے۔ آپ نے ظا ہرى مطنت كواس نے مجور ويا -كرآپ كے والديزرگوار

كانام ادهم تفاده نارك الدنيا قلندرول كي عالس مي شركت كياكرت عقد بلغ شهر كے باہراكي الياكا شانه بنايا تھا جہال فقراور قلندرسي آياكوتے تقے ايك دن آپ کے اس کا شاند کے سامنے سے بادشاہ بلخ کی سواری گزری اس وقت طوفان بادوباران تفايتهزادي كي محل كايده زوردار بواس ماتواس ماه يكركاچره نظر آیا و تیجیتے ہی اوھے ول رعشق کا تیر جا لگا۔ یہ البیانشانہ تھا کہ اوھم ول و عان سے ما تر دھو میتے . دوسرے ون بادشاہ کے دربار میں جا پہنے۔ اور ملا ھیک روى كے نكاح كامطالبهكروبا - باوشاه كواس مطالب سے براوكه بوا-بدنامى سے بجنے اورقلندر كروهانى عمله سے محفوظ رہنے كے لئے اس نے انكار توند كيا مراكي شرط پش کردی-اوروزیر کے مشورہ سے کہا۔ کر بھارے شاہی خزانہ مین ایک بڑا مروارید ہے جے ہم درتیم کتے ہیں اسے اوھم قلندر کو دکھا کرکہا کہ اگرا پ ایک الیاہی موتی ہے ایکن توسم بیٹی کا نکاح آپ سے کردیں گے۔ورنداپنے اس مطالبہ کوخالی غواسش جانتے ہوئے والس لے لیں . اور دوبارہ ہما رے محل کی طرف رُخ نہ کرنا۔ قلندر في مردواريد كوديكها اورشرط كوقبول كربيا اوراس مردواريدكي تلاش مي حكلول اورسارد ل میں جانکاے۔ ایک عصد کی تگ و دو کے بعدجب وہ مرروا رید شملا۔ تو پریشان ہو کروریا کے کنارے جا پہنچ تاکداپنے آپ کوغرق کرلیں-ادھم کیاس التانی كود مكيدكوا للدتعالي كي رهمت كا درياج ش مين آيا بصرت ضرعليدالسلام أسك بره اب كالاعتركيراا ورورياس هيلائك لكافي سع بيان كالع آپ كے سامنے اليے كياره مرواريدلار كھے-يىمرواريد شاہى خزانے والے مرواريدسے كہيں بات بھى تقے اور عكيدار بھی فود صرت خفر علیالسلام نظروں سے غائب ہو گئے۔ قلندرا دھم بیسارے مروارید ا تھائے باوشاہ کے پاس جا پہنچے اوراس کے سامنے رکھتے ہوئے اسے اوراس کے وزراء كوصران كرديا يادشاه قلندرك ساتقابني بيطى كى شادى كوعار جائت بوئ ومرواريدكى

طرف توج نہیں دی اور کہنے لگاجاؤ۔ ہمارے وزیراعظم سے بات کر کے فیصلہ کرو۔ وزیر نے قلندرسے تمام مروار بدے کراسے وصلے دے کر دربارسے تکال دیا اور کہاا گاآئیدہ بیمطالبہ لے کر دربار کی طرف آئے نظر آئے تو مروا دیتے جاؤ گے۔

اوھم قہردردلیش برجان درولیش کی تصویر بنے۔ حیکل کی طرف روانہ ہوئے۔ ان کے سامنے کوئی چارہ نہیں رہا تھا۔ اتفاق الیا ہوا۔ کہ بادشاہ کی رو کی سکتہ کی ہمایہ ی میں جان ملب ہوگئی اطباءا ورویدعلاج سے مایوس ہوگئے۔ اسے مردہ جان کردفنا دیا گیا۔

تلندرادهم نے اپنی محبوب کی موت کی خرسنی ۔ نو توپ اعظادہ مجی منا زے کے پیچے پیچے روا نہ ہوا۔ د فن کے لیدلوگ واپس آئے تو وہ قبرسے لیا کردونے لگا۔ اکس كى آنكھوں سے سيل اشك روال تھے۔ رات ہوئی۔ توقبرے مگران قبر كی حفاظت كوآپنے ابنول نے قلندر کو قبر کے پاس دیجھا تو بے فکر موکر سو گئے . قلندرا پنی بے قراری کے م خول ننگ اکرانی معشوقه کا اخری دیدار چا متنا خفا - اس نے قبر کو کھو دا - تاکر ایک نظر ویکھے۔نعش کوقبرسے نکالا۔قبر کو بیگردیا۔اورنعش کوا تھا کروہ لسے چل دیا۔اور ا بنے کا شانہ میں لے گیا ۔ مکوٹ کے تختے پرلٹا کوشع روش کی تاکہ اس کے چیرے کو د كيه سكے - اپني معشوقه كود عجمے حاتا اور زار زار روتا جاتا تھا - اسى طرح آ دھى رات بيت كئى اتفاق اليها بهوا كراين الى ايك طبيب اسى رات بلخ ببنيا تفا يطبيب الیی بچیدہ بھار بول میں کمال رکھتا تھا۔ رات کا وقت تھا۔ شہرے وروازے بند د مكيد كرات بسركرن كاكريس تقاءاس قلندرك كاشاني مين روشني ويلي توا وهر أنكلا اندراكرديكهاكرايك فولعبورت نعش تخت برييى ب اورايك شخص ماس بعظے رور ہا ہے۔ اور اپنی بے قراری اور ریانیانی میں ڈویا ہوا ہے طبیب نے اس صورت مال كو ديكها ربرى مهر باني اورلطف سے قريب آيا الا تقريب واغ الها يصورتحال

مل خطر کی .اورنبض د می کر قلندر کو کها . که غم مذکرو . رونا میواد و بیرماه روا بھی تھیک ہو جائے گی۔ بیمری نہیں سکتہ کی بھا دی میں بے ہوش ہے۔ بیکہ کے ایک نشتر تکالا اوراوا کی فصد کا ف ڈالی بنون کے چید قطرے ٹیکے۔ تونعش میں حرکت آئی۔ اوا کی نے أنكهيس كهول دين دوائيس مائيس ديجها- ايك طبيب كوايت پاس بإيااوريدايب نامح م كود مكير كرجيرے كو جيساليا - كہنے لكى - الے ميرے طبيب الے ميرے باب - مجھے يه تناؤر مين كها ن مول وكس حالت مين مهول اور مجي كفن كبول بينا يا كميا سياور پراس مختے برقلندر کے کا شانے میں کیسے آئی ہول طبیب اور قلندر دونوں معذرت كرتے ہوئے آگے بڑھ اور تمام واقعات بیان كرديئے. بادشاه كى بيٹى نے جب ورتحال معدم کہ لی ۔ اور بیجان لیا کہ میری جان کی حفاظت تواس قلندر کی معرفت ہوئی ہے وه قلندرسے نکاح کرنے برداضی ہوگئی طبیب نے نکاح بیدهایا مسے ہوئی تلندرشہر يس گياا ورايك الجياسا مكان كرائے برليا - اپني معشو قد كروم ال سے آيا . اور جہا بيت ارام واسائش سے زندگی سرکرنے لگا۔ نوماہ گزرے توالٹد کی مہریا نی سے خواج سطان ابراہیم بیدا ہوئے۔ وہ شکل وصورت میں اپنی والدہ کے مثا بہد تھے۔ یا بی سال ہوئے۔ توقلندرنے اپنے اس بیٹے کوشا ہی محتب میں داخل کرایا۔ اس مدرسمیں بادشاہ کبھی كبعى اس كمتب بين آياكة نا تفاءا وربحةِ ل كالمتحان لميا تضاءا تفاظًا با دشاه كي نظري ال بيّے ربع بن توبے افتاراس كى مجت اورالفت نے جوش مارا -ائس نے اس بيّے والده كوبرسى تشويش موئ ابنة قلندر فاوندكو كمتب مين جيجا كربي كي خربت وريافت كرے رجب وہ قلندر مدرسه كى طرف آيا تواسے تبايا گياكه بادشاہ بچے كوا مطاكر اپنے شاہی محل میں ہے گیا ہے وہ قلندر ہے افتیار موکرائسی طرح دوڑا دوڑا بادشاہ کے پاس بنها بادشاه نے قلندر کو دیجیتے ہی بہمان لیا اور کہا اے قلندراللہ نے تہیں

عجيب الطاكا ديام جومنظورا ورمقبول خلق مع ميس فيهلى مار ديكما توأس بیارو مجت ہوا اور میں اسے اتھا کر محل میں ہے آیا ہوں۔ قلندر بات مش کرمسکوایا اور کہا یا دشاہ کی محبت کی وجریہ ہے کہ یہ بچیائس کی بیٹی کا فرز ندہے عجراس نے تمام حالات كى تفصيلات بادشاه كوسائى يجب بادشاه كوييمعلوم بواكماس كى اكلوتى بیٹی ابھی تک زندہ ہے توسیدہ شکر بجالایا ۔اور بنہا بت خوشی سے اتھااور پینوشنجری اپنی بیم کون نی دو تول شاہی سواری برسوار مبوکر قلندر کے گھر پہنچے . بیٹی کو دیکھ کر بہت خوش ہوئے۔ بادشاہ نے اپنی بیٹی کے لئے بٹا عالی شان محل بنا یا بچ نکہ بادشاہ كا إِناكُونَى بييًّا منه تفالس نع اعلان كياكه ميرا نواسا سلطان ابراسيم ميرا جانشين اورو بى عهد ہوگا۔ بادشاہ خود النّٰد كى عبادت بين مشغول ہو گيا بسلطان ا براہيم تخت شاہی پر ببیجیاا ورکئی سال مک نہایت عدل وانصات کے ساتھ حکمرانی کرتا رہا۔ دن كولوگول كى صرورتين لورى كرتاا وررات كو الله كى عيادت مين شغول ربتنا تحار ایک رات باد شاہ اپنے شاہی محل میں سویا ہوا تھاکہ بھیت پرکسی کے دوڑنے کی آوا دسانی دی بیدار سواآ وازدی کرهیت پر کون سے جواب آیا کرمیں ایک ماذ بول مبراا ونك كم بوگيا تقاء است فلاش كرر ما بهول مبا دشاه نه كها ارب بيوقوف كحرول كى چېتوں بداونت بھى ملتے ہيں۔ يہ كيسے ہوسكتا ہے كداونط كلركى چيت برآجائے السشخص نے جاب دیا تم تو مجم سے بھی زیادہ بیو قوت ہو کھی حدا بھی شاہی محلات میں ملتا ہے۔ تم ریشی بستری آرام کرتے ہوا ورجا ہتے ہو کہ تمہیں خدا مل جائے۔ یہ

ہم حث اخواہی دسم دنیائے دوں این خیال ست و محال است و حبون اس بات سے سلطان ا ہم اہیم کی دل کی دنیا بدل گئی صبح انتظاا ہے بیٹے کوتخت

نشین کردیا - امدرسلطنت اس کے والے کئے بشہر چھوٹ کرجنگل کی دا ہی جنگل میں بہنچا
تو شاہی لباس اُتادکر ایک گڈلیے کو بخش دیا - اور اس کے پھٹے پرانے کپڑے فود پن
لئے - بلخ کو چھوٹر کر نیشا پور آیا اور بہاٹ کی ایک غاربی عبادت کرنے دگا وہ عمرات
کی دات غار کی چھیت پر آتا - نکوٹ پول کا گھا جمع کہ تا سر بر اُتھا کر شہر میں بہنچا
اور نکرٹ یال بیچ کر جو کچھ حاصل ہوتا اس کا نصف اللہ کی دا ہیں دے دیتا اور
نصف سے اپنی ضرورت کی چیزیں خرید کر ہے آتا - ایک عرصہ بک اس کا یہ کام دہا
دہ غیبی اشارہ سے مکہ معظم بہنچا اور خواج نصنیل بن عیاص کی خدمت میں حاصر ہوکہ
مرید ہوگیا - اور ظاہری و باطنی کمالات حاصل کئے -

می دنو اسلطان ابراہیم نے با دنتاہی تھیو ڈکر دیگل میں قدم رکھا توغیب سے
ایک ہزرگ آئے انہوں نے انہیں اسم اعظم سکھا یا۔اسم اعظم بڑھتے ہی عرکش
سے کے کرفرش بک تمام چیزیں روشن ہوگئیں۔ کچھ دنوں بعد صفرت ضرعالبلام
تشرلیف لائے۔ کہنے گئے اے سلطان وہ میرے بھائی صفرت ابباس تھے جنہوں نے
تہیں اسم اعظم سکھا یا ہے بین خفر ہوں۔ میں تیرادوست بن کردہوں گا۔ حضرت
ابراہیم ادھم نے جاب دیا کہ میں اللہ تعالیٰ کے بغیر کسی دوسرے دوست کی صرورت
موس نہیں کرتا۔ یہ کہ کرھزت خفر علید السلام کورض سے کہ دیا۔

جی دنوں سلطان ابراہیم مکر ایوں کا کھا اٹھائے بازار میں آیا کرتے تھے توبلخ کا ایک امیرا دی تھی وہیں ہی تھا۔ اس نے سلطان ابراہیم کو بہان بیا اور با دشاہی چیوڑ کر ککڑیاں بیخے پر بڑی طامت متروع کر دی حضرت سلطان ابراہیم کوائس کی باتوں پر بڑا غصتہ آیا۔ بیٹے بیٹے کو یوں کے گھے پر باتھ مارا تو وہ ساری سونے کی بن گئیں بسلطان ابراہیم نے یہ سادا سوتا اُس کو بخش دیا۔ اور کہا کہ آج بلخ کی سلطنت کی یاد کی نوست کی وجہ سے میری حلال کی رونہ ی ضائح ہوگئی۔ سلطنت کی یاد کی نوست کی وجہ سے میری حلال کی رونہ ی ضائح ہوگئی۔

ایک بادسلطان ابراہیم بلخ کے داست سے ہوتے ہوئے مکہ کی طون جارہے
ضے فتاہی امراء اورو ذراء کو آپ کی خربوئی انہوں نے آپ کے صاجزادے کو جو
اُس وقت تخت نشین تھا ساتھ لیا اور ما ہر فدمت ہوئے رہ ب نے مل کر در فرات
کی کہ اگر آپ و د بارہ تخت سلطنت پر نشر لیف ہے آئیں تو ہیں بڑی خوشی ہوگی سلطان
ابراہیم نے اپنے بیٹے کو بڑی مجبت کے ساتھ اپنے پہلویس سبھا لیا اور با تیں کرنے
عاشق ہوتے ہیں وہ کی دو سرے کی طوت متوج نہیں ہوتے ۔ یہ بات سُنتے ہیں سلطان
ابراہیم نے رونا سروع کر دیا ۔ اور عرض کی لے الشراجس کی وجہ سے ابراہیم بھیہ
ابراہیم نے رونا سروع کر دیا ۔ اور عرض کی لے الشراجس کی وجہ سے ابراہیم بھیہ
کے مافل ہوگیا ہے اُس کو اعظا ہے ۔ تاکہ تیری مجبت کا رہ شہ نہ ٹوٹے پائے ۔ کہتے ہیں
کوصاحب دار سلطنت ابراہیم کے بلیٹے ہی فوت ہوگیا ۔
کوصاحب دار سلطنت ابراہیم کے بلیٹے ہی فوت ہوگیا ۔

جی د تول سلطان ابراہیم بلخ کی باد شاہی جیو ڈکر بیا بان بیں چلے گئے تو چند دن در با کے کنا دے بر قیام کیا ۔ دہاں امرا داور و زراء ماضر ہوئے اور در فوارت کی کہ آپ دو بارہ تخت نشین ہو جا بئی سلطان ابراہیم اس دقت اپنی گڈاری سی دہتے آپ نے سوئی دریا بیں جینیک دی اور فرما یا کہ تم بڑے طاقتور ماکم ہو۔ دنیا کے سادے اسباب تنام پاس موجو دہیں دریا سے میری سوئی نکال دو کوئی بھی سوئی نہ کال سکا۔ آپ نے بندا واڑے ہیں اکر اے دریا کی مجلیو میری سوئی نکال کہ لا و اُس میں وقت ہزار و ل مجلیاں اپنے مندیں جا ندی کی سوئیاں اٹھائے بانی کی سطیر تری نے گئیں ۔ ایک جھیلی کے مند ہیں صفرت خواجر کی سوئی میں جی تفی آپ نے باقتہ بڑھا کہ اس سے سوئی میں ہوئیاں اٹھائے بانی کی سطیر تری نے گئیں۔ ایک جھیلی کے مند ہیں صفرت خواجر کی سوئی ہی تفی آپ نے باقتہ بڑھا کہ ہاری سطنت تم کی مدورت نہیں ہے۔ بیاں بیہ ہوں کو فیصست کر دیا ۔ امراء کو مخاطب کر کے فرما یا کہ بھاری سطنت تم کی صفرورت نہیں ہے۔

ايك دن سلطان ابراسيم اوهم كو ف الوقليس بريتيط تق اپنے دوستوں كے ساتھ

باتیں کررہے تھے کہنے لگے اللہ کے بندے اگر پیاڈ کو کہر دیں کر بیاں سے پل تو وہ چل بڑتے ہیں۔ یہ بات سنتے ہی بہاڑ میں حرکت ہوئی۔ لیکن آپ نے فرما یا کر ہیں فر متبیل چلنے کو نہیں کہا۔ یہ بات تو میں نے تمثیلاً کہی تھی۔

ایک دن خواج شفیق بلخی سلطان ابراہیم بلخ کی خدمت عاضر ہوئے۔ ایک درولیق جو صاحب کشف و کرا مات تقا وہ بھی مجلس میں مبیطا تھا۔ آپ نے پوچھاتم کزرا دقات کیسے کرتے ہو۔ وہ کہنے لگا کہ اگر مل جائے تو کھا لیتا ہوں ور مت صبر کرتا ہوں۔ آپ نے فرمایا۔ یہ کام ہماری گلی کو چے کے کتے بھی کرتے ہیں۔ ہو تا ایوں چاہئے "اگر مذیلے توصیر کرو۔ اگر مل جائے توالٹد کی داہ میں قربان کردو؛

ایک شخص نے حضرت سلطان ابراہیم آدھم سے پو چیاکہ تم کس کے بندے ہو

اب کا نیا درہے ہوش ہوگئے۔ ہوش ہیں اسے تو یہ آبیت بیٹھی جس کا ترجم
یہ ہے داسمانوں اور زمینوں میں کوئی بھی ایسا نہیں جوالٹڈ کا بندہ نہ ہو) اس
شخص نے کہاکہ آب نے پہلے ہی یہ جواب کیوں نہیں دے دیا فرمایا میں ڈرتا
مقاکم اگر میں اپنے آپ کو اس کا بندہ کہوں تو مجھ سے ایس کی بندگی کا حق ا دا
ہنیں ہوا۔ اگر نہ کہوں تو کا فرہوجا تا ہوں یہ

حفزت خاج ایک دن دریا کے کنارے پہنچے اور پارجانا چاہا ۔ ملاح تے کوایہ مانگا۔ آپ نے دریا کی دبیت کی محقی بھری اور ملاح کی بھبولی میں ڈال دی ملاح نے غورسے دیجی توریت نہیں بھتی وہ سونا تھا۔

صرت سلطان ابراہیم ادھم رحمۃ اللہ علیہ کے دوکا مل خلفاء تھے ایک خواج خدیفۃ المرعثی اور دوسرے خواج شفیق ملجی رحمۃ اللہ علیہ آپ نے جس دن بادشاہی تھپوڑی اس دن سے ایک مگر پر قیام نہیں کیا کئی عبدسے ہوتے ہوئے شام میں صرت لوط علیہ اسلام کے مقرے کے ساتھ ایک بہاڑی فار میں تھی ہوئے۔

سیرالا قطاب میں آپ کی وفات بروز جمعہ اٹھا کیس جا دی الاقل مشکلہ ھجری کھی ہے۔ مخرالواصلین کھی ہے۔ مخرالواصلین کھی ہے۔ مخرالواصلین کھی ہے۔ مخرالواصلین کے معتنف نے آپ کا مدفن ما پاک شام میں ہے۔ وفات کے وقت آپ کی عمر ۱۰ اسال تھی ۔

تاريخ وفات ..

مشيخ ابرا سيم سلطان ولى مشدي الدونيا بفردوس برين ولي من المراس والاسم قطبين من المراس والاسم المراس والمراس والاسم المراس والمراس و

خافاده چنتیک یه مبند قدر محرت تواجه مذافینی المرحتی قدس سره نزیدگ سدیدالدین نقب محرت تواجه مذافین ایراسیما دسم رحمته الندعلیه سے خرقه خلافت بایا تھا فقیم سخے عالم تھے اورعا مل تھے آپ کی تصانیف مبہت منہور میں تیمیس سال یک بلاوج بے وضو نہیں رہے ۔ چھو دنوں لبدا فطاری کرتے تھے ، فرما یا کرتے تھے ، اہل دل کی غذا تو لا البرلا الله محمد رسول الله به بے وظاہری علوم سے فارغ ہوئے تو صفرت ایراسیم ادھم رحمته الله علیه کی مجلس بی توصرت میں الم الله علیه کی مجلس بی

ایک دن صرت خواج المرعثی الله کے خوف سے رورہے تھے۔ ایک خف ایا۔ پوچیا اس قدر گریہ ذاری اوراضطراب کیوں ہے۔ کیاتم الله کورجیم کریم بخفور نہیں پاتے آپ نے فرما یا۔ الله تعالی فرما تا ہے۔ خوبیق فی الجن قہ و حضویق فی المیسر۔ ایک طبقہ جنت میں ہوگا۔ ایک جہنم کی شخیبوں میں دہے گا۔ مجھے یہ

عا ، تفصيل حالات كے لئے تذكرہ الاولىيا بسيرالا قطاب اور نفحات الانس كامطا لعركريں -

حاصر و تے چے ماہ میں تکمیل سلوک میں کا میاب ہوئے۔

معلوم نہیں کہ میں کس طبقہ میں ہوں گا-اس شخص نے کہا-اگرائپ کواپنی عاقبت
کی خبر بھی نہیں تولوگوں سے بعیت کیول لیتے ہو-اس طرح دوسرول کو بھی ندھیر
میں رکھتے ہو۔خواج سن کر نعرہ زن ہوئے اور بے ہوش ہوگئے ہوش میں آئے
توغیب سے آواز آئی۔ مذلیفہ اِسم تمہیں اینادوست رکھتے ہیں-اور برگزیدہ قرار فیتے
ہیں میدال صفر میں اصحاب جنت میں اعظو گے" یہ آواز تمام حاصری محلس نے شنیاس دن تین سو کا فر علقہ اسلام میں آئے اور آئے سے بعیت کی-

ایک دن بزرگان دیر کیج لان چند ہیو قوت صرت خواج مرعشی کی خدمت میں حافر ہوئے اور آپ کے متعلق سخنت گفتگو کرتے گئے صرت خواج نے انہیں وعظو نصیحت کی اللہ کے عذاب سے ڈرایا ۔ مگر انہوں نے صرت خواج کا ہا تھ کپڑا اور کھینچنا نٹروع کر دیا جس سے آپ کو مبہت تکلیفت ہوئی ۔ کہنے مگے اگرتم ولی اللہ ہوتو ہمارے لئے بدد عاکرو نواج کے منہ سے تین بار آہ آہ نکلا۔ اور منہ سے آگ کے شعلے نکلتے دکھائی دیئے وہ تمام کے تمام جل کر داکھ ہوگئے ۔ نغوذ با لندر خفینیب

منکرة العاشقین کے مصنف نے صرت خواجر کی و فات اللے بات کھی ہے مگر معاصب سرالاقطاب نے چوبیس ماہ شوال علائے کہ کھی ہے۔ ہارے نزویک بہلی تاریخ درست ہے تمام تذکرہ نگاروں کا اتفاق ہے کہ آپ صرت ابراہیم ادہم کی و فات کے بعد نوسال تک زندہ رہے۔ دھۃ النّدعلیہم۔

تاریخ وفات

چگشت ازجال سوئے جنت وال دگر دِ ملتش پروین سندعیال سرور اللہ

شهر معتی خوا جُدوجهاں یج تطب عالم بچوسال او معرت خواج بہیرہ لصری فارس سرہ تصابین الدین لقب رکھتے ہے۔ مشائخ عصر مي بلندر تبرا ورعالي مقام ركفته عقه فقريس مبند درجات اور إرفع معت ا حاصل تقارمتره سال كى عمر مين ظا برى علوم سے فارغ بو گئے۔ اورا يك مل وانشور کی چینیت سے مشہور ہوئے . مرروز دو بارختم قرآن فرما یا کرتے تھے مجا بدہ و ریاضت میں بے مثال تھے۔ایک دن المترکی عجبت میں ذارو قطارر و رہے تھے۔ آواندائی بہیرہ بم فے تہیں بخش لیا ہے حصول مقامات کے لئے مذلفند موعشی کے پاس جادات عاجرعتی کی فدمت میں عاضر ہوئے۔ اورم ید تو نے مگرم ید ہونے سے يهداك الميان المال معاضت شاقدين كزارك عجد الك مفته مين سي مقام قريفيب بوكيا-ايك سال بعدخ قه خلافت ملايجس ون سيفلافت ملى شكرا ورنمك كها نا نبدكري لذيد كهانے ترك كرديئے اس قدرروتے كر بيض اوقات عاصري كواندليشہ ہوتاكم آپ فت ہوجا ٹیں گے۔آپ کی ساری زندگی ایک صور حدیس گزری کیجی کسی و نیا دار کے گرنبیں گئے۔ اور منہی دنیا داروں کومنہ لگایا۔

آپ كا وصال محملية تباريخ مفتم ما ه شوال مهوا_

· شُرْجِوا زونیا بفردوکس بری اس بهبره خواحبٔ عالی مکان و مان الدین بود میل مکان و مان الدین بود میل مرادم آمری الدین بود میل میلان مان میلان الدین بود میلان میلا

رحمۃ اللہ علیہ کے قلقاء کے پاس بھی حاضری دیتے تھے۔ ال سے بھی خرقۂ خلافت حاصل کیا تھا۔ آپ کوسلسلہ مورد قی سے بھی اجازت ملی تھی جھرت شیخ معروف کرنی سے چارنسبتوں سے وا سطہ تھا۔

خواجرعلو دینوری فلیفه شخ عبدالله بن خفیف و ه فلیفه شخ محدرویم کے تقے اور و همزت مری تقطی کے فلیفه تقے ۔ وه حفز وه حفرت مبنید لبندادی کے فلیفه تقے ۔ آپ حفرت سری تقطی کے فلیفه تقے ۔ وه حفز معرف معروث کرخی کے فلیفه تقے ۔ وحمۃ الله علیهم المجعین - ان حفرات کے علاوہ بھی آپ معروث کرخی کے فلیفه تقے ۔ رحمۃ الله علیهم المجعین - ان حفرات کے علاوہ بھی آپ نے بہت سے بزرگان دین سے فیض یا یا تقا

خاج علود بنوری ابتدائی ذندگی میں بڑے صاحب تروت و دیا دار تھ بھگ بہ باللہ سے دکاؤ ہوا۔ توسب کچوغ بیول میں تقییم کو دیا۔ اور کعبتہ اللہ کی طرف دوانہ ہوگئے۔ اور فرما یا۔ اے اللہ میں نے اپنے عزیز واقارب کو بترے بیرو کر دیا ہے اب انہیں دزق دینا بیراکام ہے۔ دینورسے دوانہ ہوئے۔ کم معظر بینچے۔ ایک دن دوان سفرایک شخص کو دیکھا کا مربو کھا تا رکھے تیز تیز جا رہا تھا۔ پوچا۔ تم کون ہو۔ دوران سفرایک شخص کو دیکھا کا مربو کھا تا رکھے تیز تیز جا داریا تھا۔ پوچا۔ تم کون ہو۔ اور کہاں جا دوران سفرایک شخص کو دیکھا تا کس کے لئے ہے ، فرمایا۔ میں دجال الغیب سے بول ۔ یہ کھا تا تیرائے کہ مردونہ انہیں کھا تا بینجاؤں۔

جس دن خواج علو دینوری نے خرقہ خلافت بینا۔ خواج بہرہ بھری دعمۃ الدُعلیہ فیا ہے کو فرما یا۔ اے علو ۔ جا وُ ہہا داکام بھی علود اعلیٰ ہوگیا۔ وصنو کر کے ہما رے پاس آؤ۔ وصنو کر کے آئے تو بیرید وشن ضمیر نے آپ کا ہا تھ بکھ اا ور آسمان کی طرف مذکر کے کہا اے اللہ اعمو کو در در لیٹی عطا فرما دے یہ بات سنتے ہی خواج علو بیہوش ہو کہ کہا ہے اللہ اعداد ور شری عطا فرما دے یہ بوش ہو گئے۔ اس طرح چا لیس ہو کر گریٹ سے پیڈون کے بعد ہوت میں آئے بھر بے ہوش ہو گئے۔ اس طرح چا لیس بار بے ہوش ہوئے۔ اس طرح چا لیس

آیا۔ قدموں میں گرگئے۔ فرما یا۔ علوا تہیں اپنے مطلب کا دیدار ہوگیا ہے آپ نے عرض کیا کہ میں تمین سال مجا ہرہ کرتا رہا دیا ضنیس کیں ۔ گرمیر مقام نہ پاسکا۔ آج آپ کی وساطت سے ایک لمحہ میں بہنچ گیا ہوں۔ اور بے پنا ہ دولت ملی ہے۔ خواج ہمیرہ نے اپنا خرقہ بہنا یا۔ اور اپنے مصلی بہ بخفا کرار شا دوسلوک کی اجازت دی۔ مسیرہ نے اپنا خرقہ بہنا یا۔ اور اپنے مصلی بہ بخفا کرار شا دوسلوک کی اجازت دی۔ حفت حضرت خواج علوکی عاوت تھی کراپنی نہ ندگی کے چالیس سالوں میں دن کے وقت کھی کوئی چربنہیں کھائی دات کو کچھ نہ کچھ کھا لیستے تھے۔ بعض نذکرہ نگاروں نے لکھا ہے کہ بینے خواد کی کھی کوئی چربنہیں کھائی دات کو کچھ نہ کچھ کھا لیستے تھے۔ بعض نذکرہ نگاروں نے لکھا ہے کہ بینے خواد کی دو دھ پیا کرتے تھے۔ آپ تو لدے لیے تکے دما نہ میں بھی آپ صرف دات کو دو دھ پیا کرتے تھے۔ آپ تو لدے لیے تکے دما نہ الدّ ہر رہے۔

آپ کی دفات سم ۲۹ بر میں بوئی۔ اوراسی برتمام وقا کے لگارول کا اتفاق ہے۔ یادرہے کہ بزرگان وین کے حالات بیں ایک اور بزرگ خواج بمشادد بزری کا نام نامی بھی ملتا ہے۔ آپ سلسلس میں وردید کے بزرگ تھے۔ اور صرت خواج بمشاد ویجد کے سلسلہ بیں سے تھے۔ لبین تذکرہ نگاروں نے خواج علو دینوری۔ اور خواج بمشاد ویجد کا کوایک ہی بزرگ مکھا ہے ان دونوں نے دونوں خا ندانوں سے فیض یا یا تھا۔ آل لئے بیرت کے واقعہ ہوا ہے۔ دارافتکوہ نے اپنی مشہور کتا ب سفینة الاولی بیں کھا ہے کہ خواج علو دینوری خانوادہ ہوا ہے۔ دارافتکوہ نے اپنی مشہور کتا ب سفینة الاولی بیں کھا خانوادہ ہم وردیہ سے تعلق دھتے تھے شاید دارافتکوہ کی بیتھیق درست ہی ہو۔ گر فانوادہ ہم وردیہ سے تعلق دھتے تھے شاید دارافتکوہ کی بیتھیق درست ہی ہو۔ گر ایک بات سامنے آتی ہے کہ دونوں بزرگوں کی تاریخ وفات ایک ہی ہے لیبی میں ایک بات سامنے آتی ہے کہ دونوں بزرگوں کی تاریخ وفات ایک ہی ہے لیبی میں میں ایک بی شخصیت جان کیا ہو۔

تاریخ وفات،

سینے عالی علو میوری یافت چول ذین جہال مجدم کان

سترعیاں آنچہ ازدل سرور سال ترجیل آن شہرونشاں معفرت الواسی فی شامی فلاس مرفالسامی: بردگوں میں سے تھے بقب مرف السامی: بردگوں میں سے تھے بقب مرف الدین تھا خرفہ فلافت تواج علو دینوری دعم النہ علیہ سے پایا تھا۔ ظاہری اور عالمی علام میں متاز تھے۔ نہدوریا صنت میں بے مثال . فلق سے بے نیاز اور فالق سے ہی ہمراز تھے۔ درولیٹوں سے مجت کرتے اولیا والنہ میں متازمقام رکھتے تھے فقر ارمیں بلندر تبر تھے۔ سات دل کے بعدا فطاد کرتے تھے کہ المعد انجا الفقراء خوع وجو کے دجو کے دورونی استخارہ کیا۔ آخو ہاتف فیری نے آواذدی ۔ اے الواسی فاق اور متاو دینوری کی فدمت میں ہنے یہ سات دال فدمت میں ہے ہی میں مامزی دو۔ آپ خواج دینوری کی فدمت میں ہنے یہ سات سال فدمت میں ہے ہی میں مامزی دو۔ آپ خواج دینوری کی فدمت میں ہنے یہ سات سال فدمت میں ہے ہی میں مامزی دو۔ آپ خواج دینوری کی فدمت میں ہنے یہ سات سال فدمت میں ہے ہی میں مینے دوروں کی خدمت میں ہنے یہ سات سال فدمت میں ہے ہی میں میں ہنے یہ خور فلافت یا یا۔

آپ کی ذات دالاصفات خانواده چئت مین متازیخی آپ تصبیح بیت مین داریخی آپ تصبیح بیت مین در استی بردوش خمیر کی خدمت مین لغداد پنج توصزت خواج نے پیرو وشن خمیر کی خدمت مین لغداد پنج توصزت خواج نے پوج کا امان سے آئے ہو ؟ اور کیا نام ہے ؟ کہا میرانام ابواسحاق چئتی ہے۔ آپ نے فرایا تم اہل حبات کے امام بنو گے۔ خلافت پائی تو پیردستگیرسے دخصت لے کر چئت میں دالیس آئے اور خواج حبیت کے نام سے منہود ہوئے ان ہی دفر احبیت میں اور بھی کئی بزرگان دین قیام فرائے ان میں خواج ابواج اجرا بدال حیثی ۔ خواج ابواج میں اور خواج ابواج می دوجیتی اور خواج حبود وجیتی ابواج میں اور خواج حبود وجیتی کے اسمائے گوامی منہور ہیں جقیقت یہ ہے کہ چارو ل بزرگ دین کے ستون کانے مارید در بخر دلایت کو مینچے۔ مرید در بخر دلایت کو مینچے۔ مرید در بخر دلایت کو مینچے۔

خواجربہ اللہ علیہ ہما اللہ علیہ ہماع سا کرنے تھے جوشخص ایک بار آپ کی محبس معطف مرتباعی گرات سے ہرشخص وجد میں رہتا۔ معطف مرتباعیر گناہ سے دُور رہتا۔ آپ کی مجلس کی برکات سے ہرشخص وجد میں رہتا۔ اگر کوئی مرتفی ایک بارمحبس میں آجاتا توشفا پاتا۔ دنیا کا بچاری آتا تو تارک لدنیا ہوجاتا تھا۔

ایک بارتعط پیٹ گیا۔ بارش کوابک عرصہ ہوا ندیسی۔ بادشاہ وقت اور دوسرے ہزاروں لوگ حضرت خواجہ اسحاق کی خدمت میں آئے اور باران گرت کے لئے دعاطلب کی جفرت خواجہ اسحاق کی خدمت میں آئے وجد میں آئے تو آسمان پریاد لگر آئے۔ اس قدر بارش ہوتی کہ لوگ اس کے رو کنے کی دعا بئی مائے گئے۔ بھر حضرت کی خدمت میں آئے۔ آپ نے فرمایا۔ اگر دل تجر گیا ہے تو بارش دک جائے گ

خواج ابواسحاق تنامی قدس گری چہارد ہم ماہ ربیع الله فی مصلات ہے کو پیائش ہوئی۔ آپ کا مزادی افوار شہر عکہ تنام میں ہے۔ بیرالا قطاب کے مصنّف نے مکھا ہے کہ آپ کے وصال سے نے کر آج مک آپ کے مزادیدا یک چراغ روش ہے ہو کہ جی تہیں بجیا۔ وہ تنام سے مسیح تک روش رہتا ہے۔ با دو با رال کا کئی بار طوفان آیا۔ گردات کے وقت اس چراغ کو نہیں بجیا سکا۔ یہ چراغ اس شغری علی تصویر ہے۔

اگر گنیتی سراسر بادگیرد چراغ مقبلان هسرگذ منبرد تاریخ و فات :

چ ل ابو اسحاق شامی پیرجیشت شداندین دنیا برجنت شاد کام دصل پاکش سهت قطب الواسلین سهم ابو اسحاق محبوب انام مسل می ساسط

أي ميني شادات عظام يي حضرت خواجه الواحدا بدالحثيتي فدس سرة سي عقياد وصرت خاج الواسحاق شامی قدس سرؤ کے خلیفہ اگر تھے۔ ریامنت اور مجاہدہ ہیں بے مثال۔ غوارق وكرا مات بين لا ثاني تقير أب كالقب قدوة الدين تقا ظاهري و ماطني حن دجال کے پیکیر تھے۔ اسپ کامنور چہرہ دورسے روش نظر آتا جس شخص کی لگاہ آپ كے بيره يريدتى دل وجال سے عجن كرنے مكت تقا آپ كى جبس نورا فتاں سے نورا الی کی کریمی بھیوٹتی تھیں۔ رات کو گھر میں روشنی کے بغیر تشریق لاتے توسال كرروش ہوماتا تفاا ب اندھرے میں معطیۃ توقرآن ماک کے حروث عراہیمیت نما يال نظر أت تذكرة العاشقين أوربيرالا تطاب كم مستفين في مكها ب كه خواجرا بو احدباد شاہ فرغا مذکے بیٹے تھے بوجیشت کے مشرفارا ورساد ات حبینی سے تعلق رکھتے تھے.آپ کاسلدنسب چندواسطول سے حفرت حس متنیٰ سے متا ہے ابواحد بن ملطان فرغاية سيدايرابيم بن سيديني بن بيدحن بن بيد مجدا لمعالى المنهور بالوالمعالى بن سية ما حرالدين بن سيد عبدالله بن سيدا مام حس متنى بن امير المومنين امام المتقين المام صن بن على المرتضى اسدالتدالغالب على بن بي طالب كرم التدوجه سلطان فرغامة كي ايك بهن تقي يوو تبيه عفيفه اورصالح فأتول تقي حضرت الداسحاق شامی بسا اوقات ال کے گرجاتے۔ اور کھانا بھی کھاتے۔ ایک آپ نے انہیں فرما یا کہ تمہارے بھائی کواللہ تعالی ایک بٹیا دے گا۔اوراس کی تم پرورش کرنا۔ اس كے بيٹ ميں شكوك خوراك مذجلنے دينا سلطان كى بمثيرہ كوجب بيرمعلوم ہوا کران کی بھا بھی حاملہ ہے۔ تو اس کی خوراک کی نگرانی کرنے لگی۔ آخر تباریخ مشتم ما درمضان المالم كوي بجيفليفه معتقم بالتارك دورهكومت بس بيدا موا حب آب کی عرسات سال ہوئی۔ توصرت ابداسحاق کی محبس میں صاحر ہوئے ۔ ظاہری

باطنی تعلیم لی اور صرت خواج سے متنفیض ہوتے رہے سولدسال کی عربی ظاہری علوم سے فارغ ہوئے۔ تو صرت نے بعیت فرمالیا۔ اور خلوت کدہ میں ریا صنت مي لكًا ديا ـ براے مجامدے كئے خِانچ سات روز ليدكا نا كماتے . وحنو كرتے اوركين لقوں سے ذیادہ نہ کھاتے۔ چالیس دنوں بعدحاجت انسانی کے لئے باہرجاتے۔ ایک دن خواج الواح حیثی اپنے والدگرامی کے ہمراہ بیاروں پرشکار کھیلنے علے گئے اتفاقاً والداوران کے ما تقیوں سے مدا ہو گئے اور بہاڑوں من است عبول گئے رجال الفیب سے جالیس افراد ایک چان بر کھرے نقے اور فواج الواسحاق شامی هی اہنی کے درمیان کواے تقے صرت فواجر کو پیجان کر گھوڑے سے اُتر آئے۔قدم بوسی کی اسلحہا ور گھوڑاتن سے علیادہ کئے اور خواجہ کی رکاب پر کربدل چلنے مگے۔ آپ کے باپ نے اوران کے شکرنے پیاڑوں میں آپ كوبراتلاش كيا مكروجوان ابواحد كاكهيس ميتريز علا -جند دنول لبدخر ملى كما بواحد فلال موضع میں حفرت فواجرا لواسحاق شامی قدس سرہ کی فدمت میں موجودہے۔ بادشاہ نےچند آدمیوں کو بھیجا کہ انہیں ہے آئیں مگران کی ساری پندونصیحت كے با دج دا بواحد فے صرت شامی كى مجلس سے جا تا كيندند كيا اسطال مكفت شاقرسے گزرے خرقه فلافت ماصل كيا تيس سال ك كجى بتري آدام نيس كيا-صرت فواجرابوا حرص بيايك بارتكاه داسة وه صاحب كرامت بي عاماً اگرمرتض کو ایک مار دیکھر لیتے توشفایا ب ہوجا تاساع کے وقت آپ کی جبیں سے خصوصی فورظا ہر ہوتا۔ جس کی شعاعیں ہس انوں کو چھوتیں بھزت ابواجد کی کرامات ك شرت مشرق ومغربين يجيلي - توعلماءعمركواتب سے حدم و في اكا - آپ ك سماع کی مجانس کے خلاف فتوتی بازی ہونے لگی۔ ایک محضر نامر تیار کیا گیا۔ اور ا ميرنفيبر وجاكم عادل بهي تقا اورآپ كاحقيقي مامو ل بحي آپ كي خدمت مين ميش

كياكيا حضرت خواجر كى مجلس ماع كى بوائيا ل بيان كى كيس امير في مك جرك علما، کی ایکے علی بلائے حس میں کئی ہزار علماء جمع ہوئے فواجدا بواحد کو بھی اس محلس میں بیش کیا گیا حضرت خواج به خبرس کوخر قد خلافت پہنے گھوڑے برسوار ہو کوا میر کے دوباري پنج آپ كرما تقايك فادم محرفدا بنده نامى تفا- جيسورة فاتحرا ور سورة اخلاص كے علاوہ قرآن سے كيم مادنيس تقا الدينفيركي بارگاه يس سنج . آپ كي تشرليف ورى سے پہلے تمام علماء اورها سدين كابيا داده تفاكرمب فواج الجاحم كني توكوني تفض مذاستقبال كے لئے جائے اور مذاحرام میں اعظے مگرابیا ہوا كردب خاج مجلس کے پاس آئے تو تمام علم انظیم کے لئے اعظ کھڑے ہوئے لیض نے آگے بره كواستقبال تعبى كميا محلس من لاكرايك مبند مسند بريتجا يا كيا - اورمئد ساع ركفت كو مروع كردى حب علماركمام إينا مكتة نظر بيان كرهكا وراين ابني اعتراضات كي تفسيل سنا عِكة وصرت خواج الواحدف ابن فادم محديده كواشاره فرمايا - كماك علماء كام كے اعراف ت كا جواب دو فادم ان بيھ تقا مكراسے يول محوى بوا عيد آج وه سب سے زياده عالم اور فاضل ہے۔ اس في علم احك ايك ايك اعتراض كاجواب قرآن واحاديث سه دينا منزوع كيا - بزرگان سلف كےطريقية كو میمی بیان کرنے لگا۔ تمام علماءاس کے جوابات سن کردنگ رہ گئے بیض توشرمندگی ے سرھائے بیٹے دہے۔

ہرآں کہت رکہ بامہتر سیبرد جین ان نتد کہ ہرگذ برنخیزد حضرت خواج الواحد کے والدایک شراب خاند کے مالک تھے۔ اس میں کئی سال پانی ستراب کا ذخیرہ جمع دہتا تھا بہ خرت خواج بجین میں ایک دن شراب خانے میں چلے گئے اندر سے دروازہ بندکر لیا اور تمام ستراب کے مشکے تو شرق الے با دشاہ نے جیت برچ والد کر بچے کی اس حرکت کو دیکھا تو نہا بیت عفتہ میں چلا یا اورا یک بچشر

ك كدد ك مادا - الرجي تغير خوا جرابوا حد تك بينيا مكر قريب جاكه بوابين معلق بو گیا سلطان دیکھ کرجیران رہ گیا۔ شراب خانے میں ہیا اور اپنے بیٹے کو اٹھا کہ الله سے شراب نوستی سے تو بر کی۔ یہ واقع سند کم میں ہو ما ہوا تھا۔ صرت خوا جرابوا حرابك مفرس ايسه مك مين جا پہنچ جہال كوئي بعيمسلمان تنهيل تقا اور سرط و ف كا فربى كا فرسقة بدايس تنت كا فرسقة كدانهيل كو في ملان نظرا آتواسے مرور اللہ میں عینیک دیتے۔ انہوں نے خواج الواحد و دیما يہ چان لياكريم سلمان ہے۔ بڑى تنى كرنے ملكے ۔خواج كوجلانے كے لئے ايك جلك آگ جلائ گئی۔ اور خوا جرکواس میں تھیلنے کے لئے تدبیری کونے لگے حضرت خاج نے انہیں کہا۔ تم لوگ بھے آگ میں چینکے کی تعلیمت نہ کریں میں خود ہی آگ میں کود پڑتا ہوں۔آپ نے مصلیٰ کندھے پر رکھا۔ اور آگ کے شعلوں میں کود مڑے۔ آگ سرد ہوگئی۔ آپ نے انگاروں پر مصلیٰ بچھادیا۔ اور دور کعت نماز شکرانہ او اکی۔ ان دشمنان اسلام نے آپ کی کرامت دیجھی تو کلمہ پادھ کرمسلمان ہو گئے اور دل و جان سے آپ کے با تخدر بعیت ہو گئے ، وشہر کفر آباد تھا اسپ کی برکت الام آباد

حضرت ابواحدا بدال رحمة النّه عليه شنم ماه رمضان منتله من بيدا بوئے يكم ماه جادى النّانى هفتات كوفت بوئے ـ

م دی حق سند مجوب گو سال تولید کشس بقول اصفیار دصل او نور الملی آخد ست نیز نواحب مدفرید آمد بجا دصل او نور الملی آخد ست

آپ کا تقب نعج الدین اور نواجر الدین اور نواجر الومحدین الواحمد بینی قدس مرفی این دنت کواد ایا، کراداور منائخ نامدادین سے تھے بڑے عظیم الثان اور بلندر تبدولی اللہ تھے آپ نے فرقد

فلافت اپنے والد بزرگوارسے ماصل كيا۔

جن دنوں دہ اپنی والدہ کے بیٹ میں تھے تو والدہ لا إله الا الله کی آواز سُنا کرتی تھیں ،اُس نے یہ وا تعدا پنے شوہر کوٹایا۔ نوانہوں نے فرمایا کہ الله تعالی تہیں ایک نیک میرت بچید ہے گا۔

جب نواج ابومحدم كى يىلى دات است يجرى مى بيدا بوف تراسى دات ان کے والدنے رسول مقبول صلی المدّ علیہ وآلہ وسلم کو خواب میں دیکھاآپ تے فرمایا اے الواص الله تهبس ایک بیا دے گا جس کانام میرے نام پی محرر کھنا۔ خواج پیدا ہوئے۔ابھی وہ دائی کے ہاتھوں میں تھے کہ سات بارلا إله الا اللہ محدر شول الله زبان برلائے۔ دس دن تک ایم عاشورہ تھے۔ دن کے وقت وودھ نہ پیتے اوردوزہ رکھتے اور رات کو دودھ پیتے۔ ڈھائی سال کی عمریں کم کھاتے اور کم سوتے بحس وقت أن كى عرسا دھ جارسال ہوئى انہيں مدرسميں واخل كروا ديا گیا ور تختی دے دی گئی اس تختی رغیب سے بہ آیت مکھی موئی تھی سے الله الموحيان الرحييم- اكرّحين عسك والمقتول وبّ بسر وال تعسو دَحْتِ زُدُ فِي عِلْمًا طَ وَآبِ فِي تَقُورُى من مِن قرآن بإك ما فظ كرايا وسات سال کی عمر می نماز باجاعت اداکرنے مگے ۔جوبات کرتے وہ پوری موجاتی۔ اب ي عرويبيس سال ي تقى كه والدكان تقال موكيا- آپ ال كيمسكلي ميعلوه افروز ہوتے کئی بارکنوال میں لٹک کرنمازمعکوس اواکرتے -کیھی تھی آپ نے اپنا پہلوزمین رپہ رکھا اور نہ سوئے سات دن کے بعدایک محجور اور یانی کا ایک کھونٹ پینے تھے۔ آپ کے ظاہری وباطنی علوم کے استاد حضرت خصف

ايك دن خوا بواحمد بيتى رحمة الله عليه محلس سماع مين بليطي بوئے تقے اتفاقاً

خواج الجومحر بھی مجلس ہیں تشریف لائے۔ نعت سنتے ہی رقت طاری ہوگئی اور بہایت ذوق وشوق سے بدئ ہو گئے سات دن کائے فرد پڑے رہے مرف نمازک وقت ہوش ہوجاتے۔ آسھوی وقت ہوش ہوجاتے۔ آسھوی وقت ہوش ہوجاتے۔ آسھوی وقت آپ کے والد صنرت نوا جرابواحد نے سماع موقوت فرمایاا ورفواجرا بو محرکے بیئے آپ کے والد صنرت نوا جرابواحد نے سماع موقوت فرمایاا ورفواجرا بو محرکے بیئے پر ہاتھ بھیا۔ وہ ہوش میں آگئے۔ اور آن تکھیں کھول دیں آسمان کی طوف من کرکے کہنے گئے۔ اور آن تکھیں کھول دیں آسمان کی طوف من کرکے کہنے گئے۔ بھر بیٹے تھے۔ بھر کے بھر کے بھر بھر وج ہوئی۔ یہ ایسے اشعار تھے کہ آج سے کو دیڑے ہے۔ یہ ایسے اشعار تھے کہ آج سے خود بڑے ہے۔

ایک دن خاج الوحید دریا کے کنارے بیٹے۔ اپنی گود ڈی سی رہے تھے اِسی اُنا دیس اُس ملک کا باد شاہ و ہاں ہے گزرا اور ایک ہزاری تھیلی آپ کوپش کی۔ آپ نے اُسے قبول سنظر مایا اور کہا کہ ہمارے بزرگ باد شاہوں سے نذرانہ نہیں لیا کرتے۔ باد شاہ نے بچر صند کی اور اصرار کیا کہ آپ یہ دقم ہے میں جھزت خواج نے دریا کی طون منہ کرکے اللہ اکبر کہا۔ تو ہزاروں مجیدیاں منہ میں تھیلیال طفائے بانی کی سطح پر تیر نے ملک صفرت خواج نے باد شاہ کو فرایا۔ جے اللہ تعالی نے اتنی دولت دی ہوائے متہاری تھیلی کی کیا برواہ ہے۔

خواج الومحدى بم شره محرم بھى د لىبد ئقيں وہ بميشد الله كى عيادت بي دستى اور عاليس سال تك شادى كرتے بردائنى نه ہو بئى - ايك دن خواج محد اپنى بم شرہ كے پاس تشريف نے گئے اور فرما يا لے عزيزہ تفدير بيں لكھا ہے كہ متہارے بدن سے ايسا بيٹا بيدا ہوگا جو قطب الاقطاب بے گا - ليكن بيربات شوم كے بغير ناممكن ہے - بير بات شفنے كے باوج دشادى كرنے سے الكاركرتى رہى فواج فاموش ہوكوا محد اسے - اسی دات اس نیک بی بنے اپنے والدخواج الداح جنتی رحمۃ اللہ علیہ کوفاب میں دیجا۔ انہوں نے بتا یا کہ ایک سیّد زادہ محرسمعال ہے۔ وہ نیکی اور تقوے میں منہور ہے تہما رہ ہے کہ وہ تہما را شو ہر نے گا۔ اور ایک لڑکا پیدا ہوگا جس کے نورو لایت سے ہما را خا ندان روشن ہوگا۔ دوسری طوت ایسا ہی خواب خواج کو کہ آیے تو خواج الو محد نے کسی آدمی کو بلا یا اور کہا کہ شہریں ایک سیدزادہ سیّد محرسمعال رہتا ہے اُسے نلاش کر کے لائیں جب کہا کہ شہریں ایک سیدزادہ سیّد محرسمعال رہتا ہے اُسے نلاش کر کے لائیں جب دہ سیدزادہ لا یا گیا تو اس بی بی کا نکاح پڑھا دیا گیا۔ بی بی کے بطن سے ایک دہ سیدزادہ تھا اور تھوڑی لاکا جدا ہو اور اور محد اللہ کا بیدا ہواج الو اور محت رکھا گیا وہ ولی ماور زاد تھا اور تھوڑی ہی مدت میں اُسے خوقہ خلافت ملا۔

خواجها بومحد کا ایک خدمت گذاد تضااس کا نام استاد مروایی تھا۔ کئی سال کی وہ آپ کی خدمت میں رہا ور کا مل اعتقاد کے ساتھ خدمت بجالانا باصی کہ خواجہ کے استنجاء کرنے کے لئے جو ڈھلے لا تا اسے پہلے اپنے رضاروں سے صاف کرتا پھراستنجے کی عبد پر دکھتا۔ حضرت خواجہ نے اُسے اس قدر خدمت گذار باکر خود خلافت سے نواز ا اور حکم دیا کہ اپنے ملک چلاجا۔ وہ اپنے پر روشن ضغیر کی حدائی پر زار ذار روتا تھا اور کہتا تھا کہ جب تک میر سے جہم میں جان ہے میں آپ کی خدمت سے علی کہ ہ بہیں رہوں گا جضرت خواجہ نے اُس کی زاری اور بے قرادی ڈھی تو فرایا میں نے اللہ تعالی سے یہ بات منوالی ہے کہتم جہاں کہیں بھی ہوگے۔ جب بھی مجھے و کھنے کی آزر و کرو گے میں متہارے سامنے نظر آؤں کا و اور کسی غیر کی طب بھی مجھے و کھنے کی آزر و کرو گے میں متہارے سامنے نظر آؤں کا و اور کسی غیر کی وست ہوگیا۔ وہ ساری زندگی جب جیا ہتا حضرت خواج کو دیکھ دیتا۔

مادر ہے کہ خوا جرا بوئی حثیق کے تین کامل فلفا، تھے۔ ایک خواج الوبوسف دوسے

خواجہ محد کا کو تبیرے خواجہ اُستاد مردان تھے۔ بہتمینوں صرات خواجہ ابو محد کی د فات کے بعد مند ہدایت وارشاد پر بیٹھے۔

سیرالاتطاب کے معنّف نے آپ کی تاریخ وفات بودہ رہیے الاوّل جارسوگیارہ بھری مکھی ہے جبکہ فیدنتہ الاولیاء میں تمیم ماہ رحب چارسوگیارہ ہے۔ تاریخ وفات

بومح مدسپر بهربرنا و پیر محرم حق وا قف سرّرن و واصل مدین تولیدش خوال مسترش منت واسم هم میشوا میسترد و میسترد و

المهام بالمرشية كالمحمد المرابع المالية خواجرا بوبوسف طبتى قدس سرة بمقية جال طريقة اوركمال حقيقت كے مالك تھے۔ آپ كى كرامتيں اور كمالات ظا مروبا ہر تنيں۔ آپ كوخ قد فلافت اپنے امول خواج الوعرصينى سے ملا - والدكا اسم كرامى سيد في معان تحا فواليوحداب كواپنا بیتاہی جانتے تھے اور آپ نے آپ کی تربیت کی۔ آپ کی عمریتیل سال کی تقی۔ كرآپ كے مامول كا انتقال ہو گيا- اور آپ ان كى جگه عبوه فرما ہوئے ۔ آپ كا نسب پاک صرت امام حین سے اس طرح جا ملتا ہے سیدبوسف جنتی برج رسانا بن سيدا براسيم بن سيدمحد بن سيد حيد المدعلي اكبرين امام حس اغرى بن المام على تقي بن المام التقي بن على رضا بن موسى كاظم بن حيفر صاحرق بن محد باقر ین زین العابدین بن امیرالمومنین امام حبین دهنی الله ینواجرا بومحد کی وفات کے بعد خواج الويوسف مرات بين تشريف في الخدراسة بين ايك كاون الياص كانام كنك عقاوم لاايك اليادرويش ربتا عقاجو نهايت مي متقى عقااس كياكيه بیٹی تھی جوبرطری ہی نیک پارسااور خولصورت تھی۔ رات کے وقت اُس روای نے خواب میں دیجھا کہ جود صوبی کا جا ندا سمان سے اُترکرمیرے یاس آگیا ہے اور دہ

چساند مجھے کے لگاکہ میری بوی ہو۔ بیس نے تہہیں ضراسے چاہ ہے۔ بسے
ہوئی۔ تولائی نے اپنے والدسے خواب بیان کی اور پوچھا کہ اس کی تعبیر کیا ہے۔
اس کے والد صفرت خواج ابو یوسٹ کی خدمت میں گئے تاکہ خواب کی تعبیر دیا فت
کریں۔ ابھی انہوں نے کچر نہ پوچھا تھا تو خواج ابو یوسٹ نے دولئی کے خواب کا مت
احوال سناد یا اور در دولیش کو تسلی دی کہ چودھویں کا چا تدمیں ہی ہوں اور میں نے
مہماری لڑکی کو خداسے مانگاہے۔ درولیش اُٹھا اور اپنی لڑکی کا تکام صفرت خواجہ
کر دیا چھزت خواج اپنی بیوی کو لے کر اپنے گاؤں جیت آگئے۔ اُس باید سابی بی
کے لیل سے خواج اپنی بیوی کو لے کر اپنے گاؤں جیت آگئے۔ اُس باید سابی بی
کے لیل سے خواج اور دودوج نی اور خواج تاج الدین ابوالفتے پیدا ہوئے۔

ایک ون گرمیوں کے موسم میں فواج الدیوست اپنے ووستوں کے ساتھ گھرے
نکلے ایک ایسے جگل میں پہنچے جہال دُوردو ور تک پانی نہ تھا۔ تنام دوستوں کو پہاس
نے نگ کیا آپ سے پانی کی التجاء کی حضرت خواج الدیوست نے اپنا عصاء ایک پیخر
پر مادا جس سے بانی کا حینہ جادی ہوگیا۔ آپ نے سب سے پہلے قود پانی پیا۔ بیر
تنام لوگ سیراب ہوئے۔ یہ چیہ اب یک جادی ہے اکس کی خاصیت یہ ہے کہ
سردیوں میں اُس کا بانی گرم ہوتا ہے اور گرمیوں میں بیخ تھنڈا۔ اگرکوئی بخاریں
مبلاد شخص وہ یانی بی نے تواسی و قت صحت یا ب ہوجاتا ہے۔

خواجر پوسف کے گھریں ایک بہت بڑا پیھر تفاآپ اکٹر اوقات اس پیفاذ پڑھاکرتے تھے۔ ایک دن صرت خواج نما زیڑھنے کے بعد اپنے گھرسے نکلے آپ نے دیکھاکہ وہ پیھر بھی آپ کے پیھے چیلا آر ہاہے۔ گا وُں کے سارے ہوگ تیھرکو چلتا دیکھ کر جمع ہوگئے۔ اور یہ تما شا دیکھنے لگے بھڑت خواجے نے لوگوں کو شور مجاتے اور تمالیاں بجاتے دیکھا تو تیھرکو دیکھ کر فرمایا بہاں دُک جاڈ اس دن کے لبد کئی اولیا داللہ نے دیکھاکہ صرت خصر علیہ السلام اُس بیھر یہ بیٹھے نظر آتے ہیں۔

اندھیری دا توں میں اُس بچھرسے نور کی شعاعیں نکلتی ہیں جیں سے تمام گاؤل وش ہو جا تاہیے۔

حضرت خواجر پوست دھ التہ علیہ سماع کے بڑے شو تین تھے ۔ سماع کے وقت آپ کی بیٹیا نی سے ایسا نور نکلتا جا سمان کی ببند اوں کو بھیو تا ۔ خواجر ابو بکر شبی اکثراک کی معلیں سماع میں شامل ہوتے تھے ۔ ایک شخص نے خواج سے بوچیا یا اگر سماع الله کے داندوں سے ایک داندوں سے ایک داندوں سے ایک داندوں سے ایک داندوں سے دولیے فرما یا بخواجہ جنید بغدادی کے دوست اور خلیف کیوں منع فرما یا کرتے تھے ۔ آپ نے فرما یا بخواجہ جنید بغدادی کے دوست اور خلیف شبی ہماری محفل میں آنے والے ہیں اُل سے بوچی لیٹا ابو برشیلی نے کہا کہ اگر سماع کنتا مشبیل ہوتو اس سے تو بہ کہ لوج شخص سماع شغتا نہیں جا تیا اُسے تو بہ کہ نا ضروری ہے۔ اگر آجے خواج جنید لغدادی ہماری مجلس میں ہوتے تو تو بہ کہ نا خردی ہے۔ اگر آجے خواج جنید لغدادی ہماری مجلس میں ہوتے تو تو بہ کہ دیے۔

ایک دن صرت خواج کمیں جارہے تھے۔ آپ نے دیکھاکہ لوگ می بناہے بیں ایک مکڑی کا شہر مسید کی چست پر کھناچا ہتے ہیں گروہ ایک گرجیوٹا ہے۔ دیواروں پر پورا نہیں آتا حضرت خواج نے دیکھا تو گھوٹے سے اُر سے شہر کو اٹھا کر دیوار ہیں رکھا لوگوں نے دیکھا کہ وہ شہر ایک گرز بڑا ہے۔

صرت خاج بوسف کو قرآن پاک کا پہلا صقہ یا د تھا۔ وہ دل میں سوچے کہ اگر بھے سارا یاد ہوتا تو پورا تو اب متاء رات خواج الو محرخواب میں تشریف لائے فرمایا الو یوسف نظر مادسورہ فائحہ پڑھو۔ تمہیں قرآن ما د ہوجائے گا۔ ہمپ نے ایسا ہی کیا سارا قرآن یا د ہوگیا۔ ہمپ ہردوز یا نچے بار قرآن شریف ختم کی کرتے تھے۔

حضرت خواجر بچاس سال کی عربی صفرت خواجرا بواسحاق شامی رحمة الترطیه کے ایک خلیفہ حضرت خواجر حاجی کے مقرہ کے پاس ایک ایسا مجرہ بنا یاجر میں آب اعتکات مبط سکیس میں اعتکات کدہ ایک تہد خانہ میں بنایا گیا۔ آپ تقریبًا

باره سال و مها معتکف دہے۔ حضرت فواجر عبدالندالفادی رعمۃ الندعلیہ بھے حضرت فواجر عبدالندالفادی رعمۃ الندعلیہ بھے حضرت فواجر کو طفے حاصر ہمواکرتے تھے۔ پریاں اور جن بھی حاصری دیا کرتے تھے ان کی تعداد ہزاروں تھک بینچی تھی مصرت فواجر کے مریدوں میں سے دوجی الیے بھی تھے۔ جوسانپ کی شکل میں مجرے کے سامنے رم کر دوجی الیے بھی تھے۔ ہوسانپ کی شکل میں مجرے کے سامنے مریدوں میں اور عام آدمیوں کو مجرے کے مزدیک نہیں آئے دیتے تھے۔ آپ کی وفات ہوم رجب الرجب و مسمدہ کو ہموئی تھی۔ منت اور مادر زماد نزاد مواجر وقت یوسف ثانی مست او مادر زماد نزاد صاحب حس یوسف است بدال سال تولید آئی شہراوتا د

رطنتش شیعیال نفارف حق نیز بوست ولی ما در زاد ۱۹۵۹ هم ۱۹۵۹ هم

آپ مادرزادولی تحقط الجاتطاب مخرست نواجه مودود بیتی فکر سره و او تطب الدین نقب یا یا تھا۔
شع صوفیاء اور چراغ چنتیہ کے خطابات سے نوازے کئے تھے۔ لگائہ روزگار مجوب پوردگار معاصب الاسرارا ورکخ ن الانوار تھے۔ خرق فلافت لینے والد بزرگوار سے ماصل کیا تھا۔ وہ اکثر ہوا ہیں پر واز کر کے جہاں چا ہتے چلے جایا کرتے تھے۔ سات سال کی عربی قرآن پاک حفظ کر لیا اور سولہ سال کی عربی مادم و بنیہ سے فارغ ہوگئے۔ آپ کی تھا نیف ہی سے منہاج العاد فین اور خلاصته الشرقیہ بہت مشہور ہیں۔ آپ کی عرانیس سال تھی کہ والد ما جد کا انتقال ہوگیا۔ آپ سادہ نشین سے اور غلوت کی ہایت ہی معروف ہوگئے۔ بنانچ بریت المقدس سے بھادہ نشین سے اور غلوت کی ہایت ہی معروف ہوگئے۔ بنانچ بریت المقدس سے چنت سے اور پلخ و بخال کے علاقوں کی میر کی۔ آپ کے ایک ہزار قلفاء مشہور چنت سے اور پلخ و بخال کے علاقوں کی میر کی۔ آپ کے ایک ہزار قلفاء مشہور

ہوئے۔ اور آپ کے مریدوں کی تعداد کا کوئی شار نہیں۔ دنیا کے کسی حصے بہا پ کے کسی مرید کو کئی شعاد کا کوئی شار نہیں۔ دنیا کے کسی حصے بہا تھے کے کسی مرید کو کئی مشکل میں مشکل علی ہوجاتی۔ آپ کے مزار پر تین وال کے لئے حاصر ہوتا اور دعا کہ تا تو اس کی مشکل علی ہوجاتی۔ آپ کی مشکل علی ہوجاتی۔ آپ کے ہمت بیٹے تھے بنیا نچر خطا باک جینت سے آپ کی اولا دی کئی شاخیس دنیا میں سے بیلیں۔

خواجمودو دجيتى رحمة التدعليه كوكعبه كي طوات كرنے كاستوق بيدا موتا تودہ ہوا میں اُٹر کرفوراً محرسر لیف پہنچ جاتے طوات کرتے اور اسی دان ایس آجاتے جصرت شیخ احدجام زندہ بیل بڑے مشہور دلیوں میں ہوئے بیں انول نے جب خواج الوبوسف حیثتی رحمۃ الٹرعلیہ کی دفات کی خرشنی۔ تو آپ خواجرودو د کے پاس حیثت کی طرف روا مز ہوئے .آپ کے دشمنوں نے آپ کے فلاف حفرت مود ودحیتی کو بیخر پہنچائی کہ خواجرا حدجام آپ کی ولا بیت پرقبضد کرنے اکہ ہیں۔ یہ بات سنتے ہی خاج مورد و دسینی نے مراقبہ کیاا ورجید لمحول کے بعد سراعظا كرفراياكريه بات بالكل قلطب شيخ احدمام توجيت وخلوص سے الب بين بنانچه فواج نے قوری طور بیا یک د بوار کو حکم د یا کہ وہ گھو ایسے کی طرح تیز دوڑ کر شنخ احرمام كاانتقبال كرے اورا نہيں لائے شنح مودود حيثي حار ہزارا وليا، اور خلفاء كوك كراستقبال كے لئے آگے بطھے سننے احد جام سنر رسوا موكر دریائے نوتک کے کنارے پر کھڑے تھے۔دونوں کا آمنا سامنا ہوا۔دونول اینی سوالدیول سے نیجے اسکتے اور ایک دوسرے سے بغل گیر ہوئے وی تک بنيظ ِ گفتگو کرتے ہے۔ وہاں سے خواج علی حکیم جو خواجر مود و دھیتی کامعتقد تفا کے گھرتشرلین نے گئے۔ تین دن تک محلس سماع منعقدر سی ۔ دونوں صزات دمید میں مجومتے رہے۔ بے غیرت دشمنوں نے شیخ احمد کی نشر لیف آوری کی خردوسرے

اندازیں بیش کی تھی۔ اب بیاوگ مو قع غنیمت جان کرمجلسِ ماع میں چلے آئے۔
وہ چاہتے تھے کہ شیخ احرجام کو ہوارسے ہلاک کردیں۔ مگراسی اثناء میں خواج
مودود حیثی کی نگاہ غفتب ان برالیبی بٹری کہ تمام ہے ہوش ہوگر ترشیف نگے جب
مجسر ضم ہوئی تو شیخ احرجام نے ان ہے ہوشوں کی حالت دریا فت کی توحفرت
خواج مودود نے سارا وا تعد شنا دیا۔ شیخ احرجام نے ان کاجرم معاف کردیا۔ اُن
کی بیٹت پردست شفقت بھی اتو اُن کو ہوش آیا۔ دو توں بٹردگوں کے پاؤں پرگر
بڑے۔ شیخ احرجام حضرت خواج مودود دو توں خلوت میں رہے۔ دو توں صرات
نے ایک دوسرے سے استفادہ کیا۔ کچھ د توں اجدا بنی اپنی خانقاہ کی طرف تشریف
نے ایک دوسرے سے استفادہ کیا۔ کچھ د توں اجدا بنی اپنی خانقاہ کی طرف تشریف

م یہاں بتا دینا چاہتے ہیں کہ نفیات الانس کے صنف نے اس دا تعہ کو دوسری طرح نقل کیا ہے۔ لیکن ہم نے جوا تعہ بیان کیا ہے وہ حضرت خاجہ وہ وہ وہ چتی رحمۃ الله علیہ کے ملفوظات ہیں کھا ہوا دیکھا ہے۔ خواجہ مودود حیثی رحمۃ الله علیہ جب شیخا حرجام سے رخصت نے کہ حیثات کی طرف لوٹے۔ توراستے ہیں پہالہ کے دامن ہیں ایک ایسے شخص کو دیکھا جویا مودود کا ور دکر رہا تھا۔ اُس سے بُوچھا گیا تو اُس نے بتایا کہ ہیں ایک عرصہ سے نا بنیا تھا۔ ایک دل میں نے اللّٰہ کی بارگاہ میں بنیائی کے لئے دعا کی قو مجھے غیب سے آوا ذات کی کہ خواجہ مودود دمیر سے مجوب ہیں اُن کے نام کا ور دکیا کرو۔ ایک وقت آئے گا کہ ان کی برکت سے بنیائی مل جائے گا مورت خواجہ مودود نے جب یہ بات شنی۔ تو ا پنا لعا ب د ہن اس کی آتھوں بیہ صدرت خواجہ مودود نے جب یہ بات شنی۔ تو اپنا لعا ب د ہن اس کی آتھوں بیہ مطرت خواجہ مودود نے جب یہ بات شنی۔ تو اپنا لعا ب د ہن اس کی آتھوں بیہ مطرت خواجہ مودود نے جب یہ بات شنی۔ تو اپنا لعا ب د ہن اس کی آتھوں بیہ ملا۔ وہ اُسی وقت بینا ہوگیا۔

ما مروا ہی و سے بیا ہے ہیں ہے تو ہوں کے علمار نے حضرت خواج مودود حضیتی رحمتہ اللہ علیہ حب بلخ میں پہنچے تو و ہل کے علمار نے اسپ کی بڑی خالفت کی مئد سماع برینا خرہ کرنے کے لئے ایک عظیم الشان اجلاس کیا۔

اس مبس میں علمائے بلخ نے جتنے سوالات اعمائے صرت خواج مودود نے اُل کے جاب ديئے اور فرمايا سم خواجه الماسيم بن ادھم رحمة التّدعليد كي سنت بدقا مم بين وه ہمارے بیر تھے اور سماع سُناكرتے تھے علماء نے جاب بیں كہا كہ خواجرا يراہيم ادهم بركامل عقدوه بوامي ألااكرت عقدان كاسماع تنناجا ربي بكرات السائنين كرسكة مضرت فواجرمو دود حيثى أسى وقت مجلس سے أعظے اور تيزيد ندے كى طرح ہوا میں بروا ذكرنے لگے علماء كى نظروں سے غائب ہو گئے۔ كيروقت گزرنے کے بعد والیں آئے اور عبس میں اکر بول بیٹے گئے کہ کسی دخرنگ نم مونی اہل مجلس میں تفور ہو یا ہو گیا۔ اِس مجلس میں دوہزار لوگ موجود تقے تمام کے تمام آپ كے مربد ہو گئے مكراس كے با وجود ليص منذى علماء اصرار كرتے رہے كر بميں اكس برواز براعتبار نہیں الیا کام تو بعض جرگی بھی کر لیتے ہیں۔ ہم اس وقت مانے گے جب جامع مجد کے حوض پر بٹے اہوا بڑا پیھر آپ کی دلایت کی گواہی دے بھے ہم آپ كے مريد ہومايس كے حصرت خاج نے الكشت شهادت سے بيتر كى طرف اشاره كيا وہ پچھراینی عبگہ سے ہلاا وربیٹے لیٹے حضرت خواجہ کے پاس آگردگ گیا۔ پچفر سے آواز آئی۔اے خام مودود آپ کی ولایت برکوئی شک مہیں۔ آپ کے اقوال مشرع بغمرك مطابق بن بلخ كے علما، في حب به كوامت و بجبي توصرت خواجرمودود کے تدمول میں گر بڑے اپنی غلطی کی معافی مانگی۔

یادر کھیں کہ خواجر مودو دھیتنی رحمۃ النہ علیہ کے ایک ہزاد مشہور خلفاء تھے جن میں اکثرا دلیاء کہ بارا درمشا کنے دالا تبار تھے۔ اگران کے اساء گرامی کھیں جا میں توایک علیاحہ کتاب در کار ہوگی۔ ہم تبرگا یہاں حرت آ کھرنز دگوں کے نام لکھتے ہیں۔ پہلے آنجناب کے فرز ندار عبند خواجر الواجہ درحمۃ النہ علیہ ہیں جو آپ کی دفات کے بعد سجادہ نشین ہے اور طلباء حق کو تربیت کرتے رہے۔ دومرے خواجہ حاجی مشر لیف

زندنی دیمة النّدعلیه تقے آپ قطب الوقت بھی تقے اور غوث زما نہ بھی تمیہ سے نشاہ سنجان تقیم بی کا پہلے نام خواج سنجان تھا بھر انہیں خواجر بزرگواد کا خطاب ملا ہے تھے الوقصیہ شکیدبان زا ہد تھے آپ سیطستان کے اکا برمشا کُخ میں شمار ہوتے ہیں ۔ بانچواں شیخ حسن بہتی ہیں جو انچوں گؤترت ہیں سکونت رکھتے تھے چھٹے احمد بد رون تھے بو موضع بد دو ہا بی ہیں جو انچوں کو تر ساتواں خواجر سنر لوپش آن ربا بنجانی تھا تھو علی مختاب دوجی تھے۔ آپ کو صفرت بایز بدل بطامی کے سلسلہ عالیہ سے بھی خلافت ملی تھی فریس خواجر الوالحن بانی تھے رحمۃ اکتار علیہم اجمعین ۔

جب صرت خواجر مود و در حمة المدعليه مرض موت مين صافران موسے . دوزوز من بطمعناجا تا تھا۔ وفات کے ون بار بارا پنے دروازے کی طرف و بھتے تھے ہرابر مراب سے سراُ تھاتے جیسے کسی بڑے پیارے کے آنے کا انتظار ہو۔اسی اثناءمیں ایک تف نورانی چرے اور باکیزہ لیاس کے ساتھ اندر آیا سلام اواکرتے کے بعد ریٹی کیڑے کا ایک مکڑا بیش کیا جس پرسنر خطرہے چندسطر سکھی ہوئی تقیں حفرت غاجت اس كيرے كوايك نظرد كھا ورايني انكھوں برركھا اورجان المدكے والے کردی جہز و کمفین کے بعدلوگ نماز جنازہ ا داکرنے لگے توایک ہیبت ناك آواندا في حيل دست سے لوگ درہم برہم ہو گئے۔ بہت سے رجال لغيب ینجے۔ پہلے انہوں نے تناز جنا زہ ا داکی۔ ان کے بعد حبّ اور دیو آنے مگے - بھر ہزاروں بری زاد پنینے مشردع ہوئے۔ وہ نماز جنازہ بڑھتے جاتے اس کے بعد آپ كي فارمريد فلفاء هيو في برا عناز خازه اداكرت رس يحب سب لوگ فارغ ہوئے توجانے کا تا بوت فود بخود اعقاا در قبر تک جا پہنچا۔ اس کرامت کودیکھ کردس ہزادا لیے لوگ جواسلام سے بیگانہ تھے میشرت یا سلام ہوئے۔ حفرت فواجمود دد چارسوتیس ہجری میں پیدا ہوئے۔ اور آپ میم رجب المرحب ٥٢٥ م

یں فوت ہوئے۔

ېم سنه محود د ين مودود نوال

صاحب مودود دالی پیشدا ۵۲۷ س

يطلت آل ياد شاه القيبء

انتقال ازمروروا لا دع

تواجها محدین مو دوری کی رحمه الد علیه: فیب یخدالد فاجرد دورک او دولی الد فاجرد دورک او دولی کا بری اور باطنی علوم کے ماہر تھے۔ آپ نے ایک بار مغیر فلا اور قطب الوقت تھے نظا ہری اور باطنی علوم کے ماہر تھے۔ آپ نے ایک بار مغیر فلا صلی الد علیہ وآلہ و لم کو فواب میں دیکھا تو آپ نے فرما یا کہ اے احرتم ہمارے مثنا تی ہیں ہوئی آپ نے بین چارد وستوں کو ساتھ لیا اور اس طرح کھرسے با ہر نکلے جیسے انہیں کو دی آپ نے بین ۔ اس طرح حربین ستر لیف کی زیارت کوروانہ ہوئے۔ بہلے مکم معظم بینے۔ مناسک جی اواکر نے کے بعد مدینہ منورہ حافر ہوئے مجل میں مناسک جی اواکر نے کے بعد مدینہ منورہ حافر ہوئے جی ماہ کے دو صند افر رہے ہیں جا ہاں کو تنگ کر کے صنور کے دوفتہ اندر پر بیٹھے رہے آپ کا اس طرح بیٹھیا وہاں کے مجاوروں کو گراں گر را۔ انہوں نے چا با ان کو تنگ کر کے صنور کے دوفتہ بیٹھی کے دوفتہ اندر پر بیٹھے دیے آپ کا اس طرح بیٹھیا وہاں کے مجاوروں کو گراں گر را۔ انہوں نے چا با ان کو تنگ کر کے صنور کے دوفتہ سے دوور کر دیا جائے دوفتہ کو در کر دیا جائے دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو در کو دیا جائے کہ دوفتہ کو در کر دیا جائے دوفتہ کو در کر دیا جائے دوفتہ کو در کو دیا جائے کہ دیا جائے کہ دوفتہ کو در کر دیا جائے دوفتہ کو دیونہ کو دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو در کر دیا جائے دوفتہ کو دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو در کر دیا جائے دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کیا جائے کر دیا جائے دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کر دیا جائے دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کو دوفتہ کر دیا جائے کے دوفتہ کو دوف

نے آپ کی بڑی عزت و تکویم کی۔ شخ احمد پانچے سوسات ہجری میں پیدا ہوئے۔اور ماپنچے سوستر ہجری میں انتقال فرطیا آپ کامزار گوہر مارموضع چشت میں موجود ہے۔

ہمارا منتاق ہے اور ہم اس کے مشآق ہیں۔ یہ آوازیں حاصرین نے سنی ۔ توسیل موش

ہو گئے۔ بادگائے رسالت سے اجازت ہے کرمد بینرمنورہ سے روانہ ہوئے اورلینداد پہنچے

لغدادين شيخ شهاب الدمين مهروردي رحمة التدعليه كي خانفاه مين قيام كيا يصزت شيخ

بود کامل اہل طال داہل قال عاشق احدولی داں انقت ال

شخ دین احدکه درمیرال حیثت هرمای قطب ترمال تولیدا دست

ہے کاسم گرای محمود آور کمنیت رکن الدین خواج شناہ محمود سنجال قدس سر گفت تھی ہے موضع سنجان خوان سے بعق کے عقر صفرت خواجرد و ورحیتی دعمۃ اللہ علیہ کے فلیفہ فاص تھے ۔ آپ کوشاہ اس لئے کہا جاتا تھا کہ آپ کو اپنے ہیر دوشن خمیر سے سر لقب عطا ہوا تھا ۔ کہتے ہیں جب کے صفرت شاہ سنجان حیث میں قیام پذیر دہے۔ پیشیاب مک جہیں کیا ۔ اگر وضو تو رائے کی صفرورت پیش آئی۔ توجیت کے مدود سے با ہر لکل جا یا کہ تے تھے۔ و جاں ہی تازہ وضو کر کے مددد چیئت ہیں داخل ہوا کرتے۔

معتی شاه عالی جاه محسمود زعالی زبدهٔ دیس شاه محود آپ کی دفات عصیت میں ہوئی۔ بجبت رفت چوں نریں دیرفانی عیاں متد سال ترحیش کسور

آپ برے اور العجبا در مقاتا معنرت واج مای شراعی فرند فی قدس مرف نوید کے مالک تھے آپ تھندائے ما کے اور بیٹنوائے ابدال تھے۔ آپ کالقب نیرالدین تھا۔ صفرت فواج مودود جیٹی رحمتہ اللہ علیہ سے فرقہ فلانت یا یا تھا۔ بجدہ مہال کی عرسے با وضور ہنے گئے۔ کیٹرے بیائے اور بو ندشدہ پہنتے تھے۔ فقر دلتج مدید کا ربندر ہے۔ آپ کا دوزہ بھی مسل دوزہ تھا۔ بین دوزے ابد بے نمک مبزی سے دوزہ افطار کرتے تھے۔ اس مبزی میں یہ کال تھا۔ کہ ایس کا برک کوئی اور کھا تا تو مجد وب بہد جاتا۔ اگر سماع سن لیتا تواس قدر

رو ما کربے ہوش ہو جاتا - اگر و نیا پرست ایک بارمیس ماع بیں منز کیب ہوتا تو تارک الدنیا ہوجاتا تھا۔

ابك فكرمند فقرجس كى سات بيتيال تقيس-ا درغربت وافلاس كى دجهس مخت پرلیتان تھا حضرت کی خدمت میں حاصر ہوا عرض کی۔اگر آپ کی نگاہ فیصان سے بیے رزق میں کشادگی ہوجائے اور بیٹیوں کے نکاح سے فارغ ہوجاؤں توساری عمردُ عالُم ر مول گا۔آپ نے فرمایا تم کل آنا۔کوئی تدبیر سوچیں گے۔ درویش چلاگیا جاتے ہوئے راسترین اسے ایک یہودی سے ملاقات ہوئی بیودی نے درولیش سے پوچھا کہم کہاں كُ تق اس ن اپنى يولينانى مشكلات كامثله حضرت حاجى صاحب كے كل آنے كاحكم اوردوسرے مالات سلتے يبودي كينے لگا۔ ماجي شراعيت توخود مختاج اورتني دست بین متهاری کیا مدد کریں گے۔ تم حاجی صاحب کے پاس واپس جاؤ۔ اورانہیں كموكم فلال يبودى نے كها كر خواج مغرليف سات سال ميرى فدمت كاوعده كركيس تومين آج بي سات مزارسرخ دينار دين كوتيار مهدل وه دروليش والبرحامر فدمت بواسارا وا تعدسنا يا حقرت عاجى صاحب في سنة سى فرما يا مجع منظور ب. اوراُسی وقت اکھ کواس کے ساتھ بیودی کے پاس چلے گئے۔سات ہزار دیناراس درولیش کودلا دیئے اورخود ضدمت گذاری برآمادہ ہو گئے۔ بادشاہ کو اس داقعہ کی اطلاع بهوئى تواس نے حضرت خواج كى خدمت ميں سات بنرار دينار تھيے تاكه بيودى كاقرضه دے كوفارغ بوجائي حضرت عاجى صاحب في بيسات بزار يعي عزيون میں تقتیم کرکے فرمایا ۔ میں نے بہودی کی سائن سالہ نوکری کا عبد کیا ہے اب اس عہدے عجرنا مناسب نبيس يهودى فيصرت حاجى صاحب كى انتقامت سُن كرا پناقرضه معات كم دياادر صرت كو آناد كرديا- آب ني بددى كوفر مايا-كمتم في آنا وكياب بميل الله تمهين التن دونه خسي الدادكر يدوى بردعاس كرسلمان بولكيا ورمقبولان

فراسے ہوگیا۔

سفین الادلیا رکے صنف نے لکھا ہے کہ کسی شخص نے شہنت ہ سنجر کواس کے مرفے
کے لبدخواب میں دیکھا۔ لوچھا۔ کہ اللہ تعالی نے نتہار سے ساتھ کیا سلوک کیا سنجر نے
تبایا بھے عکم دیا گب کہ دوز خے شعلوں کے حالے کر دیا جائے۔ عذا ب کے
فرضتے لئے جارہ سے تھے کہ آواز آئی تناہ بخر کو بھوٹہ دو۔ اس نے ایک دن صرت خواج ترلیف
ندندنی کی محبس میں نیا ذمند اند ما منری دی تھی۔ اس محبس کی برکت سے اسے بخش
دیا گیا ہے۔ جنانچہ مجھے دہائی مل گئی۔

ایپ کی وفات دسل رجب المرجب چیرسو آره بیجری کو بهوئی - ایپ کی عمر مبارک د ۲۰ این میر

ايك موتلين مال تقى -

سال وصل آن شهر والاحنيف نيز كن تحرير حاجي مشرلين چرن مترلیف ازعالم دینابرفت کن رقم مهتاب دیس اہل دین

آپ کی او نورکنیت تھی طریقت اور تربیت تھی اور تربیت تھی اور تربیت تھی اور تربیت تھی اور مقتدائے اقطاب مانے جائے تھے۔ آپ کو خواج حاجی تشریف زندنی فقر فعلا کا خور پہنچا۔ آپ ہارون کے دہنے والے تھے۔ یہ گاؤں بیشا پور کے نزدیک ہے آپ نے اپنی ذندگی کے مشر سال دیا صنت بیں گذارہے۔ ساری عرطعام اور پانی بیٹ جرکر منہ بیا یکئی کئی دائیں نہ سوتے۔ ان کی دعا بارگا و رب العزت سے کہی رو دنہ بوئی متی کی رکام دبانی کے حافظ تھے۔ ہرو وزایک بار قرآن پاک ختم کرتے۔ اور ساع ذوق و تور سے سئتے۔

جس و الصرت نواج عنما ل رحمة السُّر عليه كوخرة و خلافت ملا . تو آپ كے پرو

مرشد خواجر شرلف رحمة التدعليد في كلاه جارترى بھى آپ كى سرىيد كھا اور فرما ياكه اس چارتركى كلاه سے مرا دچار چيزوں كوترك كرنا ہے ۔ پہلے ترك دينا دوسر ب ترك عقبى دالشدكى ذات كے سواكوئى بھى مقصود مذہوگا ، نيسر ب ترك كھا نا اورسونا دمرًا تناجس سے ذندكى باقى رہے ، چوتھا ترك خوا بش نفش دلينى جو كچے نفس كے اُس كے فلات كيا جائے ، جوشخض إن چار چيزوں كوترك كردينا ہے اُسے ہى چارترى كلاه بہننا ترتيب ديتا ہے ۔

حضرت خواج عثمان مارونى في اين بيرى اجازت سے د بناكى برى بروسان كى-ايك دن ايدعلا نفيس جا پنج جهال كم تمام لوگ اتش يست عقر انبول نے ایک بہت بڑا آتش کدہ روش کیا ہوا تھا۔ آپ اُسی شہر میں تظہر گئے اور اپنے فادم فخرالدین کو کہا کہ کہیں سے تقوری سی آگ نے آؤ ۔ اکہ کھا نا لیکانیں فخرالدین التشرينتول كے پاس كيا اور تقور اى سى آگ مانكى ليكن ابنول فے آگ دينے سے انکارکردیا اور کہا کہ تش تو ہمارا معدوہے۔ اِس آگ سے آگ دیا ہما ہے ندبب میں جائز منہیں۔ خاوم نے دہیں آکر صرت خواج کی خدمت میں صورت حال یش کی حضرت خواج بذات خود تشرافی اے کئے ۔ اور آتش بیستوں کو مخاطب کر کے فرما یا کرمعبود حقیقی توالله کی فدات ہے آگ اس کی مخلوق ہے اوراسی نے بنائی ہے-اس کی عبادت کرنا ورست نہیں -اگرتم استش بیستی سے تو بر کراو- تو دوزخ كى آگ سے دبائى ياؤگے - انہوں نے كہا اگرائش ريتى سے توريد كونا اگ سے رائ کی دلیل ہے تو سیاتم آگ میں جا او اگر آگ نے تم برا فرد کیا توہم توبه كرليس كے بصرت خواج نے يہ بات س كرومنوكيا . دوركت منازا داكى .اور التشريستون كاايك سات ساله بحيرا ملاكم بلزى تغرى سے آگ ميں داخل ہو گئے وو مُخْنَةً كُ آكُ مِي رہے ليكن آگ نے صرت خواجرا وراس حيو لئے بيا ورا

کیا۔ اور سیجے سلامت باہر آگئے۔ آتش پیستوں نے آپ کی بیر کوامت ویکھی تو کلمہ ٹیھ کرمسلمان ہو گئے۔ اور صفرت خواج کے مرید بن گئے بصرت خواج نے ان آتش پرستوں کے سروار کا نام عبداللہ رکھا اور ھپوٹے بچے کا نام ایراہیم رکھا۔ اور اُنہیں مارج اعلیٰ تک بہنچا دیا۔

ا كيب بار بادشاه وقت في حضرت خواج كوسماع سنف سع منع كر ديا بلكرشهر كے تمام قدالوں كو حكم دياكر اگركوني قدال كسى على ماع كرے كا-اسے قتل كرويا عائے گا بھزت فوا ج نے بادشاہ کو کہا کہ ساع الی چیزہے جو ہمارے بیرو ل کُسنت ہے جیں ماعد کوئی نہیں دوک سکتا بلطان نے کہا کہ بیلے ساع کے جازیں علماءكوام كرساتة مناظره كرين - يهرد يكها جائے كالي خيانچ شركے علماء كى ايك محلس مديا كى گئى حس میں ماوشاہ بھی مشر كي موار صن ت خواج أس محفل مين نشر ليف لائے علماء نے چا باک ماع کے مقلق صرت خاج سے بات کریں مگروہ تمام کے تمام اپنے آپ كرب علم عرس كرف مل جوكي وه جانة تف ال كوما فط سع عورو جا تا حالم الف سے لے كريا تك تمام حودت عبول كئے - بادشاہ نے بڑا زور لكايا - كر علماء بات كين مرده معتكوت عاجر نظرات عقد آخراس كع بغيرمار ف كادية تقا انہیں اپنی تک اعراف کرنا بڑا۔ وہ آؤزاری کرنے گے۔ ضا داہاری عرکا ماصل شده علم برباد مذكيا جائے آپ بزدگ بين اور سخى بين سارے حال برجم کی اوراینی نظرعا بت سے ہمارے علوم کو ذیرہ کردیں صرت فواج نے ان كے كم تفده علوم كو تو اول و يا بكدان بريا طني علوم كے درواز سے كھول ديئے اس واقعد كوديكه كرتمام علماء هزت خواج كے مريد ہو گئے۔ بادشاہ بھى نشمال ہوا اورمعذرت كرتے لكا اوراس كے بعد كھى ساع كى مانعت مذى -

خاج مین الدین اجمیری قرمایا میں کہ ایک دن اینے بیروم شدخواج

عمّان اردنی کے ہمرقاب ہوکردریا کے کنارے سنجار ا تفاقاً اس دقت کوئی كشى مذى يضرت فوا جرنے مجھے فرما ياكه انتهيں بندكرو- پيراكي لحظ كے بعد فرمايا كراب كهول لويحب مين نے المحميل كھوليں ميں اور صرت خواجرور يا كووس كناد كرك تق معزت فاجمعين الدين في ابك اوروا قعه بيان كياب كدا يك شخص حضرت خواج عثمان رحمة المتدعليد كي فدمت مين عاصر بهواا ورعر من كى كداتنا عرصه بواكرميرا لوكاكم بوكياب في كوئ خرنبيل كدوه كهالب مهر مانی فر ماکد تو جرفرها میں حضرت خاج نے بدیات سنی اور مراتبے بیں چلے گئے بقوالی دىرلىدىرا تلايا اور فرمايا كه تتها رالؤ كالكرينني كياب وه تخص كفركيا لؤك كوكلر بيوجود يايا وه فوشى مي ديك كوساته كوائسي وقت صرت خوا جرى فدمت مين عاضر بوا ا ور تنكريدا داكيا. عا عزين نے اول كے سے دريا فت كيا كه تم كيے كھر بنجے گئے -اس نے كہا یں جزائرالمند کے ایک جزرے میں موجد تا۔ آج ایک ایے بزرگ جن کی صورت صرت ذاج سے ملتی حلبی ہے میرے یاس تشرایت لائے مجھے کہا اُعطور میرے بإدلى بديا فل دكهوا ورآئكيس بتدكر لويس فالباسي كيا جب ميري التحيس محلين مين كمرس موجود تقار

ایک دن آوهی دات کے وقت شہر کیا ہا آدمی ایک مجلس میں بیطے ہوئے سے اور خواجر عثمان ہاردنی کی کرامت کا ذکر کر دہے تھے رسب یہ کہنے لگے کہ ہم ابھی خواجر عثمان دھ تا الله علیہ کی فدمت میں جائے ہے اور کسی کرامت کا مطالبہ کرتے ہوا جمانی دھ تا الله علیہ کی فدمت میں جائے ہیں اور کسی کرامت کا مطالبہ کرتے ہیں اگر انہوں نے کرامت دکھا دی تو ہم مرید ہوجا بیس گے۔ چیلتے وقت ہرا کیا نے علیمو علیا میں اگر انہ دو اس میں کھی جو رات کے وقت تیار نہ ہوسکے مصرت علیمو علیا میں جا پہنچے آپ نے انہیں و کھی کو فرط یا الله تعالیٰ جے جا ہتا ہے۔ خواجر کی عمل میں جا پہنچے آپ نے انہیں و کھی کو فرط یا الله تعالیٰ جے جا ہتا ہے۔ راہ راست کی ہوایت و تیا ہے تمام کو اپنے سامنے بیٹھا لیا۔ اور لیسم الله بیٹے ہوگو کہ الله بیٹھا کیا۔ اور لیسم الله بیٹے ہوگو کہ کو اپنے سامنے بیٹھا لیا۔ اور لیسم الله بیٹے ہوگو کہ کو اپنے سامنے بیٹھا لیا۔ اور لیسم الله بیٹے ہوگو کہ کو اپنے سامنے بیٹھا لیا۔ اور لیسم الله بیٹے ہوگو کہ کو اپنے سامنے بیٹھا لیا۔ اور لیسم الله بیٹے ہوگو کہ کو اپنے سامنے بیٹھا لیا۔ اور لیسم الله بیٹے کی موا

ا بنه با تقانطائے ۔ اُسی وقت کھانے کا ایک فوان اُسمان سے اُتراحیں میں نظر قتم كے كھانے موجود تھے۔ آپ نے ہراكي كو جُدا جُدا كھا ناتقيم كيا جوان كى دلى خواش کے عین مطابق تھا۔ اِن جا ہوں نے آپ کی کرامت دیجی تودل وجان سے معتقد الدكئے اور مرمدين كئے۔

يادرب خواج عثمان ماروني رعمة التدعليه كي حيار خلفاء تقي يبدي خواج بعنوالحق والدين سجزى دوسرے خواج نجم الدين صغرى يتيرے شخ سعدى نگوى - يح تقے خواج محدترك رحمة الندعليهم حضرت خواج عثمان بإردني ينجم ما وسنوال بيرسور سره مجرى مِن فت ہوئے حکے آپ کی عرا کالویں سال تھی۔

رفت اندونیا عجود درخسلد بریں کشیخ عنمان مقتدائے اولیا ال وصلش قطب وقت أرعيال جلوه كرت نيز ماج الاصفياء

خواجه خواجكان بن في والدين السيري جميري فدسمره

آپ مثائخ چثت کے اعلیٰ مثائخ اورا دلیاء میں مانے جاتے ہیں۔ ریاضت اور كرامت مين تهرهٔ آفاق موئے اور ولائت كے اوصات ميں موصوف تقے عظيم لتا اور دنيع المقام تق صحح النب سا دات ميس تقد آپ كو حفرت خواجرعتماني مارونى قدس سرة مص حرقه خلافت ملا تقاءاور سائد حيث بتيدكو رضيغر ماك ومندس امام الطريقين كى عيثيب سورائج كيا . آپ كى تشريف آورى سے اس مك بي اسلام كى اشاعت بوئى يهي وجب كرآب كويص مفكرين اسلام فى بهنداليني اوربندالولى كے خطابات سے بأوكيا تذكروں بن لكھا ہے كه آپ مهينته عشاء كے دضوسے فجركي نازاداكياكرتے تھے۔چانچرا راس كى يى معول رہا۔آپ كى حس بينكاه لطف

پِنْ صَدَارِ سِيده بنادِ بَنِي تَقَى سات دن بعد خشک رو بن کو با بن مي تعبگو که افطا رفر ما ما کمت عقد اورا بنالباس و الرخيد شده بينا کرتے تقد اگر تعبیط جاتا تو پوند لکا ليتے تقد اس کا اصلی وطن سِستان تقا و را ب کاسله نسب بدری بول ہے فواج میں آدین بن مینا کا الدین بن سید مال الدین بن سید احر میں بن سید طاہر بن سید عبدالعزیز بن سید العزیز بن سید الموجی بن امام علی رضا و بن موسی کا ظم بن الم معنی رن امام محد با فر بن امام شین بن میں الم محد با فر بن امام محد بن بن میں الم محد بن میں الم محد بن میں الم محد بن میں الم محد بن بن میں الم محد بن میں بن میں الم محد بن میں بن میں الم محد بن الم محد بن میں بن

آپ کے والدگرامی سید عنیات الدین رحمۃ اللہ علیہ عراق ہیں فوت ہوئے تھے۔ اوران کا مزار وہاں ہی ہے۔ آپ کی والدہ کا اسم گرامی فعاص الملکہ بننا بجا اصفہان کی دہنے والی تقیس مگر آپ نے خراسان ہیں ہی ورش پائی بحیب آپ کی عمر گیے یہ سال ہوئی۔ تو آپ کے والد کا انتقال جد گیا۔

سیدغیاف الدین قدس سرہ کے نبن بیٹے تھے۔ تینوں کو والدکاور نہ ملا تھا بھڑت فواج معین الدین قدس سرہ کوور نہ ہیں ایک وہینے باغ ملا تھا۔ آپ باغ بن تشرلف فراحتے کہ آپ کے پاس قلندر اہراہیم نامی مخدواب آپہنچا بعضرت خواج نے اس کی بڑی تعظیم کی۔ اور اُٹھ کراس کے ہا تھوں کو بسر دیا۔ اور ایک درخت کے سابیہ ہیں بٹھایا انگور کا ایک خوشہ بین کی ۔ گراس نے اپنے انگور کا ایک خوشہ بین کی ۔ گراس نے اپنے تھیا سے تھوڑا کنجارہ فکال کرا ہے ہا تھ برد کھا اور دا نتوں سے جا کر صرت خواج کے مشہ بین رکھا جو مزت خواج کے مذہبیں رکھا جو زن تھی ۔ تقور الله بنیا ترف نے کہ اور فیا بنات و ل سے ختم ہونے گئیں۔ تھوڑ سے دنوں ہیں باغ کو بیچا اور مقار نور نیوں میں نواد الہ نیا آت و ل سے ختم ہونے گئیں۔ تھوڑ سے دنوں ہیں باغ کو بیچا اور مقار نیوں میں تھی کردی۔ اور طالب فدا و ندی کے لئے اپنے شہر کو چھوڑ کر سفر کو روانہ ہوئے اور قدائی ما می مقار کیا نیل ہری علوم ما صل کئے ۔ فراغت علوم کے لئے عواق کو روانہ ہوئے اور قد بنہ ما روان ہیں جا پہنچے ۔ یہ قصیہ نمیتنا لور کے قریب علوم کے لئے عواق کو روانہ ہوئے اور قد بنہ ما روان ہیں جا پہنچے ۔ یہ قصیہ نمیتنا لور کے قریب علوم کے لئے عواق کو روانہ ہوئے اور قد بنہ ماروان ہیں جا پہنچے ۔ یہ قصیہ نمیتنا لور کے قریب علوم کے لئے عواق کو روانہ ہوئے اور قد بنہ ماروان ہیں جا پہنچے ۔ یہ قصیہ نمیتنا لور کے قریب علوم کے لئے عواق کو روانہ ہوئے اور قد بنہ ماروان ہیں جا پہنچے ۔ یہ قصیہ نمیتنا لور کے قریب علوم کے لئے عواق کو روانہ ہوئے اور قد بنہ ماروان ہیں جا پہنچے ۔ یہ قصیہ نمیتنا لور کے قریب

تقاران دنون و بال خواج عنمان قدس مرؤ رو هاني تربيت مي مشغول محق آپ مريد ہوئے۔اورکئی سال تک آپ کی فدمت میں دہے۔اورفدمت روحانی سرا انجام دیتے رہے۔ باطنی امور کی تھیل کے بعد خرقہ فلافت ماصل کیا اور پھر لنبدا و کوروانہ ہوئے۔ راستہ میں تصدیر عجان آ ملہے۔ ان ونوں وہاں صرت سنے نجم الدین كبرى قدس سرة تشرلف فراست ال كالمحبت سيفين ياب بهوكر كوة عودى رجال حفزت نوح علیالسلام کی کشتی نظرانداز ہوئی تھی) پر گئے۔ کوہ جوری سے بندادجاتے ہوئے جبلان كاتصبه آب ان دنول جبلال مي صرت سيدناعيدا لقادر جبلاني جلوه فرما تقي جفر غواجمعین الدین اجمیری کچے دن حضرت عوت الاعظم کی مجالس میں رہے ۔ عیر آپ کے ممركاب بنداد يهنع ال وأول لفدا وبس صرت شيخ الشيوخ شهاب الدين بهروردى کے بیرومرشدشنخ ضیا دالدین قدس سرؤموجود تھے حضرت خاجرنے ان کی مجالس میں کچ وقت گزارا۔ اسی مقام بیشنے الشیوخ شہاب الدین سمروری سے ملاقات ہوئی اسى سفر من حضرت خواج موب سبعاني خواج ا وحدالدين كدماني رحمة الله عليه منرف القات بوا- پيرخر قد خلافت عيى الما - و بال سے رخصت بو كر بهدال أئے۔ مدان مي صرت خاج الولوسف مداني قدس سرة سے استفاده كيا. ہدان سے نکل کر آپ نے تیرنز کا رُخ کیا ۔ تبرنز میں ان و ندل حضرت ابو سبید تبریزی رحمة الله علیه حمر شخ جلال الدین تبریزی کے پیرو مرشد تنے علوہ فرما تھے۔

ہمان سے تعلی را پ نے میرو اور کیا ۔ برریی ان و دن صرف بہت بیند جریزی رحمۃ اللہ علیہ جرشنے جلال الدین تبریزی کے پیرو مرشد تھے۔ علوہ فرما تھے۔ حزت خواجر نے ان کی صحبت سے فائدہ حاصل کیا۔ وہاں سے اصفہ آن پہنچے کچھ عرصہ حضرت محوداصفہانی قدس سرہ کی صحبت سے استفادہ کرتے دہے۔ اس دوعانی سفر اور نورانی بزرگوں کی ملاقات کے بعد آپ کو مہندو سان کی طرف جانے کا خیال آیا۔ ماستہ میں آپ کی ملاقات خواجر ابوسعید مہمندی دھمۃ النہ علیہ سے ہوئی۔ وہاں سے اسر آیاد آکی حضرت خواجر ناصر الدین استرآیادی کی مجالس میں قیام فرماتے دہے۔

خواج ناصرالدین اپنے وقت کے عظیم القدرشنے اور کا مل الولایت بزرگ تھے۔ آپ خواج با بزیدبسطامی دعمۃ اللہ علیہ کی اولا دہیں سے تھے۔ ان دنول آپ کی عمراکی ہو ستائیس سال ہو چکی تھی ہروہ بزرگ تھے۔ جن کی صحبت میں صفرت ابور میدا لو النے اور شنے ابوالحسن خرقانی رحمۃ اللہ علیہ اجیے نامدار مزرگ سے بھی استفادہ کرتے رہے تھے وہل سے چل کہ عزیق بین بن شرافیت لائے۔ وہل شنے العارفین شنے عبدالوا مدعز نوی ہرشنے نظام الدین الو الموید اللہ علیہ کی مجالس سے استفادہ کو سے حضرت خواج معین الدین الو الموید کی صحبت سے ستفیض ہوئے تھے۔ حضرت خواج معین الدین ال مفروں میں مختلف اولیا وقت سے استفادہ کو سے دان ممالک کے اولیا نے کہا دکی مجالس سے مستفیض ہوئے کے دھڑت خواج معین الدین الدین الی مفروں میں مختلف اولیا ہوئے کے اید این مالک کے اولیا سے کہا دکی مجالس سے مستفیض ہوئے کے اید این مالک کے اولیا ہے کہا دکی مجالس سے مستفیض موٹ کے اید این کا وقت کے اید این کے ایک کے اید این کے این کی اید کی کے ایک کے اید این کے ایک کے اید این کے ایک کے ایک کے اید این کے ایک کے ایک

حنرت خاج فريدالدين كنج تنكرا جدمني فدس مرؤ فرما ياكرتے تھے كرجن دنوں حضرت خواجرمعين الدين اجميري رحمة التدعليه اصفهان من تشرلف لائے-تو خواج محود اصفهانی کومعے - انہی دنول قطب الاقطاب بختیاراوشی رحمته الله علیه و مل پنجے موئے غفے - صرت تطب الا تطاب كى خواسش عقى كەخماج محوداصفهانى سے بعیت ہول گر جب خواجمعین الدین کو دیکھا۔ توبعیت کے لئے استدعا کی اور مربدین گئے۔ وہاں سے دونول بزرگ ہرات بہنچے۔ ہرات میں ان دنول باد گار نامی ماکم مکومت کر رہا تقاءوه اعتقادى طوربيراما ميشيعه تقاءوه نهايت ابننام كحرسا تقصحا ببريسول كو كاليال دياكرتا تقاءوه يهال تك سخت شيعه تقاكهاس كي رعايا بي الركوني شخص لينے بيلي كانام الوكبر ياعتمان ما عمر ركه لينا توده أسة قتل كرديتا تقارصرت واجروال ينج تواتفاق سے محد ماد كارك فاص باغ مين قيام پذير ہوئے اندرا كي وض تقا - آب اس وض کے کنارے رہنے گئے ۔ ایک دن محد مادگارا بنی سیرکو آیا۔ تو حزت خواج کوعن کے کنارے دیکھ کرعفنب ناک ہوگیا۔ ابھی وہ آپ کووہاں

ے نکالنا ہی چاہتا تھا کہ صرت خواج کی نگاہیں اس کے چہرے پر پٹریں تو وہ فداً ہی آپ کے پاؤل پر ہمگرا اور ہے ہوش ہو کو ترشینے لگا بھزت خوا جرنے اُسے اِکس مالت میں دیکھا تو حض سے یانی لے کراس کے چرے رچینٹی ماری تووہ ہوش میں آگیا حضرت خوا حبر کی نگاہ اور مانی کی چینٹوں کا بیرا تر ہوا کہ اُس کے ول سے صحائب كلام كے بغض دُهل كئے .اور مذہب شيعه كے عقيدے سے تائب ہوگيا اور اپنے دریارے امراء اور اراکین کونے کرحضرت خواجرکامریدین گیا۔ اپناتمام مال اور خزانه صرت خواجر کی قدمت میں میش کیا۔ آپ نے قرمایا بیرمارا مال تمہارا ہے۔ میکہ ان لوگول کاہے جن سے تم نے ظلم وستم کر کے چینیا ہے۔ بہتر ہی ہے یہ سارا مال ال كو واليس كمه ديا جائے اپنے بلك غلامول اوركنيزوں كو آزاد كرو - تاكرتہيں غلا شناسی کامو تعرط وہ کچھ د نول صرت خواج کے زیر تربیت رہا اورخ قرفلافت عاصل کیا۔ آپ نے اسے ہرات کی ظاہری اور باطنی خلافت بیا مور فرما دیا۔ ہرات سے میل کرحفرت فوا جرائے پہنچے ۔ جندون شخ احدخفز و ید کے یا س عالم و بال ابک صنیار الدین نامی هکیم تھا۔ جو را اسی مغرور اور حکمت بیں مشہور تھا۔ وہ اوليا والنداور دروليثول كامنكر تظارايك دل حضرت خواجر دامن كوه كي ايك وادى مِن عالينج اورايك كلنك كوايت تيركانشانه بناكرا ك مي كباب بنارس تفيك خکیم ضیاالدین تھی اتفا قا اوھرا نکلا وہ حضرت خواجہ کے پاس بیٹے گیا حضرت خواجہ نے ایک ہوئے گوشت کا ایک مکر احکیم کو بھی دیا۔وہ کھاتے ہی زمین برگر مرااور بے ہوش ہوگیا۔ ہوش میں آنے کے بعد نہایت اخلاص کے ساتھ مرید ہو گیا اور حکمت کی ساری کتا میں دریا میں تھینک دیں۔ بلخ سے دو بارغز نبی ائے۔ ہماں سے پہلے مس العارفین کی شہرت کا ذکر کرچکے میں۔ آپ وہاں سے چلے تو لاہور ہنچے۔لاہورمیں دس ماہ تک مخدوم علی ہجویری لا ہو۔ی رحمۃ التدعلیہ کے

مزار برُیانوار براعتکاف فرما یا۔ آپ کے مزارے آپ نے بے بناہ باطنی فدائد مالل کئے۔ لاہورسے روانہ ہوکر دہلی بنتجے۔ کچھ دن دہلی تیام فرماکر دسویں محرم پانجیواکسٹھ ہجری کو درالیز اجمیر می رونق افز او ہوئے۔

اجمیریں سب سے بہلے جس تفص نے نزب الادت عاصل کیا وہ میرسید حین فئگ سوار سے آپ بہلے جس تفص نے نزب الادت عاصل کیا وہ میرسید حین فئگ سوار سے آپ بہلے جس تفص نے میرسید حین کے مرید ہونے کے لبد ہزاروں مرید ہوئے اورا علی مراتب ہی خدمت میں عاصر ہو کر مرید ہونے گے۔ ان میں سے اکٹرلوگ بجوٹے جاسلام سے منٹرت ہو کور صفور کے مرید ہنے جقیقت یہ ہے کہ مرز بین بغیر مسلم تھے جواسلام کی شمع اسی خاندانِ عالی شان کے طفیل روش ہوئی۔ اجمیر میں اسلام کی شمع اسی خاندانِ عالی شان کے طفیل روش ہوئی۔ اجمیر میں ایک شخص صفر ن خواج معین الدین کی خدمت میں دستا ہوا حا مزہوا احتیار میں ایک شخص صفر ن خواج معین الدین کی خدمت میں دستا ہوا حا مزہوا

اجمیر میں ایک شخص صفرت خواجر معین الدین کی خدمت میں دہتا ہوا حاضر ہوا
اور عرض کرنے لگا کہ اس علاقے کے طاع حاکم نے میرے بیٹے کو بغیر کسی گناہ اور جوم
کے قتل کردیا ہے میں آپ سے امداد کا خواستگار مہوں اور الفعا ف کا امید وار ہول
حضرت خواج نے جب بیربات سُنی تو اپنی حکمہ سے اُسطے بقتو ل کی لاش کے پاس
بہنچ اور فر با یا کہ لے نوج ان اگر ظالم حاکم نے تجھے ناحی قتل کر دیا ہے تو اللہ کے
حکم سے ذندہ ہوجاؤ بمقتول نے اُسی وقت حرکت کی اور ذندہ ہو کرا گھ بیٹھا۔
حضرت خواج معین الدین بہی بار اجمیر بہنچ تو شہر کے باہر ایک ایسے درخت
عضرت خواج معین الدین بہی بار اجمیر بہنچ تو شہر کے باہر ایک ایسے درخت
اجمیر کے داج کے اونٹ بیٹھاکرتے تھے۔ رات کو
اجمیر کے داج کے اونٹ بیٹھاکرتے تھے۔ رات کو
مرکاری اونٹوں کے لئے مقرب ہے۔ آپ کہیں اور نشر لیف سے جائیں۔ آپ نے
مرکاری اونٹوں کے لئے مقرب ہے۔ آپ کہیں اور نشر لیف سے جائیں۔ آپ نے
مرکاری اونٹوں کے لئے مقرب ہے۔ آپ کہیں اور نشر لیف سے اُسے گھ کوانا ماگر

تھے۔ رات گزرگئی۔مبع سار بانوں نے کوشش کی کہ اونٹوں کو اٹھا میں مگر کوئی اونط اُ طفے کا نام مذلیا تھا۔ ایسامعلوم ہوتا تھا کرام ن کے بینے ذین کے ساتھ پویت ہو چکے تھے سار بانوں نے جان لیا کہ یہ اُس فقر کی بددعا کا نتیجہ ج جے سم نے الخاديا ہے وہ تمام حضرت خوا جرى خدمت ميں حاصر ہوئے۔ اور سارا واقعینا يا آپ نے فرما یا کہ عاور اللہ تعالی نے اونٹوں کو اُسطفے کا حکم دے دیا ہے۔ ساربان حب والسي ينع قوانبول نے ديھاكرسارے اونٹ اپني علكر يركھ طے تھے۔ یہ خرسار سے شہریں بھیل گئی۔ اسلام کے دشمی جمع ہوئے اوراجمیر کے راجے کے پاس تمایت کی اور کہا۔ یہ ایک بیگانہ آدمی ہمارے بہت خانے کے پاس سکونت بنائے بیٹیا ہے بونکداس کا مذہب غیرمذہب ہے ہم دہاں نہیں جا سکتے اُس کو وہاں سے جانے کا حکم صادر فرمائیں۔ اجمر کے راجہ نے اپنے بابیوں کو علم دیا کہ اس فقر کو تالاب کے کنارے سے اُکھ کر ملے سے بالبركرديا جائے را جركے ساہى فاصى تعدادىس ينجے مصرت فواج كے ماتھ كليظ متروع كرديا حضرت خواجر نے مٹی كی معنی اتطائی اور آئیت الكرسی بالم هدكران كی طرف پینکی اُن دوگوں کے حبم خشک ہو گئے۔ اورجہاں جہاں وہ تھے وہاں ہی سیقر بن گئے۔ جو دور تھے وہ دیکھ کر بھاگ گئے۔

وسرے دن اجمرے ہندوا ہے بت فانے کی پوجاکے سے تا لاب کے کارے پہنچے۔ان کامہنت رام دبوبڑی تعداد ہے کرو ہاں پہنچا اور صغرت خواج کی طون آگے بڑھا۔ اور میں اتنی خواج کی طون آگے بڑھا۔ اور ہی دہ نزدیک آیا کا بینے لگا۔اس کے دل میں اتنی دہات بھیلی کہ وہ اپنی زبان سے کلمہ تنہا دت پڑھتے ہوئے آپ کا مربد ہوگیا۔ اُس کے ہاتھ میں جو کوری یا بچر آیا اُسے اُٹھاکر ہندول کی طرف جینی کا اور انہیں بایشان کر کے بھیگا دیا جھڑت خواج نے رام دیو کی میر خدمت دیکھی تویانی کا ایک بیالہ جر

کرائے بینے کو کہا۔ پانی پیتے ہی اُس کے دل کا شیشہ صاف ہوگیا اوراس کا چہرہ چکتے لگا اور صدق دل سے آپ کا مرید بن گیا حضرت خواج نے اُس کا نام نادی دید سکھا اور ابنی تربیت میں ہے لیا۔ شادی دید ہندی زبان میں مرت بخش کو کہتے ہیں۔ اِس کوامت کے واقعہ ہونے کے لبدا جمیر کے لوگوں نے یہ تیجہ افذکیا۔ کہ یہ خض بہت بڑا جا ووگر ہے اوراس کے مقابلے میں کسی بڑے جا دوگر کو بلانا چاہئے راج اجمر نے جو گی ہے بال کو جو جا دوگر ہی کے فن میں سار سے ہندوت ان میں اپنا نیا ہے تانی نہیں رکھتا ہے اوراس کے مقابلے جا دو کے نورسے اس شخص کوشکت نانی نہیں رکھتا ہے اوراس کے دیا کہ اپنے جا دو کے نورسے اس شخص کوشکت دی جائے۔

جے پال ایک ہزار یا نے سوجا دو گروں کونے کرا جمیر پنجا۔ اور را جری فدمت یں عاصر ہو کہ کہا کہ اب ہم اُس سے مقابلہ کریں گے۔ جے پال کی قیادت میں اتنے جادد گرصزت خاجمعین الدین کے پاس پنج آپ اعظے - تانہ وصور کیا اپنی لاعظی كے ساتھا پنے تمام ساتھبول كے إرد كرد ايك مكير سينى اورا علان كياكم انشارالله اس مكيركاندر ماركسي دشمن كوائے كى جرأت نه ہوتى ينانچ بو بنى كسى نے اس مكرے آگے بيسے كى جرات كى وه مذك بل كر بيا۔ ناچاروه لوگ والي بوسك اور الناساكر كے وق كارے بر مبل كئے أن كى اس حكت كامطلب يہ تقاكم صرت خاج کاکون ساتھی حوض سے پانی مذمے سکے بنانج پانی کو بندکرد پاگیا مضرت خاج فنادی دیونوملم کوحکم دیا کدوه اسگ جاکوکی طرح حص کے یانی سے ایک بیالہ بجرلائے وہ اُنھاا وروض کے پانی سے ایک پیال بحرلایا اس پانی کے پیالے میں سادے حض كا يانى سمك كبا اور حوض خالى بوكبا ويول معلوم بوتا تفاكراس وعن میں کھی پانی بھا ہی نہیں حضرت خاص کے تمام مریداسی پیایے سے پانی پیتے وضو کہتے لیکن پانی کم منہ ہوتا۔ دوسری طرف حرض کو یانی سے فالی یا کرتمام جا دو گر تنگ

آگئے۔ لبین توبیاس کی وج سے ہلکان ہوگئے ہے پال خدا تظااوراس کیر کے کنارے پر کھڑے ہو کہ باید اور ہی ہے کارے کا کارے پر کھڑے ہو کہ باید آواز سے کہنے لگا کہ اللہ کی مخلوق پیاس سے مرد ہی ہے تم اپنے آپ کو نقیر کہنے ہو۔ نقیر لؤرجم دل اور سخی ہوتا ہے۔ اب دا درسی کا تقامنا ہے کہ بندوں کے لئے پانی کھول دیا جائے ۔ صرت خواج نے جے پال کی میر بات سنی اور شادی دلو کو مکم دیا کہ میر پانی کا بیالہ الاب میں انڈیل دیا جائے جو بہی بیالہ تا لاب میں انڈیل دیا جائے جو بہی بیالہ تا لاب میں فرالاندین میں جوش آیا اور تا لاب بیاب جرگ ہے۔

اب جادوگروں نے اکتھے ہو کرما دوگری کا آغاز کردیا۔ خواج صاحب کے ساتھے ہو كوليل دكھائى دينا تھاكر بيا لى چ يول سے ہزاروں اور لا كھوں سانپ أس كليركى طرف بلهد بسه بين بونهي كوئي سانب مكير تك بيتيا تواپيا سرلكير مير د كله ديتا جيال يدد كيه كربرا بريتان بوا-اب اس في جادو كرول كوكها كم ساتول من اكربرادو-د عصة بي و عصة اتنى آگ برسى كرمارا حبكل الكارول اور شعلول سے بجر كيا بېزارول درخت آگ میں جلنے ملے لیکن اللہ کی مہرمانی سے اس دائرے کے اندرآگ کاکوئی اٹر یز ہوا۔ جادو گروں نے جب میر بات دیجھی کہ اُن کے ارد گر د کاسارا علاقہ جل کیا ہے۔ مرصرت فاج کے دوستوں کو آنج تک نہیں آئی توجے پال کو کہنے مگے کوئی اور كام كرنا چاہئے۔ جے يال كے سربر بران كے چواے كا ايك محلوظ تھا۔ ہوا يس تعييكا اور على الكراكس من سوار موكيا اوراسان كيطرت بدوازكرت نظر آن مكاره ويعية ہی دیکھتے لوگوں کی نظروں سے غائب ہو گیا۔حضرت خواجے نے جے پال کو اس طرح السنة بوئ ديجاتو فوراً اپنے جرتوں كى طرف نكاه كى اور فرما يا كم جا داور جے پال كو برتر بن مالت میں دالیں لاؤ۔ دونوں جمتے ہوا میں اُڑے اور جے پال کے سرید كركف لك بهد ج يال كومجوراً والس منايرا وندهال موكر روف لكا ورا بنا سر حفرت خاج کے قدمول میں رکھ دیا اور کلمئر نتہا دت پڑھ کرملمان ہو گیا۔اور مرمد

ہوگیا۔اس نے التجاء کی کہ میں قیامت تک زندہ رہنا چا ہتا ہوں۔آب نے دعا کی اور فرما یا جا اُ تہیں دائمی زندگی مل گئی ہے۔لیکن لوگوں کی نظروں سے پوشیدہ رہوگے۔ یہ بات مشہورہے کہ جے پال ابھی تک اجمیر کے پہا ڈوں میں تجیبیا ہوا ہے جو ہرجمع ات حضرت خوا جر کے روضے کی زیادت کو آتا ہے۔

اجمیرکے داجہ نے بے پال کوشکست خودہ و دیکھ کرشادی دیدی طرح اس سے بھی مایوس ہوگیا۔ تو ستہر میں دا پس چلا آیا اور دل میں عہد کر بیا کہ اب صرت خواج کی خالفت نہیں کروں گا۔ کچھ د توں لبد صرت خواج بھی اجمیر شہر کے اندر تشرلف کے آئے اورا کی سکان میں رہنے گے۔ یہ مکان اسی جگہ واقع تھا۔ جہاں ان د نوں آپ کا مزاد ہے۔ ایک دن خواج اجمیری نے اجمیر کے داجہ کو پندو نسایے کی اور ترغیب کی مزاد ہے۔ ایک دن خواج اجمیری نے اجمیر کے داجہ کو پندو نسایے کی اور ترغیب دی کورا جراس ام قبول کرنے۔ مگر اس نے انکار کردیا۔ اس کے اسلام لانے سے مالیس ہو کر فرمایا۔ م

گیم بخت کے را کہ با فتند سیاہ بہ آب کو ٹر ہر گرز سفید نتواں کر د

اوراجیر ریجاد کرے گا کچے دن گذرہ ہیں تنے کوسلطان سنایا الدین غوری اور اجمیر ریجاد کرے گا کچے دن گذرہ ہی تنے کوسلطان سناب الدین غوری مختصر سالشکر نے کہ دوشان برجاد ہور ہوا۔ اس نے اجمیر پر نہ دوست بلغاری اور اس جگ میں راجا جمیر کوفتل کر دیا گیا .مگر داجر سنچنو دا کو زندہ گرفتا دکر لیا۔ داجر بیخورا ان دنوں دہلی کا حکمران تھا۔ اور داج اجمیراس کے ماتحت اجمیر کا حکمران تھا۔ اور داج اجمیراس کے ماتحت اجمیر کا حکمران تھا۔ اور داج اجمیراس کے ماتحت اجمیر کا حکم ان تھا۔ ان دنوں دنیان میں آمد ہوئی تو بیجورا ان دنوں دائے بیخورا کے ملائد موسان میں آمد ہوئی تو ان دنوں دائے بیخورا کے ملائد موسان میں آمد ہوئی تو ان دنوں دائے بیخورا کے ملائد موسان تھا۔ دہ فرمادی کو تنگ کیا۔ بیمسلمان حضرت خواج معین الدین دحمۃ اللہ علیہ کامر بدخاص تھا۔ دہ فرمادی

www.inakiabah.org

بن کر صرّت تواج کے صنور آیا بصرت نواج نے داجہ بیتھوداکو سفارش کی اکس غریب کی دا درسی کی جائے۔ مگر راج نے کوئی پرواہ نہ کی بصرت فواج اس بات پر سخت ناراض ہوئے۔ اور فرما یا۔ ہم نے راجہ پتھوراکوزندہ کرفتار کرادیا ہے۔ جنانچ الیا ہی ہوا۔

سلطان فطب الدين بلك سلام بي دبل ك فتت برملطا تقا اوراسي سال را چه پخوراکوزنده گرفتارکرلیا گیا تفا- ایک دن صرت خوا جراجمیر کے نواح میں جارے تھے۔ شنج علی نامی مرید آپ کے سمر کاب تضاویاں ایک شخص آیا۔ اس نے اتے ہی شنخ علی کو کیڑ لیا۔ اور کہا کہ میرا قرضه ادا کروورند میں تمہیں نہیں تھیوڑول گا بیصورت حال دیکھی توصرت خواجرنے بیٹری انکساری اور نرمی سے قرص خواہ کو کہا ۔ کہم اسے تقوری سی مہلت دے دو - بیرق فن ادا کردے گا جنرت خواج کی اس نری کی برواہ نہ کرنے ہوئے وہ تحق نہایت ہے ادبی سے بولا -اگرامس کی مفارش اتنی ہی اچھی مگتی ہے تو مجھے اپنی جیب سے قرض دے دواس کی یہ بات س كر حضرت خوا جركوعْت آگيا-اورايني عا در زمين بريجهادي و يکيفته بهي ديکيتاس عادر بردر مرد فیار برسنے لگے۔ آپ نے اس بے ادب قرض قوا ہ کو کہا تم اپنا قرصنه اعطالا- مراين حق سے زيادہ مذاينا-وه شخص آگے بيدها-اورالا لي كرت ہوئے اپنے من سے مزید رقم اعلی نے لگا ۔ گراس کا با تقداسی و تت خشک ہوگیا اب چلانے لگاتو بر كے صرت فواج كے قدمول مي كر بيار صرت نے دست شفقت عیرتے ہوئے اسے معات کر دیا اور اس کا ہاتھ تندرست ہو گیا۔

یہ بات ا زرد نے تحقیق درست قرار دی گئی ہے کر حضرت خواج کی دوا ہلبہ عقیں۔ ایک توسید وجہیم الدین جو صفرت خنگ سوار کے مامول تھے۔ کی مبیلی تقیس۔ ان کے والد مزرگوار نے حضرت امام جعفر صاحق رصنی السّرعنہ کے باطنی حکم سے آپ

سے نکاح کردیا تھا۔اس بی بی کا اسم گرامی بی بی عصمت تھا۔ان کے بطن سے تین بيتے ہوئے تھے۔خواج الوسعيدخواج فخوالدين خواج حمام الدين قدس سرمم-جن لوگوں کا بیرخیال ہے کہ حضرت لاولد تھے۔ ان کی بات قابلِ اعتبار منہیں ۔ کیو نکہ حضرت سلطان التاركين شخ عميد الدين صوفي ناگوري رحمة الله عليد كي يوت شغ فرمد قدس سرهٔ اپنے دا دا کی زبا فی تھتے ہیں کہ ایک دن صرت خواجبہ معین الدبن سخری رحمته الله علیه نے اس غلام کو مخاطب کر کے فرما یا جمید الدبن جن د نول میں جوان اور توا نا تھا۔ا دراہمی میری اولاد نہیں تھی۔ میں اپنے اللہ سے جو کھ طلب کیا کہ تا تھا۔ بلا تکلف مل جا یا کہ تا تھا۔ اب میں بوڑھا ہو چکا ہول اور مجھے اللہ نے اولاد ، فرزند) بھی عطا فرمائے ہیں میرامقصد دعاؤں اور تداؤی سے حاصل ہو جاتا ہے جمیدالدین نے عرض کیا حصنور آپ ہدیہ بات تو واضح ہے کہ جب مک حصرت علیا علیا اسلام حضرت مرمے کے بطن سے پیدا نہیں مونے تھے آپ کو بے موسم میونے میٹر آیا کرتے تھے۔ بیمیوے بے تکلف اور بلا استدعا ملاكرت عظ حب صرت عيني عليداسلام بيدا بوئ توصرت مريم رزق كاانتظار فرما ياكرتى تخيس اورعكم موتا تحا- كمال تحجورول كي شاخول كوملائي تاكەتانە كىجورىي گەس تواب شاخول كوملاتىن توتانە كىجورىي گرتى تىس اپ كے ساتھ بھي سابقدايام زندگي اور آج كے حالات بي اتنا فرق ہے حضرت خواج معین الدین نے بیرجوا ب سن کربطی مسرت کا اظہار فرما یا۔

تذکرول میں لکھا ہے کہ حضرت خواجہ معین الدین انجمیری کے بیٹے الوسعید کی عمر بچاپ سال ہوئی تعلقی کہ الند نے انہیں دو بیٹے عما بت فرمائے ، آپ کے دوسرے بیٹے نیز الدین بڑے بزرگ اورصاحب نعمت بزرگ تخفے وہ حضرت خواجہ معین الدین سیخری دعمۃ النّدعلیہ کی وفات سے بیس سال لعد ٹک زندہ رہے اورسر

سال کی عمرس انتقال فرمایا - ان کے پانچ بیٹے تھے ، وہ تصبہ سروار جوا جمیرسے سولہ میل کے فاصلہ رہے - فوت ہوئے تھے - ہپ کا مزار بھی و ہاں ہی ہے -

یں سے مام الدین حضرت خواج کے بیٹے کہیں گم ہو گئے تھے۔ وہ ابدا لوں کی مجاسی مل الدین حضرت خواج کے بیٹے کہیں گم ہو گئے تھے۔ وہ ابدا لوں کی مجالس میں مل گئے تھے اس و قت آپ کی عمر نبتا لیس سال مقی ۔ ان کے سات بیٹے تھے ان میں سے خواج حمام الدین سوخۃ بڑے معاجب میں سے تھے۔ آپ کی قبرا جمیر سے مغرب کی طرف قصید سائرہ میں ہے۔

حضرت خاج کی دوسری بیدی مندوت ای کے داجا وال میں سے ایک راج کی بیٹی تھی قلعہ بٹیلی کا حاکم حیر کا نام ملک خطآ بھانے ہندووں کے ایک علاقہ پچل کیا۔ بہت سے ہندو مارے گئے اور داج کی بیٹی کو گرفتار کرلیا اور صرت خاج عین الدین اجمیری کی خدمت میں بطور ندرانہ بیش کی۔ ہے نے اسے قبول فراتے ہوئے اس سے نکاح کرلیا۔اوراس کا اسلامی نام امتہ آلٹررکھا۔اس عفت ماب بی بی کے بطن سے ایک بدیٹی پیدا ہوئی جس کا نام حافظ جال تھا۔ یہ ہڑی عابدہ . زاہدہ اور ما رساعتی ایپ کوابنے والدسے بڑی ادادت عقی - آب نے اسے روحانی ترببت دى اورخر ذرخلافت سے بھى نوازارا وراسے مستورات كى بدايت اور تنبيغ کے لئے دقف کر دیا جیا نج مہندوتان میں ہزاروں عور تیں آپ کی کوش شوں سے قرب المی کے درج کو پہنچیں وافظ جال کے خاو مرکا اسم گرامی شنخ نفتی الدین تھا۔ بی پی ما نظر جال کامزار صرت خواج کے مزار کے سپومیں ہے۔اس بیٹی کے علاوہ آپ کی اس بیوی امتد الله کے دو بیٹے بھی سیدا ہوئے. مگر دونو اسٹیر خوار کی کی حالت میں فوت ہو گئے۔

يادرب كرحض فاجمعين الدين اجميري رحمة التدعليد كي بي شارخلفاء

تے۔ اور لاکھوں لوگ فیض یاب ہوئے۔ ہم بترگا چند خلفائے معروت کے اسمائے گرامی مکھنے میاکتفاکرتے ہیں۔

ا وّ ل قطب الا تطاب خوا حرقطب الدين تختيار كا كى اوىشى رحمة الله عليه ووم خواج فخزالدین دحفرت کے بلیے، تیسرے شیخ عبدالدین ناگوری صوفی بھارم شیخ وجبرالدين بنجم شخ حميدالدين صوفي رآپ كالقب سعدين زيد تقاا ورات كي نسب عشرمبشراسه جاملنا سي كششم خاجربه بإن الدين عرف بدوم فتم شيخاحد هشتم شيخ محس نهم خوا حبسليمان غازى ويهم شيخ شمس الدين بإيذ ديهم خواج سوخياط ووازديم ج يال جركى المعروف عبيدالله داب كوصرت خواج كى دعاسه جاوداني زندگی ملی تقی سنبرد مهم ضخ صدرالدین کرمانی جهارد سم بی بی عافظه جال (احضرت خواجر كى بيطى ، پارزد بهم شيخ محرتوك ناديوى شا ندد بهم شيخ على بجزى مفتد مم خواجر یادگا رسبزواری برونهم خواج عبدالندبیا بانی نوردیم شخ متا دصرت خواج نے آب کے لئے دعا فرمائی. توآب لوگوں کے لئے ہردلعزیزین گئے۔عام لوگ آپ كالول د بزار بطور ترك ب ما ياكرت عقد ان سعطرا ورعير كي خرشور ياكرتي عقى لبنتم شخ وحيد مراورشخ احد لبالي وليم ملطان مسودغانري رحمة الله عليهما مجعين ياد ربے کہ برسلطال سعود غانری سلطان سالار معود غانری شہید کے علاوہ ہیں-ان كامزارتصبه روائج مي ب حن حضرات فسالار معود غازى شبيدكو آئے فلفاء میں مکھا ہے انہیں غلطی ہونی ہے حضرت خواج کی وفات اور سالا رستہید کی وفات میں دوسوسال کا فاصلہ ہے۔

سیرالا قطاب کے مولّف مکھتے ہیں کہ جس دن حصرت خواج معین الدین اجمری رحمتہ اللّه علیه کا وصال ہوا آپ نے نمازعشا دکے بعد اپنے جرے کا دروازہ بند کر دیا اور اپنے خاص احباب کو بھی اندر آنے سے روک دیا۔ تجرے کے دروانے پر

بلیظے والے عربان ما زماری دات آنے جانے والوں کے قدموں کی آواذیں سنتے دہے ۔ انہوں نے سوچا حضرت خواجہ وحد ہیں ہیں ۔ گرعلی السبح آواڈیں رک گئیں بناز کا دقت ہوا ۔ دروازے پر دستک دی گئی ۔ آوازیں دیں ۔ گرکوئی جاب نہیں آیا ۔ دروازہ کھولا گیا ۔ دیکھا کہ صفرت خواجہ فوت ہو چکے ہیں ۔ آپ کی بیٹیانی پر نور کی روشنائی سے لکھا ہوا دکھائی ویتا تھا۔ حکیبہ اللہ مات فی محب اللّٰہ دیم الله داد الله دیم الله

صرت خاجرمین الدین سنجی قدس سرؤکی و لادت محسم هی به به بی تحقی اور تمام تذکره الکارول کاس براتفاق ہے۔ آپ کا دصال بیرششم ماہ جبالم جب سلام هیں ہوا۔ بیسلطان شمس الدین البتن کا عہد عکومت تھا۔ آپ کا روضته منوره وارا لخراجیر سر لیف میں ہے پہلے آپ کا مزار ساوہ امنیٹوں سے بنایا گیا تھا۔ اس کے بعد بیچے وں سے عارت بنائ گئی۔ آپ کا مزار ایک عرصہ بک عام تھا۔ اس کے بعد بیچے وں سے عارت بنائ گئی۔ آپ کا مزار ایک عرصہ بک عام کے بعد باد شاہان مہندوت ان آتے رہے اور آپ کے مزار کو شا ندار عارت کی ہوت کے بعد باد شاہان مہندوت ان آتے رہے اور آپ کے مزار کو شا ندار عارت کی ہوت کے روضہ کی عمارت کو بنایا اور ساتھ ہی ایک شاندار مجد تعمیر کو ایک۔ اس مزار کو اللہ من اور ایک قبولیت اور میں میں دعاؤں کی قبولیت اور میں عام اور اس مناز میں دعاؤں کی قبولیت اور معاون برادی کے مزار دول واقعات سامنے آتے ہیں۔ وعاؤں کی قبولیت اور معاون برادی کے مزار دول واقعات سامنے آتے ہیں۔

ا جیر شہر کی وجر تسمید یہ بیان کی جاتی ہے جے اخبار الاخیار کے مصنف نے کھی ہے کہ رہائے دار کے مصنف نے کھی ہے کہ رہائے دار میں ہندوتنان رہا یک راج حکم ان تھا جس کی سلطنت رہا سے لیے کرعز نی تک بھیلی ہوئی تھی۔ اس راج کانام آجا تھا جے ہندی ذبان میں آخا ہے اس طرح اس میں آفا ہے۔ اس طرح اس

شهر کا نام اجا میرد کھا گیا۔ چانچ مهندی میں اس شهر کا نام آج میریا آجا میرد کھا گیا۔ گرمر و رند ما نہ کے ساتھ ساتھ نہ بان میں تبدیل آئی تواسے اجمیر مشہور کردیا گیا۔ لا ہور کا بہا نا نام لوہو لویہ تھا۔ بھرائی۔ وقت آیا تومسلمانوں نے اسے لوہا و ساور بہا فد کہنا سٹروع کر دیا۔ آستہ استہ بہنام لا ہور کے نام سے شہور ہوگیا مصرت کی وفات برسب سے پہلے ہی جانے والی تاریخ وفات یہ ہے ہے خواج والامعین الدین کو از افوارا و گشت دوش در دوعالم ماہتا بر مک تہذ موسٹر در نورج بی ای مرجی نے شیار انوار کی سے دستہ دوش در دوعالم ماہتا بر مک تہذ

اپ وقت کالابر معرف فواج قطب الدین بختیار کاکی فدس مرف اولیا اوراجل اه فیا میں سے شار ہوتے گئے ہے۔ بڑے عظیم النان ولی الله اور متجاب الدعوات تھے۔ آپ کی زبان مبارک سے جو کچے نکلتا الله کی بارگاہ میں مفبول ہونا تھا۔ آپ خوتہ ارادت و فلانت مصرت فواج معین الدین سخری الجمیری قدس مرؤ نے عطافر مایا تھا۔ آپ سادات اوش میں سے تھے۔ اوش ما در االنہ میں ایک قصید ہے۔ آپ جمینی سید سے آپ کانب مصرت امام جو فرصادت تک یوں پہنچا ہے۔ خواج قطب الدین

مراندفاض و لدن مفتی غلام مرود لا بهوری قدس مرؤ نے ال الفظیم تاریخ با نے ولادت دومال کہیں الم مجتبی بایر المرمعتی با برالمیر با عارف صوفی باعدہ دیں زندہ دل برالدجی المام محتبی با سرم موسول با مرم موسول بالا مسلم ما دیا دل بالا مسلم ما مسلم ما

بختیاراوشی سید کمال الدین بن سیروسلی - بن سیدا حداوشی - بن سید کمال الدین بن سيد محد بن سيدا حد بن سيدا سحاق بن سيدا حس بن سيد معرد ف بن سيدا حرصيني بن سيدرصني الدبن بن سيدهشام الدبن بن سيدرسنيدالدبن بن سيدا مام جعفرضي المدينم حضرت خوا جقطب الدين ابھي ايك سال بھي ماه كے تف كر آپ كے والد ما حدانتقال فرمارگئے۔ آپ کی والدہ ما جدہ نے اسے اپنے سائیے عاطفت میں پرورش کی۔ یا پنج سال کے ہوئے تو آپ کی والد صنے اپنی ایک نیک بیرت ہما بی نے زر تربت کردیا -اور تقور یسی شرینی بھی دے دی -اور فرما یا میرے بیطے کو السے معلّم کے جوالے کر تا جوظا ہری اور باطنی علوم سے وا قف ہر ۔ وہ عورت آپ کو لے کواوش سے دوا نہ ہوئی ، راستہ میں ایک پیردوش ضمیرسے ملا فات مولی ابنول نے اس بی بیسے دریا فت کیا کہ اس بے کو کہاں سے جا رہی ہو۔ تبایاکہ کسی اچھے سے مکتب میں داخل کرانے جارہی ہوں۔ آپ نے فرمایا اسے میرے ئردكردو-ين خود ہى اسمعلم كے ياس بے جاؤں كا جواسے علوم مي درجُ كال يك بينيا وسے كاروه بزرگ اس بچے كوحفرت شيخ الوحفص اوشي دحمته المتعطيم كى فدرت مي د كئة اورعوض كى مجھے احكم الحاكمين كاحكم بوائے كرائب اس كي كالعليم وترببت فرما مكي حضرت خواجرشخ الوحفص نے بیجے كے سر بروست شفقت ركها - اوراس بزرگ كورخصت كرديا بح كوفرما يا بينيا إتم برك صاحب بخت ربختیار، ہو کہ خصر علیال وم نے خود آ کرمیرے والے کیا ہے۔ اورالله کا حکمتایا ہے کہ مہاری تربیت کی جائے رصرت خوا جرچار دنوں میں قرآن پاک حفظ کر گئے۔ تقور سے بی دنوں میں علوم ظاہری میں کمال حاصل کولیا۔ آپ بالغ ہوئے تو باطنى علوم كى نلاش بهدئ - اورصنرت خوا جرمعين الدين سخرى رحمة المدعليدكي خدمت میں نہنچے بھنرت خواج نے سرہ سال کی عمر میں خرقہ خلافت عنائیت فرمادیا

ا در آپ اپنے بیردوش ضمیر کے ارشاد مید دہلی کی قطبیت بی فائز ہوگئے۔ آپ دہلی پہنچ مخلوق کی اصلاح میں مشغول ہو گئے۔

حفرت خاج تطب الدین اوشی نے مصروفیت کی بنا پردات کوسونا تدک کردیا یا نج دنول بعدابک بارا فطار کرنے چنکہ خال محری کا پیکر ہے۔ دہلی کے لوگ جوق در جوق مجلس میں حاضر ہونے گئے۔ آپ بھی ہرا دنی اعلیٰ بہنو جرفر ماتے اور اس طرح ہزادوں لوگ دا ہ ہدا بیت ہے چلنے لگے۔

صزت فواچ بختیاراوشی رحمة الله علیه کابیا شخ تحرنامی تقارسات سال کا عربی انتقال کرگیا-اس کی والدہ اس بیٹے کی وفات پر بڑی وروناک آواز بی رور سی حقی بصرت خواج نے آواز سی قولوگوں سے وریا فت کیا کہ بیجا نگداز آواز کسی کی بیجا بھی بیجا کہ بیا گیا بھور آپ کا سات سالہ بٹیا شیخ تحمرا نتقال کرگیا ہے اس کی والدہ دور ہی ہیں - آپ نے فرطیا و اخاللہ وا خاوی کا ش مجھے اس بیٹے کی بیاری کی پہلے اطلاع ہوتی - تو بین اپنے المترسے اس کی صحت کی و عاکر آیا۔

جن دنول حزت فو اجرمین الدین اجمیری سجتان سے برصفی بهندوستان تشریف الائے۔ تو اتفا قاصفرت خواجر بختیا داوشی اورشخ جلال الدین تبریزی و دو توں ایدان سے چل کر صفرت خواجر بہاؤ الدین ذکر یا مل فی رحمۃ اللہ علیہ کی ملاقات کو برصفی سے بوئے سے ایک دن یہ بینوں دوحانی بزدگ ایک مبلس میں بیٹھے سے کہ حاکم ملتان قباجہ خان مجلس میں آیا۔ اورع ض کی صفور تا تا ادی مغلوں کا ایک نشکر ملتان کی طرف بڑھ دہاہے۔ اور شہر کو تاخت و تا داج کرنا چا ہتا ہے۔ جو بکہ تا تا دیوں کا نشکر بڑا ذیر دست ہے جھے مقا بد کی تا بہیں ایک ملتان بی جائے۔ حضرت قطب الدین بختیا دکے ہاتھ آپ صفرات توجر فرا بین تاکہ ملتان بی جائے۔ حضرت قطب الدین بختیا دکے ہاتھ

یں ایک تیر تھا۔ فرما یا یہ تیر لے ہو۔ اور مقابلہ کے وقت تا تا دیوں کے تشکر کی طرف بھیڈیا کہتے ہیں طرف بھیڈیا کہتے ہیں دوسرے دن تا تا دیوں کے تشکر کی طرف بھیڈیا کہتے ہیں دوسرے دن تا تا دیوں کے تشکر سے ایک بھی سیا ہی ایسا نہ بجا تھا۔ جو تیر کے ذخم سے زخمی مذہوا ہو۔ وہ ملتان کا محاصرہ بھیوٹ کروائیں آگئے۔

صفرت خواج تطب الدین بختیار دہلی پہنچے تو آپ نے اپنے پیرومرشد کی فدمت میں ایک عرفیہ لکھا کہ مجھے اجمیر میں حاصری کی اجازت دی جائے جواب میں ارتفاد ہوا ۔ کہ آپ کو دہلی آئی حاصری کی اجازت دی جائے ہم انشاراللہ خود دہلی آئی گے ۔ حضرت خواج ابتدائی طور پرایک نا نبائی کے ہاں دہ کم کش پذیر ہوئے گر کھے دنوں بعد صفرت خواج ابتدائی طور پرایک نا نبائی کے ہاں دہ کم کشری است دعا برال کے ہوئے دنوں بعد صفرت خواج مجمید الدین نا گوری کی است دعا برال کے گر نمت میں ہوئے ۔ ہزارول طالبان حق جوق درج ق حاصر ہونے گئے اور سالم اراث دعادی ہوا۔

صزت خاج کامعمول تھا۔ کہ آپ کسی سے ندرانہ قبول نہیں فرما یا کرتے ہے۔ آپ کے گھر کے قریب ہی ایک بری فروش تھا۔ اس سے قرمن سے کوخ ج کریا کرتے تھے۔ ایک دن آپ کے دل میں خیال آیا۔ کہ آئندہ کسی سے قرض بھی نہیں لینا چا ہیئے یہ بات بھی تو کل کے خلاف ہے اس دن سے قرض بھی نہیں لینا چا ہیئے یہ بات بھی تو کل کے خلاف ہے اس دن سے فرد بھی کھاتے اورد دسر سے احباب کو بھی اسی رو بی سے کھلاتے سزی فرد بھی کھاتے اورد دسر سے احباب کو بھی اسی رو بی سے کھلاتے سزی فرد ش سے قرضہ لینا بند ہوا۔ تواسے تشؤیش ہوئی۔ فائید صفرت خاج مجھ سے فرد ش سے قرضہ لینا بند ہوا۔ تواسے تشؤیش ہوئی۔ فائید صفرت خاج مجھ سے فرد ش سے قرضہ لینا بند ہوا۔ تواسے تشؤیش ہوئی۔ فائید صفرت خاج مجھ سے در بی میں اس نے اپنی ہوی کو صفرت کے گھر جھیا۔ اس نے ساری صورت کا کی در وقی والا ، مشہور ہوگئے۔ در وقی والا ، مشہور ہوگئے۔

ایک دن صرت خوا جفطب الدین بختیار کا کی حوض شمسی کے کما اسے تشریف فرما تھے دوستوں نے رو بی کھانے کی درخواست کی۔ آپ نے حوض کے پائی میں ماجھ ڈالا اورگرم روئی با ہر نکال کر دے دی۔ اور دوستوں کوخوش کر دیا۔ ایک دن با دشاہ دہلی صفرت سلطان شمس الدین نے دہو آپ کا مردیمی تھا، صفرت کی کوامت دیکھنے کے لئے دوئی کی گزارش کی۔ آپ نے اپنی آسیس جباڑی اور چید گرم گرم روظیاں نکال کر دے دیں ر

ایک دن صفرت خواجر حمیدالدین ناگوری کے گھر محیس سماع ہوئی محلی ختم ہوئی توایک خادم نے کہا محبس کے بعد طعام نہا بہت ضروری ہے اس وقت خواج حمیدالدین کے پاس کھانا موجود نہیں تھا۔ بڑی تشولیش ہوئی۔ گرصزت خواج قطب لدین نے فرما یا۔ متام مہما نول کوصفول میں بٹیا دیں ۔خواج فود ہر مہمان کے قریب جا کر اپنے آستین سے دو دو دو گرم روٹیاں اور صلوہ رکھ دویتے یمام اہل مجس سیر ہوگئے۔ کھانا کھانے کے بعدا ہم محبس نے سٹریت محل کے دورایاں نے درما یا جس نے اوراس نے دریں ہیں۔ شریت بھی دے گا۔ حقول کی دیو بعدا ایک نا واقف شخص آیا۔ اوراس نے دوسیر شکر مینی کی۔ آپ نے فرما یا۔ اس شکر کا شریت بنا یا جائے اور تمام مہما نول مورسی کے ایک اورائی کے دوسیر شکر مینی کی۔ آپ خود اسے مرا یک مہمان کو شریت بنا یا جائے اور تمام مہما نول میں توگئے میں سرتری کا کو زہ ایجھی کے جو ایس ایموا ہوا تھا۔

ایک نمان آیا که دم فی قط کی زدمین آگیا گندم کے دانے دوتی کے جا فی گئے گئے تاہزادہ سعدالدین نے اپنے سرکاری کا رندوں کو جندسیر آٹا دے کر کہا کہ تنور سے سو سیاں تیاد کو الاؤ ۔ درباد کے سیاہی آئے اور اس نا نبائی کو روٹیاں کیانے کو کہا۔ نا نبائی نے تنور میں دوٹیاں تولگادیں گرخود کسی اور کام میں شنول ہوگئے موٹی حتی کہ منام روٹیاں جل کہ فاکتر ہوگئیں۔ سبابی غضے سے لال ہو گئے

انبائی کو کمیدا-اس کی گرد کی میں ڈالی-دونوں بازو با مدھ دیئے-اور شاہزاد ہے کے پاس سے چلے-اتفاقا اسی داستہ سے صرت خواج قطب الدین کا گزر ہوا۔ نا نبائی کو اس حالت میں دیجھا توسیا ہیوں کو کہنے گئے-اس ہیجارے کو چوڑ دو۔ تہاری روٹبال تیا دہوجاتی ہیں۔ آپ کی یہ بات سن کربیا ہی ہنس دیئے اور کہنے گئے یہ تحض دیوانہ ہے جلی ہوئی دوٹیاں کو درست کو تاہے۔ آپ نے فرایا تہمیں اس سے کیا۔ مجھے وہ تفرر دکھاؤ تنور ہر پہنچے۔ آپ نے تنور میں ہاتھ فرایا تہمیں اس سے کیا۔ مجھے وہ تفرر دکھاؤ تنور ہر پہنچے۔ آپ نے تنور میں ہاتھ فرایا کہ تمام دوٹیاں نکال دیں۔ حب اس وا قعہ کی اطلاع شاہزادہ معدالدین کو ملی۔ دوٹا دوڑا آبیا۔ اور مربد ہو کہ کما لات روحانی میر فائر ہوگیا

قاضىصادق اور قاصى عمارد بلى كے متہور علماء تقے۔ ابھى انہيں منصب قضانہیں ملا تھا۔ انہوں نے بادشاہ وہلی کو بتا یا۔ کہ اس شہر میں شیخ قطالدین بختيارا ورشيخ حميدالدين ناكورى فيساع كواتنارواج دياس كمعنقريبتمام دملی کے سلمان اسی کام میں لگ جائیں گے۔ اگر آپ کی اجازت ہوتو ہم اس ساع کو بند کردیں۔ بادشاہ نے کہا شرعی معاملات میں اجازت کی مزورت نہیں۔لیکن میراخیال ہے تم دونوں صرات اس معاملہ میں بیٹیان ہوگئے۔ایک دن دونول قاصنیان شهر حفرت خوا جرحمیدالدین ناگوری کے گھر پینے دیکھا کے محلس سماع گرم ہے حمیدالدین وجد کی حالت میں من قطب الا قطاب دست بستہ کھوٹے یں۔ان دنوں دو نوں حضرات کی داٹرھی نہیں آئی تھی۔ ان قامنی حفرات نے آگے برسوكركها - ابل تفتوت كے بال بے ديش روكوں كوملس ماع ميں بنيں أنا جاسية دورتون فواج گان نے اپنا دست مبارک مذبر بھرتے ہوئے کہا ہم او کے نہیں اڑھی والے ہیں۔ قاضیول نے دیجھا تو چرول مردار صیار تھیں۔ دونوں اس کرامت كود يكوكر شرمهار موت اورواليس المكايد

دوباره بادشاه كى فدمت بسيش بوكركف على كداكر بادشاه بين فاصى شرع دعتب مقردكرد س توسم دونول كوابوان تضابي طلب كركم ساع كممتدريباحة كرك فنكست و بسكة بين ما وشاه نه ملاصادق كدفاصى شرع مقردكر وبااوعاد كوصدر جہال كے عهده برمقر كرديا وونول كواسي مرحنى كے مطابق عهدے مل كئے اب وہ بیاسی قوت کے ساتھ مفنوط ہو گئے دونوں کو یا بندکر دیا گیا کہ عل کے ديدان تصنابي ميش موكرمئد سماع برمباحة كريل جصرت قطب الاقطاب فيفرمايا كل تديهار يفاج عقان باروني كاسالار عرس بيديم اس سيغير ما مرتبي ره سكتے عرس كى مجانس ميں مجانس ساع بھي منحقد ہوں گی- اگر كوئ اور دن مقرر كرليا مائے تو ہم میا حد کر نیاد میں - قاصی نے اس سرط بیبدت دی کرس کی تقریبات برمجانس سماع منقد منبی کی جایش کے اور لوگوں کا اجماع منہ ہونے بإحرف آب وونول معيى فواج قطب الدين مختيارا ورغوا جرعميدالدين أي محلس بي بی کرس عکرلیں ان دنول دہلی کے قلعمتر فی اور حنوبی وروازے تھے۔ان دونوں بزرگول کے گھران ہی دروازوں میں واقع تھے۔ قامنی نے ان دو آول دروازول ب تندفوا ورسخت گيريا بيول كايبره بهاديا . كه كوئي شخص اندر مذات بات فواه كتناسى قريب اورعزيز بو اوهر حضرت فواج قطب الدين في بعي سار سي شهرس اعلان كروا ديا كه مهار ينام خادم اوردوست محلس ماع مين مثركت كرين بلكه اینے این امباب کو بھی وعوت شرکت دیں۔ دو مری طوت صرت خواج نے اپنے فادول كوحكم دياكمعام تقريبات عرس كي بعكس كهان كاندباده البتام كريس اور کی بیرے داریا پاسیان کی بیواہ مذکریں۔انشارالشان بیرے دارول کی انکیں کی آنے والے کو دیکھ تہیں سکیں گی یوس کے دن دہلی کے لوگ جن در جن آنے لگے۔ بیاسی کو درسے مرکسی کو ندرو کا گیا۔ بزارول مردد طالب ور

فادم مجلس سماع میں شریب ہوئے۔ اتفاقاً اسی دن صفرت شیخ بہارالدین ذکر یا مان و در شیخ جلال الدین تبریزی ملنان سے میل کرد ملی پہنچے تھے۔ ان دونوں صفرات کی انتر لیف آوادی سے مجلس کی رونق دو بالا ہوگئی۔ توالوں کے کلام اور وجد کرنے والوں کی رفت سے سالا تلحہ کو نے اُٹھا۔ دونوں قاصنی اس غلغلما ور شکام کی آوانہ سے چونک اُٹھے۔ دروازے کے نہبانوں کو طلب کر کے قوانا انا و انہوں نے موزرت کرنے تر میں مارکہا کہ ہم نے کئی کو اندر جاتے تہبی دیکھا۔ ہم مہیں جانتے انہوں میں مانی کے انترائی میں مانے کہا کہ ہم سے کئی کو اندر جاتے تہبی دیکھا۔ ہم مہیں جانے اتنا ہجوم کدھرسے آگیا۔

قاضيول نے الوان صدر بیں مقدم کرنے کی بجائے یہ خیال کیا کہ آج بہت بڑا اجماع ہے اس میں بہنے کرمیاحۃ کرلیا جائے اورح مت سماع پر فیصد موجائے چاتچەدونول قاصى حضرت خواجرى محلس مين جاپہنچے - انہوں نے ديجھا كەفطاللا قطاب فاجتطب الدين تووكد كررب ين ورفوا جرجبد الدين دست بسنة سامف كور من اچا مك فواج جميدالدين كى نگاه دونول مريزي - آپ فرمايا - يمحبس ساع تم جیسے منکران ساع اور دشمنان درولیشاں نہیں ہے۔ تم وہاں ہی کھڑے رہو۔ اگرچان دوتوں فاضبول نے آگے راصفے کی کوئشش کی۔مگران کے قدم ساتھ سكے بیانچرساری علس سماع كورے منت دہے جب صرت قطب الدین وجد سے رُکے۔ اور محلس میں فامر شی چیا گئی تو آپ نے قاصی عمادا ورقاصی صادی کو مخاطب كياسادر فرمايا- آؤر الع بجائير إلى برهواج متهارى الوداعي تقريب ب يم مفر أنخرت بيجاني والعبور أسخرى بارسماع كى لذت عاصل كرور تمهين صرب والفرس مذر ہے۔ دو آول صرات خوا جر کے کہنے پر مجلس میں آئے قدالوں کے اشعار اور بزرگان دین کے تصرف سے دونوں مربوش ہو گئے محفل ختم ہوئی ۔ تو دونوں نے معددت کی اوراینے اعمال ریشیان ہو کرفواجگان حیثت کے قدم بوس ہوگئے۔ اور

معانی کے فوائنگاد ہوگئے مصرت فواج نے فرمایا-اب تیر کمان سے نکل گیا ہے
مد تیرجیتہ باذک اید زراہ "ابتم لوگ سفر آخرت کی تیاری کرو۔ دونوں اس مجلس
سے پرلیٹان دلیٹیان اسطے اور سیدھے بادشاہ کی فدمت میں ماصر ہوئے ۔اور رات
کی سادی سرگوزشت سادی بادشاہ نے اِن کی با تیں سن کرا نہیں سرزنش کی - اور
بڑے مصفے سے معدر جہال اور عہدہ قضا سے مقطل کردیا ۔ اسی رات دونوں
صدمہ سے مرسکئے۔

اخبارالاخیارا ورمبرالا قطاب میں درج ہے۔ کہ صرت خواج بختیار کے ایک مريدرتين نامى في ايك دات فواب من ويجها كدايك عالى شان در كا ه ب اور اس میں بریناہ مخلوق جمع ہے۔ ایک شخص میت قد بار بار کاہ کے اندرجا تاہے اور پیر باہر آجا تا ہے اور بادشاہ کے فرمان ویبنیام لالاکر ادگوں تک بہنیا تاہے رئیس نے اس بارگاہ مجلس اورصاحب دربار اور اندر با ہرائے جانے والے تنخف کے بارسے میں بوچھا۔ نوگوں نے بتایا۔ بدسر کار دوعا لم جناب محر مصطفیٰ صلی السّعليدى بارگاه ہے بيكوتاه قدصرت عيدالسّمعدد رمنى السّعن، بي اوكول كے پنا ات اندرى جاتے ہيں۔ اور صفور كافران يا ہرلاكر بنجاتے ہيں رئيس المك برسے بصرت عيدالمترمعودكوكها بائے مهر بانى رصنوركى فدمت بير گذارش كريب كماسي كاايك امتى رئيس جوخوا جقطب الدين مختيار كافا دم سي نبايت كاخدا بالسبع وه ورواز بيها ضرب آب كمم فرائي حضرت عيدالله معود في تقور يديا براكد فرمايا حصور فرمات بين كرتمبين المجي تك زيادت كي الميت نهي بهدئي بهاراسلام خوا جرقطب الدبن كويينجانا-اوركهناكرتم بررات بهي تحفه بہنیا یاکوتے تھے۔ تین دائیں گذر کئی ہیں۔ متہاری طرف سے تحقہ تہیں بہنیا مذا فيركد المناسي فيزما نعب رئيس ميح اعظ دوائد دوائد عفزت فواج كى فات

بین حاضر ہو کہ بادیدہ برا آب بینا م پہنچا یا ۔ صفرت خوا جراسی وقت استھے۔ تا زہ وطنو کیا تیمن ہزار باد درو دیال بیٹھا رصفور کی بارگاہ میں ہدید کیا۔ آپ نے تین روز قبل درود نہیں بیٹھا تھا۔ اس کی وجربہ تھی۔ کہ صفرت خواجہ نے شادی کرلی تھی تین دا بین اسی شادی میں صووف رہے ۔ درود بیال ترک رہا۔ اس درو دیال میں تا خیر اور تعطل اس شادی کی وجرسے تھا صفرت خواجہ استھے۔ اورا پنی بیوی کوطلاق فے کرآزاد کر ویا۔ اور سمہ تن درود پاک میں مشغول ہوگئے۔

فوائدالفوادین لکھا ہے۔ کہ صرت خواج نظام الدین دہلوی بیاا و فات عیات پورسے چلتے اور صفرت خواج بختیار کے روضہ کی زیارت کے لئے دہلی جاتے ایک دن آپ کے دل میں خیال آیا۔ فدامعلوم میری عاصری سے صفرت خواج آگاہ بھی ہوتے ہیں یا نہیں۔ آپ صفرت کے مزار میر انواد کے نزد بک پہنچے دیکھا۔ کہ صفرت خواج مزاد کے تعویز بہتشر لیٹ فرما ہیں اور تعبیم فرماتے ہوئے یہ ستعر بڑھ

- 01-

ے مرازندہ سبدار چوں خوشتن من آئم بجال گرسب فی بہتن

جن دنول صرف خواج دہلی میں قیام فرا تھے۔ مرید اورطالب جن درج ت آپ کی فدمت میں حاصر ہونے ان درگوں میں دوسا و ملکت احیال سلطنت اور سیالارال افواج بھی ہوتے تھے۔ ابنی دنول خواج نم الدین صفری ۔ جو نواج عثمان ہاروتی کے فلید فراح تا میں سختے ۔ آپ کو اس دونق فلید اور حضرت خواج معین الدین اجمیری کے خواج تا میں شخے ۔ آپ کو اس دونق اور ہجوم پر سخت حسد ہوا۔ وہ پر ایشان سے کر سارے لوگ حضرت خواج تطب الدین اور تو میں کیے دنول بدر صفرت خواج معین الدین اجمیری دہلی میں دونق افروز ہوئے تو خواج نم الدین صفرت خواج نم الدین الحدی کے باس ہی جائے مالدین صفر کی نے اپنے تا ترات سے آگاہ کیا اور کہا۔ حصنور

آپ نے اپنے مریدفاص قطب الدین کو دہلی میں چیوڑ دیا ہے۔ سنہر کے تمام لوگ اہنی كى طرت رج ع كرتے ميں جميں تو برگ سنر كى بھي عنيب نہيں دى جاتى حضرت خواجہ معین الدین کوخوا جرنجم الدین کی بات انھی مذلکی اورخواج نطب الدین کو فرمایا۔ یا باتم ہمارے ساتھ اجر اچلے مید لیف اوگوں کو دہلی کے تیام سے تکلیف ہے۔ خواج تظب الدین صزت خاجریزگ کاحکم سنتے ہی فرراً نتیار ہو گئے ۔ اور دوسرے دن ساتھ میل بیدے وہلی کے اکا برو اصاغ عورت ومرد اس صورت حال سے الکاہ بھتے۔ تو وه قا غلے کے بیچے بھا گے. اور صرت خواج کی خدمت میں فرما د کرنے ملے ۔ کہ خدا كے لئے خاج قطب الدين كو دہلى سے مذ ہے جائيں - ہم عزيب لوگ ابنى كے سہارے زندہ ہیں۔ کہس فواج کی جدائی کی تاب سبس ہے۔ آپ نے واک کا خلوص اوربے مینی دیجر کر فر مایار با یا قطب الدین ! تم بیال ہی رہو۔ دہلی کے لوگ تہیں نہیں جانے دیتے۔ میانچ خواج قطب الدین تھے دہلی میں رہ گئے۔ جندسال اسي طريقة برگذرے توصرت خاجمعين الدين الجبري في خاج تطب الدين كوا جمير بلايا وردستارا وركلاه عنائيت فرمات يضخ عتماني بإروني كاعصاءميادك ديا - قرآن پاك كاايك نسخداور مسلى عنائيت فرماتے جوئے خرقهٔ خلافت عطاء فرمایا - اور فرمایا - بیرا مانتین سیدالمرسلین حیّاب محدیسول اللّه صلی النّر علیہ وسلم کی طرف سے ہی مہر پنجیں تقیں۔ ہم نے ال امانتوں کو تہا اے والدكركم ايناس اداكردياب تم يجي أن كاحق أيسا اداكر ناكر قيامت كون مجے بيدالا نبياد كے سامنے مرسارة مونا يات - ان نبركات كے سرد كرف كيدات وربى جانے كى رضت دى كنے بى اس دن سے اللہ روز لعد حضرت خوا جرمعين الدبن أجميري كا وصال هو كبار ايك شاع ناصر تحلص كياكرتا تفاروه ماورالنهرسي في كروملي أيارسلطان

شمس الدین التمش کے لئے ایک نصیدہ لکھا حضرت فوا جفطب الدین بخنیار کی فدت یم بیش کرکے عرض کی حضور میرے لئے دعا کریں کہ بیقصیدہ ما دہ ان کو لیند آجائے مجھ میں قدر الغام ملے گا آدھا فا نقاہ کے درولینوں کے اخراجات کے لئے بیش کروں گا جھڑت خوا جرنے دعا کی ناصر تناعر نے بادت اہ کے حضور قصیدہ بڑھا تواسے استعار کی تعدادا مطاون برا مطاون ہزار روپیرا لغام دیا گیا۔ تا صرا لغام پاکر در بار میں حاصر ہوا اور نصف الغام خدمت میں نذر کیا۔ آپ نے قبول باکر در بار میں حاصر ہوا اور نصف الغام خدمت میں نذر کیا۔ آپ نے قبول باکر در اردار دفر ما با بیر سارا تم ہی لے جاؤ۔

یادرہے کہ صن تعلیب الاقطاب کے اعلیٰ واکبر خلیفہ صن سے وفاج مسود شکر گئے ہیں۔ ان کے لعد دہلی کے خہنشاہ سلطان شمس الدین العمش فی فیرونہ با ہا ہنجری مجود دبا مولانا فیخر الدین علوائی شیخ احرہ عاجی ۔ شیخ حیتیں ۔ شیخ فیرونہ شیخ بدرالدین مرتاب برا در شیخ شاہتی موتاب فی ضخر فلندر و شیخ مجمالدین فلند خواج تسرو و شیخ سعدالدین فی خواج تسرو و شیخ سعدالدین ما گذری و بولانا شیخ محمد مولانا جا آخری بسلطان نصرالدین فائدی فاضی حمیدالدین ناگردی ۔ مولانا شیخ محمد مولانا ہو بان الدین صلوائی شیخ شرن الدین الوالقاسم تبریزی رائب نے ابوسعید تبریزی سے بھی خوقر فلافت ما صل کیا تھا) بولی فلام الدین الوالموید و شیخ تا جا آدین منورا و سنی رحمۃ اللہ علیہ ما جمعین فی تا ہے الدین منورا و سنی رحمۃ اللہ علیہ ما جمعین فی تا ہے الدین منورا و سنی رحمۃ اللہ علیہ ما جمعین فی تا ہے الدین منورا و سنی رحمۃ اللہ علیہ ما جمعین فی تا ہے الدین منورا و سنی رحمۃ اللہ علیہ ما جمعین فی تا ہے الدین منورا و سنی رحمۃ اللہ علیہ ما جمعین فی تا ہے الدین علیہ میں ہوا اسم کر دارا داکیا۔

ایک دن صفرت خواج قطب الدین ایک تھیلی پر بلیطے شہرسے با مہر تشرلف بے جارہے تھے ۔ جب اس حگہ پنہیے جہال ان دنوں آپ کا روصنهُ منورہ ہے۔ بہی کو کھراکیا۔ دیر تک مراقبہ میں رہے فرمایا۔ اس عگہ سے مجھے بوتے عبت آرہی

ہے۔ زمین کے مالک کو بلا یا ما ورسبت سی قمیت اور الغام اُ داکر کے زمین خرمید لی فرمایا۔ ہماری قبراس زمین میں ہوگی۔ انٹا رالٹد۔

سیرالاقطاب میں مکھا ہے۔ کہ صرت خواجہ کا وصال خاص حالات میں ہوا تھا۔ آپ اپنی خانقاہ میں محلس سماع میں تشریف فرماتھے۔ سٹگا مرسماع ذوروں پر تھا۔ قوال میہ شعر پڑھ رہے تھے۔

> عاشق رو ئيت کجا ببنيد تجسس نستهٔ مويت کجا يا پرحنساص

صرت نواجر میر شعرس کرو جدیس آسگئے۔ توالوں کو اپنے سامنے بلایا پیر وجد کرنے گے۔ اسی دوران صلاح الدین لپر کریم الدین۔ نعیرالدین غزل خمال بھی موجود تقے۔ انہوں نے بیر شعرا بھایا۔

الشنستگان خنجرتسلیم دا هرزمان ا زغیب جان د گجراست

یر شعر سنا تھا کہ آپ کی مالت وگرگوں ہوگئی۔ تمام مجلس پر دفت طاری
ہوگئی۔ بہت سے وجد کرنے گئے۔ حضرت قطب الاقطاب اس وجد کی مالت
ہیں جُست لگاتے تھے۔ تو دس دس گذاو برکوا تھیلتے۔ بیر معاملہ تہیں دن دات تاک
جادی دیا حضرت خواج کے بال بال سے اسم ذات کی نبیع جادی تھی یون کے
قطرے بہنے گئے۔ ان قطرات ہیں سے ایک قطرہ زہبی برٹیمی تا آدا لیڈ کے نام کا
نقش بن جاتا۔ چوتھے دل آپئے انگ انگ سے سجان آلڈ کی آوازیں سنائی
دینے گئیں۔ خوال کے قطرول سے بھی کلم سجان الٹدکی آوازی تی جس وقت غزل
خوال یہ ضعر بڑھے۔

ه كشتكان خنرت يم را

توبیل محسوس ہوتا کر حضرت خواجراس جہاں سے چلے گئے ہیں۔ مگریب قوال ہرزمان ازغیب جان دیگراست

برسطة تو چرزنده بهو كرحبت لگاته اور مرغ لبمل كى طرح فرش برتطية اسم كارورخ وي الدن تقا-قوالول كوموع المخارورخ وي الدن تقا-قوالول كوموع الن بليط في الدن و تقا-قوالول كوموع الن بليط في بين منع كرياكيا- آپ نے لغرو مادا اور واصل بحق بو گئے ، حاصر بين سفور مجال وي الدن الله منازه تيا د مبوا ، مبندوستان كا بادشاه سلطان شمس الدين التمش نود حاصر بهوا- آپ كے فلقاء مرد اور مثار من منازه مثابی خواتین المنان منازه الله الله الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه الله الله منازه الله الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه الله الله منازه الله منازه الله منازه الله الله منازه الله الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه الله منازه

ا درعوام الناس جمع بهو گئے بسارا دہلی سنہر اوط بڑا۔

خواجا آیسید نے اٹھ کواعلان کیا کرصرت خواج قطب الاقطاب قطب الدین بختیار نے وصیت کی بھی۔ کہ میرا جنازہ وہ شخص بڑھائے جیس نے سادی عمرا ہے آپ کو نذاسے محفوظ رکھا ہو۔ بلوغت سے لے کرآج تک عصر کی سنتیں تقانہ کی ہوں۔ فرائض نما ذکی تکبیراو لیا سے محودم مذہوا ہو۔ یہ اعلان سنتے ہی تمام حاضرین وہ گئے۔ اورا یک دوسرے کی طف ویکھنے اعلان سنتے ہی تمام حاضرین وہ گئے۔ اورا یک دوسرے کی طف ویکھنے ان مثاغل سے کسی کو جرنہ ہو۔ گرآج میرے پیرومر منذکی وصیّت نے جھے آئی کا ان مثاغل سے کسی کو جرنہ ہو۔ گرآج میرے پیرومر منذکی وصیّت نے جھے آئی کا کہ میرے کردیا۔ آپ نے بناز جازہ کی امامت کوائی۔ نماز جازہ کے بعدا کی طف خود کندھا دیا۔ ای بیان یا بیوں کو اس وقت کے نا مورا و لیاء اللہ نے اعظا یا اور کندھا دیا۔ یا تی تین یا بیوں کو اس وقت کے نا مورا و لیاء اللہ نے اعظا یا اور آپ کے مدفن تک لے ک

قطب الاقطاب صرت قطب الدین بختیار کا کی اوشی رعته الله علیه کی دفات بتاریخ چوده ماه رسیم الاوّل سلسله هم کومهوئی - بیر تاریخ سفینته الاولیاء اخبار اللّه ولیاء رمعراج الولاّبیت اوردوسرے تذکروں میں لکھی بائی گئی۔ وقا

کے دقت آپ کی عمر ماو ان سال تھی۔ مجزالوا صلین میں آپ کاس وصال ۱۳۳۳ مکھا ہداہے۔لیکن ہارے نزدیک پہلا قول سیح ہے۔ خاب سنيخ قطب الدين ا دشي كه بود ا ومقتدائے شخ وسم شاب عجب تاريخ وصلش مافت سرور زقطب الدبن مقدس قطب لاقطائيا י איין ס

آپایک رخم شاه شمس الله برانتمش با در شاه مهندور سان قدس سرهٔ و دل با در شاه عادل سلطان كامل تقے فوا جرمعين الدين اجميري رحمة الشرعليد كے منظور نظر تھے۔ الرحضرت فاجقطب الدين بختيارك مريد خاص اورخليفه اعظم تقع حضرات ابل ييتنت سے بدی ادادت د کھتے تھے۔ اگر چظا ہری فرا زوائے معلنت مندوتان تھے۔ گرباطنی طور رپیفقرول اور در ولیٹول کے زمرے میں تھے۔ کم کھاتے بھوڑا سوتے لمبی دائیں مال کر گزارتے سید لمحسوتے و فوراً بیار ہوجاتے کسی كام كے لئے الاندين كوتكليف مذويتے تھے- دات كے حس صديس بدار موت كى كوكى كائے كى بجائے خود كنو مئي سے يانى كھنيجة اوروضوفر ما ليتے انہيں يہات گوارا مذبحتی کران کے کسی کام کے لئے کسی دوسرے کو تکلیف ہو آ دھی دات ہوتی

ماد حرت مفتی غلام سرور لا بعوری قدس سرؤنے اس تاریخ وصال کے علاوہ مندرج ذیل آواریخ بھی کمی میں رجنت مقام + دوبار عالم الاسرار + نورعلی نور + خلد + قطب الدین שאגם שאגם שאגם שאגר שאגר

توشاہی باس آناد کرگدائی بہن لیتے۔ اور دعا یا کی خرگیری کے الفے تکل بڑتے۔ علماء صلحاء اورصوفیا کوبے پناہ دولت بختے تھے۔ کبھی ایسا ہوتا۔ کہ مٹی کے بتن میں سونا دکھ کراو پرگندم کے دانے رکھ کر بند کردیتے۔ اور مسافروں کو بخش دیتے تھے تاکہ ناوت کی شہرت نہ ہو۔

ایک بادات نے خوص بنانے کا ادا وہ کیا۔ وہی ہیں حوض شمسی کلاں آپ نے ہی تعمیر کیا تھا۔ یہ حوض بنانے سے پہلے انہیں بڑی گر تھی۔ دات کو حصف رت درالت ما آب صلی اللہ علیہ وسلم کی زیادت ہوئی۔ آپ نے دیجھا۔ کہ حضور حوض کی عگر گھوڑ ہے پر بروا دوبلوہ فرما میں۔ اور خاطب کرکے فرما دہے ہیں استمی الدین مہال حوض بناؤ۔ اس وقت حصنور کے گھوڑ ہے نے اپنے یاؤل زمین پرمارے میں سے پانی کا حیثہ جادی ہوگیا۔ حضور نے الملک الاکبر کہ کرفر مایا۔ اس عگر سے اچھا پانی سارے وہلی میں کہیں بھی منہیں ہوگا۔ وہ ہوئی۔ بادت الا المتن التحقید وہ کے گھوڑ ہے۔ اوراس مقردہ عگر برچا پہنچ دیکھا کہ جہاں جہاں حضور صلی اللہ علیہ وہ کی ۔ اوراس مقردہ عگر برچا پہنچ دیکھا کہ جہاں جہاں حضور صلی اللہ علیہ وہ کی سے آتا۔ حقور اس پانی بیا اپنی سیا اپنی میں کا حیثہ بہد د ما تھا۔ بادت ای اور اسی وقت اپنے اہل کار دل کو حکم دیا کہ حوض کھود ناسٹرو ع کر دیں۔

یادرہے۔ کہ صنت سلطان شمس الدین ترکی بزدگان دین کی اولاد میں سے
سے حوادث زمانہ کے بیش نظر گرفتار ہو کر مہندوت ان پہنچے۔ صدر جہال نے انہیں
خرید کو اپنے غلاموں میں دکھ لیا۔ چوسلطان شہاب الدین غودی کو دسے دیاوہ ہال
ہی قطب الدین ایب سے جوخود بھی ایک غلام کی حیثنیت سے باوٹ ہ کے
بی قطب الدین ایب سے جوخود بھی ایک غلام کی حیثنیت سے باوٹ ہ کے
بیاس رہنے تھے ملاقات ہوئی۔ قطب الدین ایب جن دنوں دہلی کے حکم ای تقریب
کئے گئے تو آپ نے صفرت سلطان التمش کو مدالیوں کا گور نرلگا دیا۔ آپ ایک

عصة مک گورنرد ہے بوب سلطان قطب الدین ایک لاہور میں پولو کھیلتے ہوئے گور نہ ہورئی لولو کے اکام شاہ قطب الدین کا بیٹا مندوسان کا حکم ان بنا دیا گیا۔ ان دنوں امیر علی اسماعیں افواج مند کا سبد سالار تقا۔ اور امیر داود دیلی رکن سلطان تھا۔ یہ دو نوں آلام شاہ سے ناراض ہوگئے۔ اور سلطان شمس الدین کو بدا کو سے دہلی طلب کرلیا گیا۔ اور کچے دول بعد دہلی کے تخت پر بیٹا دیا۔ آپ سے ناہ میں تخت نشین ہوئے تخت نشین کے بعد آپ کو سلطان شمس الدین کو بدا کو اس میں تخت نشین ہوئے تخت نشین کے بعد آپ کو سلطان شمن الدی کے نوازم چائیز فال تا تاری کے حدول سے نگ اسکومند و سال گولئے نقے۔ کہ شاہ خوارزم چائیز فال تا تاری کے حدول سے نگ اسکومند و سال گولئے بینیا تھا۔ اور ہندو سال کو نیا۔ اور ہندو سال کو تا ہوا۔ آگے بڑھا۔ گرائیمش کے بیا تھا۔ اور ہندو سال کو تھی ماد کر کھوگا دیا۔

صفرت سلطان البمش نے گوالیار کو فتح کیا۔ پھرا دھین شہر برقیضہ کر لیا۔ اور بت فانہ مہاکل کو جرا کی ہزار دوسوسال سے آباد چلا آر ہا تھا۔ ویوال کرکے رکھ دیا۔ پہال سے بے نتمار خزانہ اور مال غنیمت ملا۔ راج مکر ماجیت کا ایک بڑا بہت دہلی لایا گیا۔ اسے تو ڈبھے وڈ کر اپنی مسجد قوت الاسلام کے دروا ذیے کے سامنے لاکوا و ندھا بھونک دیا۔

فزالملک آبندادی اور نظام الملک سلطان القمش کے نامورو دراء تھے
ان کی خدمات تا در بخے کے صفحات بینا یال نظراتی ہیں یسلطان التمش رحمۃ الدلامیہ
تباریخ لبتم د۲۰) ماہ شعبان سسلام کو قوت ہوگئے۔ مراۃ ہند کے موقف نے آپ
کا سال وصال سسلام مکھا ہے۔ آپ بورے تا ٹیس سال تخت ہندوت ان
پر جابوہ فرماد ہے۔ آپ کا مزار سمید قوت الاسلام دہلی کے عقب ہیں ہے۔

یر جابوہ فرماد ہے۔ آپ کا مزار سمید قوت الاسلام دہلی کے عقب ہیں ہے۔
مداند اس سال آپ کے ہیرو مرمند صفرت قطب الدین بختیاد کا کی قدس سرہ کا وصال ہوا تھا۔

شمس دین آل با دشاه ملک بهند شد جواند دنیب با قلیم حبت ل شمس دین حق گو تاریخ او مرشوش دین قطب حبات ل مرفقی دین قطب حبات ل

آپ نے فالوادہ شنت حضرت شيخ جلال الدين تبريزي قدس سره نه مين ايم عظيم شخيم أب كوصفرت خوا جرقطب الدين بختيار كاكى سد دوعانى فيض ملا لبعض مثا تخ أب كو سلسد مهرور دیر کے مثا نخ سے تصور کرتے ہیں۔ کتف وکرا مات ہیں بے نظرتھے۔ ترک و تجرد میں بے مثال تھے ابتدائی ساوک کے سات سال شیخ التیوخ مہرردی رجة التُدعليد كي صحبت ميں رہے د غالبًا اسى وجسے نعض حضرات آب كوم ورولول مِن شادكرتے مِن اگرچ شخ علال الدين تبريزي حضرت شخ الوسعيد تبريزي قدي سرہ کے مرید تھے . مگر الوسعید کی وفات کے بعد آپ شنے الشیوخ کی خدمت میں عاصر ہوئے اور کمال کو پہنچے کچھ عرصہ بعد آپ کی ملاقات حضرت خواج علی لدین سنجرى قدس سرة سے ہو ئى و مال ہى آپ نے حضرت خواج قطب الدين ويتى كوديكما حضرت خاج تطب الدين في اپ كوايني دوماني تربيت سے درج كمال تك بينجاديا وراس طرح ان كے فليفه خاص بنے - أور خانوا دہ حينت بيں معروف ہوئے۔

علد رفاض مولّف نے بی تواریخ وفات بھی کھی ہیں ۔ ماہ زیب جال شمس الدین 4 مار حق ولی و بیدار

حضرت سنخ الشبوخ خوا حرشها ب الدین مهروردی هج برجائے توشنخ مبلال الدین مهروردی هج برجائے توشنخ مبلال الدین مهروردی هج برجائے توشنخ مبلال الدین آپ کے ہم رکاب ہونے تھے۔ آپ ایک دیگدان خیا دکر کے سربر رکھ لیا کرتے تھے۔ اور سربر اس طرح دکھ لیلتے کہ سرکو گرمی بھی مذیکے گرایک دیگ ہیں دکھا ہوا کھا ٹا تھنڈا بھی نہ ہونے پائے۔ بیرصزت شنخ الشوخ کی خدمت سفر کا ایک عجابدہ تھا۔ حضرت شنخ الشوخ حس وقت بھی کھا ٹاطلب فرماتے۔ آپ کھی گرما ور تازہ کھا ٹابیش کیا جا تا تھا۔

حضرت بشخ او صدالدين كرماني قدس السرؤ السامي في محصل كم ايك بادس بھی اس قافلہ میں موجود تقا جو سفر تج پر روال تقا۔ شنخ عبلال الدین تبریزی سب معول دیگدان سربرر کھے قافلہ میں موجود تھے۔ ہم لوگ صحائے نبی لام میں سنے یہ بڑی دستوار گذار وادی تنی جین وستوار موا جار ہا تھا۔ اسی ا ننامیں او نول کے تاجرانيا ون سيخ كے لئے آپہنے واورا نهول تے ہراونط كى بيني الشرفي فقيت مانگی۔ قافلہ میں امیراور روساء صفرات ٹنے تواونٹ خرید لئے۔ گریم عبیے روکش یا پیادہ موت کے سفر کوروانہ تھے ۔صرت شنخ مبلال الدین تبریزی نے ہماری یه حالت دیجی توانین ہاری ناتوانی پر رہ اترس ہیا۔ آپ نے طعام والی دیگ كوخانى كبيا اورائية سامنے لاركھى اس ديك ميں ايك انثرني واسلة اوراس بي عادرا ورصاديتي اورمنس يالطيف كيت اور ديك مين ما تقد دال كرميل شرني نكال كرايك درويش كوديتے - اس طرح أب نے يا پنج اونظ ل كي قيمت لكال كرا لك كردى واورقا فلے كے ممام عزيب درولينوں كوا ونر غريد ديئے . قافلے كى ارى لوگ شرسوار موكئے - مگرخود يا ياده علتے رہے۔

صرت جلال الدین نتریزی دہلی پننچ توسلطان شمس الدین التمش آپ کے استقبال کو با ہرآئے ان دنول دہلی کے شخ الاسلام حضرت خواجرنجم الدین معزی

www.maktabah.

تحے۔ آپ بھی باد شآہ کے ساتھ استقبال کو آئے سلطان نے بیٹنے جلال الدین کو د کھا گھوڑے سے اتر بڑا۔ اور بیادہ کپ کی فدمت میں حاصر ہوا۔ اور پدل مل كرسى تنبرس بنج بدلطان في شخ الاسلام خواج نجم الدين صغرى كوكها كم حفزت شخ كوا يسه مكان مي عظرانا جومير ندويك مو- يه بات س كرنجم الدين مغرى کوصد آیا۔ کم ایک نووار د بزرگ کی اتنی عزت کی جارہی ہے ۔ شاہی علی کے قریب ہی ایک ایسامکان تھا جس میں جبّات کا ڈیرہ تھاا ور پہلینہ مقفل رہتا تھا۔ اُسے بيت الجن كے نام سے مادكيا عاتما تھا۔ حضرت خواج نجے الدين في سلطان التمش كوكها . . . كركيول منرشخ جلال الدين كوبريت الجن مس عظر إياجائ - اكدوه مذارسیدہ ولی ہیں توجوں رقابو پالیں گے۔ اور اگر محبوثے مدعی ہی توسزا یا ئیں گے جضرت سلطان التمش نے ابھی جواب نہیں دیا تھا کہ شنخ جلال الدین نے نور باطن سے معلوم کر کے فرما باکہ بہت الجن کی جا بیال تھے وے دی جا میں۔ عا بال لائي كيس قوآب في الني الله خادم كو د م كر فرما يا - كرجا و اوروروازه کھول کر اواز دو کہ اس مکان میں رہنے والو۔ آج تواجہ علال الدین تبرینے ی يهال ارب بين تماينالكا مذكرو-رات كوآب بيت الجن مين بنج كرآدام فرما بوخ بسلطان التمش آپ کو مردوز ننی عزت اور نیا احرام و تیااس صورت عال نے خواج تجم الدین صغریٰ کو اکش حسد میں عبلا دیا۔ وہ سوچتے رہتے۔ کہ جلال الدين تررزي كوكسي ايدام مي طوث كياجائدكم بادشاه خودي إيي و بلی سے نکال و ہے۔

ایک دن صفرت شیخ علال الدین تبریزی نما ذصبے پیر صفے کے لعد بیت الی میں ہیں ہی الی دن صفرت شیخ علال الدین تبریزی نما ذصبے کا ایک خولصورت ترکی علام ایپ کے پاؤل و بارہا تفارش نجم الدین نے اپنے محل کی چست سے اس

د ملى شهر من الم يجيله نامى عورت عتى جو كا ناكا ياكه ني تحتى - وه ايك يدكر دار ا ور فاحتذ عورت می جس کے پاس ملک کے امراء اور در بار کے افسر کا اگرتے تھے۔ اُس كانام كوبرب بها تفا حضرت فجم الدين في أسه اسنه باس بلايا وركها كم الرقم شخ جلال الدین کو زنا کے الزام میں مینا دواور بادشاہ کے سامنے شہا در مجبی دے دو تو میر تمهیں پاپنج سودینا رطلای دول گا۔ان میں سے نصف روپیہ پیٹیگی ادا کمد دیا كيا ا ورنصف روبيدا كيسرى فروش احدثامي كے كان بديطور امانت ركا دياكيا کرجیب تم بنتان تراشی کی گواہی دے چکے تو بیرخود کخود آکر لے لینا۔ چیزون سب بخ الدين أس مدكرد ارعورت كوباد فناه كے سامنے بے آئے اور عورت كى طون وينتخ جلال الدين كحفلات زناكى كيفيت كوبيان كيا- با دشاه في حيران بهوكر لوجهاكيا میر ورت اپنی زبان سے زنا کا قرار کر دہی ہے۔ پھرتو اس کوسنگ ارکرنا چاہئے بْلِوْنْكُدا بِهِي مُك يَشْخ جِلال الدِبن بِدِير كُناه تَا سِت منہيں ہوا ۔ اور تم فو د ہي مرعيبہ ا ورشكايت كننده مو- لهذاكسي دوسرے قاضي كواس مقدے كا فيصله كرتا

چاہیئے۔ چانچہ یہ تجویز کیا گیا کہ اس معاملے کی تحقیق کے لئے مٹائخ عظام کور قرر کرنا چاہیئے۔ حس وقت تحقیق ہوجائے تو اس وقت اُس پہ فرد حرم عائد ہونی چاہیئے ان دنوں شبخ بہا والدین زکر یا ملتا تی اور شبخ جلال الدین تیریزی کے درمیان کچر رخبش تھی۔ نجم الدین معزیٰ نے کہا کہ میری طرف سے شبخ بہا والدین زکر یا ملتانی مقدمہ کے حاکم ہونگے۔ ان کا خیال تھا کہ بہا والدین اپنی فراتی خالفت کی وجہ سے شبخ جلال الدین کے فلاٹ نیصلہ دیں گے۔

یضخ بها و الدین ذکر یا متان سے چاکر دہلی آئے۔ دہلی کے تمام مشائخ عظام جامع مبجد میں جمع عقے۔ شخ نجم الدین اس گانے والی عورت کو لے کر آگئے اورشخ ملال الدين كو ملانے كے لئے ايك خادم كو بھيجا۔ شخ علال الدين آئے ابھی وہ سید کے دروازے پیا بیا ج تا آثار رہے تھے تومسجد میں بیٹے تمام مثا نخ ال ك التقبال كم للغ بره على بها والدين ذكريا في فود الله كم سفيخ علال الدين كے جوتے مكيات اورمعيديس نے الئے - يبصورت حال ديجه كر ممام عاصر بن جران رہ گئے۔ شخ بہاؤالدین ذکریا ملتانی نے فرمایا کہ بس شخ عبلال ادین کے جو تول کی فاک کو اپنی آنکھول کا سرمہ نباتا چاہتا ہوں۔ کیو ٹکہ آپ سات سال مك مفروح صريس شنخ المشاكن شهاب الدين سهرور دى كے ساتھ رہے ہيں۔ يركه كراس عورت كوعيس من طلب كيارا وركها جاءالحق و ذهق الماطل إِنَّ الباطلكَ أَن زهو تُنَّاء (حَنَّ آليا باطل حِلاليا- باطل عان بي والاتما، آب نے فرما یا کہ بیال سچی سچی بات کرنا ورنہ بے ندسکو گی۔ اس عورت نے بلند أوأنس كها الله تعالى عاصر وناظر بيس فيصرت شخ عبلال الدين كے غلات جول تهمت لگانی تقی آدھے دویے ابھی تک احد بقال کے پاس بیا ہے ہیں۔ اسع بلاكرىد يرليا جائے تجم الدين مجھ دينے كے لئے اُس كے پاس ركھ ہوئے

ہیں۔ نجم الدین میصورت حال دیکھ کر بے حدیثر مندہ ہوئے۔ حتیٰ کہ بے ہوش ہو کو گریٹے ۔ حتیٰ کہ بے ہوش ہو کر گریٹے الامی کے عہدے سے ہٹا دیا جائے۔ دیا جائے۔ دیا جائے۔ اوران کی عبکہ شنخ بہاؤالدین ذکریا ملتانی کو مقرر کیا جائے۔

اس وا تعرکے چنددن لبد جلال الدین نے دہلی کو ھیو لادیا ور بدایون آگئے اور میں رہنا سنروع کر دیا بدایون میں آئے ابھی چندگزرے عقے ایک دن لینے دوستوں کولے کر بدایون کے نزدیک بہنے والے دریا کے نزدیک بیٹے ہوئے تھے کہ فوراً اسطے تازہ وصنو کیا اور فرمایا دوستو اعظو شنخ نجم الدین صغریٰ کا جنازہ پڑھ کیں کہ فوراً اسطے تازہ وصنو کیا اور فرمایا دوستو اعظو شنخ نجم الدین صغریٰ کا جنازہ پڑھ کیں کیو کم ابھی وہ دہلی میں انتقال کرگئے ہیں۔ نما زجنازہ کے بعد فرمایا۔ اگرچ میں ان کی تہمت تراشی کی وجرسے دہلی سے نکل آیا ہوں۔ لیکن وہ میرے پروں کی دعاسے دنیاسے چلے گئے ہیں۔ چند دنوں کے بعد بیرا طلاع ملی کہ واقعی جس کی دعاسے دنیاسے چلے گئے ہیں۔ چند دنوں کے بعد بیرا طلاع ملی کہ واقعی جس دن شخ غیم الدین صغریٰ کی دون شخ جم الدین صغریٰ کا اُسی دن دہلی میں انتقال ہوا تھا۔

کتابوں میں بہاؤالدین ذکریا ملتانی اور شخ جلال الدین تبریزی کے اختلاف کا واقعہ بول مکھا ہے۔ ایک و فعہ ہدو نوں بزرگ ایک سفر میں اکھے جارہے تھے وہ ان تہرین جا پہنچے۔ جہال شخ فرید الدین عطار ریا کوتے تھے۔ شخ بہاؤالدین ذکر با توعبا وت میں شخول ہو گئے۔ لیکن شخ جبال الدین شہر کی سرکو نکل بڑے اچا نک وہ شخ فرید الدین شخر کی سرکو نکل بڑے اچا نک وہ شخ فرید الدین عطار کی فاتھاہ کی طرف جا نکلے۔ آپ نے شخ فرید الدین کو دیکھا تو ان کے انواز کما لات سے بے صدمتا ترہوئے۔ رات کو دالیس آئے تو تو شخ بہاؤالدین کو کہنے گئے کہ آج میں نے اتنا بڑا شہباز دیکھا ہے جس کے جال باکمال سے مرہوش ہوگیا ہوں۔ جھے اور کسی چیز کی خربہی شہیں دہی شخ بہاؤالدین نے کہا کیا تمہیں اپنے مرشد کے انواز کمال کی بھی یا و مذآ کی انہوں نے فرما یا کہیں نے کہا کیا تمہیں اپنے مرشد کے انواز کمال کی بھی یا و مذآ کی انہوں نے فرما یا کہیں

ان کے جال میں اتنا محو تھا کہ مجھے کسی دوسرے کی خبرہی نہیں رہی۔ حضرت بہاؤ الدین ذکر یانے ان کی یہ بات سئی اور فرما یا آج کے بعد تم میرے ساتھ اکھٹے نہیں رہ سکتے۔

مالون مي حضرت شخ فبلال الدين اليف مكان كي د بينري بييط عف كلي ایک ہندوگز را جونسی بیج رہا تھا۔ شِنْخ نے امسے نظر تھر کر دیکھاتو وہ لے فتیار کلمہ بڑھ کرسلمان ہوگیا۔حضرت شیخ نے اس کا نام علی رکھا۔وہ گھر گیا اور گھرسے ایناتام روبیراوردولت اعظاکر صرت شخ کی فدمت میں ہے ہی اور کہنے نگا کہ میں اِس دولت سے دست بردار ہوتا ہول براب آپ کی ہے اِسے آپ خرج کریں۔ ہے نے فرمایا کہ میدوییہانے یاس محفوظ رکھو حیب میں کہوں گا د ہاں خرج کرنا حضرت بینے کے پاس کوئی عزیب یامکیس آنا قرآپ علی کواس کی املاد کے لئے کہتے ، گرکسی کودس روپے سے کم مددلاتے ۔ حتی کم ایک وقت آیا کرعتی کاسارارو پیرختم ہوگیا۔علی کے دل میں خیال آیا کہ اب اگر صرت شخ نے مجھے کسی کو دینے کا حکم دیا تو کہاں سے دوں گا۔ کچے دیر لبدایک فقر آیا تو کہا کہ علی متبارے پاس ایک روپیہ بچے گیا ہے وہ بھی اسے دے دو۔ قاضی کمال الدین حجفری اور شخ حلال الدین تبریزی آلیس میں بڑے دوست مقے ایک دن حفرت بننج قاصی کمال الدین کے گرتشر لیف ہے گئے توقاصنی اُس وقت نمازیره رہے تھے۔ ملازموں سے پیرچھا توا ہنوں نے کہا كمصرت قاصى نماز راهد بعين البياني فرمايا كرمتهارا قاصى نماز راهمي عِانتا ہے۔ یہ کم کر اُسطے اور اپنے گھرو الیں آگئے۔ دوسرے دن قاضی کمالارین آپ كوسلنے آئے تواس بات كا كله كيا جوآپ كه كه كئے تقے آپ نے فرمايا ہاں فقراد کی نماز لیوں ہوتی ہے کہ حب بک اُن کی نگا ہوں کے سامنے کعبانظر

مذا تے تووہ الله اکر بنیں کتے۔ یہ ان کی ابتدائی درجے کی نماز ہوتی ہے جب وه عظيم مرتب يدينية بين تووه عرش عظيم يه نماز يوصقه بين -المتهبين بيمقام مل گیا ہے تو تھیک ہے در مذیبہ عامیانہ نما زہے۔ قاصی نے بدیات سنی تودل يں كُو كرره كئے۔ليكن كي مذكباء رات كو فواب ميں ديجا كرشن علال الدين عرش معلى ريناز يوهد سے بيں صحصورے اعظے حفرت شخ كى فدمت بي عاضر ہوئے تومعذرت کی اوراپنے بیٹے سیمت الدین کو آپ کامرید بنا دیا۔ حبب شخ چلال الدین بالون سے بٹگال کی طرت گئے تو ان دنوں علی بھی آپ کے درولیٹول میں داخل تھا۔ وہ آپ کے پیچیے پیچیے بھا گتا تھا اور روتا تقا - شخ اُسے فرماتے علی والیس چلے جاؤا ور بدایون میں چلے جاؤ علی نے کہامیں آپ کے نغیراس شہر میں نہیں رہول گا۔ آپ نے فرما یا۔ تم بیبی رہو بیشریں فيتهاد مع والدرياب أورتهبين الس تفركا قطب بنادياب يبال رمت تم سروت می وی پیرد و کے میرے اور تہارے درمیان کونی پردہ مرموگا پنانچرالیا ہی ہوا۔ علی وقت کا قطب بن گیا اور وہ جس وقت چا ہتا سرا کھا كرصزت شخكود سيد ليتار

حضرت بینی بنگال پینیچ تو تمام منکوق ان پر لوٹ پڑی۔ آپ نے دہاں ایک بہت بوٹی مسید بنائی۔ فانقاہ تعمیر فرائی اور مکین ہوگئے۔ فانقاہ کے ساتھ کچوہاغ اور کی بہت بوٹی دیا۔ روز ہزار ول مساقر اور کی دیا۔ روز ہزار ول مساقر اور کی نے لئگر کھول دیا۔ روز ہزار ول مساقر اور کی بہت برانا اور کی بہت برانا بیت فانہ تھا۔ آپ نے دستر فوال سے کھانا کھاتے۔ اُس علاتے میں ایک بہت برانا بت فانہ تھا۔ آپ نے اپنی کوامنت ہے الی بتوں کو تو ڈااور ایک بہت بڑی مسید کی بنیا در کھی۔ بت پرستوں کو دامن اسلام میں جگہ دی۔ آپ کا مزار اُسی بہت فانے میں بنا ہوا ہے۔

سيدمحد كسيودا زكم مفوضات حوامع الكلم مل لكها بواب كرشخ فريدالدين کنج شکرابھی بخے تھے تو آپ بہت عبادت میں شغول سہتے۔ لوگوں نے آپ کا نام قاصى زاده ديوا مذر كه ديا-ايك بارشخ جلال الدين تررزي شخ فريدالدين گنج فنکر کے شہر ایاک بین ایس قیام فرما تھے۔ آپ نے دوگوں کو بچھا کماس شہر میں کوئی درولیش رہتا ہے لوگوں نے بتا یا جامع مبحد میں ایک دلوانہ او کا ہے آپ اس رو کے کو د مکھنے کے لئے گئے رسائقہ ایک انارلیاا ورشنے فریدالدین کو پیش کیا شخ فريدالدين روزه دار تقے۔ آپ نے انار کو تورا اور تنام حاصرين مي تقيم کويا اتفاقًا الدكاايك داند وبال بيار باء أس دن آب في أس الارك دافي سے روزہ افطار کیا۔ وہ اٹار کا دانہ کھاتے ہی بڑے بلند درجات پر فائز ہوگئے آب كماكرت عقف الول س دن مي في سارا نارنهي كها بيا ورد ميرامقام كي اور موتا جن دنول آپ خواج قطب الدين بختيار كاكى كى فدمت ميں پنجے تو آب نے نہا یت حسّرت کے ساتھ اناد نہ کھ انے پیا فنوس کیا حضرت شیخ قطب لدین ف فرما يا با با فريد ج كيريها وه ائس ايك دان ين نفا- الله في السيتير لف محفوظ ركه ليا تفا-

> آپ کا وصال چوسوستالیس بیجری میں ہوا۔ تاریخ و ن ت :

شده وازدنی جلال الدین مخلد سال وصل آن و الا مرکان الا در بدهٔ دین صاحب توحید گو نیز اکبر سبلال الدین مخوال می ایر می ایر می ایر می می ایر می

آپ ترکتان کے رہنے والے تھے۔ ين محدتدك نارنولى قدس سرة :- دبال سے مندوستان تشراف لائے اوربقام نارنول تیام فراہوئے آپ کوسلطان ترک اوربرترک کے نام سے پکارا جاتا تھا۔ادرصرت شخعتان مارونی کے مربد فاص اورفلیقہ تھے۔ آپ کوصرت غاج معين الدين اجميري فدس سرؤ نے بھی خرقہ خلافت عطا کيا تھا وہ اي عرصه سك نار تول ميں رہے اور فلق كو ہدايت كى داه د كھاتے رہے - ابتدائے کاریس نارنول میں مندووں کی اکثر بت تھی۔اور آپ کے ہمراہی مسلمان تھوڑے تھے۔ ہندووں نے پروگرام بنا پاکم سلمانوں کوقتل کردیا جائے وہ منارب موقد كاانتظاركرنے لكے عبدالفطر ميملمان نما زعيد كى ادائيگى كے لئے شہرسے باہر جع ہوئے جیب تمام مازیں کھڑے ہوئے توسندووں نے مل کرا چانک جملہ کردیااور بهت سے ملافرل کو سجدہ میں ہی تنہید کر دیا مصرت بننے بھی اسی موقعہ پرس شهادت نوش كركئ اوراين جرعي وفن كردي كئ اس مقام پيشدن كامشهد بنا ياكيا - مران ميس عدد شهيد براع مشهور بون- ايك كوشهيد ماندكها جاتا تھا۔ جن کامزار ایک بدند مگروا تع ہے دوسرے شہدنتیب کے نام سے مشہور ہیں۔جن کا مزار مبادک ایک لیت جگہ بہے۔ ان کی کوا مات آج تک ان کے مزادات سے ظاہر ہوتی ہیں۔ کئی لوگوں نے ال مزادات سے قرآن یاک كى تلادت كى اواز يھىستى سے يە اواز جمعدا ورجمعرات كو توخصوصيت سے الى تى

اخبارالآخیار کے مولّف رصرت بینی عیدالی محدث دہلی ، مکھتے ہیں کہ ایک بار حضرت بینی نصیر الدین محود حجراغ دہلی قدس سرۂ کو بادشاہ وقت نے نا راض ہو کو کھی۔ جانے کا حکم دیا۔ بینی نار آول کے راستہ سے روانہ ہوئے۔ نار آول سے ایک میل

دۇر تھے كہ اپنى بہلى سے اُترائے اور بيارہ پا ہوكر نارنول كى طرت ميل يڑے-حب حزت بنخ کے مقرے پر پہنچے تووہ مقرے کے سامنے بہت بڑا سچھر بیا اتھا چند لمحاس تیمرکو د مکیقے رہے اور ہاتھ باندھے کھڑے رہے بھوڑی دیرے بعدمزار کی زیارت سے فارغ ہوئے توکسی شخص نے آپ سے پوچھا توفر مایا یہ كيے فدمت گذار بس كرخود إلى كے آقا أن كى خربيت دريا فت كرنے تشرافيالتے ہیں. میں حیب پہلے روضے کی طرت داخل ہوا تو میں نے دیکھا کہ اس پھر رہے جناب سرور كالنات شاه دسالت صلى الله عليه وسلم كى دوح مريفتوح إس تتجفر به افتاب کی طرح عبدہ فرما ہے۔ جب یک صفور کی مبارک صورت میرے رومرو رہی میں متھر کے سامنے ما تھ باندھے کھڑا دما صورت و جبل ہوئی تو میں مزار پُرانوار کی زیارت کے لئے آگے بڑھا مجھے قری اُمیدہے کرجس شخص کو بھی كوئى مشكل بيش آئے گى اوراس دوضے كى طرت آئے گا تو نام الميدرزو فے گا مامزین محلس میں سے ایک ب باک شخص نے کہا آپ بھی ایک مشکل می گرفار ہیں۔اس اس ان کے لئے دعا فرما ئیں۔ آپ نے فرمایا ہماری شکل بھی آسال ہو عائے گی۔ شیخ نصیر الدین محمود نارنول سے روانہ ہوئے تھے خبر آئ کہ مہلی کے بادشاہ کا انتقال ہو گیا ہے۔ آپ اسی وقت والیں ہوئے اور دہلی ہینج کئے کہتے ہیں کہوہ سپقراب تک حضرت سننے محد ترک کے مزار کے پاس موجودہے اوربے پناہ خلقت اس کی زیارت سے ستفید ہوتی ہے۔ تذكره العاشقيس ميں شخ محد ترك كى د فات چيسو بياييس ہجرى ميں كھى ہے چول نده نیائے دوں محررفت سال ترجیل آس شے ذی شاں اولًا محب لا ناني بعدازال متقى محسد خوال

آپ حفرت خوا محمین ادین اپ صرت واچیں این منتی اجمیری رحمته الله علیه :- اجمیری رحمته الله علیہ کے بييط اورغليقه تقے . ظاہري اور ماطني علوم بيں كمال حاصل كيا تھا۔ حلال كي روزی کمانے کے لئے کاشت کاری کیا کرتے تھے اور اجمیر کے قریب ہی موضع ما ندل میں رہتے تھے سادی عمر مخلوق کی ہدایت میں گز: اروی رچھ سو ترمین بجری کو پیدا ہوئے آپ اپنے والد ہزرگوار کی وفات کے بعد بین سال تک زندہ ہے ای تصبه سروار میں فرت ہوئے اور و ہاں ہی ایک تالاب کے کنا رسے یہ آب کارومنہ ہے۔

مثل گل دفت جول بياغ جنال دهلتش فوال زمقتدائي مال خواجردين جناب فخزالدين وصل اوجوز خواحب والا

آپ قاضی حمیدالدین ناگوری کے خاص نوا جرم مو نيبر دُوز قدس مرهٔ به مريد تقے خوا جرمطب لدين بنتيار کا کی كمصاحب اورمعقد تق بلے عابد ذاہر متقى اورصاحب كوامت بزدگ تھے۔ سماع کو نہا بیت شوق سے سنتے آپ بحیث سال کی عمرس فوت ہوئے آپکے روصنہ خوا جرقطب الدین بختیار کے مقبرے کے تنا تھ ہے جس کسی کو کوئی مشکل میش آتی ہے توآپ کے دوصنہ سے بچھر کا حکوا یا ایز ط اٹھاکر ہے آتا ہے اور گھر میں دکھ لیتا ہے تومشكل أسان موعاتى ہے۔ اورجب مشكل أسان موجاتى ہے تو اس بتھركے وزن كى شکر لے کرعزیبوں میں بانٹ دی جاتی ہے اور تھرکو پھر د ہاں رکھ دیا جاتا ہے شد جومحود زين جب ال فنا سال ترحيل آل شرمعود

مست مادى مرك دكامل مم يخوال ما متاب مق محود

شیخ بررالدین غزنوی قدس مرط کائی کے خلیف اعظم نے آپ كا وطن عزني تقا. اكثر سماع مين كورست وقت كم مشائخ أب كى بزر كى كم معزف تق ورآب كا ذكر الله طريق سے كرتے ، آب تو د بى محبس وعظ بر ياكرت المب كى البيى عائس مي حفرت خواج وزيدالدين كميغ شكر عاض بواكرت عفر جن ونون ا پی عزنی سے رصغیر سند و سنان میں تشریف لائے تو سب سے بہلے آب نے لاہو ين قيام كيا اور مرد ملى كئ و ولا واكر قطب الدبن نجتبار كائ كم مد بوت سيرالاوليار كم مصنف نے لكھا ہے كرسيخ بدرالدين حضرت خضرعبيرانسلام سے ملاکرتے تھے۔ حضرت خصر بھی آپ کی مجاس میں تشریف لاتے . ایک دن ا بے کے والد نے کماکر اگر میری حضرت خضر سے ملاقات کرا و و نو بڑی اچھی بات مولى. ايك دن أب سجد من تقرير كررب من تو ايك خص عام لوكون سے سط كر دُور سِيما بوا عَاحضرت شيخ مرالدين في ابين والدكواشاره كركيكما كديمية وه خوا مخضر بيطي بين. والدف دل من كماكم علس وعظ ك بعد مين خوا مخضر مِل و ل كامبس حتم سوئى توحفرت خصر بھى غائب تخے۔ يتنع بدرالدين ١٥٤ ه مين فوت موتے أب كامزار خواج فطب الدين عشاركي کے یاؤں کی طرف ہے سال ترجیل آل شیر حق بیں بدرالدين جول مخكدروشن سند كانشف راز أوليار نسسر ما نبزيرسعيد بدرالدين إ

منت جمال لدين بالسوى قدس برا كريد الدين بين المسوى قدس بير الدين بين السوى المساسلة المساسلة

خطاب خطیب اور قطب نفار آپ کا نسب نامر چند واسطول سے حضرت امام الم الرحنیفه رضی استرعنه مسے ملا ہے بیشیخ فریدالدین گئخ شکرنے آپ کی روحانی ترمیت بین آنی توج فرمائی که خود بارہ سال که بانسی بین قیام فرما یا اور آپ کے حق بین فرما یا کرتے بھال الدین مرا علی مرفع الدین مرا ول جالی ماہت و آپ اکثر فرما یا کرتے بھال الدین مرا ول جالی ماہت و آپ اکثر فرما یا کرتے بھال الدین مرا ول جائے ہیں جھیجے ۔ اگر وہ شطور فرما کرد تحظ کر دسیتے تو چراس کو خلافت نامر کی منظوری ہوتی ورزشنج فریدالدین بھی اسے در فرما دیا ہے فرمائی کے ایس جھیجے ۔ اگر وہ شطور فرما کرد تحظ فرما دیا ہے فرمائی کی اسے در میائی میں سکتا ۔

یقے جال الدین نے جس وقت یہ حدیث پڑھی توعذاب قبرسے بے بناہ وڑنے
کے ددھین دوخت جن دیا حن الجسنة و کی خری من محفظ الدین ای
(قبر حبات کے باغوں میں سے ایک باغ ہے اور قبر جہنم کے گرطھوں میں
سے ایک گڑھا ہے) حسوقت آپ کا انتقال ہوا کچھڑ سے کہدائی قبر
پرگبندتیم کرنے گئے۔ بنیاد کھود رہے تھے کہمزار سے ایک دوشن دان نمودار
برگبندتیم کرنے گئے۔ بنیاد کھود رہے تھے کہمزار سے ایک دوشن دان نمودار
برا حس سے جنت کے باغوں کی نوش ہوا رہی تھی، لوگوں نے اُسے اُسی تق

شیخ جال الدین کی تصانیف میں سے چند رسالے ملتے ہیں اُن میں سے ایک رسالہ مرفی خوصورت عربی میں کھا ہوا ہے اس کا نام ملحات مقاراس کا عبارت نہایت سی مرغوب اور بہندمدہ مقی ۔

حضرت جال الدین چھسو اُسٹھ ہجری میں فوت موے آپ کامزارگوم اِلد بانسی میں سے وفات کے بعد حضرت شیخ کو ہوگوں نے خواب میں دمکھا اور

س كا حوال مح متعلق بوهيا فرمايا جب مجه قريس د فنا باكيا تو مذاب كدو فرضت است و ، مجه عذاب دينا جاست تھے توان مح پھے دوا ور فرشتے آئے انہوں نے اللہ کافرمان بنجایا کہ اس شخص کو بخبش دیاگیا ہے۔ یہ شام کی سنتوں مے بعد وورکعت نماز طرحاکزنا نفاحیس میں سورہ مُروج ا در والطارق بڑھا كرتا تقا بهريه فرعن عاز كے بعد آيت كرى بھى طريعاكرا عقا.

رفت چوں ازجاں بخسکد مریں کس کس جمال و کمال دبن نبی گفت سرورسبال رطن او عارف حق جال دین نبی

شیخ احد نبروانی قدس سرو کے مشہور خلیف تھے بڑے

بلندیاید بزرگ وراسرار حقیقت کے واقف تھے حضرت سیخ الاسلام بها والا ذكريا منانى رحمة التعليكسي كوبهت كم ببندفرها باكرت تق مكر حضرت نيخ فبرداني كم متعلق فرما ياكرت كمشيخ احد بنرواني صوفيول كے منبع بي . يشنخ نظام الدّين ا وليار الله فروائ مي كه حسى على سماع مي خواج قطب الدين تختيار كاكى كاشقال مواأس مين يح احد نرواني مجي موع ديق بيني نصيرالدين محو دجراع دمل رحمة الشعليه فرات بين كهشيخ احد نبرواني بافندكى كرت مخ يحبى كبهى اسبابونا کر کام کے دوران ہی اُن پرائیسی کیفیت طاری ہوتی کہ اسے آپ ہی غالب موجاتے . کام سے دستردار بوجاتے سکن خور کور کراے بنتے جاتے۔

ایک دن قاضی حمیدالدین ناگوری رحمتر السّعلیہ سے احدنبروانی کو ملنے کے يئة تشريف ہے گئے. اس وقت شيخ كھڑى ير بيٹھ كيڑا بن رہے تھا ہين برومرت سفیل سی ملاقات موئی وداع کے وقت قاضی حمیدالدین نے فرایا

"احداصل كام جيور كركب ك إس كام بين كي ربو كي تنبين كوني اجيا كام كرناجيا بركام الشك بندول كانبين سا السيجوددوا وراينا كام كروع نهارك اس کام آئے۔ اس کام سے او بے کاری بہتر ہے " قاضی جمیدالدین رخصت بھتے توحفرت سننخ احدا مط او دايم بوتى سى كرس كو بالقريس الكريخ كو كلونك كبيل کیونکہ اُس میخ سے آپ کی کھڑی کی رسیاں وصیلی ٹرگئی تھیں ۔جنبی آپ نے وہ مری بے بیماری تو آپ کے باتھ بیا ملی باتھ لوط گیا اور اس کام سے بے کار موسكة اوراب دن رات الله كى عبادت مين مضغول سخ مكراك كى دفات چے سواکسٹھ ہجری میں بولی۔

> داخل فردوس شدال جنتي كشت احدمرت دين منجلي

يشخ احرح لادنيا دفت بست سال ترهليش چوگفتم از خسرد

شخ فرمدالحق والدين گنج ت كراج دنهي قدر سراع ادبيار كرام

یں سے تھے برصغراک وسند کے عظیم صوفی مانے جاتے میں اب مجامرہ اور ریاضت کشف و کرامت میں بے مثال تھے ذوق وشوق اور محبت خداوندی میں ا كي علامت ما نے جاتے تھے آپ كے والد ماجد جال الدين سيمان حفرت سُلطان محود بغزانوی کے بھالخے تھے اورس لطان شہاب الدین عوری کے زمانے میں کابل سے لا مورد ہنچے ، کچر عرصہ تصورت ہر میں اسے مگر مادستا ہ کے حکم بر ملتان چلے گئے وہاں جاکر ملا وجیرالدین مجندی کی بیٹی فسرم خانون سے ستا دی گی۔ آ بکے بین معط بوئے ایک کا نام عیاص الدین محود نفار دوسرے کا نام فریدالدین مسعود تقا ا ورنتبيرامجيب الدين متوكل تفاآب كالسله نسب كابل كے با درخاه فرخ شاه سے

الم ملط واسطوں برمان ہے اسی طرح سترہ واسطوں سے سلطان ابراہیم ادھم سے جا مان ملے میں منتقب منتقب

بینے فریدالدین گرخ سکرین جال الدین سیاهان بی شیخ شعیب بن شیخ احد بن بین خود المدو ف سیاب الدین بن شیخ احد المشهود فرح شاه با دشاه کابل بن نصیر الدین بن محد و المروف بے نبیشیا ن شاه بن سامان شاه بن سیمان بن مسعود بن عبد الله بن و اعظ الا کبر بن الوالفتح بن اسحاق بن قطب العالمین لمطان بن مسعود بن عبد الله بن ادفا بن ادفا الله بن المرون الله و المرون الله و المرون الله و المرون الله و الله و

نشیخ فریمعود تسکر گیخی بخیسو بهای بهجری کوملتان کیملاتے تصبه کھو تو وال میں بیدا ہوئے سکن آپ کی مچہ ورش ملتان میں بہوئی اور خواجہ قطب الدین بختیار وشنی رحمۃ الله علیہ سے خرفہ خلافت حاصل کیا اور آپ کوقطب الموحدین و قطب الزاہدین گنج شکر کے الفا بات ملے .

سلطان المشایخ صرت خواج نظام الدین اولیا، فروات بن کرایک ت اسب کی والده مامده اسید گریس نماز تهجد رابط در سی تقیس ایک مهندوجوری

کے بیے آپ کے گھرداخل ہوائس کی انھیں اس عورت بربر این تو اندھا ہوگیا باہر جانے سکا توائسے داستہ نظر نہ آیا چلا کر آواز دی لے استہ کے بندو بیں چوری کرنے آیا تھا اب اندھا ہوگیا ہوں میں توبرگڑا ہوں کہ پھر زندگی بھر بر کام کہی نہ کروں گا مشیخ فرند کی عسر اسوقت چھ سال بھی وہ باس ہی سوئے ہوئے تھے ایکے اور چد کے تی میں دُعاکی موہ اُسی وقت بینا ہوگیا ۔ دو مری سیج وہ چدا ہینے بال نیچ کو لے کر آیا ور آپ کی خدمت میں عاضر ہوا اور کلم پڑھ کرمسیان ہوگیا ۔ آپ سے اس کا نام عبداللہ دکھا۔ وہ ساری زندگی آپ کی خدمت میں حاضر رہا جب مراق قصد کھوتوال میں دفن ہوا۔

جب حضرت سیخ فرید کمتب میں داخل اوسے تو محقورے می دنوں میں تمام علوم طريع يعة قرآن ياك حفظ كبيا ملنان مين مولانا منهاج الدبن كي مسجد مين تناب نافع بره رسے نفے اپنی ولوں خواج فطب الدین اوسشی ملتان میں تنزلیب لائے اُسی سجد میں پہنچ کر بینے فریدالدین سے یو جھا بدیل کیا پراھ رہے ہوآپ نے عرض کیا کہ نافع براھ رہا ہوں آپ نے فرا یا انشاء اسٹد اس کنا ب سے نفع باؤك بخواج فريدلدين كوخواج فطب الدين كى بات اننى بيندا ألى لدول یں اُرْکی اورمرید بہو گئے خواج قطب الدین ملتان سے روار ہوئے تو اپ بھی دیلی کی طرف سا غذیل بڑے مگر حضرت خواج نے یہ بات منظورة ک اور فرما بائم ملتان میں رہورظ سری علوم حاصل کر و بورے عالم بنو بھر سانے یاس آنا کیونکر بے علم زا برشبطان کاسخرہ ہونا ہے ،حضرت خواج وزیدالدین كه وصدلعد ملنان سے فندھار كئے. اورعلم حاصل كرنے كے بعد لغداد يہنے. ان داون بنج شهاب الدين عرسهروردي ،سيعت الدين باحزي ، سعدي حموي، بها مرالدين جموى مشيخ بهام الدين ذكريا ملنا في مشيخ اوحدالدين كرماني اورشيخ فررالدين

نیث بوری جیسے اولیاراللہ موجر دینے ۔ آپ اِن بزرگوں کی نجانس ہیں رہے اور کھی وسر لبد د بلی آ گئے اور اپنے بیر کی خدمت بی رسنے سکے۔ العام الاقطاب نے حضرت شیخ فزیدالدین کے بیے ایک علیحدہ حجوہ بنايا تفاآب كوعجر يب روحاني تزبتيت دى كمئى ا درخرة خلافت عطاكياكيا حرت خاج فريد كنخ شكر كى ولائيت وكرامت كى شهرت عالم إسلامين میں تو سزار وں تشنگان باؤہ روحانیت آپ کے در وازے برجمع ہونے الا المان المسكان أوسش كرت كرعام بوكون سے دُور رسي وياني أفساراً وملی چھوٹ کر بانسی جلے گئے اور وہاں دوسال مک رہے ، مگر وہ الم می وکوں نے ہی کو گھیرلیا ۔ حیائخیر و ہاں سے حل کر ایک غیر معروف مقام (اجردصن) پاکیٹن نیام فرما ہوئے۔ وہاں کے لوگ جابل اور درست نظے اور اُن میں اکثر بذر کان دبن کے منکر بھی منے ۔ ایشہرکے باہر کیکرکے درختوں کے ایک مجفد ين د بخ بكے - و بال آپ ك الى وعيال اور دوسر محتصلفين اكثر فاقدين كرر بسركت معض اوفات بوں ہونا كر ابنين نين دن كے بعرشكل سے كھانامسسر ا تا چوں کہ آپ کو اسٹر سر بورا بھروسہ تھا۔ آپ نے اس فاقد سٹی کی کبھی بروانہ كي المبتدا مهنة فتوحات اور نذران ببني شروع بوك سكن جو كي آناك غربيون ا ورمسافرون مين تفسيم كردية اورحود وصيع كاكر كزاراكرت - أن دنوں پاک بتن کے فاضی شہاب الدین تھے۔ یہ ایک خشک ملا تھے حضرت شیخ كى مشہورى دىجھى توحداور كغض سے على اعظے الكينين كے جاكيرداروں كوآپ كے خلاف أبھارا وركها كرنيخص غير بشرع سے سماع سنناہے اور رقص كرتا ہے اسے بہاں سے كال دينا جا ہيے - و بال كے زمينداروں اورجاكيروارو نے مروں کے سنان کے گورز کو ایک خط لکھا کد اگر کو کی شخص سرود سننے

رقص کرے قواس کا کیا علاج کرنا چاہیے۔ ملنان کے گورز نے جواب دیا کہ بیلے
الیشے خص کا نام ملح کر بھیجو اُس کے بعد ملم لکھا جائے گا۔ قاضی نے حضرت خواج
مسعود نشکر گینج کا نام ملکھا تو ملنان کے گورز کو بڑا غصد آبا اورائس نے قاضی کو
سختی سے لکھا کہ تم الیسٹے خص کے خلاف بات کرتے ہوجس کے اعمال اوراقوال
پرکسی عالم دین یا شیخ طریقیت نے اُنگلی نہیں اُٹھا کی۔

قاضی اس بات بر بھی راضی نہ ہوا آدر ایک قلندر کو کچھ روبیہ دیکر تیارکیا کہ وہ خواج فرمدی و فرے مرافلہ ف مواج خواج فرمدی و فرح مرافلہ ف مواج مرافلہ ف ما مواج کے ایک دل حضرت سے تھے کہ اچا کا فلند الدین اولیار موقع پر پہنچ گئے آب نے انہیں بنا پاکہ ابھی بھی سکطان المشائح نظام الدین اولیار موقع پر پہنچ گئے آب نے انہیں بنا پاکہ ابھی بھی سکارے گھر میں اس شکل و مشابہت کا ایک قلندر داخل ہوا ہے ۔ اسکی کم بیں بھارے گھر میں اس شکل و مشابہت کا ایک قلندر داخل ہوا ہے ۔ اسکی کم بیں نخیر سے کا فول میں سفید جا بذی کے مندر ہے میں اور بھل میں چھری ہے اُسکو کہ دوکہ وہ بہاں سے جلا جاتے ورنہ نفضان اُنظائے کا قلندر نے آپ کی بہر دوکہ وہ بہاں سے جلا جاتے ورنہ نفضان اُنظائے گا قلندر نے آپ کی بہر مانتیں اسے کان سے سی سئن ہیں اور وہاں سے بھاگ گیا۔

ایک دن ایک برخبت فلندر آپ کے پاس آیا آپ اسوفت اپنی واڑھی کو کنگھی کمرد سے نقے فلندر کہنے لگا یکنگھی مجھے دے دو۔ آپ نے فرما با یرکنگھی منتقل ہے فہرین منگوا دوں گا ، فلندر نے بلندا واز سے چلا کر کہا مجھے ہی کنگھی دے دو فلم کو بدکت ہوگی ۔ آپ نے فرما با بیس نے تہرین اور تہاری برکت کو دریا بیس نے تہرین اور تہاری برکت کو دریا بیس خیدیک دوریا بیس نے بس کھینک دیا ہے سے زور کا ایک ریل آیا اور وہ دریا بیس فرق موگیا.

ناریخ فرنشہ بیں مکھاہے کہ ایک دن جفرت خواجہ فرید کے بڑے بیٹے بیٹے شہاب الدّین نے نشکائیت کی کہ پاک بین گا فاضی مرملا مجھے اورمیرے مربدول

کوگالیاں دیا ہے اور برسرعام بے مرتی کرنا ہے حضرت خواجہ فرمد اپنے بیٹے کی باتوں سے بڑے متا تر بہو سے اور برسرعام کے بیٹے کی باتوں سے بڑے متا تر بہوت اور اپنی لاکھی ہے کر زمین پر ماری اسی وفت قاضی کے بیٹے میں در دا کٹا اور وہ چلآنے لگا کہ مجھے شیخ فرندالدین کی خدمت میں ہے جاؤ تاکہ میں اپنی غلطی کی معانی مانگوں اور نوبر کروں اس کے ریشتہ دارا سے اسھا کر سے جارہے تھے کہ دہ راستے میں مرکبی ۔

برآل کمتر که با بهتر سنیزد چناں افتد کہ سرگز برنخبرد اجو كمية الحجي لوكول سے الله أب وه الساكرة سے كريوا الله نہيں سكة، ميرالت كخ كمونف نه مكها سيكرا بك نوجوان دملى سے جلا اور نوب كرنے كے الادم سے مفرت خواج فرمدالدين كى خدمت ميں باك بنن كى طرف روار ہوا۔ راستے میں ایک فاحشہ اور گانے والی ورت کے سمراہ سفر کرنے لگا بولخ مرافعوان فولصورت اورعوش شكل عفا وه مورت اس كراس قريب سوتي كئى مكروه جونكرتورك ارا دے سے نكلا تفااس كى طرف توج رز كرتا مسفرك د وران ان کا فافله ایک ایسی جگه رکا که دونوں کو ایک سی کمرے میں رات گزارناطری چونکو دولوں اکیلے نے دوسرے ہوگ دوسری جہوں برتھے اس مورت نے کوشش کی کہ لیے فالوکر ہے۔ ادھی ران کا وقت ہوا عورت جنن کر رہی تھی کہ را چانک کوئی تخص کرے میں بہنجا اور ایک زور دار تاجراس نوجوان کےمنہ بمالااورفرایا او بادب تم وز کارادے سے حضرت با افریر گیج شکر کے پاس جا رہے ہوا ور راستے ہیں ان کاموں میں مبتلا ہو گئے ہو برکہ کر وہ ا دی غائب ہوگیا . نوجوان اکتخفر اللہ کتے ہوئے اُٹھا اور کرے سے ما برجلاكيا . جب ياكبنن من حضرت بني كي خدمت مين حاضر بوا تو اب ن

أسے د مجینے ہی فرا یا محدبطر تم اس فاحشہ عورت کے کمر سے زیے گئے۔ سیرالاقطاب کے معنقف نے مکھا ہے کہ دبیال اور کے تصبے میں ایک السیا ما کم تفاج شکار کا بڑا کر دیدہ تھا اس کے پاس ایک خاص متم کا شکاری باز تفاكس في البير شكار كو حكم دے ركا تفاكداس بازكو نشكار ركهمي ز چيورنا السيانة بوكرايك وفعد المركرير والس نذاك أرتم في كوتابي كي نويس تهين قتل كردول كا ايك دن وه امير شكاركے بيے الينے دوستوں كے ساتھ صحایس سے گزر رہا تفادریا کی طرف سے کھ مغابیاں الرتی سومکی گزری اس نے دومنوں کے کہتے ہرا سے بازکو شکار پر تھیوڈا. باز اڑنا ہوا نظروں سے غامر بوگی ایر شکار برا برات موا اور زار زار رونے مگا آخر گرتے برنے یضی فرمدالدین گنج شکر کی خدمت میں حاضر ہواا و رفری بے جینی سے اپنا واقع سنایا حضرت نیخ نے اُسے نسل دی جبتت سے پاس مجابا اور تمام دوستوں کے ساغة بِعُمَاكُمُ هُمَانًا كُولايا . كمانًا كما يك تواب في البرشكاركو بلاكرابية كفرك داوار کی طرف اشارہ کر کے بنا دیکھو یہ باز تہارا تو تہیں امرشکار خشی سے كورا اور ما زكوحاكر بيراي اور را خوش دبيال بورك عاكم كياس كيا اورسارا واقد شنایا . دیبالبور کا حاکم اُسی وقت اُنظا ا ورامیرشکارکوس تف لے کر حضرت کی خدمت میں عاضر ہوا ۔ مرید بوگیا۔ تارک دنیا بن کیا اورساری زند کی حضرت شع فزیدالدین کی خانفاہ کے دروازے پرجاروب کشی کرتا رہا۔

سیرالا قطاب میں ایک آور واقد لکھا ہوا ہے کہ دملی کا با دمت ہ اپنانشکر کردیبالپور کے تصبے کونافت و ہا راج کرنے کلا اُس نے سُن رکھا تھا کہ دیبالپور کے لوگ اسلام فنول نہیں کرتے با دمشاہ کے سباہی دیبالپور بہنچے مردوں کوفتل کر دیا ، عورتوں اور بچوں کو قیدی بنالیا ، اُن مورتوں میں ایک تیلی کی بیری

بھی تھی اس نے بار بار کماکہ میں سلان موں مجھے جھور دباجائے میکن کسی نے اسکی بات نهشني آخرنيلي حضرت خواج فزيدالدين كي خدمت بين حاصر بهوا اورايني بيوي كے متعلق فریار دكرنے مكا حفرت نے الس كى حالت ديكھى ۔ السكى تشكائت سُنى توائسے تی دی اور فرایاتم تین دن مکمیرے پاس رمو خدا کے فضل سے ننهاری بیوی بهبین مل جائے گی۔ متیرے دن دیبال بور کے حام کے حکم سالی عا مل کو فند کرے نے جارہے تھے۔ راستے میں پاکستن لائے وہ بھی آپ سے الماد كاظلب كار موار حفرت شيخ فاسع كماكر اكرتم فيدس برى بوكة تو تم عشریوں اور در دنستوں میں کیا چیز نقشیم کردگے ۔ کہنے ملکا میں اپنی ساری جائیلو، مال و دولت سے دستروار ہونا ہوں کے فرمایا مجھ نہاہے مال سے کوئی مطلب نہیں سکین ایک بات کا وعدہ کروکہ جب تم رہائی باکرا سے عاكم سے خلعت لياؤ كے تو وہ خلعت الس ينلي كو دے دينا، جار اس سيلي موسا تھ اور دیپالپورے جاؤ وہ ا بینے حاکم کے پس بہنجا نواکس نے اسی وفت اس کور باکر دیا اس کا جرم معاف کردیا اور ایک بری خولصورت خلعت بطور انعام دی ، ایک خولصورت کھوڑا جس برسونے کی زبن تھی وہ بھی ایسے دے دیا اورساند ہی ایک ہمائت خولصورت کنیز انعام بس دے دی وہ عامل یہ تمام چنریں سے کر وہاں سے روا نہ ہوا اور تمام چنری اس تبلی کے والے كوبي اس كنيزنے تيلى كو ديكھا تو خوشى سے جلا اُنھى يد تومرا خاو مذياس بات كايدار بواكرتبلي ت مام كاروبار جيور ديا دونون ميان بيوى حصرت حوام فرید کی خدمت میں ما حرب کے اورساری زندگی استر کے راستے میں وفق

اخبارالاخبار كيمصنف ككفت بي كمحضرت خواجه فرمدالدين كوابتدا في عابد

ا ور رماضت کے دوران حکم ہواکہ وہ متواتر روزہ رکھیں اور تین دن کے بعر ا فطار كري ايك دن افطارك وفت كوئى شخص كهانا بكاكرلايا حفرت شيخ نے ایک دو تقے کھائے مگر چند لمحول بعد نے کر دی دوسرے دن اسنے بیرروشن غیر كى خدمت مين حاصر ، موئے تو آپ نے فرمايا بابا فريد رات كونم نے جو كھاناكھايا مقا وہ ایک شراب فروش کے گھرسے آیا تھا اسٹرنے تم پر جربانی کی تے ہوگئ اوريكانا نتها رك بيط بس مراء اب نين دن لعد جوچز غائب سے كئے وه كهابينا. مين دن كزركي مركوي چركهان كونه كائ حتى كم يجه دن كزر كي تو یشخ کو کھانے کی خواننبو تک مبیرمذ موئی - آدھی رات ہوئی تو آپ بھوک کی وجبہ سے ندصال نفے ہا تھ زمین بیر مارا چندسگریزے اُ تھائے اورمذبی وال لئے وه اسی و فت شکر بن گئے عبس وقت آب کو محسوس مواکد بیشکر کی طرطیاں ہیں تومنہ سے تھوک دیں کہ شاید بہشیط نی خوراک مور دوسری رات بھراسیا ہی واقع میش ایا توسوچے الے کہ یہ اللہ کی طرف سے سے روز وافطار کیا۔ صبح حضرت مراشد کی خدمت بن حاضر ہوئے آپ نے فرمایا با با فرید حرفائب سے آنا ہے ہے موماً ہے آج سے تم کیج شکر مور الله تعامے نے تہارے بیامی کو بھی شکر بنادیا

تذکرة الت تفین میں کھا ہے کہ ایک سود اگرنے اونٹوں پر شکر لادی اور مان سے دہی کی طرف دوانہ ہوا جب پاکیتن پہنچا تو حضرت شیخ نے پر جھا کا ونٹوں برکمیا لا دا ہوا ہے ؟ کہنے سا کہ ان پر نک ہے ہے آپ نے فرما یا کہ چپو فاک ہی ہی، جب وہ مزل مقصود ہر بہنچا تو اونٹوں سے سامان انا را تو سارا نک تھا۔ طراحران ہواسمج گیا کہ ہم اسکے جموٹ کی شامت ہے اسی وقت والیس پاکیتن پہنچا وہ صفور کی ضمت میں صاصر ہو کر معذرت کی اور نیا زمندی کا انظمار کی گیا ہے۔

فرایا کہ اگرشکرتھی توچلوٹ کربن جائے گی خانخا نان بیرم خان نے اس وا تغدکو نظم میں مکھا اس کا ایک شعرلوں ہے ۔

> کان نک جہان شکرشیخ بر وبر م س کوشکر نک کند واز نک شکر

ایک دن حفرت سیخ خوام وزیدالدین اسے جرے سے باہر نکلے ول میں آیا كآج اسين بيرومرت كى فدرت مي حاصر بونا جابيب يربرسات كاموسم تعاشيخ کے باؤں میں بخڑی کے جوتے تھے کیجڑ کی وج سے آپ کا یاؤں بھیسلا اور آپ کر یڑے۔ زمین سے مٹی شیخ کے مُنہ میں جا بڑی ۔ آپ نے محسوس کیا کر بھی نہیں تشكره الخفا ورحضرت خواج كى خدمت مين حاضر بوسئه اور فرما باكر فبالكن تهيل كنخ شكربنا ديا سے تنہيں ان نعمت عظلي كى فدر كرنى جائيتے اور اللہ كى مخلوق سے نہرا نی اور محیّت کرنی جا جیئے ، اسیا سی ایک وا فقرسیرالا فطاب کے مصنف نے نقل کیا ہے کہ حضرت شیخ حزیدالدین کو بجین میں میٹھا کھانے کا بڑا شوق تقائب کی والدہ ماجدہ ہرر وز تفوری سی مجھائی سرم نے کے بنیچے رکھ دیتی صبح مے وقت الحقی تو نمازا دا کرنے کے لید بچے کو کھلاتی ۔ ایک دن آپ کی والدہ سربانے کے نیچے مٹھائی رکھنا بھول سیس جب شیخ عاز بڑھ ھے تو د کھا کردالدہ ماجدہ وظیمن مرسے میں ہے ہے ہے تو دسی اٹھ کرسر مانے کے بنیج یا تھ ڈالا اور روزار کی مٹھائی سے ڈوگنی مٹھائی اٹھ کر کھانا تشروع کر دی والدہ وظیفے سے فارغ ہو مکن دیکھاکہ اُن کا بیٹامٹھائی کھا رہاہے۔ لوچھا کربر کما سے لائے موفرایا جهاں سے آپ لاکر دیا کرتی تھی . والدہ مح کیس کر مفید سے سے مرسجدے میں رکھ کر دعا کرنے ملی اے اللہ اس بیٹے کو گیخ شکر بنا دے

تاكديد دنيا مين شريتي تقتيم كر تارس

سرالا نطاب میں مکھا ہے کرحفر سے فریدالدین کئی سال یک ریاضت اور محنت كرت رسيم بهاطوں اور حبنكوں ميں الله كى عبادت ميں مشغول بسے ایک دن سخت پیالس نگی ایک کنوال بر جا پہنچے جہاں رسی اور طول نر تھا لری مالیسی سے کنویں ہر کھولے مو کئے۔اسی اثنا رمیں حنگل سے دو مرن کنویں کے ك رب برا يني رأن كي شخ بي كنوي كياني كوج ش ايا اوركارك مك بركيا. دولوں سروں نے بيٹ بوكريا جب حضرت سيج نے بينا جايا نو یانی فورا کنوی کی گرائی میں حلاگیا۔ آپ کی حیرانگی کی انتہا نہ رسی سمان کی طرف مذكر كم كمن ملك الله تون مرنون كويانى دے ديا ہے اوراين بندے کومروم کر دیا ہے۔ اواز آئی تم تو اسی اور وول کو تلاش کر رہے تھے برون کو توصرف فدا بر بھر واسد تھا اس سے تم محروم رہے اور برن سیراب ہوکر کے رحضرت خواج وزید ہی مات سنتے ہی بہت کچھٹائے اور جانسین دن یک یانی مذیبا اوراسی کنوال میں جائیس دن کک چلتم معکوس کیا ۔جب جاتہ پورا کرچکے تو زمین سے ایک مھی مجرمٹی اعمائی ناکہ جائیں روز کاروزہ افطاری بیم اسی وفت سنکربن گئ عیب سے وازم کی اے فرید تبارا چار قبول سوگ تہیں مرکزیدہ بنالیا گیا ۔ اور شہریں اولیاری جاعت میں سم نے تہیں گئے شکر

ایک دن شیخ فرندالدین اپنی لاکھی پر کی لگائے کھڑے تھے اچا کک لاکھی ہا نفسے گر بڑی اور آپ بڑے حیان و پرسٹیان ہوکر کھڑے دہے اسس وقت خواج نبطام الدین اولیار حاضر خدمت نقے انہوں نے بچھا کہ برکہا معاملہ ہے راپ نے فرمایا ہیں اپنی لاکھی پر تکیہ لگائے کھڑا تھا کہ اللہ تعالیٰ نے ناداض

ہوکر فرمایا کرتم میرے بغیرد وسری چیز بر تکیدر کھتے ہوسی سے میں نے لاکھی ہاتھ سے چھوٹردی اور اسپنے کیے بر بیٹیمان اور مرکثیان بوار

جن دِنوں خواج فرندالدین مشکر کین مانسی سے چل کر یاکبین پہنچے تو ا جنگل میں می کررے ورختوں کے نیجے قیام کر دیا یہ ایک ویران جگر تقی آپ ایک دن داستے میں بیٹھے تھے ایک بورت سربے دود صاکا کھڑا رکھے جا رہی عقی اینے فرمایا لے نیک بخت اتنی نیز کہاں جارہی ہوا ور نہارے سرم كياب ؛ مورت نے روكركما كرك الله كے بندے الس تصبيم بن ايك جا دوگر جوگ رستا سے سم غریبوں ہماس نے استقدر معیبت وال رکھی ہے كرسم بيان نہيں كركتے وہ جوچز ہم سے مانكتا سے اگر سم نہ دي تو در داور بخارش مبتلا موجاتے ہی ہر دوز ایک نہ ایک گھرسے اسے دودھ منجانا بونا سع اگرافسے دودہ نہ بہنجایا جائے تو ہمارے گھر کا سارا دورہ خون بن جانا ہے میں اس سے تیز نیز جا رہی ہوں کہ اگر دیر ہوگئ تو کو کی نئی معیبت ہارے سرر یوٹ بڑے گی حضرت خواج نے اسکی واستان سنی فرمایا کہ آج تم بنا ب بی حاوم و و ده ان در وسیول می تنسیم کر د و سم و مکین بی که وه وی کیا کرتا ہے مورت ویں بیٹھ کئ دو دھ کا گڑا امرے اُتارا در عام غيبوں ميفتيم كردما فرد جوكى كے فوف سے كانب رسى متى كرجوكى كالك بیدواں ہینیا ۔ اس نے دیکھاکہ ورت نے وگی کے حصے کا دودھ فقروں یں بانٹ دیا وہ صدا ورفیرت سے جل اُکھا بورت کو کا بیاں و سے مگا یفزة شیخ نے اسے مجھایا کہ اس میں بدربانی سے بازا جاؤی سے اس کی اس کر بان بند ہوگئ ۔ اس کے باؤں زمین میں خواسے کئے۔ اب مزلول سکتا تھا اور مد این ملکسے بل سکتا تھا۔ اب جوگ کا ایک اور چیلہ بہنیا وہ بھی پہلے کی طرح

جکڑاگی ۔ اس طرح جوگ کے قام چیے ایک ایک کرکے اسے دہے اور زبین بیں جکڑے جاتے رہے اور زبین بیں جکڑے جاتے رہے ہے فرکار جوگی خود اُٹھا اورا ہے جیوں کی تفاش بیں فہاں بہنے ۔ انہیں دیکھ کر خفس میں آگی اور گالیاں بیخنے سکا حضرت نیخے نے آوا نہ دی کہ لے زبین اس ہے جی بیکڑ لو۔ اس سے بھی باؤں زبین میں جم کے راس نے اچنے جا دو اور منز سے بڑی کوشش کی مگرائے میا ہی نہ ہوئی اس خواس نے آ ہ و زاری مشروع کردی ۔ آب نے فرایا تنہیں اس شرط بر چھیڑا جا کے گا اگر تم اسی وقت بوریا بستر با ندھ کر بہاں سے چلے جا و اور میر کبھی اس طرف مند نرکرنا ۔ جوگی یہ بات مان گیا اور ا سے چلے جا و اور جا کہ اس خواس کے ساتھ باکمین کی مرزمن کو جبور کر کہیں وقت بوریا بستر با ندھ کر بہاں سے چلے جا و اور میں کہا ہیں کہ ساتھ باکمین کی مرزمن کو جبور کر کہیں و در جا گیا ۔

پاکیتن کے قریب ہی ایک تھے اولانہ ہو سے ایک دن حفرت خواجہ دہاں تشریف ہے گئے آپ نے مسواک کی مسواک کرنے کے بعد اُسے اپنے باتھ سے زمین میں کا ڈھ دیا یہ مسواک اسی وقت آیک درخت بن گئ اور بڑا قد آ ور درخت بن کر اہلہا نے لگا۔ حب دن حضرت خواجہ فرید پاک بین کو دوا نہ ہوئے توبہ درخت کھی اپنی جڑوں کو سمبٹنا ہوا حضرت شیخ کے بیچے جل بڑا آپ نے دکیھا توفرایا اُسکن یا شیج (لے درخت بیہیں دُک جا) لیکن ورخت و بال رکنے کی بجائے آپ کے بیچے بیچے آپا رہا ہے نے اسے بھر کہا لیکن دومشت و بال رکنے کی بجائے آپ کے بیچے بیچے آپا رہا ہو نے اسے بھر کہا لیکن دومشت و کوبت کی وج سے و بال نہ رکا ۔ متیسری بار آپ نے اسے بھر کہا اور اسکی شاخوں کومشوطی سے میکو لیا اور فرا یا او بے ا دب کہاں رک جا و اسکی جڑیں زمین کے باہر سے تھیں اور شاخیں زمین میں جا میں رک جا و اس می حوال کے مصنف نے متھا ہے کہ میں وہ درخت اس طرح جھا رہا ۔ سیرالاقطاب کے مصنف نے متھا ہے کہ میں نے اپنی آئیکھوں سے اس درخت کی زیارت کی ہے۔

سيالا قطاب مي لكها ب كرشيخ جال الدين بإنسوى حضرت ينيخ فردالدن كفليفاغ تق حضرت خواج أب كو غام خلفار سے زبادہ چا ہتے تھے بشیخ بهاء الدین زکریا منانی نے کئ بار صرت خواج فریدسے درخواست کی کہ نیخ ملال الدين كو مجمع دے دياجائے ناكه وہ ميرے ياس ريس مرك حضرت فيد بربار جواب دینے کہ جال الدین ہمارا جال سے کوئی تنفس اسپنے مس وجال كو د وسرك كونهين دينا. حب ين بهار الدّين نا اميد مو كئ توشيخ جال لين كواسين كرامت سعابني طرف ماكركي بهان يكركشيخ جال الدين إيكرون حضرت خواج کی خدمت میں حاضر ہوئے اور درخواست کی کم مجھے شیخ بہار الدین زکریا ملنانی کے باکس جانے دیں حضرت خواج فریدالدین خاموشش رہے۔ آپ تین دن متواتر بار بار اجازت مانگتے رہے۔ حضرت حواج فرید کو غصر بالواب نے فرایا جا ؤ۔ اپنا مذ کالاکرو۔ آپ کی تمام نعمتیں سلب کر ل کئیں جربے کا زنگ سیا ہ پڑگیا اور اپنی خانقہ ہ سے باہر نکال دیا اور عكم دباكر شيخ جال الدين كى كوكى شخص سفارش مذكرك. شيخ جال الدين ساه چهره ليے ننا ه حال خانفاه سے روايه عوت او صحا وبيابال بين برسنه يا اكيله ككومت رست تف حضرت سينج وزيرى نااضكى ک دج سے کسی کو سمت ز ہوئی کہ آپ کی سفارش کرے۔ ایک سال کے لعد ملنان کے ایک سوداگرعام نای کا وہاں سے گذر ہوا۔ اس نے شیخ جال الدین كواسخته مالى ميں دمھا ، اس كے دل كو بڑا وكر موا . كينے سكا مي حضرت خواج فربدی خدمت میں حاضر بوکر فریا دکروں گا۔ جب عالم سؤ داگر باکسین بہنجا تو حفرت خواج فريدكي فدمت بس حاصر موا حفرت اس وقت وضوفرما رہے تھے۔ آپ نے اسے مخاطب کرکے پوچھا کس کس راسترسے آئے ہو

اوركس كسيخص كو طعيو؟ ابكس شهرسد ارسد بوراس نه ساير اقعا بیان کے اور بنا کرحضور میں ملنان کے گرد و نواح میں ایک جنگل سے گزر ر القاشيك ايك تباه حال اورخسته حال تخص ملا. وه ياؤن سے نبكا تها كمرك كردا ودعق دل ية قرار تفار المحول من أنسو عقد جروب ويكالفا دل تباه حال تقار تکھوں سے نسوؤں کی جھڑاں برس دسی تقیم مرر ماک وال رہاتھا۔ مجھے اسپریٹرا ترکس آیا۔ جب میں اس کے پاس کیا تو میں نے دیکھا كه وه جال الدين بانسوى بي ميس حيران ره كياكه بريزرگ اس مالت مين بي -صرت واجرنے تاجر کی زبان سے بی حالت زارسی تو حاصرین مجلس کوفرمایا جال الدین نے روا دکھ الحائے ہیں اور بڑی سزایای ہے۔ اب ایک منظر سا رفعه محموص بربر رباعي محمي مو-كرو كردجان برديا ابدكن الرسميمني يابي مارا بدكن كركارة رنيارة بخراكم كن ا كم صبح باخلاص بها بردر ما

ما ، ترجر ۔ جاؤ سارجہان جھان مارو . باؤں ہیں جھا سے پھھائی تو بھی ساری دنیائی ہم جسیاطے تو ہم پر احسوس کرنا کسی صبح خلوص ومجت سے ہمارے دروانے پر چیے آؤ۔ اگر تہماری مراد لوری نہ ہوئی توسم سے کھ کرنا ،

اس دن سے حضرت جال الدین بانسوی جسے جاستے خلافت عنائیت مو نی جب ک الهيك مهر نثبت نه بهوتي كسي كوخرفه خلافت ياسندخلافت مذملتي تقي-صرت شیخ وزرادین نے پاکینن میں ایک قطع زمین خریدا مگرایک اور شخص نے اس کی ملکیت کا ناحق دلوی کردیا ا وراس نے دیبالبور کے حاکم کے باس دلوی دار كياماكم ف حضرت في كوينيام بيجاكه وه جواب دعوى لكه كرجيس ناكالس مفدم ی پاکین کے لوگوں سے تعین کی جائے کیونکہ وہ صیح صورت مال سے واقعظیں حضرت نے نے کماکہ یہ بات درست سے پاکنین کے لوگ سی اس مقدمے میں مجھ شہاوت وے کتے ہیں عدالت کے حاکم نے بھرکیا کہ جب یک آپ کا وکمیل حاضر ہورزمین کی دمناورز بیش زکرے اس وقت تک فیصد نہیں کیا جا سکتا جھزہ خواچرکوانس کی بیبات ناگوارگزری اورنا راض مبوکر فرما با اُس کر دن شکسته کودکهه دوکہ ہارہے پاس دستاویزہے اور ناگواہ ہے۔ اگر تہیں ہمارے کہنے ہرا عنبار ہیں سے تو خود مو فعریہ بہنے کرزمن سے بچھوکہ وہ کس کی سے ماکم نے پہات سی توحران روگ وہ امتحانا اس زمین کے قطع برگیا و راس کے ساتھ ہزاروں وك تناسر و مجھے كے بيے على بڑے كر بعلاز مين كيا جواب و بتى ہے. حاكم نے بياس جھوٹے مری کو اشار ہ کیا کہ وہ زمین سے بوچھے کہ کیا وہ اس کی زمین ہے مری نے بلندا وازسے کیا۔ اے زمین فریح کمو کرتم میری مویاشے فرید کی رزمین سے کھا وازنہ ای اس کے بعد حضرت شیخ فرید کا ایک خادم وہاں موجود تھا اس نے مبند اواز سے زمین کو کہا کہ لے زمین خاج سربدالدین کا حکم سے کرنم سیجی یات کروراب بنادئم کس کی ہو۔ زمین سے اواز اکی میں حضرت خواج فرمد ک مكيت ہوں. اس كرامت سے حاضرين ميں بڑا سنور ميا اور جھوٹا مدى تشرمنده بوكر مجاك كيا مقدے كى تحقيقات كے بعد جب ماكم ديا ليورك طرف جلا تو

رائع میں اس کے گھوڑے کا پاؤں بھیسلا اور زمین پر گربال اور حاکم کی گرون تو مع کئی .

حضرت مطان المشائخ نظام الدین رحمة الشرعلیه راحت الفادب میں مکھے ہیں کہ ایک دن حضرت نواج فریدکی خدمت میں چندمسا فرحا صربو کے اپنوں نے

ذا دراہ کے بیے کچھ مانگا۔ خواج فرید کے پاکس کچ خستہ سی کھجور پنجیب ایک مٹھی بھر کر ہر ایک کو دینے گئے اور فرماتے کرما و کہ کہا رہے داستے کا خریج اننا ہی کانی ہے ان مسافروں نے جیسے کا پینی مٹھیاں کھولس تو کھجوروں کی بجائے سونے کی انٹرنیا بھی وہ شکر بجا ماکر منزل کو رواز ہوئے۔

یشخ راحت القلوب میں ایک اور واقد ورج کرتے ہی کر ایک ون حفرت فرمدے ا بے سفر کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا کہ میں ٹیخ اوصد الدین کوانی کی عمیس بس سیتان میں تھا وہاں دوسرے عی دو دروش عبس میں عاصر تھے ۔ وہ دراوں الى دوسرے سے كامن كا إلى دكرد سے تھے وہ مان ك بات كرد سے تھے کہ اسی مو تدیر سرایک در دسش کو اپنی اپنی کرامت د کھانی جا سے لوگوں نے سب سے سے حضرت خواج ادھ لائن کی طرف مذکیا اور کھنے لگے سے سے صاحب بس كرامت وكه بن يم ي نے فرمايا كداس شهركا حكران مجم سي اعتماد نہیں رکھتا مجھ طرح طرح کی سزائی دیتا رہنا ہے وہ ف بدہی آج میدان سے نورت سے گھر : اپنے کے ابھی آپ نے بات ختم مذکی کم ایک خص مجس میں ابا اوراس نے اکر بنایا کم ما رے مشہر کا خلان کھیں کے میدان میں گیند سے کھیل رہا مقاأ كے كھوڑے كے باؤں تھسل وہ كھوڑے سے كراك سراوركردن لوك کی اورموقد رہی بلاک ہوگیا ہے اب بوگوں نے میری طرف مذکر کے کہا کرتم بھی کوئی كرامت سناد سن ني سرمواني مي سياكيا . چند لمحول بعد حاضري كوكها كرسب لوگ الم المهين بذكرلس سب في المهين بندكس حين وقت المحصير كمولس نوسب ك سب فارکعبہ بیں کواے تھے ۔ چند کحول کے بعد غام کے تمام اسی علس میں والیں ا گئے۔ اب ان وونوں ور دستوں کی باری تھی. ور دستوں نے اسے سراین گودروں میں چھیائے اور غائب ہوگئے. لوگوں نے ان کا آئر و ٹریاں دیکھی وہ خالی بڑی تھیں

و: پيرليمي دهائي يز ديئے.

لاحت الفتوب مي ايك اور دا فتم نظر سے كذرا كرحضرت نيخ فريد كى خدمت مي چنر ورولش حاصر ہوئے۔ ہر وروسش بیت المقدس سے اسے تھے و مجلس میں بینی گئے مراکب درولی خواج فربد کو بڑی نیز نظرسے و کھیا تھا حضرت خواج ا بناسرمارک جماع فیطفے رہے ہ خرای درونش سے مزرا گیا اوراک نے عوص كيايا مخدوم عم ف تو المحوبيت المقدس مين دمجها نفاكب و بال جهارد وباكت مخاوراینانام فریدالدین بناتے مخ کاپ نے صربایا تم تھیک کہتے ہولیکن میں نے وہاں تم سے وعدہ لبا تھا کہ یہ بات کسی مرظ مرز کرنا مگرتم نے اپنا وعدہ مجلا دیا ا بفورسے سنوکہ اللہ کے بندے جہاں کہیں ہوتے ہیں وہاں ہی بیت المقداس ہے ویاں ہی کعبہ سے ویاں ہی واش سے دروان ہی کرسی ہے اسٹد کی ساری کنوق اُن کی نظروں کے سامنے ہوتی ہے اگر فہلی بینتین نہ اے تو اپنی انتھیں بذکرو ور وسین نے انکھیں سنکیں ایک لمح لعدائی نے فرمایا کہ آب انکھیں کھولواں نے المعبس كونسم كهاكمر بتاياكم وكي حفرت فيخ في ايني زبان مبارك سے فرمايا ہے ميں نے اسے باطنی انکھ سے دیکھ لیا ہے وہ خص آپ سے بعیت ہوا یکمیل ماصل كى ا و رخرة اخلافت ياكرسيستان كى طرف خدمت خلق كے يعے ما مور ہوگيا۔

راحت الفنوبين ايد اور وافع ورئ سے كد ايك دن حفرت شيخ كاايك مريد شهاب الدين لا بورسے ہے كى خدمت بين عاصر مهوا اور پياس ديارندارد پيش كيا اور دوف كى كدلا بوركے حاكم نے يہ نذرار كب كى خدمت مين يھي ہے۔ شيخ نے مسكرا كر فرمايا شهاب الدين تم نے بھا ئيوں والى نقسم كى ہے۔ اوھاندار خودر كھ ليا ہے اور اوھا مهار سے ساسے ہے آئے ہو، دروليشوں كوربان مناسب نہيں۔ شہاب الدين يہ باشكن كربے حد شرميار موا اسى وقت باقى

بیس دینار بھی حضرت خاج فرید کی خدمت ہیں پیش کیےا در سرقدموں ہیں دھ کر معانی کا خواستگار ہوا آپ نے فرمایا کہتم و دبارہ بعیت کر و تہاری توج بیں فرق س گیا ہے۔ جب اس نے نئی بعیت کی توجید دلوں بین کمیل کو پہنچا اوراسے خرف کے خلافت دیکر سمر قند کو بھیج ویا وہاں جاکر اس نے اشاعت دین کا کام تروع کر دیا۔

ہم نے داحت القلوب میں ایک اور واقع بڑھا ہے کہ ایک دن ایک ہوگی سر
منڈھا در در کی ریفتیں کیے ہوئے صرت نواج فرید کی خدمت میں حاضر ہوا وہ
آپ کے پاس م کر در بک زمین پر سرر کھے بڑا دہا سنے فرید نے فرایا کر سراٹھا واس نے
سراٹھا یا اور ہا تھ با ندھ کر آپ کے ساسنے کھڑا ہوگیا آپ نے لوچھا تم کہاں سے کئے
ہوا ور کیسے آئے ہو ؟ اس نے زبان سے تو کچھ نہ کہا۔ مگر مذہب اسکی زبان ملتی
وکھائی دی آپ نے و و بین بار لوچھا تو اس نے نہائت مشکل سے بوض کی صفور
میں آپ کے زباب سے بات نہیں کرسکنا ۔ حضرت خواج فرید رحمۃ التہ علیہ نے
مافرین کو بتایا کہ یہ جوگ بڑی بڑی ریا ضیب اور مجامدے کرنے کے بعد بھار سے اپنے
مافرین کو بتایا کہ یہ جوگ بڑی بڑی دیا قربی اور مجامدے والی میں خیال آیا کہ یہ جوگ ہم بنے
مافرین کو بتایا کہ یہ جوگ بڑی برمنہ ترکھ پڑا د ہے ۔ اس نے بڑی کوشسش کی کر ساڑھا کے
ہمیشہ کے بیے زبین پر منہ ترکھ پڑا د ہے ۔ اس نے بڑی کوشسش کی کر ساڑھا کے
مگر نہ اٹھا سکا سے فراس نے دل ہی دل میں تو یہ کی ۔ اگر وہ تو بہ زکرتا تو قیامت
سکہ بہاں سی پڑا رہتا۔

می نے اس جوگ سے پوچھا کہ اس طرافقہ جوگ میں تمکس مقام ہے بہتھے ہو اس نے بتایا جب کوئی جوگ کمال کو پہنچ جاتا ہے تو ہوا میں اٹر نا بٹروع کردینا ہے میں بھی ہوا میں اور سکتا ہوں ۔ آپ نے فرایا اور کر دکھاؤ مہم بھی دیجھیں جگ نے ایک اوران لگائی تو ہوا میں اور نے لگا۔ حضرت خواجہ نے اپنی جرتی کو استارہ

کیا وہ اڑی اور جوگ کے بیچے جاہیجیں۔ جوگی جدھر جاتا تھا آپ کے جوتے اس
کے سربہ کھٹے تھے۔ عاجز ہوکر والیں آگیا۔ اور مجلس میں اکرزمین بولس ہوا اور
اسلام لاکر مرمد ہوگیا۔ ایک عرصہ کے بعد واصلان حق میں سے ہوگیا۔
ایک البیا زمانہ تھا ۔ جب صرت خواج فرید قدس سرمُ الغزیز رباست ما اوہ
میں سفر محرر ہے تھے۔ ایک ون آپ قصبہ بڑو دہ کے قالاب پر تسٹرلیف فراتے
کہ ہواکا ایک تندو تیز طوفان آگیا۔ فضاریاہ ہوگی ہمت سے ورخت جڑوں
سے اکھو گئے جس ورخت کے نیجے عضرت خواج نشریف فرما نقے اس کا ایک
سے اکھو گئے جس ورخت سے نیج عضرت خواج نشریف فرما نقے اس کا ایک
ہت بہت بڑا شاخر ٹوما اور ورخت سے جدا ہوکر ذہبن کی طرف ایما ، اس کی سٹناک

د كيها وه جهان عقا و بن علق موكرات بك وه درخت سي عليده سرمز معلق را

ایک دن صفرت بها والدین زکربا ملنا فی رخمة الله علیه کو الهام بهوا کرایی جو بحق مجمی آب کے جربے برنگاہ ڈالدہ سے زیادہ لوگ اللیم التی دور خرام موجائے گی جی بہالیان زکریا کی خوام من منی کراج زیادہ سے زیادہ لوگ ایک بیل زیادت کرلیں، چائح تمام لوگوں کا آپ کی زیادت کرلیں، چائح تمام مختلف بازاد وں میں گھو منے کا اعلان کیا چنا بخسا رے شہر میں اعلان کر دیا گیا وگ بازاد وں میں کھڑے ہے کی زیادت کرلیں وگوں کا ایک جم تفیر جلوس کی شکل میں بین حضرت شیخ نزکر با کے ساتھ تھا۔ اس دن حسن انفاق سے حضرت نواج ف رید میں من موج دیتے جب حصرت شیخ بہا کا الدین کی سواری حضرت خواج ف رید فرید کر با کے ساتھ کی زیادت کرنے کہ وفادم مہورا اور شیخ علام شیخ کھڑے فرید فرید کے گھر کے ساتھ نے کہ زیادت کرنے دوخادم مہورا اور شیخ غلام شیخ کھڑے تھے انہوں نے حضرت شیخ کی زیادت کرنے کی بجائے اجینے منہ بھیر لیے اور حضرت شیخ کو خوات

شیخ کی سواری کی طرف بیشت کرلی، وه کہنے گئے اگر خواج فرید کی گفت برداری سے دوزخ کی آگ حرام نہیں ہوسکی تو شیخ بہا مرالدین ذکریا کے د بجینے سے کس طرح حرام نہیں ہوسکی. یہ بات حضرت خواج نے فرر باطن سے معلوم کرلی۔ آپ نے بہور کو بلاکر بوچیا۔ کیا تم نے ایسا کہا۔ اس نے سال واقعہ وہرا دیا، حضرت خواج فرید نے فرایا، منا یدائش تعالے نے بہا رالدین ذکریا کو بیر مقام بھی فزید کی برکات سے دیا مہور لوگو، آئے کس بوگا، بلکرقیامت مہر دوگو، آئے کس بوگا، بلکرقیامت کی آپ کے مرید وں کے علقہ بین وائل ہوگا، ساکھ اس پر آئش دوزخ حرام کردی جائے گئے۔

الحدالله بمرد نعیر (غلام سرور لاموری مونف کتاب) دلی طور در شهنشا و فرید یکی درگاه کاغلام اور مرید ہے۔ وہ خاندان حیشت اہل بہشت کا نک خوار ہے۔ وہ خاندان حیشت اہل بہشت کا نک خوار ہے۔ مجھے تینی ہے کہ بیر عاصی برمعاصی بھی ان حضرات والا درجات کے مرانب سے انسن دوزخ سے نجان یائے گا۔

حفرت خواجه فرین کرکنج اور حضرت سیخ بها ، الدین زکریا ملتانی رحمت التیام و ونوں بڑے بُرخلوص و وست تھے حضرت فری زمان پرشیخ بها دُالدین کا آم آ آ تو برا درم بها ، الدین کمیر را دا فرمات ، زندگی کے کئی سال و دنوں حضرات ایک و وسرے کے ساتھ مجب اوراخلاص سے رہے ۔ وہ رشتہ واری بیں مجبا کی وسرے کے ضالہ زا د بھائی تھے جس ون حضرت نیخ بها وُالدین ذکریا ملتانی کا انتقال بوا ، تو حضرت خواجه فریداس ون پاکیش میں تھے پہلے تو مراقبہ میں بیٹھے رہے ، کھڑیوش مورزمین پرگر بیاس ون پاکیش میں بیٹھے رہے ، کھڑیوش مورزمین پرگر بیاس ون پاکیش میں بیٹھے اور ہے ، کھڑیوش کو فری کے دانوں کو فری کے دور الکرشیخ بر کو فری میں ایک میں بیٹھے والدین درجمۃ الشرعلیہ کا نعرف الکرشیخ بر کو فری کے دور الکرشیخ بر کو فری کی میں آیا ۔ تو ان الکرشیخ بر کو الدیا ، جب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کا کرشیخ بر کا الدیا ، جب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی سے خواجہ خوبداللہ الدین کو دور اللہ علیہ کو می اللہ کا نو فر الکرشیخ بر کو الدیا ، جب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی سے خواجہ خوبداللہ الدیا ، جب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی سے خوبداللہ الدیا ، حب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی الدین کو باللہ الدیا ، حب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی انسان کی کو باللہ الدیا ، حب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی کو بیا کی کو باللہ الدیا ، حب آپ کو میوش آیا ۔ تو ان کی کو باللہ الدیا ، حب آپ کو میوش آیا ۔ تو انسان کی کو باللہ اللہ کی کی کی کی کی کو باللہ اللہ کا کی کی کھڑا کی کو کھڑا کی کی کی کا کھڑا کر کیا گا کی کا کھڑا کی کو کھڑا کی کو کھڑا کی کا کھڑا کی کی کی کھڑا کی کھڑا کی کی کی کھڑا کی کھڑا کی کو کھڑا کی کی کھڑا کی کھڑا کی کی کھڑا کی کھڑا

کرکے فرمایا کہ آج میر مجائی بہا مالدین ملتانی واصل کبن مہو گئے ہیں ۔ میں دکھے رہا مہوں کر مراب میں اور میں مہرور دی مہوں کر مزار دوں میں منان میں تسترلیف لا رہے ہیں فرشنوں کے جلو میں حضرت شیخ بہار الدین کو اعظا کر مہم اور میں منان میں تسترلیف لا رہے ہیں اور مہم بھی نماز حبازہ اداکریں ۔ چنانچ بہت سے لوگوں نے باکبین میں ہی آپ کی نما زحبازہ اداکی ۔ یہ وا تعربھی داحت انفلوب میں درج ہیں داحت انفلوب میں درج ہے۔

فوا د الفوائد و مكتاب سے جسے صن ملائی سنجرى قدس سترة في حضرت خواج نفام الدين اوليار الشرك ملفوظات برتريب ديا غفا حضرت فواج نطام الدبن فراتے ہیں کریرے یک دوست تھے جہیں سرسال ناروے کی بیاری لاحق موجاتی ١٠ ير ايك اليسى بيارى بوتى بي كربدن محكسى ندكسى حصے سے أيك سفيانك کی رسی نکلنا ستروع موجانا ہے ، مختلف اطبار سے علاج کرایا . گریہ امرا دہاری جان نہیں جھور تی مقی اس نے حضرت خواج نظام الدین کی صدمت میں التجا کی اسب پاکینن مشریف مارسے ہیں . و ہاں سے خواج فرید شکر کنے سے میرے بے د ماطلب کرانا اور کوئی الیبا نعویز لا با حیس سے بہمیا ری دُ ور مہو جائے۔ حضرت خواجہ نظام الدين اوليار ماكستن كئ توحضرت خواج كى خدمت مين رسع و دوست كى بہاری کا انھارکیا اور تعویز کی ورخوانست کی آپ نے حضرت کو فرمایا مقام دوات لاكراكيك كاغذىرنغوبزىكمصوبى ين فيكهوايا. الله كانى - الله شانى أسد مُمّاتى. ير نخربرا ب نے بڑھی ا ورحضرت خواج نظام الدّبن کو فرمایا . یہ اُسے دے دینا اِپ نے اس بیار کو برتعویز دیا جب کک تعویز الکے باس رہد دوبارہ بھاری نے ننگ

ابك يا د حضرت بهام الدين زكريا ملتاني قدس سرة الشاني في ابيد ابك خطيس

حفرت خواج فرین کر گنج رحمت الله علیه کو لکھا کرمیرے اور آ کیج ورمیان عشقباری ہے ا اس نے جواب میں کا کھا عشق تو ہے مگر بازی نہیں ہے "

اپ سے بوب یں بھود میں اس سے سریا ہوں ہو در برت کر گئے کی خدمت ہیں ایک دن حفرت خواج بسعود و فر برت کر گئے کی خدمت ہیں بیٹھے تھے بحضرت خواج بسائل اوس برگراہے آئے موض کی اگرا جازت دیں تو میں اسے اٹھا لوں اور تعویز کے طور پرا ہے یاس رکھ لوں ہو ہ نے قبول فرا با حضرت خواج فرمات ہیں میں نے اس بال کو نہائت احترام سے اٹھا با تعویز بنایا اوس سے ساتھ وہلی ہے۔ اس فورز کی برکت برتھی کہ دہلی میں جو بھی بیاد میرے پاس اس میں اس میں اس میں موجھی بیاد میرے پاس میں اس میں اس میں موجھی والیس کرھا با اس تعویز سے ساتھ دہی دون نے اس فورز دینا وہ نشفا یاب بھونا تو مجھے والیس کرھا با اس تعویز سے مزاد دوں نے شفا یا کی کھی ۔

اسی دوران آج الدین ملائی کا ایک لڑکا جو ہمارے دوستوں میں سے تھا اور وہ تعویز کھرکے ایک طاقح پیمار سے دوران آج الدین ملائی کا ایک لڑکا جو ہمارے دوستوں میں سے تھا طاقح پیمی رکھا تھا ، میں نے تلاش کیا آ کہ آج الدین کو دے دوں مگر وہ تعویز نہ طلا وہ مایوس موکر والیس چلاگیا ، اس کا لڑکا اسی بیماری سے فوت ہوگیا ، چندون گزینے کے بعدایک اور دوست آیا اوراس نے مجھ سے تعویز مانگا ، میں نے اسی طاقتی میں دیکھا تو تعویز ٹرا تھا میں نے اسکے حوالے کر دیا آئیسے بیمعلوم ہوا کہ آج الدین کے لڑکے کی زندگی ختم ہو کی تھی اسی وجہ سے وہ تعویز میری نظرے بوتنبدہ رہا۔

بادرسے کہ حفرت گنخ شکررحمۃ اللّه علیہ کی زوج محترمہ بی بی حزیزہ غیاف الدّبن بلین دہا کی بیٹری تفی ابھی وہ تخت نُر محمۃ اللّه علیہ کی زوج محترمہ بی بیٹری کی شادی خرق فواج گنج شکرسے کر دی تھی اور ساتھ ہی دو فولبھورت کنیزی۔ ایک کا نام بیٹری کی فات بی بی سارہ اور ووسری کا نام شکرا نظا وہ بھی غیا ت الدین بلین نے اپنی بیٹری کی فات کے ہے ں تہ جیمیں میں بیٹری کی فات کے ہے ں تہ جیمیں میسی نے اچن میں میں کے ہے ہاں دہیں۔ بی بی کے بطن سے چھ لڑکے

اور نین ارگیاں بیدا ہوئی ان بچوں سے حضرت خواج کی بڑی اولاد حلی ۔ آپ کا سب سے جھوٹا لڑ کائیج عیداللہ نامی تفار اُسکے کوئی اولاو نہ ہوئی کیونکدا سے تعین فسا دبوں نے بھین سی میں شہید کروہا تھا ان کامزار پاک بین میں شہر کے جنوب کی طرف واقع ہے ا سے مزار عبداللَّه بیا بانی کنتے ہیں ۔ صاحبزا دوں میں سے ایک بیٹیا بیٹنے بدرالدِّین سمان ا بينے والد بزرگوار كاسجاده نبن بنارا سكے جھ بيلے اور پانخ بيٹياں هنبن ران كا مزار كبندك اندرس سے سننخ بدرالدین سلان كو اسينے والدېزرگواركے علاوہ فالووائ جشنببرك دومرب بزركوں سے همی فیض ملا نفا بنوام غزرا و رخوام زور حمر التامييوا نواجگان جینت بیں سے تھے وہ صنرت نواج فریدی زندگی میں ہی مینت سے عل کر پاکیتن اسکے تھے صرت شیخ نے تبرگا شیخ شہاب الدین اور بدرالدین جراک کے برئے صاحبرا دے تھے إن ہی برزگوں سے خرفر ارا دین بنجایا تھا اورانیس ان کا مربد بنایا تفار حفرت کے ایک اور بیٹے شنج بہا مالدین تقے جن کالفب شہاب الدین تفارم ب كوكنيخ علم كاخطاب ملا تفا أبيس ظامرى علوم بس هي برا مقام حاصل كفاءان كے یانخ بنٹے تھے ان كامزار روضدا قدس كے منتصل گبند كے باہر واقع سے كچھ عرصه مے بعدا پ کے فلفا رہنے ایک بہت سی بڑا کبند بنایا تھا۔ اور آپ کی نعش مبارک کو وہاں سے اکٹا کراس گبند کے اندر وفن کیا۔

کے ذریعے معلوم کرلیا اور دہاں سے ہوانہ ہوکر جنازے میں نشر کی ہوئے آپ نے میدان جہا دمیں جام شہادت نوش کیا۔

تمپی نے وور کے نواکوں کی خوانس تھی کہ انہیں شہدا کے مقرے میں دفن کیا جات کے دور کے مقرے میں دفن کیا جات کے مقرے کے اور دگرد قری ہیں وہاں دفن کر و بیئے گئے مشیخ نظام الدین بیٹنور کے مقام پرشہید عوے اور وہن فن موسے ر

حضرت خواج نسر بد کے ایک اور مما حبرا دسے بیخ نصیرالدبن عرف نصراللہ تھے اور وہ سارہ ان کے چھ بیٹے تھے بعض لوگ کہنے ہیں کہ آپ حضرت کے متبنی تھے اور وہ سارہ کے بطن سے پیدا مہوئے تھے بعض لوگوں کا خیال سے کہ حضرت نے ایک اور عورت سے شا دی کی تھی اس کانام کلنوم تھا اس کا سابقہ شوم سے ایک بٹیا تھا حس کا نام شیخ نصراللہ تھا ،حضرت نیخ فرید شکر گئے اسے بھی اسے بیٹے کی طرح بیا د حس کا نام شیخ نصراللہ تھا ،حضرت اعز الدین جو حضرت شکر گئے کے بڑے بین موضع جا ولیا بذیب سے دیائی حضرت اعز الدین جو حضرت شکر گئے کے بڑے بین کو فرید کھا تھا کہ ان کا خرار تبولہ کے علاقے بین موضع جا ولیا بذیب سے دیائی حضرت اعز الدین جو حضرت شکر گئے کے بڑے بین احضرت اعز الدین جو حضرت شکر گئے کے بڑے بین موضع جا ولیا بذیب سے دیائی حضرت اعز الدین جو حضرت سے جہاں حضرت خواج فریرت کی گئے کی فریجی ساتھ ہی سے جہاں حضرت خواج فریرت کی گئے تھا کہ خواج میں میں کا دورت کی گئے تھا کہ خواج فریرت کی کھا تھا۔

حضرت خواج فریرشنگر گنج فرمایا کرتے ہے کہ اگر خلافت یا سجا دہ شبی عورت کو دینا جگر اگر خلافت بہن تا بہیں معلوم نہیں مہوسکا کہ ہوتی تومیں ابنی بیٹی کی بر مرفقاں کو خرقہ خلافت بہن تا بہیں معلوم نہیں مہوسکا کہ اس بی بی نے روحا نی فیفن کہاں سے با یا بعض لوگوں کا خیال ہے کہ حضرت شیخ فرمدالدین کی چا دبیٹیاں تھیں ۔ چوتھی بیٹی کو آب نے اپنے خوام زا دہ تینے علی احمد صابر شیخ علی احمد صابر شیخ فرمدالدین کے نکاح میں دیا تھا۔ اخبارا لا خیار میں مکھتے بیں کہ شیخ علی احمد صابر شیخ فرمدالدین منتہی ہوتا ہے۔ آب کی فرم کیر میں ہے اسی طرح کرتا ب معارت الولایت ا در مبیرالا قطاب سے معلوم ہوتا ہے کہ شیخ علی احمد صابر حضرت شیخ فرمدالدین کے خوام زا وہ بھی غفے داما وہ جھی غفے اور خلیفہ خاص بھی غفے ۔

حفرت فریدالدین گیخ مشکر کے خلفا ہر کی تعدا د حد حساب سے زیادہ ہے تعبق کتابوں میں لکھاہے کہ آپ کے سنتر ہزاد خلفا رفتے آپ کے ملفوظات میں جر حوام فریدی کے نام برمشہور ہیں میں بچاس ہزاد آکھ سوچائیس خلفار کا ذکر ملت ہے۔ ان میں سے دس ہزاد کر ملت ہے۔ ان میں سے دس ہزاد کر وکے زمین پر نقے ، انھادہ ہزار سمندروں میں ، سات ہزاد کوہ قاف ، پاپنے سے بیالیس مروقت سوا اور فضا میں دہتے تھے چارسو چر تھے اسان پر موجود تھے جو دہ ہزاد ساتوی آسان پر نقے اور سات سوعیب اللہ بین جہند سوائے اللہ بین جہند سوائے اللہ بین جہند سوائے کے اور کوئی نہیں جانتا ۔ وہاں دس مزار خلیقے جو زمین پر میں جیذا لیسے اللہ نقالے کے اور کوئی نہیں جانتا ۔ وہاں دس مزار خلیق جو زمین پر میں جیذا لیسے میں جن کی شکل وصورت باللہ حضرت شیخ فرید سے ملتی جلتی ہے اور وہ حضرت شیخ کی دومانی تعلیمات کو بھیلانے میں سرگرم رہے۔

بحد مشهود حلفار کے نام و بیئے جانے ہیں ا سلطان المث کخ نظام الدین مدالونی رحمتر الساعلیہ ا علاو الدین علی احد صابر کلیر رحمۃ الساعلیہ

٣ . جمال الدين قطب بإنسوى رحمة الشعليد م . بدر الدين سيمان بن فريدالدين كبخ شكر رحمة الشرعليه ه ريشخ شهاب الدين كني العلم بن شكر كني رحمة الشرعليه ٧. نظام الدين شهيدين شكر كلنج وحمة الشعلير ه . يعقوب بن شكر كنج رحمة الله عليه . يشخ معزالدن بي كركم حمة الشعليه و يدرالدن إسحاق غزنوى رحمة الله عليه ١٠ . تشيخ وا بإرو خادم رحمة الله عليه ١١ ريشنخ زن الدن وشمتى رحمة التوعليه ١١ ـ يشخ تنكرريز رحمة الشعليه ساريشنخ على شكرماز رحمة الشعليه ١١ يضن على الحق رحمة الشعلب ١٥ - شيخ محدسران رحمة الترعليه ١١ . ينيخ وهني وما رحمة الشرعليه TO BE WELL ١١ . يشيخ جال عاشق كامل رحمة الشدعليه ١٨ ريخ بخيب الدين متوكل براد رحقيقي شار كليخ رحمة الشيطلم وا . يشيخ عارف سية ني رحمة الله عليه ٢٠ . فيخ زكرا سندهي رحمة الشعليه ١١ ـ شيخ صدر ولوان رحمة التُدعليه ۲۲ سیخ داود بالوی رحمت الله علیه ٢٣ رشيخ جلال الدين رحمة الشعليه

۲۶. شیخ رکن الدین رحمة الته علیه ۲۵ ستید محمد بن محمود کرمانی رحمة الله علیه ۲۹ سینخ منتخب لدین رحمة الله علیه ۲۷ سینخ دوسف رحمة الله علیه

۲۸ مربان الدین صناحی بانسوی بن شیخ جال الدین فطب بانسوی رحمت السّرعلیه ۲۹ میشنخ محد شاه مخوری رحمت السّرعلیه ۳۰ مولانا محدمولهانی رحمت السّرعلیه ۱۳ مرولانا علی بهاری رحمت السّرعلیه ۳۲ میشنخ محد نبیث بوری رحمت السّرعلیه ۳۲ میشنخ محد نبیث بوری رحمت السّرعلیه

حضرت خواج فربرت کر گیخ دیمترالشد علیه کی و فات اخبارالاخبار اور نفیترالایم میں پانچ محرم بروز منگل چونسٹے ویسٹے کھی ہے مگر تواریخ فرستہ بیں چونسٹی چھیا سٹے الحج الاواصلین اور نذکرہ العاصفین کے علاوہ شیح و پیشتہ میں معتبرا توال سے سے اللہ کا محالے ہے بھی فاتو نوسے ہیجی لکھا ہے ہے بھارے نزدیک ہی بات فابل تسبیم ہے۔ آپ کا مزار رُبالوار بینجاب کے قصہ باکیٹن میں واقع ہے معاولات کو ماضر نزدیک ہی بات فابل تسبیم ہے۔ آپ کا مزار رُبالوار بینجاب کے قصہ باکیٹن میں واقع ہوئے تو مالا نہ عرص برلا کھوں لوگ مزار کی زیارت کو حاضر بعوت میں ، لوگ دور دراز سے فرکر کے ایشتی درواز سے گزرت ہیں یہ مبارک درواز سے کر کو کھول دیا جاتا ہے اس درواز سے گزرت ہیں یہ مبارک درواز ہرسال یا بینے محرم کو کھول دیا جاتا ہے اس درواز سے کی دھرت میں یہ بیسے کہ آپ کی دفات سے لیدا بی و فرسلطان المشائخ نظام الدین قدس سے السطیل بیا ہوئے ہوئے ۔ آپ نے خوا ب میں دیکھا کہ رسول خوا صلے الشطیلہ وسلم اس درواز سے پر کھڑے ہیں اور فرما دیے ہیں نظام الدین چین خول ہوں وسلم اس درواز سے پر کھڑے ہیں اور فرما دیے ہیں نظام الدین چینحض اس وسلم اس درواز سے پر کھڑے ہیں اور فرما دیے ہیں نظام الدین چینحض اس

وروازمين د خل بوگا اسامان مايك.

اس دن سے اس دروازے کا نام بیشتی دروازہ بیرگیا ہے مضرت خواج فرید کے ارادت مندم بسال لا کھوں کی تعداد بیں اس دروا زے سے گزرستے ہیں جفرہ خواج فریدالدین رحمۃ اللہ علیہ کی بولئی کی روٹی ایجی تک مجا وروں کے پاس ہے مگر اس روٹی کی روایت یہ کسی کتاب میں نہیں ملی کہ آپ اپنی سی کے یہے مکولی کی روٹی چیا یا کرتے نقے۔

یشیخ عالم بنمیشوائے و وجہاں ازخرد تولیداں قطب الزمان!

مغندائے دین فریدالدین ولی گشت ظامری طلب نطب الفرید

0000

تواريخ ولادت

فريد الاولياء فريد الدين الين الدين مهدى فريد العالمين مده ه هه هه فريد الدي فريد برا همه ه هه هه هه فريد الهند قطب الملك معمود فريد الهند الملك معمود فريد الملك معمود فريد الهند الملك معمود فريد الملك معمود في الملك الم

تواريخ وصال

زېروي پېرىك لگير

ماشق حق کا مل

محرت شخ بجیب الدین منوکل رحمته الدین بوالدین قدس سره کے حقی جائی اور فلیف اعظم سے خلا ہر و باطن میں بلندر تبدر کے تھے بنایت متوکل السان سے بنزرال کی دہلی میں رہنے گراس عرصہ میں کھی کسی د نیا دار کے گھرنیں گئے۔ اگرچا ہے کے باس نقدا ور فنس سے کوئی چنر بھی نہیں تھی۔ گراس کو یاد فدا میں اتنی مشغولیت رستی کہ بسیا او قات یہ معلوم نہ ہم ذا کہ آج کوئی تاریخ فالی اتنی مشغولیت رستی کہ بسیا او قات یہ معلوم نہ ہم ذا کہ آج کوئی تاریخ فالی سے فیچا مخدوم اکیا فرید شکر گئے باک میتی آپ سے فیچا مخدوم اکیا فرید شکر گئے باک میتی آپ سے فیچا مخدوم اکیا فرید شکر گئے باک میتی آپ کے بھائی ہیں۔ فرمانے گئے ہاں ظاہری تومیر سے ہی بھائی ہیں گر باطنی طور بہ کہ کسی اور کے بھائی ہیں۔ خور وجھا کہ خیب الدین متوکل آپ ہی ہیں فرما یا جیالی بی ہوں مگر مور کی اور سے میں متوکل نہیں ہوں۔

اخبارالاولیا وراخبارالاخبار کے صنفین نے تکھاہے۔ کہ ایک سال عید کے دن بہت سے درولین مل کر صرت نجیب الدین متوکل رحمت السّطید کے گر آئے۔ اورا صار کیا کہ آج ہم کھا نا آپ کے ساتھ کھا بیس گے۔ آپ اندر گئے البیسے کھا نا مانگا۔ اس نے تبایا کہ دو دنوں سے اس گھریں کھانے کی خوتبونک نہیں آئی۔ آپ نے فرمایا۔ اگر متہارے پاس چا در ہوتو مجے دیں ناکراسے گروی منہ کہ دوستوں کو عید کے دن کھا نا کھلا وُں۔ اس نیک بخت سے چا در لاکردی وہ عبد عبی ہوئی تھی۔ وہ اس قابل نہ تھی کہ اس کوئی گروی د کھتا۔ ناچار ہو کہ بائی کا ایک کو زہ بھرا۔ اور دوستوں کے پاس سے جاکر کہنے گے۔ یہ ماصر ہے۔ درویش تھی بڑے اہل دل تھے۔ پانی کا کو زہ لیا اور کھانے کی طرح کھایا اور بیا۔ اور تشکر بیا داکر کے دخصت کی۔ چا گئے۔ تو صفر ت نجیب الدین بڑے اور دیا۔ اور بیا۔ اور تشکر بیا داکر کے دخصت کی۔ چا گئے۔ تو صفر ت نجیب الدین بڑے

شکتہ فاطر ہوئے کو سے بہ جاکہ المتدکی یا دہم مشنول ہوگئے۔اس کے دل میں خیال اس اس تو توعید دن ہے۔ میرے بیوی بجہ ل نے ایک لقہ بھی نہیں کھا یا اور در ولیش بھی اس کرمورم چلے گئے۔ ابھی یہ بات سوچ ہی رہے تھے کہ ایک شخص بھیت سے اتدا ، اور کہنے لگا پنجیب الحدین فرشتوں نے مہار توکل کا فرانگاء ش کی ملبندیوں میں بجایا ہے ، اور نم کھانے کے لئے دل میں موچ دہے ہو میں بھی گھانا کی ملبندیوں میں بجایا ہے ، اور نم کھانے کے لئے دل میں موچ دہے ہو میں بھی گھانا کا کہ کھلا و بصرت شخ نجیلیدین کی ملبندیوں میں بایک میر صرح اس ماؤ ۔ کہیں سے کھانا لاکہ کھلا و بصرت شخ نجیلیدین میانت ہے میں اپنی ذات کے لئے سوج دیا تھا۔ حضرت خضر نے کہا جا و ! اور گھر جا نتا ہے میں اپنی ذات کے لئے سوج دیا تھا۔ حضرت خضر نے کہا جا و ! اور گھر کی من اس کا شک کے دستر قال کہتے ہوئے ۔ آپ اس کے دستر قال کہتے ہوئے ۔ اپنے بچوں کا نئی ہیں ۔

www.makiaban.org

بخنیر منها اوسلیا مهم جوآیت منسوخ کوتے ہیں یا اسے مجلا دیتے ہیں اسسے بہتر لاتے ہیں۔ الله بہتر کونے اس سے بہتر لاتے ہیں۔ الله بہتر کونے والا ہے۔ خانچہ الیا ہی ہوار صفرت متو کل قدس سرؤ دوبارہ دہلی گئے۔ تواللہ نے ایک اور ترک کوآپ کی امداد و ضدمت بیرا مور کر دیا۔ اور وہ ساری عمر آپ کی ضدمات سرانجام دیتا رہا۔

برالی سی ایک معاصب دل بزرگ ریا که سختے من کا اسم گرامی وجہدا آمدین تفاحضرت متو کل اس کی زیارت کے لئے دہلی سے بدالیون گئے لئے دیکھا کہ وہ ایک بور بے بہ ببیٹیا ہے حضرت متو کل نے ادبا اپنے جمتے اتا رے اوراس کے پاس جا ببیٹے اس شخص نے نہ تو آپ کی طون توجی اور نہ احرام بکہ منہ بنا کہ ببیٹیا دیا ۔ بور بے برایک کتاب بڑی ہوئی تھی حضرت متو کل نے ہا تھ برط کر کتاب اٹھالی اور ایک صفح کھول کر بڑھا تو سی سطر میں کھا ہوا تھا۔ کہ آخری ذیا تہ میں متکبر ورولیش بیدا ہوں گے۔ اگر کوئی نیک شخص ان کے پاس جائے گا۔ اور بی متکبر ورولیش بیدا ہوں گے۔ اگر کوئی نیک شخص ان کے پاس جائے گا۔ اور جو تے اتا دکہ بور ہے برچھی مبیٹے جائے گا تو وہ آتش تجرمیں جلتے دہیں گا حرام کی بجائے انہیں آئرار بہنی نے کی کوئشش کریں گے۔

صفرت متوکل رحمته الندعليه نے اس وروليش کو کتاب دے کر کہا۔ اس
کی بہلی سطر بڑھیں۔ اس کا مضمول متہاری حالت بیان کرر ہاہے۔ درولیش نے
وہ سطر بڑھی تو بڑا سرمندہ ہوارشخ متوکل دہاں سے اعظے اور اپنی راہ لی۔
عیاف بور میں الیس صاحب کرامت عورت تھی۔ وہ اپنی پاک دامنی اور
ریافنت کی وجہ سے را لع عصر تھی۔ اس کا نام فاطم سام تھا۔ صفرت خواج فرید
شکر گنج اس کی تعرفیت کیا کہ تے تھے اور فرما یا کہ نے تھے یہ عورت دو ولیول
کے مراتب کی مالکہ ہے اس عورت نے حضرت متوکل قدس سرہ کو اپنا منہ بولا

بھائی بنایا ہوا تھا۔حفرت متوکل کے گھرتین دن دات فاقہ ہوتا۔ تواس عورت کوکٹے کوکٹفی طور برمعلوم ہوجاتا تھا وہ دو تین سرکلیجی لے کر پکاتی اورصرت متوکل کے گھر بھیج دیتی تھی۔ شیخ بھی اس کی اس نذر کوخندہ پیشانی سے قبول فرمالیا کرتے تھے صاحب شیخرہ سیٹنی مین کی وفات سائلہ بھر کھی ہے۔ بھر نی خواب الدین متوکل ولی بیشت ورضیت الدین متوکل ولی دفت ورضیت الذین دار الل رائتی دنیز محسود عاقبت رائتی دنیز محسود عاقبت میں سال وصل آل اہل کمال

آپ فواج نطب الدین مختیار شخ نظام الدین ابوالموید فدس سرهٔ اوستی رحمة الله علیه کے فلیفظم تھے نظاہری دباطنی علوم میں بے مثال تھے۔ زیدو تقویٰ میں اپنی مثال آپ تھے۔ فقہ میں بڑا اعلیٰ شان مقام اور رتبر رکھتے تھے۔

نوا نداننوا دیم مسنف نے کھا ہے کہ بندہ سلطان المثالی نظام الدین اولیا و کی فدمت میں حاصر تھا اور عرض کی کہ حصرت آپ صرت خواجہ نظام الدین اولیا والیا والی خلیس ذکر میں گئے تھے یا نہیں ۔ فرما یا میں ابھی بچہ تقالیک دن آپ کی محلیس ذکر میں گئے تھے یا نہیں ۔ فرما یا میں ابھی بچہ تقالیک دن آپ کی محلیس ذکر میں حاصر ہوا میں نے آپ کو دیکھا کہ آپ نے مبحد کے اندر آگئے ۔ دودادے پواپنے جوتے اُٹارے ہا تھیں اعلانے اور مبحد کے اندر آگئے ۔ دودرکوت منا زنفل اوالی اور مجر منبر رہتے ترافی فرما ہوئے دہاں ایک شخص قادی قاسم تھے جنہوں نے چند آگیات پر ہیں مجر حضرت شنخ نے اپنی تقریر منٹروع کی اور فرما یا ۔ کہ میں نے اپنے والد کے خط ہیں کھا دیکھا ہے ابھی آپ نے بیا تا تر ہوا کہ ہم تھے بیات بودی نہ کہی تھی کہ حاصری میں اِس بات کا اتنا اثر ہوا کہ ہم

طرن لوگ رو نے گئے۔ آپ نے بھر یہ شغر بڑھا۔ برعش تو و بر تو نظہ بڑاہم کرد جال درغم تو زیر و زیرخو اسم کرد برشوسنتے ہی لوگوں میں سٹور بر یا ہو گیا۔ آپ نے دوئین بار بہ شغر بڑھا بھر فرما یا مسلمانو اس رہائی کے ابھی دومصر عے باتی ہیں میں کیا کروں وہ مجھے یاد نہیں آر ہے۔ یہ بات انہول نے اتنی عاجزی اورانکسا دی سے کہی کہ عاصرین تراپ اسٹے۔ اس کے بعد قاری قاسم نے وہ دومصر عے بھی آپ کو

ہردرد و لے نجاک در نواہم ٹ بعشق مندى مذكور بدخوا بلم شد آپ نے یہ رباعی مکمل کی اور منبرسے نیچے اُتراکے۔ معارج الولايت كے مصنف مكھتے ہیں كرسطان غياث الديبي بلبن كے زماتے مي سارا سال دېلى مي مارش ىد بهوئى - ما د شاه حضرت سنخ الوالمويدى خدمت مں عاصر ہواا ور د عاکے لئے التجاء کی حضرت شخ منبر ریم میٹھے اور د عا کے لئے ہا تھ بڑھائے اور اسمان کی طرت دیکھا۔اپنے دامن کو بھیلایا اورزیرلب كيمكها اسى وقت با ول كا ابك مرا ظاهر بهوا ا ورسارے شهر رجيا كيا حس وقت بادمثناه اپنے گھر تہ بہنچے۔ مولانا وجع الدین جو صرت خواج تطب الدین كے مربد بھى تھے اور فليف تھى نے يوچھاكريد كيراجو آپ نے بلايا تھا بھرآپ نے اسمان کی طرف دیکھا بھر ذریر لب کھر بڑھا یہ تمام کیسی چزی تھیں آپ نے تا ما كمكر الوقطب الدين بختيار كاكى رحمة التدعليد في ميرى والده ما جده كوعنايت فرما ياتقا بيرتمام بارش اسى كى بركت سے برسى عقى-

یادرہے کہ شنخ نظام الدین الوالمویدر حمۃ اللہ علیہ کولیف لوگوں نے عبدالوا حدغز فری اور شمس العارفین کے نام سے باد کیا ہے جس وقت آپ دہلی آئے تو آپ نے خواج قطب الدین بختیار کا کی رحمۃ اللہ علیہ سے بڑا سوحانی فائدہ حاصل کیا اور آپ فا ندائی جینت کے بیرول سے شاد مونے لگے بین فائدہ حاصل کیا اور آپ فا ندائی جینت کے بیرول سے شاد مونے لگے بین فظام الدین الوالموید کوشمس العارفین کا خطاب الی کے بیروسش ضمیر نے دیا تھا۔

یضح نظام الدین کی وفات چوسو بہتر ہجری میں سلطان عیاف الدین ملبن کے عہد حکومت میں مودئی۔

بچ ل نظام الدین شمس لهادنین درخت در حبنت از دارفن کامل استرت مگرسال وصال نیز مهدی بومویدمقت دا سور درو

آپ کالقب لطان الداری موفی ناگوری رحمته الند علیه اورکئت الواحد تھی۔
آپ حضرت خواج معین الدین حن اجمیری رحمته الندعلیه کے فلیفداعظم تھے ہیئے اعلیٰ ہمت اورا علیٰ شان والے تھے۔ آپ سیدالدین زیدکی اولاد بیں سے تھے جو جناب رسول کریم صلی الندعلیہ وسلم کے عشرہ مبترہ بیں سے تھے آپ کا شار قدیم مث النح نہندیں ہوتا ہے۔ الندلتا لیانے آپ کو بڑی طویل عمرعطا فرائی آپ خواج ہے نظام الدین اولیا سے زمانے تک زندہ دہے۔
نظام الدین اولیا سے ذمانے تک زندہ دہے۔

ایک دن خواجر معین الدین اجمیری دعمة النّدعلیه روا انتخار جمرتشرلیف ذوا تخف اسپ نے عاصرین کو کہا جوچیز جا ہو ما ننگو۔ اس وقت مقبولیت کے درواز سے کھیے ہوئے ہیں۔ ایک شخص نے اُکھ کر دُنیا کی دولت مانگی دوسرے ف المحكوعة لى كا من الله و و لول كى با تين قبول مهو مئير يجرحض ت واجرعين الدين المين المين على من الدين صوفى كومخاطب كرك فرما ياكه مين في متهاد سے سئے دينا اور عقبیٰ دو تول مانگی ہیں ۔ تم دو تول میں معز زا ورمكہ م رموگے ۔ شخ جميدا لدين نے عرض كيا محصور مند سے كى كيا مجال ہے كہ موال زبان بدلائے جو كچے مير سے مولا كو المنظور ہے وہى مجھے بحى منظور ہے صفرت خوا جرمعين الدين في والى وخوا جرقطب الدين بختياراوشى كومخاطب كيا اورار شا دفر ما ياكم تم بحص جو كھے جا ہيں ما نگو۔ ہم پ بختياراوشى كومخاطب كيا اورار شا دفر ما ياكم تم بحص جو كھے جا ہم ما نگو۔ ہم پ نفر من كى ۔

مرچ توخا ہی بخاہم آل سردا سنانم بندہ دافرال نباشد سرج فرما فی برائم

حضرت فوا جرمین الدین ان دونوں بزرگوں پر بڑے نوش ہوئے کیو تکھ انہیں مذونیا کی خواہش رہی اور مذعقبی سے ڈرریبصرت النڈ کی طلب پر اکتفا وکرتے تھے بسلطان العارفین تمید الدین صوفی اور قدوت الواصلیس قطب الا قطاب قطب الدین نجتیارا دشی اس دن سے شیخ حمید الدین مخاطب باخطاب سلطان العاد فین ہو گئے۔

صححاقوال میں شنج تمیدالدیں کی تاریخ وفات انتش دہیجاتی فی چوہو تہر تہر میں ان کی جوہو تہر تہر میں ہے۔ آپ کا مرقد منور ناگور میں ہے۔ آپ کی شنج بہاؤالدین ڈکرملتانی رحمتہ الله علیہ سے نفر و غنا پرخط و کتا بت رہی۔ شنخ بہاؤالدین نے اپنے مکتو بات میں بہت کچھ لکھا دمگر جواب کا حق ا دا نہ ہوا۔

چول حميد الدين هو في كيشخ دين زين جهال در دوه ني تنت ربيد الموافقين برتار خشش ندارد و ل سنيد الموافقين برتار خشش ندارد و ل سنيد

آپ کا نام نامی حمد بن عطائه قاضمی حمید الدین ناگوری رحمته التدعلیه: اصلی دطن بخارا تھا۔ آپ آپ کا نام نامی محد بن عطائقا معز الدین سام کے عہد عکومت میں اپنے والدعطاء الندمحود کے ساتھ بخارہ سے دہلی آئے۔ظاہری علوم حاصل کئے۔آپ کے والد کا انتقال دہلی میں ہوا۔اورآپ كونا گور كا قاضى مقرركيا كيايتن سال مك ناگور كے قاصنى رہے۔ ايك دات صنور نبي كريم صلى المترعليه واله وسلم كوخواب مين ديجهار ليو المحسوس كميا كه حفروا نبيس اپني طرف میلارہے ہیں صبح اعظے قاضی کے عہدے سے استعفیٰ وے دیا۔ دنیا کے تعلقات سے درست بردار ہوگئے۔ اورسفرافتیار کرکے لغداد جا پہنچے۔ لغدا دسی شخ شہاب الدین عرم بروردی کی فدمت میں رہے - ایک سال ترمبت عصل كرنے كے بعد خرقه خلافت سے نوازے كئے۔ ابنى دنول خواج قطب الدين بختیار اوشی بھی لغداد میں تھے۔ دو نول حضرات ایک دوسرے سے رہ ی خلوص ومحبت سے بیش استے۔ لبندادسے چل کر مدیندمنورہ پہنیے ا ور نبی سال مک صفور کے روضہ مبارک بررہے۔ و ہل سے چل کرسیت اللہ کی ذیارت کی اور دوسال تک و بال قیام کیا ۔ د ملی میں واپس الرصفرت نوا جرقطب الدین بختیار رحمتہ التٰدعليه كي صحبت ميں رہے۔ حتىٰ كهمرنے تك اُل سے جدا سر موسے ۔ اس كا مزاد بھی دہلی میں ہے اسی وجہسے مثا کخ عظام آپ کو خاندان حیثت میں شارکرتے ہیں. ایک دن قاصی حمیدا لدین کیے کا طوا ت کرد سے تھے ا نہوں نے ایک بزرگ كود يكهاكه وه مجى طوا ف كررسد بين ال كان كال ته ساته ساته قدم لقدم بات ہے لیکن باطنی ا تباع بڑی مشکل ہے رعرض کی صفور باطنی ا تباع بھی ارشاد فرائي - انبول نے كہاكم ميں طوات كرتے ہوئے ہر قدم بر قرآن ياك

خم کرتا ہوں۔ اگرتم میری اتباع کرنا چا ہتے ہوتو الساکرو بصرت قاصی دل میں بھے چران ہوئے۔ بھرانہ ول نے خیال کیا کہ شاید یہ بزرگ قرآن کے معتی دل میں لاتے ہیں اور ائس کوختم قرآن کا نام دیتے ہیں۔ اُس بزرگ نے آپ کے دل کی اس بات کو پالیا اور فرمایا نہیں نہیں میں حرفًا حرفًا اور لفظًا لفظًا عزا کی دُرے گئی کے ساتھ اقبل سے آخر تک قرآن بیٹے صتا ہوں۔

قاصنی جمیدالدین بڑی تطیف طبیعت کے مالک تھے بات کرتے تواٹس میں کدئی مذکوئی تطیفہ مزور ہوتا۔ چانچہ ایک دن شنج کبیر خوارزی ا ورشنج جمیدالدین سوار ہو کر جارہ سے تھے۔ قاصنی جمیدالدین کا گھوڈ الیت قد تھا۔ شنج کبیرنے فرمایا۔ قاصنی صاحب آپ کا گھوڈ اچھوٹا ہے۔ آپ نے جاب دیا ہاں بھے

سے اچھاہے۔

شخ شہاب الدین عمر سرور دی دھمۃ اللہ علیہ اکثر قامنی حمیدالدین کے متعلق فرما باکرتے بھے بھی اپنے بھی سالوں میں کھا بھی ہے کہ ہندوسال ہیں میرے بہت سے فلفار ہیں۔ مگر حمیدالدین میرے بہت سے بڑے فلیفہ ہیں۔ قامنی عمیدالدین دحمۃ اللہ علیہ کو خوا ج قطب الدین بختیار رحمۃ اللہ علیہ کی عبال سے بڑا فیض ملا۔ آپ سماع اور وجد میں بڑا صد لینے۔ علماء وقت نے آپ بہا عراض کیا اور ہا وی اور قب کی اور آپ کو ککلیف دینے کا بہوگرام بنا یا ایک دن آپ سلطان شمس الدین کے سفید محل کے باس ہی اور قامنی حمیدالدین کے گرمیس سماع میں متر رکیہ سے خواج قطب الدین نجتیار کا کی اور قامنی حمیدالدین بھی اس مجلس میں دونق افر دن تھے ناگاہ مولا نادکن الدین مرقندی جو آس وقت کے عالم المجاب میں عموم مقام کی طرف آپ ہنچے۔ اور انہوں نے ضرمت گرداروں کو ساتھ لے کر محلیں کے مقام کی طرف آپ ہنچے۔ اور انہوں نے فدمت گرداروں کو ساتھ لے کر محلیں کے مقام کی طرف آپ ہنچے۔ اور انہوں نے فدمت گرداروں کو ساتھ لے کر محلیں کے مقام کی طرف آپ ہنچے۔ اور انہوں نے فدمت گرداروں کو ساتھ لے کر محلیں کے مقام کی طرف آپ ہنچے۔ اور انہوں نے فدمت گرداروں کو ساتھ لے کر محلیں کے مقام کی طرف آپ ہنچے۔ اور انہوں نے

اس سماع براعراض کیا۔ ایک بزدگ جن کانام علی درویش تھادوڑ ہے دور ہے قاصی عمیدالدین کے پاس آئے اور بتا یا کہ مولانا رکن الدین آ رہے ہیں . قاصی عمیدالدین نے صاحب فانہ کو اپنے پاس بلاکر کہا کہ تم بیہاں سے چلے جاؤاور کہیں تھیپ جاؤر تہیں کوئی بھی بلائے حاصر نہ ہونا اور اگرولانا رکن الدین صاحب فانہ کی اجازت کے بغیرا ندرا کئے تو ہیں ان کا مترعی موا خزہ کروں گا صاحب فانہ کی اجازت کے بغیرا ندرا کئے تو ہیں ان کا مترعی موا خزہ کروں گا صاحب فانہ تو ایکی وقت کہیں جا چھیئے اور قاصی عمیدالدین اپنے دوستوں کے صاحب فانہ تو اسی وقت کہیں جا چھیئے اور قاصی عمیدالدین اپنے دوستوں کے صاحب فانہ تو اسی وقت کہیں جا چھیئے اور قاصی عمیدالدین اپنے دوستوں کے ماحب فانہ کو الکر اللہ کیا۔ لوگوں نے کہا وہ تو بیاں موجود نہیں۔ مولانا سوچنے لگے کہ الکر صاحب فانہ کی اجازت کے بغیرا ندرجا تا ہوں تو مواخذہ ہوگا ۔ چند لمے کھڑے رہے بھیر فانہ کی اجازت کے بغیرا ندرجا تا ہوں تو مواخذہ ہوگا ۔ چند لمے کھڑے رہے بھیر والیس چلے گئے ۔

جعزت قاصنی عمید آلدین قدس سرؤ نے سادی عربی صرف تین آویوں کوا پنا مرید بنایا تھا۔ اورا نہیں درج کمال تک پہنچا دیا ۔ ان ہیں سے ایک شخ احمد نہروائی سخے دجی کا ذکر خیر سالقہ صفحات ہیں گذر بچکا ہے ، ان کے حالات ہیں کھا گیا تھا۔ ایک دات آئی کے گھر میں چورگس آئیا۔ اس نے اِدھرادھ رہا تھا دے گراسے کچھ نہ ملا۔ باہر عانے نے لگا۔ توصفرت نزاج نے آواز دے کر کہا۔ دک جاور اب آئے ہو۔ تو فالی ہا تھ نہ جاؤ۔ آپ اسٹے ۔ آپ نے چندگز کچڑا بنا تھا۔ انجی یہ کہا۔ اگرچ بے تھوڑا ساکیٹرا نہا دی اس محنت کے لائن نہیں۔ ناہم میرے پاس اس کے سواکھ نہیں جو رنے کیٹرا لینے سے تو انکار کر دیا۔ گروو سرے دوز اہل دعیال کو نے کرما فرقرمت ہوا۔ اور آور برکہ کے مربد ہوگیا۔

دوسرے مربد عین الدین قصاب تھے۔آپ زمد ورباضت بین أنى نه

ر کھتے تھے۔ آپ کی ذبان سے جو کچھ نکلتا اللہ اسے پوراکرتا۔ قاصنی فضل الدین قضا کے منصب پیغا آپ کے پاس آئے اور تضا کے عہدہ کے لئے دعا نیرکوائی۔ آپ نے فرمایا۔ جا وُتم قاصنی ہو گئے چند دنوں لعدوہ قاصنی مقرر کرد یئے گئے۔ اسی طرح جو بھی آپ کے پاس آتا محروم مذجاتا۔

تیرے فلیفہ شخص وس تاب تھے۔ آپ ہاں ہانی کیا کرتے تھے۔ ہداؤن میں ہیھے تھے۔ ہاں کا ایک واقع تذکروں میں موجود ہے کہ ایک دن اپنے دوستوں میں ہیھے تھے۔ ہاور چی کو کہا کہ میرے دوستوں کے لئے دو دھا ورچاول پکا کرلاؤ وہ لا یا تو پہلالقہ ہے کر فرمانے گے۔ آجی معلوم ہوتا ہے کہ کھائے میں خیا مت برقی گئی ہے۔ دوگوں نے بتایا۔ ہیں توکمی شم کی خیا نت کا علم مہیں صرف اتنا ہوا۔ کہ دودھ دیگے میں اگبل دہا تھا۔ اور اس کے کناروں سے دو دھ اگبل کر باہر جا پڑا تھا۔ اسے ایک برتن میں جمع کرکے ہم نے پی لیا تھا فرما یا۔ اگر ذمین بچگر تا تو کوئی مضالقہ نہیں تھا۔ اگر بیالہ میں جمع ہوگیا تھا تو یہ اما نت تھا۔ یہ بھی اجاب میں تقتیم کیا جا سکتا تھا۔ آپ نے دکھ میا بھی جس نے بعدود دھ پیا ہے دھوپ میں تقتیم کیا جا سکتا تھا۔ آپ نے دودھ لیسینہ بن کردہ نکلے کھڑے دہیں گئی آپ کھڑا کر دیا گیا سور ج کی گرمی نے انہیں لیسینہ کیدیا۔ بھرا نہیں سائیہ میں طلایا اور بھر حجام کو بلاکر فصد کو ان گئی۔ دودھ کے ہوا برخون نکلوایا گیا۔

شخ نظام الدین ابوالموئیدقدس سرہ ایک بار بداؤن میں سخت بھار ہوئے۔ شخ حس دس تاب ان کی بھار پرسی کو پہنچے۔ شخ نے فرما یا بھس میرے لئے دعا صحت کرو۔ فرما یا۔ میراا یک دوست ہے منز ف الدین وہ با نالہ میں در زی کا کام کرتا ہے اگر اسے بلالیس توسادی بھاری دُور ہوجائے گی۔ اسے بلایا گیا تو اس نے کہا منزف الدین ناف سے لے کرسرتک کی بھاری کا اندا لہ تو

میرے ذمہ ہے۔ ناٹ سے پاؤل کم ازالہ کرو گے۔ دونوں بزرگ مراتبے ہیں بیچ کر توجہ دینے ملکے چند لمحول بعد مسرا عقامیا توصرت پنج نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ لیردی طرح صحت یاب تقے۔

یشخ حس رس تاب کی کوا مات کی شہرت سارے ملک میں تھیلی توارد گردسے ہزاروں اوگ آپ کی خانقاہ میں بینجیا سٹروع ہوئے۔ایک درویش شنخ محد تخاسی بھی بدا آیون میں رہنا تھا ایک دن حس سے سجد میں ملاقات ہوئی تو کہنے لگا جس ! تم نے توا نئی مجلس میں بٹری ہٹکامہ آرائ کولی ہے۔ بھے قربے کہاس گرمی میں کہیں علی مذجاؤ۔ الٹرکا کرنا کیا ہوا۔ کہ اسی رات حسّ كے گھركو آگ مگ گئى۔ مربدول نے اندر آنے كى كوسشش كى مگركسى كواندر أن كى سمت نه ہوئى۔ شخ حس رسن تاب اسى أتش فاند ميں عبل كئے۔ حضرت فوا ح تطب الدين عنتاركاكي رحمة التدعليه ك وصال ك بعدايك عرصه تک مارش نه بونی مخلوق فراتنگ موگئی۔ اور بیلسلد کئی ماہ یک رہا۔ سلطان شمس الدين في وقت كمث أنخ كوجمع كرك باران رحمت كي التدعاكي. قاصنی حمیدالدین فی سلطان کو کہار درولیٹوں اور سکینوں کے لئے شاہی دعوت كلابهمام كيا جلئ اورابل ماع كوبلاكرا يكعظيمات المعلس سماع منعقد كي حلي شائد الله كى رحمت نا ذل مونا متروع ہوجائے. سلطان نے دعوت كى يحليس سماع بريا موئي تومادان رحمت كي كمن بن برسنا شروع موين - اتني بارتش ہوئی کرکئی سالوں سے اتنی بارش بہیں ہوئی تھی۔

حضرت قامنی حمیدالدین صاحب تصنیف بزرگ تھے آپ کی مشہور کتاب مشرح اسمائے صنی اہل علم وفضل کے ہال بے حدمقبول اور لپندیدہ ہے آپ کی وفات وسم رہیے الثانی یا لفول و کیجرے نو ماہ رمضان المبارک معلم ہو

WWW.III.GIKIGOUN.OIZ

يس بوني عقى-

چ همیدالدین حمیدد و جهال رفت از و نیا و در جنت رسید گشت سال ارتخالسش مبوه گر تاج ایل دین ولی الله همید

آپ صفرت فواج فرید گنج شکر رحمته الله شخ محدصا بری تی قد سس سرهٔ اسعید کے خاص مرید مقصاحب خبار الاخبار نے میرالادلیاء کے حوالے سے مکھا ہے کہ حس دن صفرت خواج فرید نے آپ کوخرقہ فلافت عطافر مایا تواعلان کیا صابرتم خوشخال زندگی گزارد گے

خِیانچِدایسا ہی ہوا۔ آپ کوصبرو قناعت کی بے پناہ دولت ملی تفی۔ اور کھی عمم والم آپ کے پاس ندائے۔ لوگولسے کشادہ بیٹیا نی سے ملتے اور مرد قت فوش

نوش رہتے تھے۔

منجوه چنتیه میں آپ کی و فات مصلحه منطا ہے۔ رفت از دنیا چردر شدریں خدر محلوب صابرا ہل صبر سال وصلش صابر منصور دال سم بخوال محبوب صابرا ہل صبر سال وصلش صابر منصور دال سم بخوال محبوب صابرا ہل صبر

آپ فواج فریدالدین مشکر گنج حضرت سنخ وا و د بالی رحمته الندعلیه: کے نا مورخلیفه تھے ذہروتقوی میں بگا مدونه گارتھے۔ آپ کامعمول تھا کہ صبح کی نماز گھر مڑبھتے اور شہرسے باہر کسی حبکل میں چلے جاتے سارا دن اللّٰہ کی عبادت میں مشغول رہتے۔ ذکر الہٰی

کی اُوازیں وادیوں میں گونجتی تو جنگل کے وحتی جانوراور ہرن دینیرہ آپ کے قریب آکر بلیٹے رہتے۔ آپ سنٹانہ میں فوت ہوئے۔
حضرت داؤد سینے باکمال یافت چوں درجنت الفردوس جا مرشد کو نین سینیس دولتال گفت سرور وسلنس برطا

آپ اپنے والد مشخ عید العزیز بن شنخ حمید الدین ٹاگوری قدس سرہ اسراہ اس کے مرید خاص تھے۔ عین عالم شاب میں مجلس سماع میں واصل بحق ہوئے۔ اخبار الاخبا میں آپ کی وفات کا واقعہ دیوں تکھا ہے۔ ایک دن مجلس سماع میں قوال پیٹعر پڑھ د ہے تھے

جال بده - جال بده - جال بده نائیده ورگفتتی کب یار حبثت پیرشخر سنتے ہی صفرت شخ عبدالعزیز نے نعرہ مارا - دادم - دا دم - دادم کہتے ہوئے جان اللہ کے میرد کردی -بر سری تقدیم طور تقدید شدہ میں شدہ میں شدہ میں معرف تقدیم کردی۔

ا من کے تین بیٹے تھے۔ شخ وجید۔ شخ فریدا درشنخ نجیب قدس سراہم اب نے ان منبول کے متعلق فرما یا تھا۔ کہ وحیّد۔ وحید مہو گا مجرد ارہے گا بے تعلق رہے گا۔ ان ا درہے گا۔ فرید فرد غالم ہو گا۔اورمیراسجادہ نشین ہوگا۔ نجیب۔ نجیب اور شرایت ہوگا۔

آب كى وفات المكية يس بونى ـ

رفت انه د نیاچ در حند بریر سنیخ عالم متقی عب دالعزیز

نيزشاه دين على عبدا لعزيز

والى غلداست سال دسل او

صرت خواجہ ملاء الدین احد صابر کلیری قدس سرہ : کے خلیفہ اعظم تھے۔ مواجہ علاء الدین احد صابر کلیری قدس سرہ : کے خلیفہ اعظم تھے۔

اولیائے معرفت کے امام تھے۔ پیرطرلقیت تھے۔ وافف حقیقت تھے۔ عارف کا مل ذا ہد مکمل تھے۔ صاحب کوامت اور والی تعمت تھے۔ بیندر تبراوراعلی مقام پیرفائز تھے۔ فرقہ فلانت صرت فواج فرید گنج تنکرسے پایا۔ فلانت کے علاوہ

آپ کو حضرت خواج فرید سے نسبت فرزندی دوا مادی افواہر زادگی بھی تقی صرت خواجہ فرور مالک تر تقریم سرماطنز اون خلابہ علام آذھین ن انتام ال سرک

غواج فررد فرمایا کرتے تھے بمیرے باطنی اور ظاہری علوم نوصرت نظام الدین کو سطے بگرمیرے بیرول کے ظاہری اور باطنی علوم کے سمندر علاء الدین کے حصدیں آئے

میرےسینے کے تمام علوم خواجہ نظام الدین بدالونی نے صاصل کئے . گرمیرے دل کے

تمام علوم واسرارعلاد الدين صابيق لئے-

سرالاقطاب بن مکھاہے۔ کہ بارہ سال تک شنے علاء الدین نے صرت خاج فرید گنے شکرکے شکرا وردرولشوں کے طعام کی خدمات سرانجام دیں۔ لیکن چ کہ آپ کو کھانا کھانے کا حکم مہیں دیا گیا تھا۔ بارہ سال تک در بارا ورلنگر سے کھا ٹامہیں کھایا اور حبگل کی جرطی لوٹیوں سے پہٹے پالتے رہے۔ بارہ سال لور صرت خواج فرید نے وجر پوچھی تو آپ نے عرض کی آپ نے سنگر کی تیادی اورا مہم مراح محم دیا تھا کھلئے کی اجازت تو مزدی تھی۔ آپ کی اجازت کے بغیر میری کیا مجال تھی۔ کہ طبغ سے ایک دامہ بھی کھانا مصرت فریدالدین نے آپ کے اس میر کیوج سے ایکوما آپر کا خطاب دیا۔ خرقہ خلافت عنا بیت فرمایا۔ دہلی کی روحانی مگرانی میر دی ہے موریا باک بین سے خرقہ خلافت عنا بیت فرمایا۔ دہلی کی روحانی مگرانی میر دی ہے موریا باک بین سے پہلے بانسی جانا۔ شخ جمال الدین قطب بانسوی قدس سرۂ سے اپنے خلافت نامہ

سے مبرنسب کرا تا۔ بچر د ہلی جانا۔ آپ ہانسی کی طرف دوا نہ ہوسے ہاکسی پہنچے سلی ہو موادسى حفرت جال الدين ما نسوى كى خانقاه كاندر جاينيج جال الدين دروازي پانتقبال کے لئے آئے مرکم علی احد سبی سے نیچے ندا ترے اور سوادی پر ہی اندرون خانقاہ یک چلے گئے حضرت جال مانسوی کو آپ کی بیدا دا پیندنہ آئی مجبوراً تغظیم توکی گرآ داپ درولیشی کے خلاف عمل کو دل میں بڑا منایا۔ احزامًا عبس کی سند صدارت يرسيما يا. دو نول نے مل كر ماند مغرب اداكى . مازك بعد حضرت صابر نے مندخلافت بیش کی اورم رنصب کرنے کا مطالبہ کرتے ہوئے وہلی کی روا ملی کا ادادہ كرليا يونكها س وقت اندهيرا تقاجراغ موجودية تقامصرت جمال بإنسوي رعمة النّد عليد في مهرنصب كرفيس ما مل وتر دّد كيا - جراع لا يا كيا . مند خلافت بيش كي كني كم اتفاقاً موا كاايك هبونكا آيا جراع بي كيا حزت صابه في حراع برايك بيونك ماري توچراغ دوياده جل اعمار خواج عال نه يمورت مال ديجي توسد فلافت كوصرت صابرے م تقسے لے کر بھاڑ دیا۔ اور فرمایا۔ دہلی کو آپ کے دم آتین کی ناب بنيس ب- اگرائب اسى طرح چلے گئے توشہر جل جائے گا۔ صرت جال كى اس بات برصرت صاربرا فروخة بو گئے اور جش میں آگر فرمایا-آپ نے بیری سد فلافت بھاڑی ہے میں نے آپ کے سلمطر لقت کو پھاڑد یا ہے۔ آپ نے پو چیا۔اوّل ے با انخرسے۔ فرما با اوّل سے اسی وقت غصب اُسطّے اور والیں باک بین روانہ بوكئے۔ اور صفرت خواج فريد گنج شكر كى خدمت ميں جا پہنچے۔ اور تمام وا تع سنا ديا۔ حضرت خواج فريد ف فرما يا ما آبر جال الدبن كي مجالاي موئي سندخلافت كودوباره بنيس جرا اجاسكتا بهر وچها بجب جال في تنهاري سندخلافت بهاري على توتم نے کیا کہا تقا۔ تبایا کہ میں نے کہا ۔ کہ آپ نے میری سندخلا فت بھار دی ہے ہیں نے تیراسلسد پھاڑ دیا ہے۔ انہوں نے پوچھا کہ اوّل سے یا آخرہے میں نے کہا

www.inaktato.an.org

اوّل سے صفرت خوا جرفر مدید نے بید ہا ت سن کر فرمایا۔ کہ اللّد کے بہلوا آول کا تیر خطابین جا کا لیکن خرگز ری کہ تم نے اوّل کہد دیا۔ آخر سلامت رہا۔ انشاء اللّٰد متہارے مردی میں سے ایک مردید باہد گا جس کی دعاسے بیں لسلہ جاری ہوگا دید صفرت کشیخ جلال آلدین بابی بینی کی ذات کی طرف اشارہ تھا، صفرت صابر قدس سرؤ نے جبل طرف اشارہ تھا، صفرت صابر قدس سرؤ نے جال الدین ہائسوی قدس سرؤ کے بیٹے بیٹے بیٹے جال الدین ہائسوی قدس سرؤ کے بیٹے بریان الدین اگر جہاری بر سے معاصل منہ ہو گئے جھید نے بیٹے بریان الدین اگر جہاری کو مشنش کی محصرت کی ذریر تربیت رہا۔ اور صفرت ہائسوی رحمۃ اللّٰہ علید نے بیٹی کو مشنش کی کراسے کوئی مقام ملے گرکا میا ہی حاصل منہ ہوسکی۔

حضرت خوا جرفر مد الدين تميخ شكرنے علاد الدين صابر كو كليركي دوحاني ملكت عطا فرمادى اورسند فلافت اپنے قلم سے از مر فوت ریکے علے کی اور تا ذہ حرقہ فلافت عطاكبا ورسيدها كليريني كاحكم ديا -آب ومال پنج تواس خطركو نور دومانیت سے منور کر دیا ۔ اور وہاں ہی تیام پذیر ہو گئے ۔ ان دنول کلیرعلمار مثالنخ كى كترت كى وجسے لبندا دالعلم اور مدینیته الاولیا بنا ہوا تھا۔ نما زجمعہ کے لئے جا مع معید کے سامنے عام لوگوں کے علاوہ چارسو پہلیاں آگر رکتیں جن میں بڑے بڑے صوفیا را ور روسا راتنے مضرت صابیجی اسی سجد میں نماز حمعہ اوا كرنے آيا كرتے تھے۔ اور مخلوق كے بجوم اور كثرت كى وجرسے سجد كے صحن كى كئے آپ کوسجدسے با ہر ملکہ متی بھی ۔ کوئی سفری آپکی طرف تو جرمند دیتا تھا۔اس ور ال سے ایس ہوکر آپ نے صرت خواج فرید گنج شکر قدس سرہ کی فدمت میں ایک خط مکھا۔ اور مشورہ طلب کیا کہ مجھے ان حالات میں کیا کرنا چاہیئے۔ صرت نے جواب دیا کرکلیر کے سارے معاملات عزیز کے افتیار میں ہیں۔ اپنی مرصنی سے ہرچا ہو*کرو۔ اپ کوخلا کا ج*راب مل۔ تد جا مع^{مسجد} میں نماز مجعدا دا کرنے گئے اور

پہلے سے بھی دور عبگہ ملی۔ تماز جمع فتم ہوئی۔ تو صرت نے مبجد کی طرف ایک نگاہ غضنب سے دیجھا۔ اور فرمایا۔ لے مجد نمازی تو نماز اوا کر چکے ہیں۔ تو بھی مجدہ دین ہوکر دکھا۔ اچا نک مسجد کی بھیت گرگئی اور ہزاروں نمازی مبجد کے بلے کے نیچے آکر دب گئے۔ اور بلاک ہوگئے۔

اس كوامت كے ظهور يبهت سے لوگ آپ كے معتقد ہو گئے . مرباتى لوگ آئي كى اس غفنيناكى بينا راص موئے - اور آئي كے خلات مو گئے مسيد كے وا قع سے دوسرے سال اس علاقہ میں ایک و یا بھوط بڑی حس سے کلیر مثر یں ہزاروں موتیں واقع ہوئیں اس قیامت خرو بانے سادا کلیر شہرو یوان کردیا اب حفرت صابر بنها ببت فراغت سے دیا صنت اور مجاہدہ میں مشغول ہو گئے جتی کہ انسانوں کی بجائے آپ کے اِرد کرد وحتی جانوراور پر ندسے بھی جمع ہوتے۔ اور آب کی خانقاہ بر بھی ہی حیوانات جاروب سٹی کیا کرنے تھے صرف آب کا ایک فادم فاص شمس الدین ترک یانی ستی ره گیا تقا جویاک بین سے آپ کے ساتھ آيا تحا بجب كيمي صرت ما بركوسماع كالثوق دامن كير بوتا توشمس الدين ترك كومضافات ميں بھيجة جوو مال جاكر چند قوال ہے آتا۔ اور محلس ماع منقد موتی-معارج الولايت كے مولف نے مکھاہے كركليركى تباہى كا وا قعربي نے دوسرى كمآ بول مي يول لكها ديجها سي كرجن د نول حضرت صا برخط كليرين تشرلف فرا ہوئے ۔ تو و ہا کے کئی ظاہر ہی علماء اور شائح آپ کے کما لات کے معکر ہو گئے۔آپ کی مخالفت بہال مک بڑھی کہ اوگ آپ کے مریدوں اور فادموں بر عظ كرنے لكے- ايك دن حفرت صابيلينے اجاب كولے كر مناز جعيرا واكرنے جامع مجد کئے۔ تواجماع سے پہلے ہی جامع مع مید کے اندر جاکر پہلی صف بیل کیک جگر مبیط گئے۔علماء اور مشائح آئے آوا بہوں نے اپنی جگر خالی مدو کھی قوائپ کے

فادين كوكهاكديهال سے چلے جاؤيہ گله مارى ہے انہوں نے جاب ديا ہمارے
ہونے سے پہلے يرمگه فالى تقى ہم بيال ببطر گئے ہيں اب آپ لوگ دير سے آئے
ہیں کسی دوسری مگه ببطے جائيں علماء نے بڑی تحتی اور در رشتی سے ان لوگول كوشك
دے كوا مطاديا . اور كہا يہال تومر وت علماء ومت أن ہى ببط سكتے ہيں عام آدى
منیں ببطر سكتے . اس بات پر بھر با اس مور سے سا بر اللے بادد
کہال كم اس شهر كا صاحب ولا يت سب علماء مت ان نے سے مقدم ہو تاہے اور اسے
معن اول ہيں بلطے كا ذيا دہ حق ہے آ ہول نے كہا كہ صاحب ولا بت ہوئے
کا آب کے باس كيا تبوت ہے آپ اس وقت اپنے احباب كولے كم سجد سے
فرایا "ہمارى ولا يت كا تبوت ہي ہے "آپ آپ نے مزيد كہا ۔ اب اس شهر كا ايک فرد
میں نہ دہ نہیں ہے گا ہے نو تو شر سے سے "آپ نے مزيد كہا ۔ اب اس شهر كا ایک فرد
میں نہ دہ نہیں ہے گا ہے نو تو شور سے ہے "آپ نے مزید کہا ۔ اب اس شهر كا ایک فرد
میں نہ دہ نہیں ہے گا ہے نو تو شور سے ہی تو مور سی سے اللہ موریاں ہوگیا مسجد کے باہر کی طاع وں كا شكار ہو گئے ۔

ماحب معادج الولایت نے مزید کھا ہے کہ صرت علی احدصا بردحمۃ الدُعلیہ
ولایت موسوی پہتھے۔ آپ کا قلب اسرافیل کے قلب پر خفا یحس پر ایک نظریا
پھونک مارتے فاک سیاہ ہوجا تا حضرت شخ نجم الدین کبری رحمۃ الدُعلیہ تھی
ولایت موسوی کے مالک تھے۔ اور آپ کے مبلال کا یہ عالم تھا کہ جہاں نظرا تھاتے
مرمقابل دم نخود ہوجا آ۔

مرمقابل دم بخدد ہوجاتا۔ میرالانطاب کے صنت نے لکھاہے کہ حضرت خواج علی احرصابر رحمۃ اللہ علیہ

کو فات کے کئی سال بعد تک کلیر تنہر ویوان رہا آپ کے روضہ عالیہ کے مجادر بھی حبکی جاندر بھی حبکی جاندر ہے جبار سے مجادر فت اور شیرو چتوں کے تیام کی وجہ ہے آپ کے مزار پر بہت کم آتے بہت سے مجاور کلیر کا علاقہ مچوڑ کر دور دراز علاقوں میں جاکہ

آباد ہوگئے تھے۔ چانچہ ایک عرصہ تک بیملاقہ ویا نہ بنادیا۔ ایک طویل عصد کے بعد ہندو کی ایک مویل عصد کے دوستہ کے قریب ہی ایک بت کدہ بنا لیا۔ ان کی بیخوا ہش تھی کہ آپ کے مقرہ کو گراکہ بت فائے کی عدود میں لا یاجائے گرایک دن ایک مردم خوار شیر حنگلوں میں سے تکلارات کے وقت تمام ہندوؤل کو چیر بھیا لاکر ہنا کہ گیا۔ جو بیجے گئے وہ و ہاں سے بھاگ کھڑے ہوئے۔ آئندہ کسی ہندوکو آنے کی جرائت رنہ ہوئی علا

سیرالاقطاب میں ایک اوروا فعرت ہارے سامنے آباہے۔ کہ ایک دن ایک ہندو جو گی اس راستے سے گز راجهال کھی صفرت صابر کی خانقاہ تھی ۔ دہ اس خانقاہ کے کھنڈرات میں عبلاگیا ۔ اس نے دیکھا ایک عالی شان مزارہے گردور دور کک کوئی انسان نظر نہیں آتا ۔ اس شخص نے ہندوانہ تعقب کے پیش نظر ادادہ کر لیا کہ مزار کو گراکر بیال کوئی بت خانہ یا معبدتعمیر کوا دیا جائے ۔ چانچہ اس نے ایک آ بعنی تعیقہ لے کرمزار کوگرا نا سٹروع کر دیا ۔ چندا بنیٹس گرائی تھیں کیمزار سے ایک دو ترن سامنے آیا ۔ جوگی نے قبر کے اندر سروال کرد یکھنا چا ہا کہ اس مزار کے اندر کیا ہے ہوہ لگاہ غضر کا شکار ہوگیا اور سریا ہر نہ لکال سکا آخر کار

اس کا سانس بند ہوگیا وروہ وہی مرگیا۔ رات کے وقت مجادول نے خاب ہیں وکھا۔ کہ صرت شخ صابرتشر لیف لا ہے ہیں اور فر مارہ ہیں۔ کہ ایک شخص گتا خاتم ہمارے مزار بر آیا تفاء اسے مزاتو مل گئی ہے اب وہ مزار کے دوندن ہیں اولا کا ہوا ہے۔ اُسے آئر کہ لکال دیا جائے۔ دوسری مبع مجاور اپنے بہت سے آدمی لے کومزار بڑا توار پر پہنچ جوگی کو کھینچ کر یا ہر لایا گیا۔ اس کی لاش کو دکور دیکل میں چیک ویا گیا۔ اس کی لاش کو دکور دیکل میں چیک ویا گیا۔ اس کی لاش کو دکور دیکل میں چیک دیا گیا۔ اس کی لاش کو دکور دیکل میں چیک اور آباد کو گیا۔ اس دن سے شہر دو بارہ آباد ہوئے لگا ورول نے مکانات تعمیر کئے اور آباد ہوگئے اور اس شہر کو پیران کلیر کے نام سے شہرت بی ۔

حصزت على أحدصا برقدس مره كا وصال بقول صاحب معارج الولآميت تيره ماه «بيع الاقل سوص موسم بواتفاء بيسلطان جلال الدين فلجي كاعهد حكومت تيره ماه «بيع الاقل سوص ميرا تفاء بيسلطان جلال الدين فلجي كاعهد حكومت

تقارات ماع میں واصل مجن ہوئے

بادى محبوب صابر بادشاه - صابرسراج الطابعين

متقی کیم

عتروم

آپ صرت شغ بدرالدین بن علی بن اسحاق بخاری قدس سرهٔ الباری خوریم و دفار قی بشکر گیخ رحمة الله علیه کے خلیفهاعظم نضے -اپنے وقت کے مثنا کئے کا ملین میں

شارم وتے تھے سے الا تطاب اور معارج الولايت كے صفحات سے معلوم ہوناہے كم دہ مقبول وسنظور شخصبت کے مالک تقے علم ونصل میں ان کا نانی کوئی نہیں تھا بہد بخارا میں رہے۔ بعد میں بعض علمی اور دو حانی مشکلات کے حل کے لئے كرس كليداور بخالات على دملى سنج حب بهال على ما مل كوهل من تسلى خ ہوئی۔دوبارہ ملتان کے راسبنہ بخاراکوروا مذہوئے۔ پاک بتن پہنچے نوآپ کے سائقيول في صفرت فريد فتكر كن كا راده فا مركبا . آپ دروليثول كے خلات تھے ۔ كہنے لگے - ميں يہاں ہى بينيا ہول -آپ وگ ديادت كرآ بين-لیکن دوست آپ کوکشال کشال صفرت نواج فرید کی خانقاه تک لے گئے محلس یں بیطے سی تھے۔ کرحض ت فریدنے باطنی طور رمعلوم کرکے خود ہی اس کے موالات پرگفتگوینزوع کردی اور ال کے سوالات کا حل بیش کرتے گئے۔ بدر آلدی آپ كى كفتكوسے برے مطلس بوئے . فرمن طلن بوكيا -اب على شكلات كے حل كے بعد صرت خوا جرفر مدینے آپ کور و مانی طور میا پنی طرف کھینیا۔ اور پوچھا۔ آپ ہمادی القات کے لئے آنے سے کیول بھی نے تقے اگرچہ علماء کی مجالس اكسيراعظم إدران كي كفتكو سعلمي روشنيول كوفروغ متناسع ومركبجي كبجي مكين درولينول كے ياس بھي آنا چاہيئے۔ ہم سے مجن كرنے سے خدا خوكش

بدرالدین نے آپ کی گفتگوسی تو قدم بوس ہو گئے اورادا دت باطنی سے مرید ہو گئے اورادا دت باطنی سے مرید ہو گئے۔ اور بخارا جانے کا ادا دہ ترک کر دیا ۔ اس دن سے آپ خانقاہ کی خدمات مرانجام وینے گئے۔ ہردوز صحرا اور بیا بان میں نکل جاتے بکڑیوں کا ایک گٹھا اٹھا کہ لاتے اور مطبخے کے سامنے لار کھتے۔ تاکہ ننگر کیا با جاسے حتی کہ ایک وقت آیا۔ کہ آپ کی تممیل ہوگئی خوفر خلافت سے مشروت ہوئے اور بھر ایک وقت آیا۔ کہ آپ کی تممیل ہوگئی خوفر خلافت سے مشروت ہوئے اور بھر

عن فرزندی ردامادی سے بھی مغزنہ ہوئے۔

آپ صرت گیخ تکرکے شہور فلیفہ نے اس کو اتفاقی ہے۔ آپ صرت گیخ تکرکے شہور فلیفہ نے اس کے متعقب ہی ہے۔ آپ اور ندرے ندین اور ندر بخش کے اس کے بیان الدین غریب کے بیٹ ہے بھائی ہیں اور ندرے ندین اور ندر بخش کے لقب موقف آپ کو اس سے ملاکہ آپ بیٹر ہے دیا ضن اور مجاہدہ کے عادی عظے۔ شیخ متحف الدین اس سے ملاکہ آپ بیٹر سے دیا ضن اور مجاہدہ کے عادی عظے۔ شیخ متحف الدین رحمۃ الله علیہ مجبوبی کے مرتبے پر بہتے ہوئے تھے ہزائہ غیر سے انہیں ہر رونہ مسح و شام دوسنہ می فلعیس آیا کر نیس تھیں۔ آپ انہیں بیچ و بیتے اور ورولینول میں خرج کردیتے۔ اور خود استعمال شکرتے۔ اس لئے آپ کا لقب اور در وزین زریخش بیچ گیا۔

جی و و و و ملک دیوگیر میں کفر و بدعت کا د کو دود اتھا توصرت خواج فرید گئے میکی فرائی ہے کہ دیا گئے کا دیا ہے کہ دیا گئے کہ اللہ کا دیا ہے کہ دیا گئے کہ اس بہنچ کر مخلوق کو ہما بیت دی اور بہت سے لوگوں کو راہ راست بر ہے آئے ۔ جن لوگوں نے صند میں آگر الکا درکر دیا ۔ ان کے لئے بدوعا کی آئی کی صور تیں سنتے ہوگئیں ۔ آج کک و لیوگیر کے بہاڑوں میں بیتھر کی بنی ہوئی منتے صور تیں یا بی جاتی ہیں ۔ آپ فوت ہوئے تو بہاڑوں میں بیتھر کی بنی ہوئی منتے صور تیں یا بی جاتی ہیں ۔ آپ فوت ہوئے تو صورت سلطان المتا کئے نظام الدین اولیا دنے شنے بر ہان الدین غریب رحمت النظیم کوان کی حکمی مقرد فرمایا ۔ آپ نے اتنی محنت کی کہ اس ملک میں کفر و بدعت کا اس کوان کی حکمی می کفر و بدعت کا اس کوان کی حکمی میں کفر و بدعت کا اس کوان کی حکمی میں کفر و بدعت کا اس میں کفر و بدعت کا اس کوان کی حکمی میں کفر و بدعت کا اس کوان کی حکمی میں کفر و بدعت کا اس میں کو دیا ہے۔

نام ونشال بدريار

معارچ الولائيت كے مصنف نے آپ كى تاریخ و فات سات ربیع الاوّل ۱۹۵۵ چوسو پچاپو سے تکھی ہے۔

سیخ عالم پیر دوران مُتخب سیر دوران مُتخب سیر دوران مُتخب سی رحیاز و نیاسوئے دارالبقا کا شف حق صونی آمر رحلتش سیم نجوان مہدی کا مل مقتدا

اخبار الاخیار کے مصنف نے آپ کی وفات بروز جمعد سات سوگیارہ ہجری مکھی ہے۔ آپ کا مزار می انوار کیٹے لقام الدین کے دوستوں کے چبوتر سے پر واقع ہے۔

محدا بن محودا ل مدكرمان شه علم - كدفراتش بو مجوب بي مقبول رماني

تباریخ وصالش شنیدامشکلکشاازدل - وگرگفتا محد بود سید بیر کرم مانی ااع ص

آپ شیخ نظام الدین اولیا، بدایونی کے مشیخ نظام الدین اولیا، بدایونی کے مشیخ نظام الدین اولیا، بدایونی کے مشیخ نظام الدین استرازی قدر سرسر فرد خلیف ایشار می کاشیوه رکھتے تھے بڑے سنون سے سماع سُنتے ورستوں میں سرفراز تھے جربین الشریفین کی ذیارت سے بھی نشرت یاب ہوئے۔ شجره چینیتہ کے مصنف نے آپ کا سال ونات سات اسوا کی طارہ ہجری کھا ہے اور آپ کا مزار می افوارد ہی میں ہے سے اور آپ کا مزار می افوارد ہی میں ہے دور آپ کا مزار می افوارد ہی میں ہے دور آپ کا مزار می افوارد می میں ہے موسید میں الدین میں ہے دی سعیب دی شیرازی

كيالاً عقر يندره سال تك آب صرت صابك غسل وضو كها نا يكاف ورمكويان لانے کی خدمت پر ماموردہے۔ پھرائے سے اجازت نے کر کھیے وصد باد شاد کے تفكرين وكرى كربي جانجدو بلى أكرسلطان غياث الدين بلبن كراشكريس موارول كى فرج مين المازم مر كئے ابنى داول ماد شاہ نے بندوستان كے ايك تفع ليشكر سنی کی خواج شس الدین ترک بھی اس شکر میں شریک تھے۔ تلیہ کے نتج ہونے مِن کچید دبیلگی اور باوشاہ کئی مہلنے تک ویا ں ہی بیراؤ ڈالے رہے ایک رات گرده غبار کاطرزان الله عا- بادل اور بجلی چینے لگی۔سارے نظر میں کہس آگ مزری بادشادك بادي فأكافيارج آپ كى تلاش ميں إدهرا دهر كوري عقد البول فےدیکھاکرٹائی سورول کے ایک سوار کے جیمے میں جراع عل د باہے ۔ جب نزديك ينتيج ويهاكرا بك دروليت حراغ كى روسنى من قرآن ياك كى تلاوت كم م ما ہے اگرچ طون ال مخت تیز تھا۔ مگر جراغ بھنے نہ پاتا تھا۔ نتا ہی ناظم خیمے کے قریب گیا۔ تو حضرت کی ہیت اور رعب سے اس کی ندبان سوال کرنے میں عاجز رہی ناگاہ حضرت نے سراعظا باا ورائے آوازدے کرکہاکہ اگر اگر کے جا ہے ہوتو یہاں سے سے اور وہ شخص آ گے برط صا ایک لکر اس کے سے روشن کی اور آگ کوشاہی باورجی خانے بیں لے گیا ۔ سبح ہوئی تو وہی شخص یانی بینے کے لئے اس کی طرف سے گزرا اس نے دیجھا کہ شنخ اپنے خیصے میں نہیں ہے۔ وہ تالاب پر بینجا۔ اُس نے دیجھا کہ ا يك ستقيار بندىيا بى تاللاب بدو صنوكر رباب أس قى اپ كوبىجان لبار به تو وسى بزرگ بی جرح اغ کی روستی میں رات کو قرآن پاک کی تلا وت کررہے تھے وصنو كرنے كے بعد حضرت بننخ اپنے فيم يس تشريف كے اور أس شخص نے اس مقام سے مثل کو عبراجهال حفرت بینخ و صورکدر سے تقے وہ حرال رہ گیا۔ کہ اس ملک الاب كا يانى كرم ب عالا كم تديد سردى كى وجرس ساداتالاب برت سعدهانيا

ہوا تھا جانچ بہتھ تین دن تک صرت کے وضورکے کی جگہسے پانی بھر کرسے جاتا اور تاہی باورچ فانے میں گرم پانی استعال کرتا۔ دفتہ دفتہ بیہ خبر باد تناہ کو بہنچی دوسے دن اس کے باتھ ہی باد ثناہ حوض پر آبا اور گرم پانی کی تصدبی کی اور بھراس شخص کی دہنا کی میں میز انتیا کہ میں بڑا نیک بخت ہول دہنا کی میں صرت کے خیمے میں بہنچا ہ باد ثناہ نے عرض کیا کہ میں بڑا نیک بخت ہول کہ آپ کے کہ آپ جیسے ولی النّد میر است کہ آپ کے ہوتے ہوئے۔ قلعہ فتح ہوئے اس سے کہ آپ کے ہوتے ہوئے۔ قلعہ فتح ہوئے ہوئے۔ قلعہ فتح ہوئے ہوئے۔ قلعہ فتح ہوگیا۔ چونکہ شنچ کا بردا زمنک شف ہوگیا تھا اس لئے آپ دہاں سے ملازمت جھوڑ کہ اپنے پر روشن فیمرکی فدمت میں جلے آئے اس لئے آپ دہاں سے ملازمت جھوڑ کہ اپنے پر روشن فیمرکی فدمت میں جلے آئے اور خرقہ فلا فت بانے کے ما لک بنے۔

بننج علام معین الدین اینی کتاب معارج الولائت میں رکھتے ہیں کہ خواج شمس الدین ترک پانی میں صرت بیخ احد نسوی کے بیٹے تھے ۔ آپکا سلسلہ نسب چندواسطول سے محد حنفیدین علی المرصنی وجرسے منتاہے نظاہری علوم حاصل کرنے کے بعدائب ترکشان۔ نکلے اورطلب حق میں باسے ملکول کی سیروسیاحت کی باورالمنر کے بدت سے بزدگوں سے ملاقات کی بھر مندوتان پہنے ۔ یہاں آکر کلیرشراجت میں یشخ علی احدصا بر کے مرید موسے ایک مدت تک آپ کی فدمت میں رہے اور آپ سے بڑی بڑی کرا مات ظاہر ہونے مگیں حضرت صابد کی وفات کا وقت قریب آیاتو آپ نے صرت ترک کو اپنے پاس بلایاا ور خرقهٔ خلافت عطا کیاساتھ ہمانی بت جانے کی اجازت وی اور ارشا د فرمایا کہ مبرے مرنے کے تین والی لعدیا نی بت كوروا نه موجانا - آپ نے گذارش كى كەحضور يانى بين كى د لايت بران و نول مترت الدین بو علی قلندر فارّ: ہیں۔ میں و ہاں کس طریقے پیرجا سکتا ہوں اورکس طرح رہ سکتا ہول۔ آپ نے فرمایا کہ ان کی ولابت کا دورخم ہوچکا ہے تم وہاں

پہنچو گے تو وہ متہر کے دروا زے بینہیں آکر ملیں گے بھزت صابر دعمته الله علیه کی وفات کے تین دن لجد حضرت شمس الدین بانی بیت کوروانہ ہوئے وہاں سنچے تو اسے کے رہنے کی کوئی علمہ نہ تھتی ایک دلیار کے سائے کے بنیچے بعید گئے . صرت بنیخ يوعلى فلندر نے نور باطن سے آپ كى حالت كود كير ليا۔ اپنے جرے سے باہر آئے اور صلوه فروش کے بیٹے نے جو جناب قلندر کا محبوب اور منظور نظرتھا۔ پر جھا کہاں جارہے ہویں آپ کو کہیں نہیں جانے دول گا۔ آپ نے فرمایا۔ بیٹا اِس علاتے كى دا يت ايك اور بزرگ كے والے ہوگئى ہے اب ميرے لئے حكم نہيں كمي اس تہریں رہ سکوں حلوہ فروش کے بلیے نے کہا کہ صور مجھے اس ملک کے صاحب ولایت سے ملا قات کروا میں۔ آپ نے فر مایا۔ فلال محلے میں ایک شخص حمر کے لباک يہتے تعلندرا ندمبھياہے ، ديوار كے سائے بيں ببھيا ملے گاتم و ہاں جا دُا در ان كى زبارت كرلو علوه فروش كابشاه مال بينجا. اسمرد درويش كو دورس ويجها اور واليس أكباراس وقت حضرت لوعلى قلند شهرسے نكل كر با مرجا چكے تھے۔ سینیخ تشمس الدین سنہر میں واخل ہوئے۔ بوعلی قلندر کے بچرے بیں آئے اور نہ زر گی بھر و بال سى قبام كبا-اس دوران بوعلى قلندرا ورخوا حبيتمس الدبن ترك بإني نتي آلي میں بوای محبت اور انتحاد سے رہے۔

سیرالانظاب کے معنف نے لکھاکہ پانی بہت کے ایک بہت بڑے بزرگ
سیّدا کب کی خدمت بیں ماضر بہوئے۔ گفتگو کرتے ہوئے کہ آب کی سیادت کر طرح
تابت ہے یہ فرمایا ہم نے اپنے آباؤ اجدا دسے ایسے ہی سئاہے اور بہارے
پاس نسب نامہ بھی ہے۔ اُس بڑرگ نے کہا اس بات کو تا بت کر نا بڑا مشکل ہے
ہماری تسلی نہیں ہوئی ایمپ نے بیربات سُنی ول میں جوش پیدا ہوا۔ فرما باکھوام الناک
میں ایک بات مشہورہے کہ جوشخص صحیح النب سیّد جو گاا ورحصرت علی کی اولادے

ہوگا۔ اُس کے بال آگ میں بہبی جل سکتے۔ اگرچہ ہم نے آج تک اس بات کا تجربہ نہیں کیا۔ لیکن میرے نزدیک اِس سے بڑھکر کوئی دیں نہیں ہے آئو ہیں اور تم دونوں مل کر آگ میں کو دتے ہیں۔ جھے آگ ہزجلائے گی وہ سید ہوگا۔ یہ کہتے ہی آپ خانفاہ کے تنور میں کو دگئے اور تھوڑا وفنت اُسی میں رہے اور اندر کھتے ہی آپ خانفاہ کے تنور میں کو دگئے اور تھوڑا وفنت اُسی میں رہے اور اندر سے اُس سید کو آواز دی کہ تم بھی اندر آبجا وُ تاکہ تنہا ری سیادت کا دعو می تی اُب ہوسکے۔ وہ شخص سر مندہ بھی تھا اور خوف زدہ بھی ۔ تنور کے نزدیک جا کر دیجھا کہ صفرت شنج آگ میں بڑے مزے سے بیٹھے ہیں۔ یہ دیکھ کر اُسکے چہرے کا رنگ اُدر گیا۔ واپس بہونا چا ہتا تھا۔ تنور سے بیٹھے ہیں۔ یہ دیکھ کر اُسکے چہرے کا رنگ اُدر گیا۔ واپس بہونا چا ہتا تھا۔ تنور سے ایک شعلہ انکا اُس کے کیڑوں پر گراا ور ولڑ کیا۔ وہ چیختا جو اتا ہائے ہائے کرتا وہ واڑ رہا تھا کہ حضرت شنج سخورسے نکلے اور دو لڑ کیا۔ اس کی آگ بجبائی جیب حالت تھیک ہوگئی توسید مذکور نے تو یہ کی اور آپ کا مرید ہوگیا۔

سرالاقطاب کے مصنف نے شیخ شاہ علی حیثی دھتہ اللہ علیہ کا ایک واقعہ
نقل کیا۔ کہ ایک رات بیں لبتر بر بسویا ہوا تھا کہ میرے بشریکوں میں سے ایک بھائی
میرے قبل کے لئے داخل ہوا تلوا رکھینچی۔ مجھے ارنا ہی چا ہتا تھا کہ میری آئکھ
کھل گئی یخورسے دیجھا کہ وہ شخص مجھے نگی تلوارسے قبل کرنا ہی چا ہتا ہے ہیں نے
صزت شمس الدین ترک کا تفور کہ کے فریاد کی۔ میں نے دیکھا کہ ایک ہا تھ جس بہ
چا ندی کی انگو کھی تھی یفیب سے منو دار ہوا اورا س ظالم کو گر دن سے پڑ کر را بھی پایی
دیا۔ میں اُسی وقت انتھا۔ وصنو کیا۔ صفرت شنخ کے دو ضے معنورہ کی طرف جل بڑا ہیں
نے دیکھا کہ قبرسے ایک ہا تھ ہا ہم تسکلاا ور دل میں آرز وکی کا ش اندھیری رات بنہ
کو تبرکا جو اوروں سنھوں کو لگایا اور دل میں آرز وکی کا ش اندھیری رات بنہ
ہوتی دن کی روشتی ہوتی تو میں ہا تھ کی زیارت بھی کرسکا۔ اسی وقت ہا تھ کے ناخی

سے دوشنی کی ایک کرن نکلی اور میں نے دیکھا کہ بدوہی ہا تھ ہے جس پر چاندی کی انگو کھی ہے اور میرے قتل کو و فع کرنے کے لئے ظاہر ہوا تھا میں نے شکرانے کے ہزار نفل بڑھے۔ فاتحہ کا تحفہ بیش کیا اور وہاں سے رخصت ہوآ یا۔

شخ طمس الدین توک رحمة النار علیه مندوت ال می آئے تو آپ کی ابھی شادی بنیں ہوئی تقی ایک ہزاریجایں ہجری میں سیدصفدرخان جومغل باد نثاہ شاہ جہاں کی طرف سے اکبرآیاد کا گور نر تقا کسی وج سے معرول کردیاگیا -وہ مندوت ان سے چل کراپنے وطن والیں جاتا چاہتا تھا۔ پانی بیت میں پنجا تو صرت تمس الدین کے روضے کی زیادت کے لئے وہاں دک گیا۔ دوسے کے مجاوروں سے صفرت کے حالاتِ زندگی معلوم ہوئے اور لڑکتان سے مبندوتان آئے کے حالات بھی گئے۔ بہت رویا اور کنے لگا کہ میں حضر نتشمس الدین کی اولاد سے ہوں میں ہندوستان میں محض آپ کی زیارت بابرکت کے لئے آیا تھا مجھے معلوم منه تقاكر أسب كاروضة مقدس كبال باس في ابنانس نام زكالا مجاورول كودكها ياجس وقت أن بزرگوں كے ناموں كامقابلہ مواتو بدنسب نا مرحفرن شمس الدین کے دسخطوں سے مزین نفا مفدر خان نے بہال کہا کہ جب حصرت یشخ ترکتان میں رہتے تھے تو وہاں اُن کی شادی ہوئی آپ کے بیٹے کا نام سيداحد تقا بهندوتان مي تشرلف آورى كے بعد سيداحدى وہاں بہت اولاد ہوئی جس وقت یہ بات باد شاہ شاہ جہاں یک بہنچی تو اس نےصفد رخان کو ابیتے ور بار بس وائیں عبل یا اور صاحزاد کی کے اوب کے بیش نظر کا بل اور قندھار كى عكومت أس كے والے كردى -

ضخ شمس الدین سیرالا قطاب تذکرة العاشفین معارج الولائیت اور ۱۵ می دوسری کتابول کے حوالے سے سات مویندرہ ہجری میں فوت ہوئے سنجرہ دوسری کتابول کے حوالے سے سات مویندرہ ہجری میں فوت ہوئے سنجرہ

چنینہ کے مصنف نے آپ کا سال وفات سات سوا تھارہ ہجری مکھا ہے۔
لیکن ہارے نزدیک پہلا حوالہ ورست ہے میری نظریں اور بھی بہت سی
کتا ہیں گزری ہیں جن میں آپ کا سال وفات سات سونیدرہ ہجری ہی ہے
رفت از عالم جو شمس الدین بخسلہ
سال وصل آس امام پیشو ا الا
طالب مقبول شمس الدین گو

آپ شیخ المثاری کاشانی قدس سره به نظام الدین اولیاء الله قدس سره و نظام الدین اولیاء الله قدس سره و نظام الدین اولیاء الله قدس سره و خطیفه اعظم سقد زهر د تقویل میں کا مل خزق و کوامت میں معروت اور علوم تفییر و صدیث میں ماہر سخفے سارا شہر آپ سے علوم ومینہ حاصل کہ تا تھا۔ آپ نے مرید ہمتے ہی دنیاوی آب کشوں سے کنارہ کشی کر بی ۔ با دشاہ نے آپ کو قضف کا پر واندویا تھا۔ آپ نے بیروم رشد کے سامنے لا کر جبلا دیا اور فقر و مجاہدہ کوافتیا کہ کے خرقہ فلانت حاصل کہ لیا۔

کتے ہیں کہ جب قاصنی کا شانی نے تمام دنیاوی نعمتوں سے منہ موڈ لیا اور فقر و فاقہ کو اپنا لیا۔ تو آپ کے لواحقین اہل وعیال جو دنیا کی آسالسُوں کے خوگہ تھے۔ تنگ درت ہو گئے۔ ان لوگوں کے ایک وا تف حال نے بیور نخال با دنتاہ وقت علاء الدین فلجی کے دربار ہیں بیش کی توسلطان نے اور هم کی تفا کو از سرفو صفرت قاصنی کا شانی کے سپر دکر دیا یجب یہ نیر ملی تود در شے دوڑے صفرت فواج نظام الدین کی فدرت میں آئے اور عرض کیا رصفور ہے معاملہ میری مصرت فواج نظام الدین کی فدرت میں آئے اور عرض کیا رصفور ہے معاملہ میری

عدم موجودگی میں میری مرصی کے خلات ہواہے۔ آپ اس سلسلمیں کیا فیصلہ فراتے ہیں حضرت نے فرمایا الیسامعلوم ہوتا ہے کہ نفر وفاقدا فنتیا دکر نے کے بعد بھی تنہارے دل میں مہدہ نضا کی یادیں موجود تھیں میں وجہ ہے کہ با دتاہ نے تہمیں وہ بارہ قاصی مقرد کر دیا۔ قاصی صاحب کو اس صورت حال نے بڑی شکل میں ڈال دیا ادھر سلطان المثاری نے نیا فلا فت نامہ واپس لے کرایک کونے میں دکھ دیا ایک سال گزدگیا تو قاصی کا شانی کے دماغ میں بندیلی آئ اور وہ بھر صفرت کی فدمت میں حاصر ہوئے آپ نے از راہ ترجم دوبارہ مرید کیا اور خلافت نامہ لوٹا دیا اور کا لات اللہ میں جارے کہ دوبارہ مرید کیا اور خلافت نامہ لوٹا دیا اور کا لات

حضرت قاصنی کا سال وصال او دور ہے۔

می الدین مقتدائے ہر د د جہاں دفت چوں از جہاں تخلد ہریں دصل اوہرت صاحب تحقیق نیز دہتا ہے حسن محی الدین

اب هزت گغ ت روالدین بین بیخ بدر الدین قدس سرهٔ به قدس سرهٔ کے بدت مخوا می موالد الدین بین بدت اور چون به ۵، سال می خلافت اور سیاد کی بدر الدین قدس سرهٔ کی بدت اور چون به ۵، سال می خلافت اور سیاد کی بیرا کرت دیدا مرسی چیل گئی۔ آپ کا قدم مبادک جا مع مبور سے باہر مذاکل امراد اور ملوک سے بے نیاز تھے ھائم الدہر اور تا کم الدیس بیت دات کا ایک صدر گذر تا توا فطار فرماتے تھے جود و سخاوت میں برے مثال تھے ، اب کو فرید آئی کہاجا تا میں برے مثال تھے ، آپ کو فرید آئی کہاجا تا میں برے مثال تھے ، آپ کو فرید آئی کہاجا تا میں بروا بیت سے مالا مال تھیں ، اور حفرت میں اور حفرت

فرید گنج شکرکے بعد جاری ہوئی تقبیں مضرت نواج شرود ہوی رحمۃ التُرعلیہ نے آپ کے حق میں ایک شعر کہا ہے۔

علا، الدين ودنياشيخ وشيخ زادهُ عصر كدي كدي مريد

معادج الولابت بم لکھاہے کر سطان غیاث الدین تعنی کا ابتدائی زندگی میں غاندی نام مختا۔ اورصوبہ ویپالپور کا گورز تھا۔ اور سفرت علاء الدین کامرید تھا آپ سلائے ہے میں فوت ہوئے تو ملک غازی وہلی کے تخت پر جلوہ افروز ہوا۔ اس نے آپ کے مزار پر شاندارگنیڈ تعمیر کیا۔ کہتے ہیں پاک نین میں یہ گنید صرت گئے شکر کے دوضہ سے بلندہے مگردیجھنے والول کو سیت و کھائی و بتا ہے۔

ت د د نیا چ در به بنت برین کشیخ مفده طبق علاد الدین بر تاریخ رحلت آل شاه مشیع حت علا د الدین مشیع حت علا د الدین الدین

ہ پ صرت امیر ضرود ہوی کے خاہر زادہ منوا ہو تھے۔ اپنے زمانہ کے فاضل بیگانہ تفے صرت میں منوا ہو تھے۔ اپنے زمانہ کے فاضل بیگانہ تفے صرت ملطان المن کخ سے محبت بھی تھی اور ادادت بھی۔ نماز بین کھڑے ہوتے ۔ جب مک صرت خواج مجبوب المی کا چہرہ باک نہ دیکھ لیتے تکبیر نہ کہتے مرض موت بیں گرفتار ہوئے تو حرت خواج نظام الدین عیادت کو اسے مگر امجی داستے میں ہی تھے۔ کہ خواج شمس الدین کی دفات کی خبر پہنچ ۔ سن کر فرمایا ۔ الحمدُ للنہ یہ دوست بدوت بیوست یہ آپ کی وفات سرا کے حرب ہوئی تھی۔ بیوست یہ آپ کی وفات سرا کے کھر تھی۔

برمغرب رفت زیں دنیائے نانی حوشنمس الدین ولی مہر رمنور عجب نادیخ وصلش عبوہ گرشد زشمس الاولیب و بادی کہبر

شخ نشرف لدین بوعلی قلن رمایی بتی قدس سرهٔ دین مورا دلیائے كبار ميں مانے جاتے ہيں۔ پاک وہند کے محاذب كم ام اور صاحب اسرار خنائخ حیثت کے را ہنا شار موتے ہیں ابتدائی زندگی میں علوم وینید میں مہارت ماصل کی اور مجاہدہ اختیار کیا ۔ حب مذب وسکر کی انتہا ہو گئی توا پنی م^تم كتابول ا ورقلمي ما د داشتول كو درياس عينك ديا فا نواده چشت الربيشت سے تعلق قائم کیا۔معارج الولایت کے مولفت نے لکھاہے کہ آپ کو صرت خاج تطب الدين بختيار كاكى قدس سرة مع خرقه خلافت ملائفا المين بعض مذكره لكار آپ كو صرت خواجر نظام الدين بدايوني قدس سره كاخليفه تسليم كرتے ہيں آپ نے بہت سی تصانیف یادگار زمانہ تھےوڑیں جنہس اہل ذوق وضعبت نے ول معان سعقبول كياران تصانيف مي عشق ومحبت عوارت وحقائق توحيد ترك وعبت فداد ندی مے مضامین یا نے جاتے ہیں۔ آپ کے محتوبات کا ایک مجوجہ بنام افتیارالدین روای کے مربد فاص تھے، کتابی شکل میں سامنے آیا۔ یہ متوبات توجدك مصابن كاعمده مونه بي-آبى ابك تصنيف كمنامه فيرخ سٹرٹ الدبن تھی۔ پھرمٹنوی لوعلی قلندراگر چرمخص ہے۔ مگر رموز تو حید معارف سے مالامال ہے آپ کے دوسرے استعار باعیات عزل اور دوسرے اشام پر

آپ پانی تیت کے قدیم باشندوں میں سے تھے۔ والد ما جد کا اسم گرامی فحزالدین سالآر دقدس سرقی تھا۔ اور والدہ مکرمہ بی بی حافظ جال تھیں۔ ان دو توں کے مقرب پانی بیت متہرکے شمال میں ہیں۔ آپ کے مریدا ورخلفا رکا ایک سلسلہ تھا جو برصغرکے علاوہ عالم اسلام میں بھیلا تھا۔ دہلی کے حکمران علادالدین خلجی اور حبلال الدین خلجی ہیں۔ آپ کے حلقہ مریدین میں متھے۔

سرالاقطاب کے مصنف نے لکھاہے کہ صرت بوعلی قاندر صفرت امام عظم الجنیفہ
رضی المترعنہ کی اولادسے مخفے ۔ آپ کا سلسکہ نسب چندوا سطوں سے حضرت امام
اعظم سے ملتاہے ۔ شیخ سترف الدین بوعلی قاندر ۔ بن سالا وفخر الدین بن سالار شون بن سالار شور نیز بن ابا بکر غازی بن فادس بن عبدالرحان بن عبدالرحم بن محمد بن محال من منان ابو منیف کوئی بن نا بت بن نعمان دضی المترعنهم المجمین ،
وایک بن امام نعمان ابو منیف کوئی بن نا بت بن نعمان دضی المترعنهم المجمین ،
سیرالا تطاب نے ایک اور عبد کھاہے آپ کے بیروں کا سلسلہ یول کھاہے اور عبی قلادا وا د ۔ شیخ امام الدین اور المال فلیف شیخ برالدین بوعلی قلندر مرید و فلیف شیخ عاشق فدا وا د ۔ شیخ امام الدین اور المال فلیف شیخ برالدین

غزندی فلیفه حضرت قطب الدین مختیارا وشی رحمته الدّعلیه المجعین و یا در به کرین شرف الدین بوعلی قلندر حضرت بیخ شمس الدین ترک پانی پی رحمته الدّین ترک پانی پی کلیرسے پانی پی تشرف الدین ترک پانی پی کلیرسے پانی پی تشرف لائے اسی دن سے شیخ شرف الدین بوعلی قلندر سنے پانی پت چپولاکر شہر کے باہر مکونت افتیاد کرئی و بخدر و نرگزد سنے کے بعد شیخ شمس الدین کے ایک فاوم اس مقام سے گزر سے جہاں بوعلی قلندر شیر مقام سے گزر سے جہاں بوعلی قلندر شیر کی ایا تھا۔ تو دیکھا کر شیخ بوعلی قلندر شیر کی شکل میں تشرفیف فرما ہیں۔ بیرفادم ڈرگیا۔ اور دوڑا دوڑا بشیخ شمس الدین ترک کی فدمت میں حاصر ہوا تو آئی بائ سن کرفر ما یا۔ کہ دو بارہ جاؤ راگر بوعلی قلندرا تھی بین حاصر ہوا تو آئی بوعلی قلندرا تھی بین کا خدرا تھی بین کرفر ما یا۔ کہ دو بارہ جاؤ راگر بوعلی قلندرا تھی بینے کی فدمت میں حاصر ہوا تو آئی نے بات سن کرفر ما یا۔ کہ دو بارہ جاؤ راگر بوعلی قلندرا تھی بنیر کی شکل میں نظر آئے تو انہیں کہنا ۔ شیر تو جنگل بیل درا کرتے ہیں۔ قلندرا تھی بنیر کی شکل میں نظر آئے تو انہیں کہنا ۔ شیر تو جنگل بیل درا کرتے ہیں۔ قلندرا تھی بنیر کی شکل میں نظر آئے تو انہیں کہنا ۔ شیر تو جنگل بیل درا کرتے ہیں۔ قلندرا تھی بنیر کی شکل میں نظر آئے تو انہیں کہنا ۔ شیر تو جنگل بیل درا کرتے ہیں۔ قلندرا تھی بنیر کی شکل میں نظر آئے تو انہیں کہنا ۔ شیر تو جنگل بیل درا کی دو بارہ کی ایک سے بیں۔

سنبری ان کی گنجائش منہیں۔ خادم گیا توشنج بدعلی قلندر کوسٹیر کی شکل میں دیکھا تو کہا میر ہے مرشد نے کہا ہے۔ کہ سٹیروں کو آبادی میں دہنا مناسب منہیں ان کامنظام تو جنگلات اور جبایل ان ہوتا ہے۔ وہ سٹیراس وقت اعظا اور جبگل کی طوت جبلاگیا او یا نہیں سے کئی میل دور اپنالبیرا بنالیا۔ یہ مقام آج بھی با گہونی کے نام سے بانی بہت شہر سے مشرق کی طوف و اقع ہے۔ ہندی زبان میں با گھر سٹیر کو کہتے ہیں اگہونی مقام سٹیر کو کہا جاتا ہے بیرمقام اب کے مفاق کی زیادت گا ہ ہے رصات شنج او علی بیندرسال بہاں رہے۔ بھر موضع بٹرھا کیٹرہ جو کر زبال کے مضافات میں ہے سکونت بین بدیر دہیے۔

اخبارالاخیارے مولف گرامی نے لکھاہے۔ ایک وقت آیا۔ جب آپ ہذب مستی میں سختے۔ تو آپ کی مونجیس مہت برسے گئیں کسی کو جرات مذبھی کہ آپ کی مونجیس مہت برسے گئیں کسی کو جرات مذبھی کہ آپ کی مونجیس مہت برسے گئیں کسی کر متا اللہ علیہ متر لعیت کی چھوٹی کرنے کا متورہ ویتا۔ آخر مولانا منیا رالدین سامی کواٹھی کچھوٹی اور دو مر سے مونجیس کاٹ ویں جفرت شنج مترف الدین بوعلی فلندرا بنی داڑھی ہا تھ بیں بھوٹر لویت کہ میر داڑھی کتنی مبارک ہے اور میری نجیس کتنی مقدس بیں جو ترلویت محد میں کے احترام میں کھی گئیں۔

حفرت شنخ لوعلی قلندر کے ایک خادم خاص تفضیحن کا نام مبارک خان تھا عام لوگول کو آپ کے نز دیک جانے کی جرات نہیں ہوتی تھی۔مبارک خان لوگوں کے مبائل لے کرھاھز ہوتا۔اور حل مشکلات کراتا۔

سیرالاقطاب اور تذکرہ العاسفین نے آپ کی ناریخ وصال سرہ رضال لبارک سیرالاقطاب اور تذکرہ العاسفین ہے۔ اس کامزاریا نی بیت کرنال میں ہے۔

البین فرید الملت والدین بدایونی قدس سرهٔ به شخر فرید الملت والدین ما البین والدین بدایونی قدس سرهٔ به شکر گنج رحمة الله علیه کے خلیفه فاص اور محرم اسرار و مجت با وقاد تنے اسم گرامی محد بن احردا نیال بن عالی بای فادی قدس سرهٔ البادی تقا بهب کالقب سلطان المثالی سرندی سرند بین آب کے آثار مجبوب المئی کے خطاب سے مشہور ہوئے تنے دیاک و مهندی سرند بین آب کے آثار و برکات سے مالا مال موئی آب کے عدم بزدگوادا ورجد ما دری رنان فراج عرب ووقول آب کے والدا حددا نیال کے ساتھ بخاراسے ہجرت کر کے لا مور نشر لیت ووقول آب کے والدا حددا نیال کے ساتھ بخاراسے ہجرت کر کے لا مور نشر لیت لائے کچھ محمد لا ہمور میں رہے۔ بھر بدالون میں آکر قیام پذیر ہوئے۔ یہ و می سال نیا محضرت شنخ نظام الدین بدالون میں سیمنان میں میں میں الربی کے دو تو میں سیمنان میں سیمنان میں میں سیمنان میں سیمنان میں میں سیمنان میں سیمنان میں سیمنان میں سیمنان میں الدین بدالوں میں سیمنان سیمنان میں س

حب مي سلطان التمش اورخوا جرَّطب الدين بختيار كاكي رحمة التَّدعيبها كا انتقال مواتقا ابھی پاپنے سال کے ہی تھے کہ والدما جد تھی انتقال فرما گئے اور مدا یون میں دفن ہوئے آپ كو آپ كى دالده جى كاسم گرامى بى بى زىنجا قدس سر ما تقانے پرورش كى اس نیک بی بی نےخواج نظام الدین کی تربه پیت میں مٹااسم کرد اراد اکبیا۔ شیخ بھوٹی عمر یں ہی علوم مروجها ورمتداولہ میں طاق ہو گئے۔ حدیث تیفیبرفقة صرت نخو منطق ومعاني مين دسترس صاصل كي . باره سال كي عربين فارغ التحصيل بهوكروشار نصنبات سے سر فراز ہوئے بیس سال کی عمر س حضرت نجیب الدین متو کل قدس ک جوصرت خواج فر مد تشكر كنج كے برا در حقیقی تنے كی تعجب میں مبطینے لگے . اپنی كی ما طات سے آپ کوخوا جرفریفکر گیج کے حضور رسائی ہوئی۔ آپ پاک بین پنچے اور آپ کے مريد ہوئے ، آپ كے شوق اور آئش دوق كى وجد يد مفى -كماك دن الجد بجرنامى قوال نے مفرسے ہ کراپنے سروب وساحت کے دا تعات بیان کئے ۔اور تبایا کم بی حضرت بهاءالدين نكريامتاني كي محلس مين نعت سائي اورقوالي كي تقي وه برسے عابد- ذامر متقى اورصاحب كرامت بندگ من-آب كے كھركے فادم اوركنزى بھى الاكو بندتے ذكر فدادندى مي مشغول رستى بين - ملتان سے حيل كرياك بين آيا - مين في ومال ايك درولیش کی زیارت کی - نہیں بلکه ایک شہنشاه کی زیارت کی ان کا نام نامی فرمدالدین تقاروه کرامت درع. تقوی می ساری دنیا میں انیا ثانی نہیں دکھتا وه مربدو ل کو بعیت کرتے وقت اللہ تک بنجا دیتے ہیں۔ البامعلوم ہوتاہے كرامند تعالى نے انہيں اپني روحاني تعمتوں كا قاسم بناكر بھيجاہے۔ یشخ نظام الدین فذس سرؤنے اس قوال کی یا نیسنیں تو ہ تش شوق شعله زن بوئى - اسى وقت صفرت عبي الدين متوكل قدس سرة كى خدمت مي

www.maktabah.org

عاضر بوك اوران كى وساطنت عصرت فواجر فريدالملت والدين كى حذمت

شرف باريايي ماصل كيار

کمتے ہیں کہ میں ون صفرت خواج نظام الدین صفرت فرید شکر گنج کی فدمت بیں حاضر ہوئے۔ تو صفرت خواج نے آپ کو دیچے کر بی شعر بڑھا۔ اے آتش فراقت و لہا کیا ب کردہ بیلاب اختیافت جانہا خرا ب کردہ

رقرمہ، نہاری آتش فراق نے دوں کوکیا ب کردیا باتہارے اثنتیاق کے سیال سے اثنتیاق کے سیال سے انتیاق کے سیال سے انسان کور بادکر دیا ہے ،

یہ شعر نہیں تھا۔ گو یا نیر تھا۔ جو صرت خوا جہ فرید کے کمان اشتیاق سے نکلااور خواجہ نظام الدین کے ول میں بیویت ہو گیا۔ آپ اعظے۔ قدم لوس ہوئے اور مرید ہو گئے۔

جن د نول صرت خواج نظام الدین کوخر فدخلافت الا آپ اپنے پیروم شد

کے حکم سے دہلی دوا نہ ہوئے۔ دہلی چندروزگزار نے کے بعد ندائے غیبی سے غیابور

کوروا نہ ہوگئے اور اس جگہ کو اپنی قیام گاہ بنا لیا۔ کچھ عوصہ بک آپ پراور آپ

کے درولینوں پر برطی سختی آئی۔ کئی کئی دن کھا نا نہ ملتا۔ چارچار ون لیددرولیش افطاد کرتے جھزت کے بہایہ میں ایک عورت دستی تھتی۔ یہ بہت نیک بیرت اور
مالح بھتی۔ دسیاں تیا رکر کے روزی کما تی ۔ اور بے ناان و نمک کھا نا تھا رکر کے بیٹ مالح بھتی۔ دسیاں تیا رکر کے روزی کی آپ اور دن ایک و ن

مولیتی۔ اس نے صفرت کی اور آپ کے درولینوں کی حالت زار دیکھی تو آیک و ن

درولینوں کو پکا کر کھلائی ۔ حضرت نے اپنے محب خاص شنج کمال الدین بعقوب کو فرایا

کراس آٹے کو مطی کی مہنڈ یا میں ڈال دو۔ اس میں بقوڑا پانی ڈال کرچ ہے پرچرچھا

دو۔ شایکہ بیردرولینوں اور آئے والے دیا فرول کی خوراک بن کے بچرہے پرپرچھا
دو۔ شایکہ بیردرولینوں اور آئے والے میا فرول کی خوراک بن کے بچرہے پرپرچھا

چرطها وی گئی اُسِلنے لگی۔ اب پیک ہی رہی تھی کہ خانقاہ بب ایک درولیش داخل ہو کہ کو اللہ نظام الدین کھانے کے لئے جو کچھ ہے ہے آؤ۔ آپ نے فرمایا منڈیا چوہے رہے مک رہی ہے صرکریں۔ یک جاتی ہے عیر کھا لینا دروین نے کہا۔ نظام الدین تم خود اعظو جبسی تھی منظیا کی سے ہے آؤ۔ مجھے سخت عبول ہے۔ آپ اعظے - جا در کے ایک کونے سے ماعظ پیٹا - کیتی ہوئی ہنڈیا جو کے سے اعظائی اوراس درولیش کے سامنے لارکھی درولیش منظیا میں یا تھ ڈال کرگرم كرم تقع كها تاجا تا تفاواس قدركرم منذيااور كها تاكم اس كے ما تقول برا تركر تا اور مذكرم لقمے اس كے مذكو جلاتے حضرت ديجھتے رہے۔ كچے كھا چيكنے كے بعد منتريا كواتطايا- اورا ويرك جاكرز من ريجينك ديا- ہنڈ بالڈ ط كئي كھا نازمين پر بھیل گیا۔ اب اس درولیش نے کہا۔ نظام الدین ا باطنی نعمت خواجر فریدسے عاصل کریکے ہو۔ محبوک اور تنگرستی کی ہنڈیا میں نے تواد دی ہے۔ آج سے مظاہر وباطن کے بادشاہ ہو! برکم کروہ درولیش غائب ہوگیا۔ اس دن سے استے فتة حات إسف بكے كه صروستار مذرا - بنراروں درویش وسا فر برروز كها ناكھاتے

تذکرہ العاشقین میں کھاہے۔ کر فیات الدین مرآ الدین کیقباد باد شاہ نے فیات الدین مرآ الدین کیقباد باد شاہ نے فیات اور تجارتی مراکع نبنا شروع موسے لوگ جوق درجوق آنے لگے . فوصرت خواج نظام الدین قدس سرہ نے محسوس کیا ۔ کر اب اس شہر میں بھیٹر ہوگئی ہے۔ یہاں سے کہیں اور مگر میا جائے اپنی د نوں آپ کی خانقاہ میں ایک خولصورت نوجوان آیا اور آتے ہی یہ فیر

روز کے تو سرت دی تیانتی کم نگشت مائے عالم خواہی ت

اجازت سے ہی گھوٹریاں ہے کہ آیا تھا جنزت نے دوسرے روز نہایت سترے شادمانی سے گھوٹریاں لیں اورائینے پرومرشد کا شکر سے اداکیا۔

اخباراً لآخبار مي مكهائ كرسلطان علاد الدين فلجي كي وفات ك بعد سلطان قطب الدین مبارک شاہ سلطنت دہام تمکن ہوا تواس نے علاء الدین کے لئے خصر خال کو جرصرت نواج نظام الدین قدس سرهٔ کامرید نفاا وراس نے صرت کی خانقاہ کے اجاطہ میں صفرت کے لئے بڑی بڑی عمارات نیا میں تقیس نظب الدین مبارک شاہ نے پیرعمارتیں گرادیں اور ضرخان کوشہید کر دیا۔ بھر حضرت خواجر نظام الدین اولیا، کے بھی دریے آزار ہوا۔ابک دن اس نے قاصنی محد عز نوی کو دوسلطان قطب لدین كامتيرخاص تقا۔ پوچھاكەنظام الدين اتنا لوگوں كوكھلاتے ہيں او دمجان نوازى كرتے مِن تویه رویه کمال سے استا سے مقاصی کو بھی صرت بننے نظام الدین سے مخالفت تقی۔ کہنے لگا۔ کہ یا د شاہ کے امراء وزیرسے لے کرسیا ہی تک خوا جرنظام الدین کو نذریں بیش کرتے ہیں اس وج سے آپ بے در بغ خرچ کرتے جاتے ہیں حتیٰ کہ دومزاردد بے کا کھانا ہی بکتا ہے۔جرعام لوگوں کو کھلادیا جاتا ہے بربات س کر باد شاه صد کی آگ میں عبل اعظاء اورائسی و تت ایک فرمان جاری کیا کہ جوشخف شیخ کے گھر جلنے گا یا کسی قسم کا نذرا مذہبی کرے گا توٹ ہی خزامنے سے اس کی تنخواہ بندكر دى جائے گى حضرت شخ نظام الدين نے يہ بات شنى توا پنے خاص غلام اور غانسامے خواج اقبال كو بلايا اور حكم دياكه آجسے لنگر كاخرچ وُگناكر دياجك اور پیسے کی جب بھی صرودت پڑے فلائی طاق سے بے لیٹا ا ورنسیما لنڈرٹیھ کرخرجے كرتے ما عنوا جرا قبال ايسے مى كرتے رہے اوراُن كو حتنى نقدى كى صرورت موقى

باد شاہ کو یہ خربہنی نوبرا شرمندہ ہوا اپنے امراء میں سے ایک شخص کو حضرت

دجس دن آپ چا ند تھے آپ کو بیمعلوم نہیں تھاکہ ایک دن ساراجہاں متہاری طرف انگلیاں اٹھائے گا۔)

مرِیدِ فرمایا۔ اس قدر شہور نہیں ہونا چاہیئے۔ لیکن اگر مشہور ہوگئے ہو تو بھاگ کرمیدان حشر میں صنور نبی کرمے صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے سٹر مسار نہیں ہونا چاہیئے فلوت میں اللہ کو باد کرنا آسان بات ہے۔ گر لطف تواس میں ہے۔ کرمخوت کے ہجم میں رہتے ہوئے۔اللہ کی بارسے محروم اور غافل ندر ماجائے۔

ابتدائ زادین صرت شخ المت کخ نظام الدین اولیاء قدس مرة مغیات آباد

سیدل کیودام رصی نماز جمعه ادا کرنے جاتے تھے۔ ایک دن آپ کے دل یں

غیال آیاد کہ اگر میرے باس موادی کے لئے ایک گھوٹری ہوتی قریس جی بیدل

مبانے کی بجائے مواد ہو کہ نماز جمعہ کو جا تا۔ دوسرے دن شخ نورالدین یاد ہڑال

آپ کی فدمت میں دو گھوٹریال نے کہ حاصر ہوا۔ اور کہا کہ میرے بیرومر شدنے

خواب میں مکم دیا ہے کہ گھوٹریال آپ کی موادی کے لئے بیش کروں تاکہ وہ آئی اور تاکہ وہ آئی ایش کروں تاکہ وہ آئی اور تاکہ وہ آئی مرت پر کے کم پر گھوٹریال بیش کی ہواری کے لئے بیش کروں تاکہ وہ آئی کے مرت کے کئے میش کروں تاکہ وہ آئی کے بیا میش کے اپنے بیرو مرت کی اجازت کے لینے بیرو مرت کی اجازت کے لینے بیرو مرت کی اجازت کے لینے این میس نے میں۔ ہم بھی لینے پیرومرت کی اجازت کے لینے میرو مرت کی اجازت کے لینے میرو مرت کی اجازت کے لینے میرو مرت کی اور مرت کی اور مرال ہوادی کے خواب میں فر مایا۔ با با نظام الدین گھوٹریال نے لو۔ پیر ملک یار ہم ال ہوادی

شنخ کی فدمت میں بھیجا اور حکم دیا کہ شنخ دکن الدین الرالفتے ملتانی ہمارے ملنے کو آ رہے ہیں۔ اور وہ دہلی میں قیام کریں گے۔ آپ وہلی میں رہتے ہیں۔ گرہمیں ملنے
کے لئے نہیں آتے اس سے ہمادی بے عزتی ہوتی ہے۔ حضرت شنخ نے جواب دیا کہ
ہمارے بیروں کی میر عادت ہے کہ وہ با دشا ہوں کے دربار میں شہیں جاتے اس
لئے ہمیں معذور سمجھا جائے۔ بادشاہ میربات سنتے ہی۔ سانپ کی طرح پیچے کھانے
لئے ہمیں معذور سمجھا جائے۔ بادشاہ میربات سنتے ہی۔ سانپ کی طرح پیچے کھانے
لگا۔ اور کہا کہ شنخ کو میرے حکم کی تعمیل کرنا پڑنے گئے۔

حضرت سننخ نظام الدین نے سنخ حس علی سنجری کوشنخ صنیا دالدین رومی کے پال بھیجا۔ آپ سلطان قطب الدین کے مرت منتے ۔ اور شخ شہاب الدین عرم ہرور دی کے غلبفه يتقے كه آپ سلطان قطب الدين كوسمجا ميں كه وہ نقروں كو تنگ بذكر بے كيونكم درولشِّول کوستانے کے نتا کج اچھے منہیں ہونے۔ شیخ حس حب شیخ صنیار الدیں کے پاس گئے تردیکھا کہ آپ سخت ہماریں۔ بات کئے بغیرو اپس آ گئے خواج نظام الدین کوصورت حال ہے آگاہ کیا تین دن کے لیدی خضیاءالدین کا نتقال ہوگیا۔آپ کی تقريب فاتح برد ہلى كے تمام مشائخ اور امراء جمع ہوئے سلطان قطب الدين بھي شيخ منياءالدين كى قبر رپيعاصر ہوا۔ باد شاہ قبر رپيقرآن پڙھ ربا تھا۔ ھزت خواجہ نظام المدين بھی وہاں موجود تھے۔ آپ قبر کی طرف آگے بڑھے تو تمام مثنا کے نے اُٹھ کر آپ کی تغظيم كى ليكن بادشاه قطب الدين حوتلا وت قرآن كرر بالخفاء ببيما رما وما رصرت شخ کے لبض احباب نے گزارش کی کہا تفاق سے با دشاہ بھی اس محلس میں موجودہے اگرائب اس سے ملاقات کرلیں توسم اسے اماوہ کریں۔ آپ نے فرمایا اس بات كى كونى صرورت نهيس - باد شاه كوقر آن بيشصف دو ماد شاه گوشتر حيثم سے آپ كوديكھتا جاتا اورسادی بابتی سنتاجا تااور دل ہی دل میں غصہ سے بیجے وتا ب کھاتا ہم کا بادشاه نے ایک اعلاس منعقد کیا - تمام مشائخ کو مگا یا اور انہیں کہا کہ آپ سب لوگ

شے نظام الدین کو سمجھا میں کہ وہ ہرروز ہمیں ملنے کے لئے درباد میں آیا کریں اگر دوزا مذہبیں آسکتے تو ہفتہ میں ایک بادیا مہدینہ کی پہلی تا دیخ فرور حاصری دیا کریں اگر آپ لوگوں کے سمجھانے مرچھی وہ مذہانے تو میں اعلان کرتا ہوں کہ مین خود ہمجھا لول گا۔

سيد قطب الدين عزنوي شخ عماد الدين طوسي - يشخ و جد الدبن اوربرال لدبن باداتاه کے کہنے پرشیخ نظام الدین کی خدمت میں عاضر ہوئے اور مصلحت وقت کے مطابق تقاديركيس يصزت شيخ آتى بزرگوں كى باتيں شن كر تفور اساغور كياا ورفرايا اچے دیکھوالٹرکو کیامتطورے ان بزرگرل نے آپ کی اس بات کورضامندی تھے ہوئے بادشاہ کوجا کر کہا کہ حضرت شخ جا ند کی بیلی تاریخ کو درباریں آنے کے لئے تبار مو گئے ہیں. ہا د شاہ بیربات سن کر بہت خوش ہوا۔ بیرما ہ مفرکی تا کیسویں تاریخ تفی اسی رات خواجہ و جید قرینتی امیرخسرو کے بھائی اعز الدین علی صرت شیخ نظام الدین جم کی خدمت بین حاصر ہوئے اور عرض کی ہم نے مُناہے کہ آپ باد شاہ کے دربار میں اب كوراصى موكئ من الب في فرمايا مي الني بيرول كى عادت كے قلات كو في كام بنیں کرول گاوہ بڑے جران ہوئے کہ ادھر بادشاہ انتظار کر رہاہے کہ کپ بہلی تاریخ ہوا ور شخ ہیں ملے کو ہیں مگریہاں شخ ابھی تک راحتی نہیں ہورہے اس صورتِ حال سے بڑی ہدمزگی ہو گی حضرت شنخ نے ان کی حیرانی دیکھی تو فرمایا كراك وك فكرنه كرين ملطان قطب الدين ميرا كجيه منهس بكالا يح كالحاي ني میں نے رات کو خواب میں دیکھا ہے کہ میں ایک جمو ترے پر فنلدرو ہو کر مبیٹیا ہوں ایک بڑے سنگوں والا بیل میری طرف دوڑ تا ہوا آیا وہ مجھے مار نا جا ہتا تظاریں اعطاا وراس کے دو نوں سینگ مکی طیلے اور اس کوزین میدوے ماراوہ وہی بلاک ہوگیا۔ میں بیرخداب دیکھے کمرا س نتیجہ بریہنچا ہوں کہ تطب الدین باد شاہ میرا کھے

بھی سبس بکاڑ کے گا۔

یا ندکی انتیل تاریخ بولئی مناز فرک بعدا ب کا علام خواجرا قبال آپ كى فدرت ميں عاضر ، وا - كهند لكا - آج مبينے كى آخرى دات سے مبيع آپ نے بادشاہ کی ملاقات کوجا تاہے اگر حکم ہوتوسواری کا نتظام کروں۔ آپ نے فرایا ابھی چپ رمو. نمازعصر بره چیك توخوا جرا قبال بهرها خرجوا باد دلایا مگرات بفاموش رسے وہ سجوگیا۔ که آپ باد شاہ کو طلنے نہیں جا میں گے رات ہوئی تو وا تغی صرت بنیخ ہا دشا کوسلنے نہ گئے۔ آوھی مات سے کھے آ گے سلطنت کا ایک امیرضروخال جے بادشاہ نے یالانتقاا ورمٹی سے اُنٹھا کر مبت بڑا عہدہ دیا تنفا۔اور پیاس ہزار موارول پر ا ضريكا يا بوا عقاا ورا ياميرفاص بنايا بوا عقاءا عقاا ورسطنت يرقيهندكرن كيك ہزار ستونوں والے محل میں مینہ یا ورقاضی محد غزنوی کوساتھ ہے کرایک ظاہر مبکی نامی تاتل کے ہا تھوں سطان قطب الدبن کو قتل کرا دیا مکہ بادشاہ کے چھوٹے جھوٹے بيے بھی قتل کرا دیشے خود تحنت سلطنت پر مبھیا چند ماہ حکمرانی کی ادر سلطان غیات لدین تعلن كے الحول قتل بوكيا۔

سلطان تطب الدین کے والدعلاء الدین خلجی نے بھی صرت خواج نظام الدین اولیا قدس سرہ کو بھی ایک بار دربار میں طلب کیا تھا۔ گراس نے یہ بہا نہ بنایا۔ کہ بین نے اپنے بھائی الف قان کی قیادت میں بڑا عظیم الثان لشکر روانہ کیا ہے گر اب تک اس کی خبر نہیں آئی مجھے بڑا فکرہے۔ بین سوج رہا ہوں کہ ایک اور نشکر روانہ کر وں اگر آپ چند کمحول کے لئے نشر لیف سے آئیں۔ بوآپ سے متنورہ بھی کروں گا۔ آپ کی نشر لیف آوری میرے لئے باعث صدا فتحار مرکی ۔ بیبغیام سن کرھڑت خواج نے خبر کھول کے لئے مراقبہ فرمایا سرا تھا کم فرمایا سرا تھا کہ فرمایا سرا تھا کہ فرمایا سرا تھا کم فرمایا سرا تھا کہ کی خرمایا سرا تھا کہ بیا ہے کہ بیا کہ کہ دیں میرے آنے کی ضرورت نہیں افتار میں کی تشریل افتار کو کہ دیں میرے آنے کی ضرورت نہیں افتار کی کہ دیں میرے آنے کی ضرورت نہیں افتار کی کہ دیں میرے آنے کی ضرورت نہیں افتار کی کے لئے کہ کا کہ دیں میرے آنے کی ضرورت نہیں افتار کی کہ کی کی خرابیا سے کردیں میں کے کہ کو کردی کی خرابیا سرا کی کی کردیں کی کردیں کے کہ کردی کے کردیں کی کردیں کی کردیں کرد

وقت آپ کو فتح کی فوتنجری مل جائیگی اور آپ کے بھائی کی فیرسیت کی خربھی مل جائے كى اور چندرونة تك العن خال مال غنيمت مع كرة جائے گا. ماوشاه اس خيرسے برا فوش ہوا۔ ندرانہ بیش کیا فرسنجنے بر یا نیج سود بنارسرخ بھیے کیونکہ دوسرے روز ہی فتح کی خبریں الکیس حس دن الف خال دہلی بینجا توعلاء الدین خلجی نے صرت مجوب المي كى فدرت ميس زيديا في سوسرخ ديناد زر جي اس وقت آب كى خدمت بين ايك قلندرالتقديار موجود عقا ١٠س في دينام ديكه تونصف ليف لك كين ك اوركن لكا ياالمرة مقرك نزلان مشرك مدتاب آب مف فرايا "تنها وشرك "تم اكيل كوسى الجيالكتاب - يدكه كراك في ساوا ندراند اس كے والے كر ديا شمس الدين نامي شهرين بدازى كاكام كرنا تقا براس كى عادت سخى كمرصزت خواجه نظام الدين محبوب المي كمتعنق بركفنتي كرتاا ورسست الفاظ كبتا دل میں بھی آپ سے کدورت اور نفرت رکھتا تھا۔ ایک دن موضع افغانان کے سترباغ مين بطيا تقا ووستول كي محلس بريا تقى يتراب كا دور حل ربا عقاده تراب كاليك پيالدا ظاكر پينے لگا۔ تواسے نظر آيا۔ كرشنے نظام الدين سامنے كھڑے ہيں اورانگلی کے انتارے سے فرمار تہے ہیں متزاب مذہبیر- اس نے اسی وقت شاب كاپياله صبينكا مراحي توڙدي اور دوڙا دوڙا آپ كي خدمت ميں عاضر ہوا - آپ نے فرما پیشمس الدین الله تعالیٰ جے اپنی نگاہ کرم سے نوازے اسے تبطان نہیں ورغلاسكتا ينانج اسحا ينامريد بناياا ورسعادت ابدى كسينجا دياحض خاج مجوب المي نظام الدبن قدس سرؤك ايك عقيدت مندني آب كي دعوت كاامتنام كيا على ساع بھى منعقد بدئى اس مجلس كے شركاء كے لئے صاحب فاندنے كانے كا بھی انتظام کیا ہوا تھا گرمحبس ماع کی وجرسے کئی ہزار سامعیں موقع پر ہینج گئے عبس ختم ہوئی تو کھا ناحرت بچاس آدمیوں کے لئے بکا پاگیا تھا صاحب بنس بڑا

پریشان ہواکہ اب اتنے آدمیوں کے کھانے کاکس طرح بندولبت کیا جائے جھزت بنے اُس کی پریشانی کو نور فراست سے پا گئے اور ابنے خادم خاص حب کانام مبشر مقاکوا پنے پاس بل با اور فر ما با کہ جا و کوگوں کے ہاتھ دھلاڑ اور دودو آدمی اکھے مقاکوا پنے پاس بل با اور فر ما با کہ جا و کوگوں کے ہاتھ دھلاڑ اور دودو آدمی اکھے بھاتے جا و کھر بردو ہی ہے چارچار جھے کر لو۔ اور ایک طباق میں دکھ کراس کے دیر چاور ڈال دواور لسم النہ کہتے ہوئے تقتبے کرتے جا و کیے کے حکم کے مطابق کھاناتھیم ہونے دگا کہ ٹی ہزار شخص کھانا کھا جا کہ اُن انسان کھانا باتی تھاکہ صاحب مجلس نے

ما مان تصبيم ايك عالم اوردانش ورشخص ربتا تقاء الفاقاس كے گھر كو آگ لگ كئي اوراس ميں باداتا ه كافر مان اور قبالرص ميں أسے جاكير ملى تحتى حل كيا وہ دہلی آیا اور بڑی مشکل سے باداتا ہی دیوان سے اُس فرمان کی نقل حاصل کی لیکن جبدد ربارسے با ہر نکلاتروہ فرمان بھی کہبر گرگیاروناد صونا ستروع کر دیا حضرت ملطان المشائخ خواج نظام الدبن رهمة التدعليه كى خدمت ببي طاحر ببواا ورد عاك الخالتجاري آپ نے مُکاتے ہوئے فرمایا۔اگراب تمبیں شاہی خرمان مل جائے توھزت ذید گیخ شکر کے روح پاک کے لئے نذرد بنا-اس دانشوار نے بربات قبول کرلی۔ حضرت نے فرما یا مولانا کتنی ایجی بات ہو کہ آپ اس وقت بازار جا کر علوہ خرمیر س<mark>اور</mark> اسے بیاں ہے آ بیں۔ وہ اُسی وقت اس مقاطوائی کی دکان بریہنجا۔ چنددرسم دے کر حلوہ خریدا چلوائی نے حلوہ تول کرا کی کا غذمیں رکھ کراس دانشوار کے حوالے کیا۔ اس دانشوارنے فانقاہ کے دروازے برین کوغورے دیجھاتوس کا غذم ملوہ ركها ہوا تھاوہ دراصل اس كى جاگيركا ثابى فرمان تھا جفرت شنج كى خدمت بس آيا

ایک دن صنت خواج فریدا بنے جرے میں بلیٹے ہوئے تھے اللہ کی یا دیں

موتے اور نہایت شوق و دوق میں بیر رہاعی پڑھ رہے تھے۔ خواہم کہ ہمیشہ در ہوائے تو زیم !! خاکے شوم و بزیر پائے تو زیم مقصود میں بندہ زکو میں تو ئی از ہر تو میں میں مرائے تو زیم

اس دقت مولانا بدر الدین اسحاق تجرے کے دروازے بر بیٹے ہوئے اورانہیں علم دے دکھاکہ جربے کے اندرکوئی بھی شخص آنے نہ پائے۔اسی اتناء بیں بھزت بدرالدين اسحاق كوسينياب كرفى عاجت بهوئى-آب ايك طرف چلے گئے۔ اتفاقاً ورواز بيلطان المتائخ حضرت نظام الدين آيني ورواز مركسوراخ سے نظر کی۔ دیکھا کر صرب سراب عشن خدا دندی سے مر ہوش ہو کر وجد فرمارہے۔ بن اور مركوره رباعي براه كرتوب رسي بين رصرت واجفظام الدين في سوجاكم يه وقت الباب كرصزت شخ كى عطام ودم نهين بونا چاہيئے - بهرحال اندائے ا درالندي توكل كمن بو في جرب مين داخل مو كئة رزمين كوي ماحضرت يرخ نظام الدبن كوكها فرمايا ما فكوكميا چاستة بهو آپ نے فرما يا دين بھي اور عقبي بھي پھر غواجه نظام الدبن نے عرض کی میں اللہ جاہتا ہوں فرما یا وہ بھی تہیں چاہے گا جنانچہ حفرت بیر کی توج سے دونوں چیزیں حاصل ہوگیئی مصرت خواج نظام الدین فرماتے ہیں کہ مجے ساری عمرانسوس رہا کہ میں نے اس وقت کیوں نہ بربات کمی كم مجھے عالتِ سماع بين موت آئے۔

ایک دن سلطان المن کخ خواج نظام الدین صفرت خواج قطب الدین مختیاد کے مزار می الوار کی نیاد سے سے تو آپ کا گزرد دابا کے مزار میر الدیجا کہ مرحن علائی سنجری جواچنے وقت کے بہت بڑے

شاعر مخے اپنے دوستوں کے ساتھ بیٹے شراب پی رہے تھے اُن کی نظرین صرت شخ پر بڑیں توسخت شرمندہ ہوئے اور بی شعر بڑھا۔ کرز صحبت ہا اثر ابو دے کاست زہد تو افق از دل ما گم نکرد!! فتق مایاں بہتر از زہد شماست بیشعر سننے کے بعد صرت خواج نے فرمایا ہاں صحبت کا اثر ہو تا ہے اس بات بیشعر سننے کے بعد صرت خواج نے فرمایا ہاں صحبت کا اثر ہو تا ہے اس بات نے اُس کے دل برا تنا اثر کیا کہ نظے سر دوڑ ااور صرت شیخ کے قد موں میں مرد کھ

دیا تمام دوستوں نے ساتھ تا ئب ہوااور صفرت کا ارادت مرید بن گیا ۔ دنیااور ہخرت کی دولتیں صاصل کمیں ۔ وہ اکثر بیشعر طربطاکر تا تضار ای حسن تو بہ آ گہی کمردی چوں تراطاقت شب گست ہے گئے

کہتے ہیں کہ تو بہ کے وفت آپ کی عمر تہا میں سال کھی۔ فوا کدالفوا دجو صرت نظام الدین کے ملفوظات پر شمل ہے آپ کی ہی تالیف ہے۔ یہ کناب بڑی قبول ہوئی بتوا جو امیر خسرورح تا اللہ علیہ فرما یا کرتے تھے کا ش احس فوا کہ الفوا دہیں مقبول کتاب مجے مل جاتی تو ہیں اپنی سادی تصانیف تجھے دے دیا۔

ما ا ۔ غائب مقرت مولف غلام مفتی غلام سرور لا ہوری قدس رہ سے فروگذاشت ہوئی ہے۔
حس علائی سنجری تنہ ترسال کی عربی بنیں فوج انی میں ہی مشراب سے تا اُب ہو کر مضرت فوا جرمجوب المیٰ
کی مجالس میں آنے لگے تھے آپ نے صفرت کی پندراں سالد زندگی کی مجالس کی بابتی د ملفوظات اجمع کر کھے
تھے۔ اور جب اس ذوق کی اطلاع حسن نے صفرت فواج کوشائی رباقی حاشیہ ایکلے سنفے پر ملا خطر فرائیں)

طالبان حق کی ایک جاعت صرت خواجر نظام الدبن کی خدمت میں میش کیا۔
یہ ایک شخص نے کسی نہ کسی میر کا تحفہ کا غذیب لیبیٹ کرآپ کی خدمت میں پیش کیا۔
لیکن ان میں سے ایک ایسا شخص بھی تھا جس نے صرت کی کشف و کرامت کا
صاب لینے کے بلئے راستے سے مٹی اٹھائی۔ کا غذیب لیبٹی اور شنج کی خدمت میں میش
صاب لینے کے بلئے راستے سے مٹی اٹھائی۔ کا غذیب لیبٹی اور شنج کی خدمت میں میش
کردی جھزت شنج آپنے ایک خادم کو فر مایا کہ بیرسا دے تحفے اٹھا کراندر لے جا ک

ولقبيرها منيد) ترآب ببت فنش موئ اوركئي مقامات سے اپني مجالس كى وه گفتگو كى مصحص علائ سنجرى في ترتيب ديا تقارص كي زباني سنى - اس كي مقدوليت كي سنداس سع مره كدا وركبا بومكتي ہے۔ کراتپ نے صن کو اپنا جبر مبارک ببنا یا ۔ غالبًا فوائدا لفواد کی تدوین ترنیب اللہ الله الموادي ہوئی اور اسے سے ای مصریمی کمل کیا گیا۔ اس طرز نکارش نے متقبل میں صوفیار کی مجالس کی روحانی اوردینی باقول کو محفوظ کرنے کا دواج دیاا درسم دیکھتے ہیں۔ برصّغِرے اکمز بزرگوں کے ملفوظات جمع ہوتے گئے اور آج میں مفوظات ہمادے سے مشعل راہ ہیں۔ ہاد تنا ہوں کے تالہ یخ نگار۔ دربارکے تذكره نوليس اودا نغام واكدام كى اميديس سوانح عريال مكيفوا ال الم قلم وه بات نبيس مكوسكة سو ان کے ممدوح یا دور کے ضلات باتی ہو۔ مگر ملفوظات وہ بے للگ اور غیرجا بندار بخریریں ہیں۔ جن کی وساطت سے میں اس وقت کے معاشرتی حالات بادشاموں کی بدعنوا نیاں - مظالم وتشدد کے وا تعات ہمارے سامنے آئے ہیں۔ بچران تاریخی وا تعات کے ساتھ ساتھ ابل و ل کی اصلاح كے بئے جوعدہ لضائح اور لكات ماسے آتے ہيں وہ اصلاح نفس كے لئے بميشته بيشہ ترياق تا بت بوئے مصرت فوا جرموب اہلی کی مجالس کی بائیں جے حس علائی سنجری نے بنیابت ذمد داری اور عقیدت سے تلمبند کیا تھا۔ آج فرا مُدالفوا د کی صورت میں ہمارے سامنے ہے۔ اکس كتاب كى مقولبت بوخواج المرخسرون بدئة تحيين بيش كدن بدي كها تقابص اپني كتاب مرك نام منوب کردد- اورمیری دندگی سادی تحریس سے او و فارونی)

لیکن مٹی والے لفافے کو آپ نے خود اعظایا اور خادم کو کہا اس کو بیبی رہنے دو اسٹ میں ہماری آنکھول کا سرمہ ہے۔ اس کوامت کو دیجے کو تمام حاصرین قدم بوس ہوئے اور مرید ہوگئے۔

حضرت سلطان المشائخ صفرت خواجه نظام الدبن في شادى نهيس كي ادرساري عرم ورب - كمة بن كرامك دن آب اب بيرى فدمت بن عاصر تق توصرت نے فرما یا کوئی چیز لاؤ کہ کھا نیں۔خوا جرنظام الدین کے پاس کوئی بیسیہ نہ تھا با زار گئے اپنی پیچٹری گردی رکھی مقوڑا سالو بیا خریدا۔ اُس میں نمک ڈالاا وراگبال کر حضرت شنخ کی خدمت میں ہے آئے جھزت شنج نے اپنے دوستوں کے ساتھ مجھ كراد بياكها ياا ورفرها باكيانمكين ليكاب - يسف اللهد وعاكى بدكم برروتيمير من ممك تمهادسے با درجی فانے میں میکنے والے کھاتے میں استعال موریہ بات سنتے ہی مضرت شیخ نظام الدین تعظیم کے بئے اعظے مالت بی تفی کہ آپ کا تہدید میا ہوا تھا۔ صرت واج فرید کی نگاہ کہ کے چے ہوئے تہبندریوی برے بيارادر محبت سے اپناتهدند گھرسے منگوا باا ور فرما یا شخ نظام الدین اسے بہن اد سنخ نظام الدین نے فوشی خوشی اُس تہدید کو اینے تہدید کے اور ہی مینا ترق كيا- ملدى من أب مكم القدس تهديد كليوت كيا اور آپ مجلس من يريشان كفرك رہے حضرت شخ فريدنے فرمايا إسے المطاؤ . اورمضبوط كركے با ندھو عوض كىكسطرح باندهود فرماياب قيامت كدن تك تمهارا تهبند نهس كط كارينخ نے زمین برسرد کھ دیا کرصنورالیا ہی ہوگا۔ یہی دج ہے کہ آپ نے ساری عمر شادى سركى اورعور تون سے دوررسے

ایک دن حضرت خواج نظام الدین اپنی خانقاه میں مجلس سماع میں بیٹے ہوئے تنے وجد کی حالت بھتی۔ ایک صوفی نے آنہ مجری اس آنہ کی آگ نے اس کوجلادیااور ده جل کرخاکستر ہوگیا۔ پینخ ہوش میں آئے پوچھا کہ یہ خاکستر کی کی ہے لوگوں نے دا قعد سنایا۔ توآپ نے پانی طلب کیاا و داپنے دست مبارک سے اس خاکستر رہے چین کیا صوفی اُسی وقت زندہ ہوگیا۔ آپ نے اُسے فر ما یا جب سک تم پختہ نہ ہوجا ؤ ہماری محلس میں نہ آنا۔ انھی تم کچے ہو۔

سلطان غیاف الدین تعنی خروخال کے تتل کے بعد دہلی کے تخت پر بھی ایک دفعہ نبکال کی مہم سے والیس آرہا مقارات میں ہی صفرت شنج کو لکھا کہ ہم جس وقت وہلی پنچے۔ تو آپ غیاف پورسے کہیں با ہر چلے جا بیس۔ کیو بکہ آپ کے ہونے سے دوگ ہمت بوتے ہیں اور شہر میں بہت بھر ہو جاتی ہے سرکاری افسراورامراء کے لئے کہی گرفتہیں رستی رصفرت شنج اُس وقت با دشاہ سے نا دامن مقع۔ آپ نے خط بڑھا اور فرمایا ہمنوز دہلی دور است دا بھی دہلی دور سے بھیا تقامی کر بڑا اور مرگیا۔ یہ مثال آج تک ہماری زبان میں مشہور ہے کہ سمنوز دہلی دور است،

صفرت خواج نظام الدین مجبوب المی کی عراکا نوسے سال ہوئی آن کا دن تک آپ کا پیٹیاب بندر ما۔ اس بیجاری کے آن کھویں روز اپنے خاوم خاص اقبال خواجر کو اپنے پاس بلایا۔ اور فرما یا کہ تہا دے پاس جننا مال واب ہے یا جقار لفتری ہے وہ میرے پاس سے آئو تا کہ بین عزیبوں کو تعقیم کر دول بخا جا اقبال نفتری ہے وہ میرے پاس سے آئو تا کہ بین عزیبوں کو تعقیم کر دینے جاتے ہیں اس سے کہا ہر دونہ جننے ندا نے ورتحف آئے ہیں۔ اُسی دن تعقیم کر دینے جاتے ہیں اس سے دوسرے دن کے لئے کھی تنہیں بجنیا۔ ہاں استے ہزاری غلاج گو دام میں اس سے دکھا ہوا ہے کہ لئگر میں خرچ کیا وہ محفوظ ہے آئی نے فرمایا کما میرا اپنا عقیلا عزیبوں میں تعتیم کرد و۔ سالدا غلر تقیم کر دیا۔ اب آپ نے فرمایا کہ میرا اپنا عقیلا غزیبوں میں تعتیم کرد و۔ سالدا غلر تقیم کر دیا۔ اب آپ نے فرمایا کہ میرا اپنا عقیلا

ا و لایا گیا تواس میں سے ایک فاص مگیطی ۔ کر ند مصلی اور خلافت کا حرقة نكال كدمولانا بربان الدين ففبركوعطا فرمايا - اورحكم دياكم إسى وتنت دكن كى طرف چيے جا وُ مجيرا كي بگراى اورا كي كرُنة مولاناتشمس الدين کي كوعطا فر مايا. اس طرح إس عقيد مي جنن كبرب عقد البنة خلفاء بن تقيم كرد يئے وحتى كم ائس میں کو ٹی چیز بند دہی انس د قت شخ لفیرالد بن چراغ دملوی رحمته النَّه علیکی مجلس مي موجود تحقے انہيں کھے نہ ديا گيا تمام حاصرين مجلس جيران رہ گئے کر شيخ نفيرالدين كوكيول محروم ركها كيا ہے ؟ كيروقت كزرا توصرت في شخ نفيرالدين كوابنے پاس بلایااور آپ كوا بب خرقهٔ ايك مصلّی ايك تبييح اور لکوای كاايك بالم عطا فرمايا - بيروه چيزي تقيل جو آپ كو حفزت خاجر فريدالدين گنج نشكر نے عطا فرمانی تقیں۔ بیچیزیں شخ نصیرالدین چراغ دہکی کودے کرفرمایا۔ آپ دہلی میں دیں اور لوگوں سے ظلم وہتم برواشت کریں۔اس کے بعد آپ نے تماز عصاوالی الجي سورج غروب بهي مروا تفاكر آفاب ولايت كُلُ نفس ذا لفتر الموسط اسرایک جاندارنے موت کامزہ فیکھنا ہے اکے پردے بی تھی گیا۔ آپ كى رحلت بهت برا حادثة عقاآب بروز جمعرات الخاره ربيع الاول مات بو پچیں ہجری کووصل بحق ہوئے۔ اِسی ماریخ دفات برتمام اہل تواریخ کا اتفاق ہے لیکن آپ کی عمر کے متعلق مختلف صرات نے اختلاف کیا ہے مخرالواللین اور شجرہ چنتیہ کے معتنف نے آپ کی عمر حریدا کوے ک ل مکھی ہے للذكرة العاشقين ورميرالاصفياء نءاكا نوعسال بيان كي بع سلطان المشائخ خوا جرنظام الدین مجبوب المی اورسلطان غیات الدین تغلق کی و فات میں صرت ابك ماه اور الطاره ون كا قاصله ہے۔ غیات الدبن تنفق حضرت بلطان ظا البین سے ایک مہمینہ اور اٹھارہ دن پہلے فوت ہوا تھا

الرجي صنت سلطان المثائخ صزت فواجر نظام الدبن مجوب المي قدس سرؤك خلفاء کی تعدا دحدد دشارے باہرہے الیس مم بیال تبرگا چندصرات کے اسائے گرامی محصفے پراکتفاکرنے ہیں۔ ان تمام فلفائے کمام کے سردار صرت نعبرالدین چراغ د بلى قدس سره بين-ان كے علاوہ حضرت سراج الدين عثمان شيخ قطب لدين منور اليسر ضخ بربان الدين، شخصام الدين ملتاني مولاناجال الدين نفرت فاني مولانا فخ الدين مولانا ابو مكرمندوى مولانا فخ الدين مروزى مولاناعلم الدين شيى-يشخ بربان الدين مولانا وجيم الدين بإلى مولانا فصح الدبن مولا ناهمس الدين يحيى مولانا شهاب الدين مولانا شيخ محرقاضي مجى الدين كاشاني فاجركريم الدين سمر قندى يشخ عبلال الدين او دسى مولا ناجال الدبن . قاضى شرف الدين مولانا كمال الدين بعقوب مولا نابهاء الدبن- شيخ مبادك خواجرمعر الدين بنوا جرصياللدين برنی لیخ تاج دیبی دادری مولانا مویدالدین انصاری خواج شمس الدین خانبرده اميرخسرو ـ نظام الدين شيرازي ـ خواجرسالار شيخ فحز الدين ميركهي - شيخ علامالدين اندىتى وشيخ شهاب الدين كننورى مولانا حجة الدين ملتاني شيخ بدرالدين تولم يتخدكن الدين چېرى - شخ عبدالرهن سازلمپورى ما جى احد بدايونى - شنخ لطيف الدين - سينخ نجم الدين محبوب - شيخ شمس الدين دباري فواجريسف بدايوني بشيخ مراج الدبن حافظ قاصني شا دعلي مولانا قدام الدبن مكداً مذ مولانا بربإن الدبين ساوري مولانا جمال الدين اودسى وشنخ نظام الدين مولى قاصني عبد الكريم قدو افي - فاصني قدام الدين قد ورسى مولانا على شاه جاندار فحاج نفي الدين وخوامرزاده سلطان المشائخ اسدكرماني بيدلوست حنى يميد شاع وفلندر-اميرخرود بوى اميرص علائي سنجرى فاضى فخر الدين الحبوري دحمة الشعليهم اجمعين

نظ م الدین نظام الدین احد ولی محبوب حق گو حق بین عجب تاریخ تو لیکش عیانست زمسبوب الهی سرور دین م ۱۳۸ه

تاریخ وفات خريد مك سلطان اللاطين + عديم المنشل DLYO حس فقر سلطان الولى + شمع وبن سلطان الكريم DLYD بيرا بل دين سلطان الكبير + شهنتا وُ علال + حبيب چنت 0440 0440 0440 سردادحق قطب البدي + مقتداميعود +مكين مقتدا DLYD DLYD DLYD ست منطان كريم + زنده ول سراللي بيشوا PLYO 0440 محسبوب الملى محب رعرفاني

آپ سلطان الشعراء خواجها میرخسرور شاعر بیشتی د بلوی قدس سرهٔ به رئهان الفصلاء کے خطاب سے ملقب تھے۔ اگرچہ دہ باد شاہان و قت کے درباد میں ببند مناصب بہ

رہے۔ گران کے دل میں صفرت قواج مجبوب اہلی دہلوی کی مجبت کی حکم اتی دہی ہے اور بزدگان دین کے معتقد رہے یصرت پشخ نظام الدین کو مجبی آپ جبیبا با دفا اور محرم اسرار مطلوب و مجبوب بنہیں مل آپ کا اسم گرای ابدالحس تھا تخلص ضروحا جن دفول آپ کے والدا در بھائی صفرت فواج نظام الدین کے مرید تھے تو آپ کی عمر اعجی اسمی کہاجا تاہے یہ تصبہ در بیائے گذگا کے کنارے پرواقعہ ہے۔ آپ کے والدا میرسیف الدین لاقی تی بھرے خدا پرست اور بے نظر بزرگ تھے۔ آپ اسٹی سال کی عمر میں شہید ہوئے تھے اس وقت خواج خرو کی عمرائی ہی آپ کے نا ناعما دا لملک نے جوابیت وقت کے دلی الدی تھے۔ اور ایک سوتیرہ سال کی عمر میں تھے۔ حضرت امیر خسرو کو آپ وقت کے دلی الدی تھے۔ اور ایک سوتیرہ سال کی عمر میں تھے۔ حضرت امیر خسرو کو آپ

صرت فواج نظام الدین مجبوب المی قدس سره نے آپ کو ترک الله کا خطاب دیا تھا بھرت فواج خسرو کے ایک شعر میں اس خطاب کی نشاند ہی ملتی ہے۔

برزبال چ ل خطاب بنده نرک النددنت دست ترک الندد مگر ہم بالهش مسیار

چون من سکین ترا دارم همینم نس بود

يضغ من بس مهر مان و فالقنم المرزر كار

حفرت سلطان المن انح اكثر فرما ياكر نے نظے۔ اے ترک الله بين اپنے
اپ سے تو نارا عن ہوں کا ہوں۔ گرتم سے کھی نارا عن نہیں ہوں کیا بھن ت امبر
خسرو كے بڑے عما فى كانام اعز الدين على تفا۔ وہ بھی حضرت خوا جرموب الملی
کے بلے بنا ہ مجد ب دل اور منظور نظر تھے بحضرت نے آپ كو دو بار خلعت فلانت
سے نوازا تھا خواج خسرو شعر كہتے گر حب تك اپنے بھائى كود كھا نہ ليتے كسى كے

سائے نہ لاتے صفرت فواجر نظام الدین محیس سماع میں تشرلیف لاتے بس سے
پہلے صفرت امیر خمرو غزل ساتے اور اپنے دائیں پہلومیں امیر خمرو کو سٹھا یا کرتے
سٹھا آپ کے بائیں پہلومیں فواجر مبتشر کو سٹھا تے خواجر منبشر بھی صفرت نیز کے
درخرید غلام تھے۔ آپ جس صورت اور حس لی میں بے مثال تھے۔ صفرت خواج
امیر خمرد کو مفتا حالماً ع کہ کر لیکارتے۔ اور فرما یا کرتے خسرو ظاہری حس لطانت
ادر علم موسیقی میں اپنا تمانی نہیں رکھتے۔ دو الیے قوال جن کے کلام اور آ واز کی
ادر علم موسیقی میں اپنا تمانی نہیں رکھتے۔ دو الیے قوال جن کے کلام اور آ واز کی
سامنے ملی اور کلام ساتے تھے۔
سامنے ملی تھے اور کلام ساتے تھے۔

حضرت فواجرا میرخسرو سررات نماز تہجد میں قرآل کے سات سپار ہے پڑھا
کو تنے تھے۔ نمازِعثاء اداکر نے کے بین صفرت بین فارمت میں جائے اور ہمر
مونوع پرگفتگو کرتے دو سرے اجاب بھی بات کرتے توان کی باتیں صفرت بین فرون کے میرا دل
اورا ہل محبس سنتے۔ ایک دن امیرخسرو نے صفرت بین کی فدمت میں عرصٰ کی میرا دل
عابتا ہے کہ آپ کی رحلت کے بعد میں اس می فقتنہ دنیا میں شد بھول بھر میری میہ بھی
فواہش ہے کہ میری قبر بھی آپ کی قبر کے ساتھ ہو۔ آپ نے قرطایا۔ انشا واللہ الیا ہی ہو
گادا کی دفعا میرخسرو نے صفرت بین کی فدمت میں عوصٰ کی کہ میں نہیں چا ہتا کہ فرضت
میدان حشر میں مجھ خسرو کے نام سے پکاریں کیؤ کد اس نام سے کہ بڑی ہو آ تی ہے آپ
نے فرطایا قباست کے دن تنہا را نام محد قاسید رکھا جائے گا بھڑے سلطان المثانیٰ خواج ضرو کے جن میں یہ دوشع رہے ہے جو تبر کا بہاں کھے جاتے ہیں۔
نے فرطایا قبارت کے دن تنہا را نام محد قاسید رکھا جائے گا بھڑے ساتے ہیں۔

خسرو که بنظم و نیز مثلش کم خواست ملک است که ملک سخن آن خسروراست

این ضرو ما است نا صرخسرد نبیست زیرا که خذی ناصرخسر و ما است سفینهٔ آلا دلیاء کے مصنف نے مکھا ہے کہ خواجہ خسرو کے دل ہیں اتنی عثق کی

ندلفت زمرده جانب فونبرعاشقانیست چیزی نی توان گفت روی تودرمیانیست

ملاندا گرچاف مولف نے آپ کی تصافات نا نو و کھی ہیں بلین بدسادی کتا ہیں ذمانے کی دست بددسے محفوظ مزدہ مکیں قبلی نسخے شاہی کتب فاندں ہیں محفوظ ہوئے اورا نقلابات زما ندکے مائحقول معددم ہوئے گئے۔ اہل ذوق نے اپنی بساط کے مطابق اہنیں محفوظ کرنے کی ہر ونید کوشش کی میں محفوظ کرنے کی ہر ونید کوشش کی کی مرفید کوشش کی کی دائدوں کو تدائد کی این کام کریش گئیں، باتی حاشے ایک صفح بیلا ضافی کی ا

ا كي ون صرت ملطان المثائخ كي فدمت مين ايك درويش ايا اور الكرموال كيا كرمج كجدديا جائة آپ نے فرطايا آج جو كجه ي ندراند آئے كاده تمبي دے دياجائے كا الفاق ایسا ہواکہ سارا دن شام کے کھے مذائیا ۔ آپ نے فرمایا اچھا کل و بھی نذرونیا ز آئی وہ تہاری ہو گی۔ دوسرے ول تھی کھ نہ آیا۔ آخر صرت شیخ نے اپنے حبتے اعلائے اور اس درولیش کودے دیے . درولیش بھی ان جو تو ل کوبڑی عقیدت سے اعظاکرروا منہوااورد ہی سے باہرنکل کراپنے وطن کوعیل بڑا۔ را ستے میں امیر مفرو سے ملاقات ہوئی جوبادت الم کے الکرے ساتھ آرہے عقے امرخمرونے اس درولیش سے پرچھا کہ حضرت سلطان المشائح نواجر نظام الدین کی کوئی خبر ہے اُس نے بتایا کہ وہ خیروعا فیت سے ہیں۔ا برخسرونے کہا چھے تم سے اپنے بيرى خوشبو آتى ہے كياال كى كوئى شا ، تہار كياس سے درويش فيتايابال ان كاج تامبارك جوا ہول نے مجھے دیا تھامیرے پاس ہے۔فرمایا اس كوبيجو گے۔درولیش کنے لگا! ہاں امیرضرو کے پاس اس وقت یا نج لا کھروبیتھا سارارو بدورولش كودے ديا اور صرت شخ كے جوتے فريد كراپنے سرورك کرخوا جمحبوب الہی کی فدمت میں حاصر ہوئے۔ آپ نے فرما یا خبرو تم نے پانچ لا كدرويدد كرج تول كالوداك تاكرليا ب- الميرخسرو في عرض كاصور درولیش اتنے پر ہی راضی ہو گیا تھا۔ور نہیں توا مسے اور بھی دینے کوتیار تھا۔

ربقیدماش پھیلسوسال میں آپ کی بچی کھی تصانیف میں سے کھی کتا ہیں مطبع نو مکتور نے طبع کر کے دندہ کردیں کر کھر کھی علی دامن ان شانداد کتا ہوں سے خالی رہے۔ پاکتنان میں بیکی زانڈ سطر بزید بیٹ والا ہور کے اشاعتی شجے نے کلیّا ہے امیر ضروکی کئی حملدیں خواہودت انداد میں شاکع کی ہیں یعب سے امیر خسرو کے پانچ لاکھ استفادیں سے کچھ صدی محفوظ ہوگیا۔

کتابول میں مکھاہے کہ جس دن صفرت سلطان المثائخ صفرت فواج مجبوب المی رحمۃ اللہ علیہ کا وصال ہوا تو فواج خمرود کی میں نہ تھے وہ بادشاہ کے ساتھ دیگال گئے ہوئے تھے، یہ وحثت ناک خبرس کرد ہل پہنچ جبرہ گرد آلود تھا۔ آتے ہی قبر برگر گئے قبر کی مٹی اپنے جبرے پر ملی سیاہ لیاس بہن لیا اور چھاہ تک مزار برہی رہے۔ چھے مہینے گذر نے کے بعد بروز بدھوا تھارہ ماہ شوال سات سونچیس ہجری اس بیان پڑ ملال سے دخصت ہوگئے۔ آپ کو صفرت شنخ کے بہلو میں دفن کرد یا گیا عل

خوا جرضروامب رووجهال - يانت مثل گل چودر جنت مقام رطلت ادائشرف الانطابخوال - نيز فرما كبيم ل بيرين كلام معلت ادائشرف الانطابخوال - نيز فرما كبيم ل بيرين كلام

زيباطوطئ گوئينده مهندوستان

عندلیب د ل <u>۲۵ م</u>

ہے بلطان المن کنے کے خلیفہ اعظم سے مولان المن کنے کے خلیفہ اعظم سے مولان المن کنے کے خلیفہ اعظم سے مولان المرس فرس فرائدی ہوئے ماک سے ماک سے مسلطان علاء الدین کے دولوںت ماحب منصب اور جاہ جلال کے ماک سے مسلطان علاء الدین کے دولوںت

عل ندها حب مخرالواصلین نے آپ کی ناد کخ وفات خرو د ہوی سمنے ما در ما میں میں اور میں میں میں میں میں میں میں می

سبشتی امدا

چتنی بود انفع التعسراء ۲۵ مع ۲۵ مع

مشكر مثال طوطئ تهى تكفي بيس

میں بڑے اہم مصر کے سرکئے۔ اور بڑی شا ندار خدمات بجالا نے۔ لیکی جس دن صفرت سلطان المشائع کے مرید ہوئے تو دنیاسے دست برداد ہو گئے سلطان المائ کے کے مرید ہوئے تو دنیاسے دست برداد ہو گئے سلطان المائ کے کی خدمت میں بنجام بھیجا کہ تو یدالدین کو اجازت دیں کہ وہ دیالدین کو اجازت دیں کہ انہاں ہوں ۔ اب ان کاموں کی تکمیل میں مصروف ہیں ، بادشاہ نے یہ جواب شن اور کہ ہوا۔ اور کہ ہو بجا کہ آپ تمام لوگوں کو اپنے جیسا بنا ناچاہتے ہیں اب نے دیا بنا ہوں ۔ بادشاہ ہیں بہتر دیا جا تھا ہوں ۔ بادشاہ بیں اب نے دیا جا تھا ہوں ۔ بادشاہ نے یہ بات سئی تو خاموش ہوگیا۔

بولانا مویدالدین سائٹ شوچیبیں ہجری میں فوت ہوئے۔ پون مویدرفت از دنیا ئے دون سال وصل آنشہ عالی لفت عاشق صادق موید کن رفت نیز میں ما پیرمہدی مجتبے

ہے خواج نظام الدین کے میں الدین کے وجیہ الدین لیے سے الدین کے مطرت سطان الما کئے آپ پر بڑی رحمت د شفقت فرمات - کہتے ہیں کرجب آپ اپنے پر کی قدمت میں حاضر ہوتے تو پاؤل کی آ واز بھی نہ ہونے دیتے بول معلوم ہوتا کہ آپ ہر کے بل حاضر معرف ہوتے ہوں کے معلوم ہوتا کہ آپ ہر کے بل حاضر معرف میں بین د فعہ لوگول نے آپ کو دعا دی ۔ آپ ہوا میں اگر سکتے تھے بھر حاضر ہوتے وقت ہوا سے اُڑکر آتے صفرت بینے نے آپ کی تربت اُڑ سکتے تھے بھر حاضر ہوتے وقت ہوا سے اُڑکر آتے صفرت بینے نے آپ کی تربت اُڑ سکتے تھے بھر حاضر ہوتے وقت ہوا سے اُڑکر آتے صفرت بینے نے آپ کی تربت

کی تو آپ مخلوق کی ہدایت میں معروف ہوگئے اور جبندیری کے علاقے میں قیام فرمایا۔ اور و ہال ہی سات سوانتیس ہجری میں فرت ہوئے۔ آپ کامزاد چبدیری میں ہے۔

> شدز دنیب چو در بہشت بریں سنیخ معود اوسف نانے یوسف عاقبت مجو سالش ہم نجوان اور اوسفت نانی

آپ جیتی بزرگان برصیفیرسے تھے بھزت خواج بھے بزرگان برصیفیر میں سے تھے بھزت خواج محمدا مام قدر میں سے تھے بھزت خواج بھے فریدالدین گئے شکر دعمۃ اللہ علیہ خوا ہر زاد سے تھے۔ آپ کے والدگرا می کا نام بھنے بدر الدین اسحاق بخاری دعمۃ اللہ علیہ تھا۔ اگرچاآپ اپنے والدسے بھی بعیت تھے۔ مگر آپ کو صفرت بھنے المن کئے سے بڑا فیض ملا تھا۔ آپ نے صفرت فواج نظام الدین مجرب المی دملوی کے ملفوظات پر ایک کتاب الواد الجالس کھی جو بہت مشہور ہوئی۔ آپ کو علوم ظاہری و باطنی کے ساتھ ایک کتاب الواد الجالس کھی جو بہت مشہور ہوئی۔ آپ کا وصال سے بھے کو ہوا۔ ساتھ علوم موسیقی میں بھی کا مل جہارت بھی۔ آپ کا وصال سے بھے کو ہوا۔

رفت چیل از جهال نجلد برین شخ اسعد ا مام عار دف دهر رهلتش معتبر جبیب نجوال هم محسد ا مام عاردت دهر سم محسد ا مام عاردت دهر

آپ سلطان المتائخ نظام الدین شخصام الدین ملتانی قدس سرهٔ در بوی کے خلفائے با د قاربی سے

عقے۔ نہدوتقویٰ۔ اور دیاصنت میں اپنے اجاب میں متا ذیکے بھزت سینے
سلطان المتا کنے فرمایا کرتے تھے۔ کہ دہی شہر شنے حمام الدین کے ظلّ عابیت میں ہے۔
اپ ایک دن کہیں جا رہے تھے۔ داستہیں شنول بحق ہونے کی وجہسے
اتنی محوست طاری تھی کہ آپ کے کندھے پرسے معنلی گر بڑا کسٹنخص نے دیجھا تو
عَیلاکہ آواز دی۔ یا شخے۔ یا شخے۔ گر شخ کو قطعًا کوئی خریز ہوئی۔ آخر کا دمعتیٰ اٹھا
کر آپ کے پاس آیا۔ اور کہنے لگا۔ میں نے کئی باریا شخ یا شخ کہا۔ گر آپ نے کچھنہ
سنا۔ اور معنیٰ نہ اٹھا یا۔ آپ نے ممکم اکر فرمایا۔ بھلے آدمی۔ "میں دراصل شخ نہیں
سنا۔ اور معنیٰ نہ اٹھا یا۔ آپ نے ممکم اکر فرمایا۔ بھلے آدمی۔ "میں دراصل شخ نہیں
ہول۔ ایک فقر بے نوا ہول۔ اگر اس نام سے آواز دیتے تو میں سئن لیتا۔ إ

ایک باراکب حفرت بیردوش منیری اجازت سے جے بیت النّدکو گئے جے کی سعادت اورگندر خفری کی نیاز من الله کار کری شخص سعادت اورگندر خفری کی نیارت سے والیس آئے تو سینے نے فرما با۔ اگرکوئی شخص کے کوجا تا ہے۔ تواسے حفور نبی کریم صلی النّد علیہ وسلم کے دومند کی علیٰمہ ہنے کہ اس سے صفور کے دومند کی فربایدت کے ساتھ ساتھ حضور کی خصوصی توجہ ہوجا تی ہے کے دوران بھی اگر چردومند اطرکی ماصری ہوجاتی ہے۔ گرصور کی بترت نیارت کے خوا مراحت کی فرت کی اوردوان ہوئے مام الدین نے یہ بات سنی تواسی وقت و بادہ صفور نبی کریم صاحب کو تروتسنیم کے دوستے کی زیارت کی فرت کی اوردوانہ ہوئے اور بادگاہ بنوی میں حاصر ہوئے۔

معارج آبولا بت کے مولف نے آپ کی وفات مصید ملکی ہے۔ آپ کا مزاد بڑا اواد موضع بٹی گرات دکا تھی واٹر، ہے۔ جی دنوں سلطان محر تغلق نے دہلی کو گھوڑ کر داوگری کو آباد کیا اور دہلی کے تمام وگوں کو اس شہر میں دہنے کی ہولتیں دین توشیخ حما الدین بھی دہلی سے گجرات چلے آئے تھے۔ اور دہاں ہی تیام پذیر ہوئے۔

پول حسام الدین ملت نی ولی رفت مسئسل گل دیگانه ارجهال رحلتش استرون ولی حق بگو هم حسام الدین ملت نی نجوال مهم حسام الدین ملت نی نجوال

ہے سلطان الاولیاد کے مصاحبان خواج فخر الدین روزی قدس مسرۂ اسفاص میں سے تھے بڑے متفی اور پر ہنر گاد تھے قرآن پاک کی کتابت کرتے عام لوگوں سے علیادہ رہتے اور داللہ لنیب آپ کی عبالس میں آیاکرتے تھے۔

شخ فز الدین ہردوز قرآن پاک کی جزود سپارے، کی کتابت کرتے۔ اوروگول کودے کم اُجُرت لیتے۔ لوگ فوشی سے آپ کو چھاتنے دے دیا کرتے تھے مگر آپ مرن چارا نے بیت اورلینے افراجات کی فالت کرتے ہجب آپ بوٹ سے ہوگئے نظر کر ورہوگئے۔ کتا بت کرنے سے معذور ہو گئے۔ مک التجار جمیدالدین نے سلطان علاء الدین فلجی سے سفارش کی۔ بادشاہ نے دونواند ایک رو بیر مال غنیمت سے وظیفہ مقرر کر دیا۔ گراپ نے تبول نہ کیا اور کہا مجھے تو صرف چارا آنے ہی چاہئے ادر یہی میں قرآن کریم کی کتابت سے ماصل کیا کرتا تھا۔ بادشاہ نے بڑا اصرار کیا گراپ نے بڑی شکل سے بارہ آنہ یو میہ قبول کیا۔

یہ جا مع اکل ال شخصیت کر سائے ہے کوسلطان محدعا دل تغلق برغیا شالدین کے عہد حکومت میں فوت ہوئی۔

> فزردنى چرل سند سجلد بري وصل سند با وصال رحمانی سال وصل ش سرگر خليل الله سهم برال سناه زيب عرفاني سهم برال سناه زيب عرفاني

ایپ صرت نظام الدین اولیا،
میرس علائی سنجری قدس سره از قدس سره کے فلیفه ما صریحانی عبد کے علماء و نضلا اور شعراری مقدرا ورمتا نده تنه جاتے تھے معاشرے میں بڑی عزت اور قدر سے دیجھے جاتے تھے آپ کوسلطان لشائح کے مرید ل میں خاص مقام حاصل تھا۔ آپ نے عنیا شالدین اور خان شہید کے حق میں بڑے نور داد مرصع قصا کد کھے۔ اور اپنے ان قصا کد کی وج سے شعراء وقت سے سبعت عاصل کی۔ اللّٰہ نے ہدا ہے۔ کی تو تہر سال کی عمر میں صفرت خواج نظام الدین کی مجلس میں حاصری و بینے گے۔ مرید ہوئے اور بہت تھوڑ ہے وقت نظام الدین کی مجلس میں حاصری و بینے گے۔ مرید ہوئے اور بہت تھوڑ ہے وقت

بی مقامات عالیہ رپی چا پہنچے۔ صرت شیخ سلطان المثنائخ کے ملفوظات پر الفوایک مجیسی مشہور زمان نرکتا ب آپ نے مخرت کی خدمت میں میش کی گئی تو آپ نے اسے بے عدلپند فرمایا۔ میں میش کی گئی تو آپ نے اسے بے عدلپند فرمایا۔

آپ کا مولدا در منتا دہلی شہر تھا ہم تری عربی بادشاہ کے حکم سے دہلی حجو الرکہ دلی گئے اور دہاں ہی سے سات بائی ۔ آپ کا مزار وہاں ہی ہے۔

پیر اس شرحت درجنت مرید

دصل او میر حسن مرح م حن ال

آپ صزت فام نظام الدین اولیاد

آپ صزت فواج نظام الدین اولیاد

آپ برصزت شیخ کی خصوصی نظرع ایت تھی۔ آپ اکثر ادفات شیخ کی مجالس می فوش

گفتادی سے کام لیتے جس سے صفرت شیخ کو برطی مسرت ہوتی بنواج امیر خسرواود

گفتادی سے کام لیتے جس سے صفرت شیخ کو برطی مسرت ہوتی بنواج امیر خسرواود

شیخ میر حسن علائی مجبی آپ کے مشر کی مجلس ہوتے ۔ یہ تمینوں دوست میجا ذندگی لبر

کرتے تھے۔ آپ نے فیروز تنا ہی میبی مشہود کتا ب مکھی تھی یہ کتا ب لطان جال الدی فیروز شاہ ترک فیلی سے ترتیب دی گئی مولانا ہرتی نے اپنے حرب نامہ بر کھا

بے کہ ایک باد میں صفرت مجبوب المی دہوی کی فدمت میں مبٹھا ہوا تھا دمیرے دل

میں خیال آیا کہ پہلے بزرگ مربد بنانے میں بڑی احتیاط سے کام لیا کو تے تھے مگر

ہمارے ہیرومرشد پر کمتر و مہترکو مربد بنائے جاتے ہیں۔ میرادل جا ہتا تھا کہ بیں
موال کہ کے صفرت شیخ سے و صفاحت لوں۔ ایجی بیر سوال میری ذبان پر نہیں آیا تھا

كرحفرت تے نور باطن سے خود ہى مير سے خيالات كو بجانب ليا-اور فرماتے لگے۔ التدلقالي مرزملف مي اين عكمت وقدرت سے لعض خصوصيات كورواج دتياہے اورایک فاص فاصیت پیدا ہوجاتی ہے۔ ہرزمانے کے لوگوں کطبیعتیں ایک جبیبی نہیں ہوتیں۔ دراصل مربد ہوتا غیرالٹدسے انقطاع کا ایک ذرایہ ہے۔ پہلے ذمانے كے بزرگول كا بيرطر لقة تقاكر حب تك ان سے بعیت ہوتے والاشخص غیرالندسے تطع تعلق مذكرليتا تقاءا سهم مدينهن بناتي تق مرصزت فواجرا بوسيدا بوالخير رحة التدعليدك زما ردس لساكر صرت سيف الدين باخرزى رحمة التدعليدك زمامة مك بيرصرت خاجر تهاب الدين عرسهروردى سے الد كوصرت فريدالدين كي فكر تدس سرهما كيذما مذتك ببطر لفيه عقاءكم الى روحاتى با دشا بول كے دروا زول اور خانقا ہول پر بے بناہ مخلوق جمع ہوا کرتی تھتی۔ یہ لوگ آخرت کے خوتسے ان بزرگان دین کی پناه میں خود بخو دیلے آئے تھے۔ یہ بزرگ بھی ان لوگوں کے فوٹ زدہ دلول کواپنی نیاه میں لاتے تھے۔ میں بھی اپنے پیروں کی بیروی میں الب لوگول كومريد بناليتا مول جوكدا يك لمحرك لف بحي الله كي قلاش مين قدم المات بين ميري یہ ہے احتیاطی دراصل اپنے ہروں کی سنت کا تباع ہے میرا خیال ہے ۔ کم اکس ب احتیاطی میں کھی فائدے بھی ہیں۔ پہلے توبیہ بات ہے کرمیرے علقہ ارادت میں آنے والے اکثر لوگ لیمن گناہوں سے محفوظ دہنے کی کوشش کرتے ہیں۔وہ نماز باجاعت اداكر ناسروع كرديت بين-اورا دد لوا قل مين شغول بوت بين-اگر میں انہیں ابتدائے کارمیں ہی داؤسوک کی مشکلات کا تذکرہ سڑوع کردوں توب عام لوگ ال مليول سے بھي محوم ره جائيں۔ دوسرے ميں كسي ديسا يشفيع يا درمياني تخفيت كے بغرياه راست مريد بنانے كے لئے دروازے كھے ركھنا ہول - بس دىجىتا بول كىمىلمال عجز والكسارس إسكر برصة بين اورا قرادكرت بين كريم نے

مام گنا ہوں سے تو برکر لی ہے ہیں یہ خیال کرتے ہوئے کہ خایدان کی یہ بات درست ہے مرید بنالیتا ہول۔ال میں سے اکثر سے ہوتے ہیں بعض سے کو تا ہیال تھی سرز دہوتی یں اسط لق کارسے اکثریت گنا ہوں سے بچ جاتی ہے بنیسری دج تمام وجو ہات سے اسم ہے۔ایک دن میرے بیرومر شد صرت فرمدالی والدین تکر گنج رحمته الله علیہ نے میرے سامتة غلم دوات ركه كرارت وفرما ياكه تعويذ لكهوا ورصر ورت مندول اورحاجت مندول كودية جاؤيس يه كام كرت كرت تنك آليا حضرت فيرب جرب بإس الل ك انتارد يك يتوفر مايا نظام الدين إتم اب بي تقل كئ بو- ايك وتت آئ كا كرمتمارى فانقاه كدروازي يرمزارون عاجت متدجع بول كم يركيا كروكي میں صرت سننے کے پاؤں بر گر گیا ۔ رونا شروع کر دیا۔ ادرعرصٰ کی مخدوم مجھے بزرگ بنارى بى مجھے فلافت سے سرفراز فرما ياجا را ہے۔ اور ميں الله كى مخلوق سے دور بھاگ رہا ہول فلافت توبط اسخت اور محنت طلب کام ہے اور میں آج ہی الكاركرد بابول سي في برمل كها حضور إبربب شكل كام سے مجھے اتنى عظم فرارى كى طاقت بنبى سے حضرت خواج فريد ميرى اس بات سے ايك خاص تعم كى كيفيت میں متبل ہو گئے بھوڑی دیر کے بعد فرمایا مبرے نزدیک آؤ فرمایا - نظام الدین -كل ميدان حشريس الله سے مجھ عزت ملتى ہے . اورالله مجھ بڑى آبرو دے كايي تم سے وعدہ کر تا ہول۔ کہ میں اس وقت تک جنت میں قدم مزر کھول گا۔ جب مك تهيس يامتهار مريدول كرجنت مين نهنجا دول- مين اكثر لوكول كواسى بنارت برمريدينا تاما تا بول كه كوئي سخص محروم مدرسف بائے ميں جا تنا ہول كروك اكثر كنا بالارين-انبيس نبكى لوفيق بهت كم متى ب- ليكى الرمير يبرو مرتذك وسيدا وروعده كم مطابق اكريه لوگ جنت مي واخل برجائي تواس یں مجھے کیا عذر ہو سکتا ہے۔

مولانا هذیا والدین برنی قدس نمرهٔ مشیده مین فوت ہوئے کہتے ہیں کرآپ
کے جنا ذے پرچا در کی بجائے وہ بوریا بچھا یا گیا جس بر آپ بیٹھا کرتے تھے آپ
کو حضرت خوا جر نظام الدین کے مزار کے پاس اپنے والدم کوم کے قد مول مین ننا بالگا،
چوں هنیاء الدین برنی سنینے دیں
دنت ذیں و نیا بجنت یا فنت جا
وصل او محت دوم امجد کن رقم

نیرون رما پیر برنی پارسیم

آپ صرت واج مجوب الني کے يستخ برمان الدين عرب قدس سرة به غليفه خاص تقروقت كالمين مثا کی میں مانے جاتے محے ذوق سوق عشق دستی میں مودن وجدوساع کے ولداوه تقاتب كاشار علماد عصرس بوتا تقا-اييرخسرواميرص علاني سنجرى دغيره دانشورول كي صف من بيطة عقد يضخ نصير الدين محود حراغ دملي قدس سرة اكثر آپ کے گرتشر لوب لاتے۔ آپ صرت خواج نظام الدین کے استے معتقداً ورا را دت مذية آپ كادب كايه عالم تفاكهاري عرعنيات بوركى طرف بيت بعي نبين كى أب وصفرت ملطان المشائخ نے دوبارخ تؤخلانت سے نوازا پہلى بارجب فلانت ملى توصرت اميرضروا ورميرعلا أي سنجرى محلس مي موجود تقفيان سب صرات نے صرت مجوب اہی کی فدمت میں سفادش کی کمبر ہاں الدین آپ کے قديم فادم بين النبي خرقهُ فلا فت من جاسية فواجرا قبال جصرت فواجرنظام الدين كے فادم فاص اور محرم مجالس تقے وہ اس معاملہ میں بیش بیش تھے ۔ وہ پیرامین اور کلاہ لائے اور صفرت شیخ کوات دعا کی شیخ برہان الدین کو پہنا یا جائے ۔ خود

بهنات وقت اعلان فرماد بالمولانا أجسة آب بهي خليفه بس حضرت خواج نظام الدين فاموش رہے۔ بیفاموسٹی آپ کی اجازت اور رضا مندی کی علامت عتی ۔ بھر ایک وقت آیا جب شخ علی زمینی اور ملک نصرت جوسلطان علاء آلدین کے رکشندوار تھے۔ اور صفرت خواج نظام الدین کے ادادت مند تھے آئے اور صفرت خواج کی فدمت میں عرض کی۔ کدمولانا بر مان الدین غریب بیرزمن ہو گئے ہیں۔ مگرامین تک اپنے مگریں بوریانشین ہیں اُو دکلیم مردوکشن رہتنے ہیں۔ مگر مخلوق فدا ان کے دروانے پرہجوم کرتی ہے۔اور سجادہ نشبن کی تنہرت دور دورتک پہنچ علی ہے اور آپ کی طرح ہى مرىدينا رہے ہيں كيا يرس آپ كى اجازت سے ہور ہاہے ؛ حفرت فاج نظام الدین د بوی کوان کی اس بات سے عصد آگیا۔ جب مولانا رات کو حاصر ضرمت ہوئے تو آپ نے ال سے بات نہ کی - ایک فادم نے مولا نابر ہالی لدین كوكها كرآپ يهال سے چلے جائي كيونكرآپ كويهاں بيطنے كى اجازت نہيں ہے آب اعظے میران و پریشان د ہاں سے علی بڑے اور گر جا کرصف ماتم بھیا دی مٹر کے لوگ آتے۔ تو آپ افہار تعزیت کرتے ایرضرونے آپ کی بیعالت دیمی . توصرت خواج دہلوی کی خدمت میں حاصر ہوئے۔ اس حالت میں کھڑے ہوئے کہ گلے میں ٹیکا ڈال دکھاہے حضرت خواجنے پوچیا! اے ترک الله! كيامعا ملهب يعرض كى مصنور مي مولا ثابر مان الدين غريب كے گنا ہول كى معافى كا خوا متكارمول - شخ نے مسكرا كرفر مايا - معات كرديا كيا - اجيس الدي وروانا برياليدين اورخواج امیرخسرودونول کلے میں مگیریاں ڈالے عاصر فدست ہوئے تدم ہیں كى حضرت خواجر نے مولانا برہان الدین كوا زسر نومر مدكيا۔ نیاخرقۂ خلافت دیا اورايك مَلاقة يرقطب مقردكبا-جهال إب كوبرى منهرت ملى-معارج الولايت كم مولقت نے لكھا ہے كرجيب مولانا بر إل الدبن وبلى

ے داوگری پنے . تو آپ و ہال بڑی مقبولیت هاصل ہو ای - ابنی دنول سے زین الدین دا دویفرازی نے آپ کی کوامت کی شهرت شنی بنیرازسے از روسے كرامت الشكر ديوكرى پنجيد لوگول سے سنا۔ شيخ بر ہان الدين تواکثرا و قات سماع یم شغول رہنے ہیں۔ اور لوگ آپ کوسجدہ بھی کرتے ہیں۔ تودا دوسترازی کورشی مادیسی ہوئی سینے بربان الدیں نے نوربھیرت سے معلوم کر لیا کہ ان کے دل میں ایسے خطرات موجود ہیں ۔ابک فادم کے ہاتھ کہلا بھیا۔ کدایک بزرگ کے لئے اتنا مباسفر كرك الاركبراك بات س كرمايوس موكروط جا تاعقلمندى نبين الرينيطاني وسوسم العلانمي تومار ياس كربان كري انشاء المذفكوك رفع موجأي گے ۔ فتخ زین الدین اسی وقت مجلس میں حاضر ہوئے۔ اس وقت حضرت برہان الدین عجلس ماع میں وجد میں تھے ۔ شیخ زین الدین تھی محلس ماع میں ملیظے اور دقت و د جد میں آگئے. دل صاف ہو گیا اور تمام خیالات محوم پر گئے مجلس برخاست ہوئی توائب مرمدین گئے۔ اور تقوارے ہی عرصہ میں کمال حاصل کیا۔

فیخ زین الدین شراندی شیخ فریدالدین شیخ کمال الدین کاشانی شیخ دکن الدین عام کاشانی مصرت شیخ بر بال الدین کے خلفاویس سے تقے شیخ زین الدین کائیس نامی بزدگ مرید تقال ایپ کے ملفوظات اسی نے ہی مرتب کئے تقصیص کا نام

بدايت القلوب تقار

شجرہ شجرہ شخید کے مصنف نے شنے برہان الدبین غریب کی وفات سائٹ سواکتالیس ہجری کھی ہے۔ آپکا مزار براتو اردیو گیرزیارت گا ہُ خاص ہے ہندوستان کا ایک بہت بڑا شہر برہان پور آپ کے نام سے آباد کیا گیا۔ اس شہرکو آباد کونے کے لئے بیشنے صلاح الدین ورویش اور شنے رمضان جو آپ کے ضافاد سے نے بڑا اسم کردارا داکیا۔

چرث دبر بان دین از دار فانی خرد سال وصبال او تشهیر یکی فرمود عب شق منبع حق دگر ایل صفا بر بان دین پیسیر

آپ شخ خرالدین بن خواجه بیالین مشخ حسام الدین سوختدر همته الله علیه اسمن بخری کے بیٹے ہے۔ آتش عبت میں سوخة اور تبرعش کے گھائل تھے۔ آپ شخ نظام الدین دہلی رحمۃ الله علیه کی صحبت میں اکثر حاصری دیتے۔ آپ کے والد ماجد نے آپ کا نام اپنے بھائی کے نام پر دکھا تھا۔ جو زندہ ہی غائب ہوکہ ابدال کی صحبت میں چلاگیا تھا۔ آپ کا مال وفات سائٹ سواکٹ لیس ہجری ہے اور آپ کا مزار قصبہ سابنہ رہیں ہے جواج پرسے مغرب کی جانب ہے آپ کی عرسوسال سے بھی نہیا دہ ہوئی۔

> پون حام الدین زدنیا رخت بست سال دصس اس آن و لی متقی عاشق الله صدیق آمده است هم حیام الدین مستید مبنتی

المب هنرت الدين محمد المند عليم المربط الدين وبلوى الده ماجده هزت المن على والده ماجده هزت المن على والده ماجده هزت النح شكرى بيني عقيس إلى وحفرت خواج نظام الدين وبلوى سے برافیض ملا الله بن كم منفوظات الله بن كما الله بن كما منفوظات بر شمت الله بن كا شاتى كے شاگر و سخت بر مشمق ہے ۔ الله طالم رى علوم ميں قامنى معين الدين كا شاتى كے شاگر و سخت بر منفوظا الله بن كى فدمت ميں تعفد الا بار ميں تصفي بين كم جن و تول ميں حضرت شنخ نظام الدين كى فدمت ميں تعفد الله بار ميں تصفي بين كم جن و تول ميں حضرت شنخ نظام الدين كى فدمت ميں تعفد الله بار ميں كو من و تول ميں حضرت شنخ نظام الدين كى فدمت ميں الله بين كي فدمت ميں الله بين كى فدمت ميں الله بين كى فدمت ميں الله بين كي فدمت ميں الله بين كى فدمت ميں كله بين كو فرق الله بين كي فدمت ميں الله بين كله بين كله بين كو فرق الله بين كله بين كله

رفت چون از جهاں مجلد بریں سنے اہل یقنین عسزیز الدین رفت میں اور گو رفت کے دین عزیز الدین میز خوال مستجے دین عزیز الدین

آپ بہت بڑے مالم دین کی رحمۃ العد علیہ اور اصحاب میں سے شار ہوتے والم الدین میں الدین الدین کے خلیفہ بھے۔ اور آپ کے بہترین اجاب اور اصحاب میں سے شار ہوتے سے۔ ہندوتان کے اکثر علمار آپ کے شاگرد تھے۔ آپ کے شاگرد آپ بر فخر کرتے ہیں ہے شاگرد آپ بر فخر کرتے ہے ہیں کا اصلی وطن اور ہے شام ماصل کرنے کے لئے دہلی آئے اور اس قدر علوم دینی میں کمال ماصل کیا کہ اس وقت کے علما رمیں سے فقہ عدیث اور است تفید میں کوئی بھی مقا بلہ مذکر سکتا تھا۔ آپ نے فواج نظام الدین کی کرامات کی شہرت شنی تو شنج صدر الدین کی و ساطت سے ماضر ہوئے اور میں ہوگئے بھوٹے میں باطنی کمالات ماصل کرلئے رسادی عربی ہوگئے بھوٹے میں باطنی کمالات ماصل کرلئے رسادی عربی ہوگئے بھوٹے میں باطنی کمالات ماصل کرلئے رسادی عربی ہوا ور تغرید بدیس گیا اور یک ماری عربی کی اور میں نیا یا۔ ماری عربی کو این امرید نہیں نیا یا۔ ماری عربی کو دجراع دہلی نے بیر شعر آپ کے اوصات بیں کھا تھا۔

سنا دنت العسلم من حیاک حت فقال العسلم سمّس الدین یجیی ایک و فات سات سوسنتالیس ہجری میں کھی گئی ہے۔ شمس دین ماہ اوج برج محس ل شمد دینا چودر بہشت برین! رملتشس عسا بدسخی ہے مد! ہم نجوال ماہ بدر سنسس الدین

ہپشنے نفیرالدین محود حراغ دہادی مخود حراغ دہادی مخود حراغ دہادی مخود حراغ دہادی موالک زادہ احدر محتراللہ مالک زادہ احدر محتراللہ مالک زادہ احدر محتراللہ مالک نام سے فنا فی الیتن ہو گئے معادج آلولایت کے مصنف نے جوا مع الکلم سے نکل کیا ہے كروه اليے بزرگ تقے جنبول نے بشخ نصيرالدين جراغ دموى سے ظاہرى معت منس کی- لوگوں نے اوچھا- آپ نے الباکیوں نہیں کیا فرما یا مجھے بیرطاقت نہیں ہے کہ میں شخ کے ہاتھ پر ہاتھ رکھوں ہے کے سامنے کھا نالایا جا تا تو آپ اسے متية رہتے۔ اور کھانے كى طرت ما تقرنہ بڑھاتے كہتے جب كى يس اپنے بيركى نیادت نا کداول میرے لئے کھا ناحوام ہے۔ اُ کھ کوانے بیر کی طرف جانے زیادت كرتة عرف كهات يت دندكى كرة فرى صفين فلى كى دجرت بهار او كن ناك سے خولى بہتے لكا وروه كلے ميں شيكتے لكا واكد كى خون كا قطره زيبن بدكرتا تو آب کے بیرکا نام مکھا جاتا۔ دوستوں کو بیتہ جلاتو بیروا قعہ شنخ نصرالدین حراغ دلوی كرامن بيان كياكيا كربياره احداب كي عن بي من كيب منداراس كي خربس حفرت بننخ اسط اس كرم انے بني اورد كار كروا يا بائے افوس احركا كامِ مَّام بوكيا- مجهة ولول في يع كول مذ تبايا- شخ احدف آب كيرك

پرنگاہ ڈالی اور جان الند کے حوالے کردی۔ آپ کی وفات سات سوسنتالیس بچری میں ہوئی۔

> شیخ احد عب شق دلسوخة گشت چون درخشلدا علی ما بگیر بهرسد سال ارتخال آنجناب شدندا از دل که احد د مستگیر

آب صرت نفيرالدين محود جراع يخ دانيال قدس سرهٔ المعقال: دېږې کے فلیفیفاص تھے۔ آپکا لقب مولا ناعود تقاچندوا مطول سے حضرت عباس بن علی کرم النّدو ہمہ سے ملسلہ نيت متا تقاء شيخ دا نيال بن مير مدرالدين بن فضل بن حن بن عبدالتُدبن عباس ین علی الرتصلی کرم الله وجهد آب کے آباد اجدا د کوالله تنالی نے بوعی مبی عربوی تھیں۔ آپ کے والدمیر مدرالدین ایک سو بیالیس سال میں فوت ہوئے تھے۔ حضرت سننخ دانیال کے آباو اجدا دہیں سے سبسے پہلے بزرگ آپ کے والد مكرم ہى تقے جوعنيات الدين مبير كے عہدا قداد ميں مندوستان آئے ١٠ ور مقام متركه قيام فرمايا فينخ دانيال بيان المريبدا بوئے تھے بهوش سنبھالا توقصيبامامهيں عِلے گئے۔ اور قامنی عبدالكريم كے زير تربيت ظامرى علوم عاصل كئے جو كم علمي اورافلاقي اعتبار سے حفرت دا نیال بڑے ہونہارا ورذ ہیں تھے۔ قاصی عیدالکریم نے آپ کو اینی فرزندی وامادی میں قبول کرلیا . آپ تلاش حق میں نکلے وہلی پنچے شیخ نصیرالدین محود سے بعیت ہوئے۔ اورظاہری اور باطنی کما لات تک بنیج تکیل سلوک کے بعدائب كوخر قد خلافت عطاكيا كيا-ا ورحكم بواكه ابنے وطن جا كر مخلوق كى مدايت میں شغول ہوجائیں۔ ہے امر اسکے اور جہزیس عاصل کردہ سارا سامان ہے کہ

ا بنے وطی الون سر کہ کوروانہ ہوئے۔ تکھنوسے آگے بیٹھے تھے۔ تو ڈاکوئل نے
اسپ کے سامان کو لوٹ کو حضرت بینخ دانیال قدس سرہ کو شہیدکر دیا۔ اوراسی لوٹ
کھسوٹ میں آپ کے اہل وعیال بھی شہید کر دیئے گئے آپ کا مال واسب لے کر
ابھی چلے ہی تھے کہ ایک دہشت ناک آواز آئی۔ یہ آواز ایک کھی ہوئی لاش سے
آئی۔ تمام ڈاکواندھے ہو گئے۔ کچھ دنوں بعد باوشاہ نے انہیں گرفتار کہ لیا۔ اور
انہیں بھالنی لگادی گئی۔ صرت کی نعش مبارک لاکوریتر کہ میں لاکر دفن کر دیا گیا
آئی کا انتقال سے میں ہوا تھا

دانیال ازعالم دنیب چرر نت سال وسسل آن ولی با کمال گو ولی دین شهیب بیشوا هم ولی سر دارعالم دانیال هم ولی سر دارعالم دانیال

آپ نظام الدین اولیا بداید نی
مولاتا فخر الدین ندادی قدس سرکانه قدس سرکا کے خلیفہ خاص اور
جلیس خاص الخاص محقے۔ آپ ظاہری اور باطنی علوم میں جا مع اور الع بزرگ
تھے درع۔ تقوی اور ذوق و شوق وجدوساع میں بے شال تھے۔ نقہ مدین الفیسر کے علاوہ دینی علوم کے خلف شعبوں میں با کمال تھے ابتدائی عمرس مولانا فخر الدین ہانسوی دھم اللہ علیہ سے دہلی میں نعلیم حاصل کی نخصیل علوم سے فارغ فخر الدین ہانسوی دھم اللہ علیہ سے دہلی میں نعلیم حاصل کی نخصیل علوم سے فارغ ہوئے۔ توعمی ندندگی میں قدم رکھا۔ آپ فوش طبع تھے۔ نوش کلام تھے۔ او زوش بیان تھے۔ تقریر و تحریر میں کیتا کے زمانہ تھے فصاحت و بلاعنت کے امام طانے جاتے سے ریٹو و سخن میں لطافت کا یہ عالم تھا۔ کہ شاعران و قت میں متا نہ تھے جاتے سے ریٹو و سخن میں لطافت کا یہ عالم تھا۔ کہ شاعران و قت میں متا نہ تھے جاتے سے ریٹو و سخن میں لطافت کا یہ عالم تھا۔ کہ شاعران و قت میں متا نہ تھے

حب آپ بی غلیہ جذب آیا۔ توکتال کتا ل حضرت سلطان المتنا رسخ کی بادگاہ میں حاصر ہوتے کئی بارگاہ میں حاصر ہوتے کئی بار سطرت فوا جرمعین الدین کے روضہ عالیہ کی زیارت کو گئے۔ وہال سے خواجہ فریدا ملت والدین کے روضہ کی زیارت کے لئے پاک تین جاتے تھے ہے کا ذیادہ وقت سفروسیا حت میں گذرتا مقارشب و روز کوہ و مبیب بان میں گزرتی ۔

یضخ نصیرالدین محود جراغ دہلی دھتہ النہ علیہ فراتے تھے جرمقامات ہمیں ایک ماہ میں حاصل ہوگئے ایک ماہ میں حاصل ہوگئے جن دنوں دہلی کے باشن ہے محد تشخ ندا دی کو ایک دن میں حاصل ہوگئے جن دنوں دہلی کے باشن ہے محد تشکق بادشاہ کے حکم سے دلوگری پہنچے۔ آپ بھی دہلی سے دلوگری پہنچے۔ آپ بھی دہلی سے دلوگری پہنچے۔ آپ بھی کرنے کے بعد کعبتہ اللہ کی دوانہ ہوئے مناسک جے ادا کرنے کے بعد کعبتہ اللہ کی ذبارت اور گنبد خضری کی حاصری سے نادغ ہو کر لغباد اللہ لی مناس مناس میں علمائے وقت سے بحث و مناظرہ کرتے لغداد سے کشتی پر دوانہ ہوئے۔ اور ہند دستان کا اگر خ کیا۔ اتفاقاً جہاز تو سمندر میں عزق ہوگیا۔ ورہند دستان کا اگر خ کیا۔ اتفاقاً جہاز تو سمندر میں عزق ہوگیا۔ ورہند دستان کا اگر خ کیا۔ اتفاقاً جہاز تو سمندر میں عزق ہوگئے۔ آپ کی عزقا بی کا ٹیا تقد مرہ ی حدیث ہوگے۔ آپ کی عزقا بی کا ٹیا تقد مرہ ی حدیث ہوگئے۔ آپ کی عزقا بی کا ٹیا تقد مرہ ی حدیث ہوگیا۔ میں سوا۔

بچرونت از و مر در حن لدمعلی جناب شیخ فخز الدین مطلوب بحر پرسیدم زه ل سال وصائش خرد گفت مجوب خرد گفت مجوب

من خواجر الدين في قدس سرة حيدالدين مونى قدس سرة كظيفه

ادرمرید تقے۔ آپ کا ہندوتان کے منہورا و لیاء النّدی شار ہوتا تھا۔ آپ ہنہر بدالوں میں فلوت گزیں ہوئے۔ اور عام لوگوں کی مجانس سے دورر ہنے تقے کسی کے عقیدہ باانکار سے کوئی سروکار منہ تھا۔ آپ بڑے صاحب نصانیف تھے سکال لوک عشرہ مبشرہ کیا ت بختی جزئبات نجنی بنر ح و عائے سریانی طوطی نام علیم شہور زمانہ کتا ہیں آپ کے قلم کا شام کار میں۔ آپ کے دنگین قطعات اور دلح پ انتحاری اس اللی الله دق کی رون ہوتے تھے۔ آپ تے فرمایا۔

بخشی خمیت را زماند بساز - ورمه خود دا نشانه با فتن است
عاست لان زمانه میگویند - عاقلی با زمانه سافتن است
آپ کی و نات ۵۱ هم بهری می به دئی متنی و نات ۵۱ می ادالد بین زعالم دخت لبت
مال وصل اسم و لی مجنشی
واقف اسراد ایل اسلام ا

آپسلطان اتار کین صرت استی می فرس مرفی جمیدالدین ناگوری کے بیتے میں الدین ناگوری کے بیتے کے دالد بزرگوار شیخ عبدالعزیز صوفی حالتِ سماع بیس ہی جواتی کے عالم میں واصل بحق ہوگئے تھے اہذا آپ کو داد انے ظاہری دباطنی علی میں تربیت دی۔ شیخ حمیدالدین ناگوری کے مفوظات سرورا کصدور کے نام سے جمعے کئے آپ کی عرسو سال سے ذبادہ تھی اور سادی زندگی طالبانِ می کو بدایت فرماتے دہے بلطان محمد منافر سے دبان تقریب کے عبد مکوست بین ناگورسے دبلی تشریف نے گئے۔ اور دبلی میں ہی فوت ہوئے تفل کے عبد مکوست بین ناگورسے دبلی تشریف نے گئے۔ اور دبلی میں ہی فوت ہوئے تفل کے عبد مکوست بین ناگورسے دبلی تشریف نے گئے۔ اور دبلی میں ہی فوت ہوئے

آپ کے مزاد کے پاس ایک بچفر ہے جو منگ خواس کی منس سے ہے۔ یہ گول بچفر ہے یہ بات مشہور ہے کہ شنخ عالت سماع میں اس بچفر کو گلے میں ڈال لیا کرتے تھے اور وجد کوتے اس بچفر کو گلے میں لٹاکا کہ ناگورسے دہلی پہنچے۔

شخرہ چنیتہ کے مصنف نے آپ کا سال وصال ۲۵۵ھ کھاہے۔ آپ کا مزار پُر انوار دہلی میں زیارت گاہ عام و خواص ہے۔ ا

> چول فریدالدین سند دوجهال صورت گنج سند در فاک باد بندهٔ فاص است سال رحلت بهم مندید فرد عالم پاک باز هم مندید فرد عالم پاک باز

یادرہے جس سال تیخ ذید کا انتقال ہوا۔ اسی سال سلطان محدعا در اتفاق بن سلطان غیاف الدین کا انتقال ہوا تھا یہ با د شاہ ماہ د بیج الاق ل ۲۵ میں ہے۔ ہم سرآ رائے تخت ہندوتان ہوا تھا، ہاسال حکومت کرنے کے بعدا ہم محرم الحرام ۲۵ ہے۔ ہم فوت ہوا۔ یہ بادشاہ عجیب وعزیب عادات کا مالک تھا لیفن او قات تو اس کے فوت ہوا۔ یہ بادشاہ عجیب وعزیب عادات کا مالک تھا لیفن او قات تو اس کے دربار میں اپنا وکیل کا دنامے جامع الاصنداد بن کورہ گئے فلیفد لغداد نے اس کے دربار میں اپنا وکیل ہم سے جامع الاصنداد بن کورہ گئے فلیفد لغداد نے اس کے دربار میں اپنا وکیل ایک دفعہ اس نے اس کا بڑا شاندارا منتقبال کیا ۔ اوراسے شاہی فلعت سے سرفراذ کیا۔ ایک دفعہ اس نے مکم دیا کہ دیا ہے خورد دکلاں کو ہوئے دولت آباد کیا کہ ہرا کیک فرد دولی کو ویوان کر دولت آباد کیا ۔ اس نقل مرکانی سفراد وقط کی وجے سے بہرائیل فرد دولی کا کو فی کا دولت آباد کھی اس کی فتا کے مطابی آباد نہ ہورکا۔ اسی باد شاہ نے ایک لاکھ فوج تیار کی اورجیبی کو فتح کرنے کے سائے دواند

کی کہتے ہیں۔اس فرج کاا کیا ہے ہی ندہ والیں نہ آسکا۔ان بربادیوں اورنقصانا کے با دجوداس کے ملک کے کئی صوبے مبلکال ملتکاند بنیجاب اورا ووہ بغاوت بر اعظ كھردے ہوئے مگراس ماوٹاہ نے انہیں اپنی حکمت عملی سے دام كرليا البتدوكن کا علاقداس کے ہاتھ سے نکل گیا۔ ایک حسن نامی شخص جوبڑا ہی اوالعزم تھا۔ اٹھا اس نے دکن براسی سلطنت کی بنیا دیں انتوار رکھیں اوراس کی اولا دنے اس خطہ بردوسوسال عكومت كي . يه بادشاه حصرت خواج نظام الدين دبلوى كاد لي دشمن تقا ساری عمرآب کی مخالفت میں مگار ما مگر حزت ضخ کے استقلال و تقویٰ کے سامنے اس کی ایک منظی-آخری عمرین حضرت شخ کانعتقدا و دمرید ہوگیا۔ چول بصد در وغم سف رور زید ازحب ال درجهال محسد شاه سال دصلش سنهه ولايت وال نيتر نور زمال محسمد شاء

آپ صرت نصیرالدین محود جراغ دہوی ایک صرت نصیرالدین محود جراغ دہوی ۔ رحمۃ النّد علیہ کے فلیم عظم تھے۔ اور آپ کے خوا مرزادہ بھی تھے۔ آپ کاسل ارنسب صرت امام حس رضی اللّه عنہ سے ملنا ہے۔ جونکہ آپ علوم مدیث رفقہ اصول فقہ میں لیگائہ روز گار تھے۔ اس لئے آپ کو علا ترکے خطاب سے یا دکیا جا تا تھا۔ خرقہ فلا فت ماصل کرنے کے بعد آپ حرآباد گرات تشریف ہے گئے۔ جہاں آپ کو بڑی شہرت میں۔ آپ کی اولادا و رفلفا آج کے احد آباد میں موجود ہیں۔

مولانا كمال الدين رحمة المناعلية شجرة الانوارا ورشجرة چشنيد كي تحقيق كے مطابق على

میں فرت ہوئے تھے۔ بیرمانخ مضرت پنج نفیدالدین کی رحلت سے ایک سال پہلے ہوا نظار چول محم ل الدین ولی باصف رفت از دینیا بفر دو سس بریں رحمت حق گرومسال پاک او ہم سف ریامتقی اہل ایست بن

آپ صرت خواج نظام الدين ا پ صرت واج الطام الدين محود حراع داوى قدس سرة د مجوب المي د اوى قدس سرة كعظيم فلقاديس سي تقف برائه صاحب اسمرار عايدوزا بداوركر بم النفس بزرگ تقه حضرت منطان المن تخ کے دصال کے لعد ایپ کود بلی کی ولائیت کی سر براہی ملی ایپ کا طريقة صبروفتكية فقرو فاقداور رضا تسليم تقاء آب كح جدّا مجد صرت عبداللطيف يزدى ا در آپ کے والد مکرم محیلی قدس سرهاسا دات حنی تقے۔ آپ کے والد لا ہور میں پیدا ہوئے تھے۔ مگر شخ تفیرالدین محود او دھیں پیا ہوئے تھے۔ آپ کی عمر ابھی نوسال ہی تقی۔ کہ آپ کے والد ما جد کا انتقال ہو گیا۔ آپ کی والدہ نے جو سیدہ نمانہ ا ورعار فروقت تحييل. آپ كي خصوصي تربت كي. آپ ديني علوم مين مولا ناعبدا كريم مترواني كى تناكردى ميں دہے۔ ال كے انتقال كے بعدولا ناافتخار الدين كيلانى سے تن بي رامس نوجوانی میں ہی ترک وتخرید کے "نارظا سر ہونے لگے تھے محاسب اخلاق اور مجا مده نفس کی دو تنیال ظامر ہونے لگیں سن ملوغت کے بعدا کی نماز بھی جاعت کے بغیرادا مذكى اور مبيندروزه ركفت آب اكثرا وقات سنبالوك بتول سے افطار فرا باكرتے چاليس سال يعمرس و دهسه على كرو بلى اسكة ان دنو ل حفرت شخ نظام الدين بدايوك سد چنتید کے سوک میں سرگرم تربیت تھے۔ آپ بھی میج وشام آپ کی مجانس میں احر

رہنے گئے۔حضرت نظام الدین اولیاء اللہ نے دیوگری میں ایک بالاخانہ تعمیر کروایا ہوا تقا۔ یہ بالاخا مدریا کے کنارے پروا نعہ تھا۔ آپ اکٹراسی میں شغول عبادت سبتے اس خلوت کدہ میں خوا خرنصیرالدین کے بغیر کسی کو آنے کی اجازت سنر تھی۔اہنی آیام يسآب كى خصومى تربت ہوئى اور آپ كوچراغ دہلى كے خطاب سے نوازا گيا، آپ عجى حفرت خواج محبوب الملى قدس سرة كى فدمت ميں دن رات كربستر رہتے آپ كوصرت ابنے بالافار میں عبادت كزارى اور فلوت كريني كا مترف تخف تھے۔ ایک بارصرت خاج بہاوالدین مذانی قدس سرہ کے چندمر مدآتے انہوں نے اس خلوت کده میں رات گزار نے پراصرار کیا۔ انہیں اس خصوصی نبیت کی وجہ و بال دسنے كى اجازت مل كرى صبح مونى تو ابك دروليش د صنو كرنے دريا برجا لكار كروے اتاركر كنارى برر كھے اور خور نہانے كے لئے يانى ميں غوطہ زن ہوگيا۔ ايك بربخت و ہاں جا پہنیا تو درولیش کے کیرے اٹھا کر بھاگ نطاراب درولیش ننگا مذ بانی سے با مرا سکتا تھا۔ مذاس وقت کوئی اس کی فرمادس سکتا تھا۔ وہ دریا کے مانی سے ہی آوازیں دینے لگا۔خواج تفیرالدین خلوت کدہ سے باہرائے اور اپنے كيرك آبار كمراس د بئے اور اسے كہا اب خاموشى سے آجاؤ۔ آپ كامقصدية تقا كراس دروليش كى باتو س سے حضرت خواجه نظام الدین كى عبادت وا ذ كاربین خلل نذائے ۔ گرحفرن خواج بیرسارا واقعہ نور باطن سے دیکھ رہے تھے۔ چا سات کی نماذكے بعدآب نے خواج نصيرالدين محودكو بلايا- اورياري مهرابي فرمائي اورايني فلوت فاص مرحمت فرماني -

ا خبارالا خیار کے مصنف شیخ عیدالحق محقق محدث دہوی رحمۃ النارعلیہ لکھتے ہیں کہ شیخ نفیہ الدین محمود کی اور دھ کے علاقہ میں ایک ہمشیرہ تقیس عرمی آپ سے بڑی تھیں۔ لگر نہایت ہی نیک سیرت تھیں۔ ال کے دو بیلیے زین الدین اور

كمال الدين عامد عقير مصرت خواج نصير الدين كهجي كهجي اسينے بيروم رشد سے اجازت ك كريم نيره كو ملنے جا ياكرتے تھے ۔ اور ملاقات كے بعدواليس دہلى چلے آتے تھے۔ ايك دن شخ بربان الدين غريب جو خوا جر نصير الدين كے خواج ماش اور سم مجلس بھی تھے۔ کی مندے کی ایک تو پی جو آپ کو حضرت نظام الدین د ہلوی نے عطا فرائى تقى كم موكئى بدى تلاش كى كرىل مدسكى -بربان الدين كواس قربى كے كو جانے يربرا الل بوا- أب برك برينان رسف عد حضرت وا جنصير الدين في آب كوتسلى دى اوركها زياده فكرية كرو-انشاء الثداس تحفري يره مكرعمده تحفيط كالحضرت خاج نظام الدين في اسى دن شخ بربان الدين كوبلابا ورا بكفاص مصلی عنایت کیا۔ دوسرے دن آپ کے اپنے بغیے سے گم شدہ لوی بھی مل گئی حضرت شيخ نصيرالدين حراع دبوى كي مجلس ماع مين مزامير كاستعال منوع تضا صرت الى يا نغره كى آوا زسے شماع بوتا خفا-ايك د ك اس شعر ميو وجد آيا-

نظرور ديده مإناقص فتأ دهاست وگرىز ياد ما اتر كىنېپ ل نىيىت

رہماری آنکھول کی بینائی میں نقص آگیاہے۔ورندہمارامجوب توکسی سے

يوتيده نېيى ك

اسرارالاصفياء كے مولف نے لکھا ہے كدع يرسم قندى اور على قندندى كاسلطان محتفلق بدبراا ثديقا بيردونول حفزت خواجرشخ نصيرالدين كے فالفين ميں سے تقے- اہنول نے سلطان مرتفلق کو آپ کے قلات کردیا اور آمادہ کبا کر شنج کو حارت میں لینا چاہیئے۔ چانچہ بادشاہ نے ایک دن کسی بہانے سے حضرت شخ کو ابینے دربار میں طلب کیا ورکھا نا تمام سونے اور چاندی کے برتنوں میں سجا کر سأمض ركها أس كا نشاريه تقاركم الرآب ان يرتنول مين كها نا كها يس توسترعي

طور میاسید کیا جائے اور اگرانکار کریں گے توبیات سطانی اور توہین دربار كي من كرفقاد كر لياجائے كا مصرت شخ بادشاه كى اس حركت سے نورلمبرت سے واقف ہو گئے تھے۔ چنانچ محلس طعام میں جند تقے اتھائے اور ملیحدہ اپنے . التحديد كالمرادل نخواسته لقمه لقد نفط يد ديم كدات كع فالفيل اور عاسد سخت سترمنده ہوئے مجلس کے بعد باد شاہ نے عرض کی صنور تھے کی نصیحت فراکن أب في ما يا- بادخاه كاطبعيت من درندول كخصلتيس بره مكتى من اوردرولينول كے قلاف حدى قوت زيادہ ہوگئى ہے انہيں مزاج اور دل سے دوركرنا چاہئے اس كے بعد مادشا ہ نے ايك تقيلى ميں رو بے اور ايك فلعت ريشيم ميش كئے بگرآپ تے ان دونول چیزوں کی طرف نوج مذفر مائی اسی دوران خواجر نظام الدین جوسلطال كافاص بربعي عقا-اورصرت سنخ كاعفيدت مندمعي تحفا اوردوول يزياعاك لغليس ركيس اورائي دامن سے صرت كے وقع مات كرك إلى كمان بسعدك دين اورديوان سے صربت كوسا فقد اع كمن كے لئے لكا آیا جب وہ بادشاہ کے پاس والس گیا تو بادشاہ سخت غصے کی حالت میں تھا وہ اس قدر غضبناک تھا کہ توار کے قبصنہ پر ہا تھ دکھ کر نظام الدین کو قتل کرنے لكا اوركرج كركمن لكا نظام الدبن تهس يرجرات كبيم بوني كر دونول چيزي لها كرمير برسامة بى شخ لفيرالدين كے جونے صاف كركے سامنے د كھنے ملے اور اس طرح شخ کومری ملوار کے وارسے صاف نکال کرنے۔ نظام الدین نے جواب دياحتوريس ايك طرف صرت خواج نظام الدين دبلوى كے فالواده كا غلام بول اوردوسرى طرف آب كالمجى فدمت كرزار بول. بي فاندال نظام الدين كى فدمت كواپناايال جانا ہول-ال كے جوتے مير سے سركا تاج بي -اگرائي عقفي ميں بي تو کھے قتل کر دیں۔ میری سم جان بھی حضرت کے قدمول برقر بان ہو گی۔ یہ بات سن کر

سلطان دل ہی دل میں بل کھاکورہ گیا تنوار نیچے رکھ دی اور نظام الدین کو کچیئہ کہا۔ ایک دن محلیں سماع میں قوال بین شعر بڑپھ رہے تھے۔ جفا برعاشقال گفتی نخواہم کردیم کردی قلم میں دلال گفتی نخواہم داندیم

صفرت شیخ نفیرالدین محود حراع دہوی نے بیر شعر سنا تو وجد میں آگئے۔ مولانا
مغیث مجلس میں موجد تھے۔ وہ سخی شغاس بھی نظا ور دراج سناس بھی۔ ایپ نے
اس شعرست تا تر لیا۔ حضرت کی حالت وجد و حال کی کیفیت دیکھی۔ تو مجلس کے احوال
پرایک رسالہ مکھا۔ اور لکھا۔ کہ اس شعر کا مطلب کی کن اشاروں سے بیان کیا جائے
اگر جو دوجفا ہے تواسے اللہ سے منسوب نہیں کیا جاسکتا۔ اور یہ بات کفر ہے کہ اللہ
کوجر دوجفا کا مرتکب مانا جائے۔ جانج آپ تے اس شعر کے بہت سے معانی کھے
اس کی قرجیات کیں۔ کئی شرعی اور عقلی اعزاض اٹھائے اور رسب کو لکھ کرولانا میں لدین
مرائی فی فدمت میں تھیے وی آپ نے مولانا معین الدین کوانے پاس بلایا اور رسالہ
مرائی فی فدمت میں تھیے وی آپ نے مولانا معین الدین کوانے پاس بلایا اور رسالہ
والیس کرتے ہوئے کچھ شہ کہا اور ایک اعلیٰ تسم کی د تار دے کہ د و اع کہ دیا۔
دوسرے دل تھر مجلس ماع گرم ہوئی۔ قوصرت شیخ نصیر الدین اکس شعر
بر وجد میں آگئے۔

ماطبل جفا نہ دوئش ہے باک زدیم عالی علمش برسرا فسٹ لاک زدیم از بہسر کم یفی مے خوارہ صد بار کلہ تو بہ برسٹ ک زدیم

ط: سم نے کل ات میرحفال کے طبیورے کی آواز بربے باک ہوکر ہا ہوشروع رباتی مائیدا گاسفے بوانداری ا

ہوش میں آئے بھیس بھاست ہوئی۔ تو آپ مکان کی جیت پر جا بیٹھے وہاں ہی خیت شاعر کو ہلا یا۔ وہ عاصر ہوا تو آپ نے فرمایا۔ ہاں امولا نا آج ایک اور رسالہ کھھو۔ اور اس میں تکھو۔ کہ بید کیا جہالت ہے کہ شیخ نصیرالدین کو اس پر وجد آگیا۔ یہ کہا گرمولا نا مغیث بے عدر شرم ار مہوئے۔ بھر کھھی خانقاہ کا رخ نہ کیا اور تین دن لعد فوت ہوگئے۔

ايك دن نمازظهرك بعد هزت شخ نصيرالدين البين بحره فاص من شغول عبادت تقے ، ایکے بمثیرہ زا دہ خادم خاص شیخ زین الدین بھی حاصر منہ تھے بینخ مراقبہ يس مرهكائ دنياوها فيهاس بي خرميط تقراسي اتنابي ايك قلندرتراني فأ جرے میں داخل ہوا۔ پر خف کئی برسوں سے حضرت کے خلات استش حسد میں جاتا ر ما تھا۔اس نے دیکھا کہ آج صرت شخ تی تنہا مرا قبہ بی ستغرق ہیں۔وہ بلاخون وخطرائك براها - اورلغل سے ابك چرانكالا - اورات برحمد كرديا - اس في برك ك كياره زخم لكاف اس فيجب يرحموس كياكراب شيخ ملاك مو كفي بن لكل كر بھاگ کھوا ہوا مصرت شخ محربت کے عالم میں اپنی جمانی حالت کا احساس نہ کرسکے مگر غون ستے بہتے چرے سے باہر نکلاتو لوگوں کومعلوم ہوا۔ آپ کو زخمی حالت ہیں دیکھا۔ دُوٹر كرقلندرترابى كو كيرا- اورآب كے پاس سے استے- آپ كے عزيزاس كى بور ابد والحكرا جاہتے تھے بھراآپ نے انہیں روک دیا۔اورا پنے طبیب شنخ صدرالدین ا ورا پنے خواہرزا دشنے زین الدین کو تسم دے کر کہا کہاسے کچے نہ کہا چائے۔ بلکہ بیس رویبے الفام دیئے۔ اور فرمایاتم نے بہت مشقت اور محنت کی ہے۔ اس واقعد کے بعد آپ

ربقید ماشیہ کددی تقی ۔اوراس کے بلندوبالا تھبندے آسانوں بیگاردیئے تھے۔ایک عوار بغیرے کے این توبری ٹونی کوسدبار مرسے اتاد کرنین بردے مارا۔

تغديست ہو گئے غسل صحت فر ما يا۔ اور تنين سال مک زندہ رہے۔

سیدا فادلیا، اور سفیته الاولیا، تذکره شیخ و بیشته اور دوسر میشهود تذکرول بی آب کاس وفات محک بیشه مکھا ہے یہ صیح تاریخ وفات اعظاره ما ویر فنان البالک محک بیشہ مکھا ہے یہ صیح تاریخ وفات اعظاره ما ویر فنان البالک محک بیشہ ہے مصاحب مخرالواصلین کا آپ کاسال وصال سلک بیشہ کھا ہے گر مہائے نودیک محک بیسی میسی محیح ہے۔ آپ نے دھلت کے وفت وصیّت فرمائی تھتی کہ جھے دفن کوتے وقت صفرت سفور تا معلان المثاریخ فواج نظام الدین کا خرقہ میرے سینم پردکھ دینا اور میر میر میں محل میں دکھتا محضرت شیخ کی تبیع میسری دینا اور میر میں میں دکھتا محضرت شیخ کی تبیع میسری انگشت شہادت پر ہونی چاہیئے اور چو بین فعیس بنل میں دکھی جا میں۔ آپ کے فدام نے اسی طرح کیا۔

ا فت بروع جان - تبلهٔ حق نصيرالدين محود مان - تبلهٔ حق نصيرالدين محود

یاد محبوب نیز اکر ربه تخلار، بیب ریندو سرداد ۱۹۵۰ میروند

 ه در کارفیرهاجت سیج استفاره بمبت

چانچەمدلانافخرالدىن زرادى افى سراج الدين كواپنے گھرىے گئے۔ اور چپے ماہ كە اندائد دانېيں بہت سے علوم سے واقف كر ديا لعض او قات آپ كے مم عصر على رئيش لكات پرگفتگو كرے تو افى سراج الدين انہيں جيران كر ديتے تھے۔

عوم ظاہری سے فارغ ہوئے تو صرت خواج نے آپ کو باطنی اسرار ورموز سے
ملامال کر دیا۔ خرقۂ خلافت عطافر مایا۔ اور ولائیت بٹیگال کا روحانی نگران مقرر کر دیا۔
آپ افی سراج الدین کے متعلق فرما یا کہ تنے تھے ۔ کہ آپ ہندوت ان کے آگید ہیں تا
بینے افی سراج دین قدس سرۂ سیم کے جیسی فوت ہوئے۔
بیمنی فوت ہوئے۔

چوں سراج الدین شدا زدنیا سے دوں سال وصل آس سشئہ و الامکاں عارونِ احد سسراج الدین بگر سالک محرم سسراج دین نجوال

آپ شخ نفیرالدین چراخ دہلی قدس سرہ کے فیدفد اعظم سے صفرت سلطان المت کئے کے منظور نظر تھے۔ آپ کے والد ماجدا یک بہت بڑے تاجر ہے۔ گرصزت نظام الدین مجوب الملی کے عقیدت مند تھے۔ بڑھا پا آگیا۔ مگر آپ کے ہاں اولاد نہ ہوئی۔ آپ اولاد نہ ہوئی۔ آپ اولاد نہ ہوئی۔ آپ اولاد کی محرومی کو اکثر محموس کرتے ہے۔ ایک دن صفرت فو اج نظام الدین ات و جدیں تھے۔ کہ آپ نے اولاد کے لئے موال کردیا بھڑت بینے نے اپنی لیٹ ان کی وجھے فیدیت ان کی بیشت سے لگا دی۔ اور خوج نوی دی کہ اللہ تہیں بیٹی دے گا۔ ان کی منکو حرجے فی میں ہوئی اور نو ماہ بعدا اللہ تعالیٰ موئی اور نو ماہ بعدا اللہ تعالیٰ معدد الدین دی کھا گیا۔ والد فودود کو اسے کا کر مزت کی خدمت بیں نے بیٹیا دیا جس کا نام صدد الدین دی گھا گیا۔ والد فودود کو اسے کو مزت کی خدمت بیں نے بیٹیا دیا جس کا نام صدد الدین دی گھا گیا۔ والد فودود کو اسے کو مزت کی خدمت بیں

کیا۔ آپ نے اٹھایا کو دہمی بھایا چہرے سے پیٹا مٹایا۔ اوراپنے ہاتھ سے خرقہ تیاد کر کے پہنایا۔ اور شخ نفیرالدین کی گود میں دے کر کہاکہ اس بچے کی ظاہری باطنی تعلیم د تربیت میں بوری بوری کوشش کر نا چانچہ آپ کو صرت شخ تفیرالدین چراخ داوی نے یوورش کی اور کا میں وقت سے بنا دیا۔

اب بڑے فصیح و ملیغ قلم وزبان کے مالک تھے۔ آپ نے بہت سی کتابیں مكھيں جومعارف وحقائق بيشتمل ہيں . آپ علمطب ميں بھي مهارت نامه ر كھتے تھے۔ كتابول مين مكواسه - ايك بارحضرت شيخ صدرالدين كويريال المطاكر الحكين ان كى ايك شهزادى ريرى سخت بهار عقى حوكسي علاج مصصحت ياب بنبس مو ئى عفى ـ بداخطا كرات كوكوة كات يس الكيس حب مك وه يرى محت ياب نه بوني اب كود مال ہی دکھے دکھا۔ آخرانہیں اٹھاکرجال سے لے گئیں تقیں لاد کھا۔ اور آپ کے ہاتھ یں ایک خطورے دیا۔ اور کہاکہ آپ فلال شہری فلال گلی میں ایسے دنگ اورشکل كاكثّار سباب ريه خطاس دكها دينا حضرت شخف ايسے سي كيا ركتے نے خطاكو دیجها توآپ کے آگے آگے ہولیا۔ اور شہر کے باہرایک ملک لیا۔ اورایک مقام سے زمین کھودنا سروع کردی زمین سے ایک براناخزاند برآ مدہوا۔ شنے وہاں سے بے پناہ دولت اعظالائے اورغریبوں میں تقتیم کرتے رہے۔ شرو مینتید من آپ کاسال وصال و که م لکھاہے۔

0409

البواجرلطا الدين ادبياد الدك المراق المراق المراق المراق الدين المراق ال آب خا ج نظام الدين أوليا واللهك روزگارتھے۔ساری عرفلوت میں گزار دی - اپنی مرمنی سے جرسے ایک قدم بھی باہنیں رکھا۔اورکسی د نیاداد کے گھرنہیں گئے آپ کے والدبرہان الدبن بن شخ جال الدین ہانو قدس سربها تقے بچین میں والد کے انتقال کے بعد خواج فرید شکر گنے کی خدمت بی امر ہوئے نظامری و باطنی تعلیم حضرت خواج نظام الدین مجوب المی سے حاصل کی آپ بر سال ہانسی سے دہلی آتے۔ اور صرت محبوب الملی کی سجت میں دہ کر تربیت یاتے۔ ایک بارسلطان محد تغلق نے قاضی کمال الدین حدرجیال کوحضرت شنخ قط الدین كى فدمت ميں مالنى جيجا اورسائق مى چندمواضعات كى مليت كے كاغذات عيمي جيجے-اس کی خواہش تھی۔ کربیعے آپ کو دنیاوی لا لیج میں دے کر زیر کریے۔ بھر شاہی عناب سے سزنگول كرك يونكه بير با دشاه درولينول اور فقراد كے خلات تھا۔ قاصني كمال الدين ماثمي سنبيدا وربادشاه ك فرامين اورالغامات ميني كئي مكر آپ ندايك نكاه غلط اندانس انہیں متر دکر دیا۔ فر مایا حس چزکو ہارے پیروں نے قبول نہیں کیا۔ میں کیسے سکتا ہول-ان کا غذات کو والیس نے جائیئے ۔الیی چیزوں کے طالب بہت مل جاتے ہیں ایک باربادشاہ تغلق ہانسی کے علاقدیں گیا ہوا تقاردہ موضع بینی میں جو مانسی صصرف عادكوس كے فاصله بريشكرا نداز موا-اس في ايف دريشت خوا ورخت كير حاكم نظام الدبن عرف مخلص الملك كوماتسي مين بيجياوه ماتسي كے قلعه كي د لواركے پاكس سے گزر رہا تھا۔ نزدیک ہی حزت مٹنخ قطب الدین کا گھر تھا۔ آپ کے درواز ہے۔ ك سامن كوس بوكروكون سے إلى يعنى لكا يكس كا كرب وكول نے بتايا بيال قطب الدین منور جو صرت خواجه نظام الدین د بلوی کے مربیبین دہتے ہیں - اس نے کہا بڑے تعجب کی بات ہے کرساسے مندوستان کا شہنشاہ اپنے لاؤسٹکر کے

ساته انس كياس علوه فرا موا ورفواج نظام الدين كايك مريدانهيس ملن كوية جلتے بیصاکم والیں بادشاہ کے اشکرگاہ میں گیا۔ اورصورت مال سے آگاہ کیا باوشاہ نے حس سرریبند کو جوایب سبت سراامیرور مار تضاطلب فرمایا اور عکم دیا کہ شیخ قطالِیوین كوبرطالت ميں لاكريش كيا جائے صرت كے كرينجا د بيزكے ياس كوا ہوكرد دوازه كم الكي الوشيخ قطب الدين كابيا فورالدين بابرة يا اورصن سربهندكوشيخ قطب الدين كے پاس اندر الكيا-اس نے بادشاه كا پيغام ديا - اب نے فرماياكم اسسلديس تھے تھى مجدا فتیارہے یاآپ دوگول نے اپنی ہی بات منافی ہے۔ حس نے کہا چھے حکم ہے کہ آپ كوطوعًا كرم الدشاه كے دربار ميں ميش كروں -فرايا الحدلتد ميں اپنے افتيار سے نہيں جارم- عيرآب في إلى فالم كالدواع كيا - اورجا غازكنده يرركها ورياباوه روانة بو گئے بص فے بڑا اصرار کیا کہ میں سواری نے کر آیا ہوں مگر فینے نے تبول ند ى اوربيدل چلق كئ ولسة بن شخ جال الدين اوربهان الدين وشخ تطالدين منورے باپ اور دادا تھے مزارات آئے تھے آپ نے ص کو بوچااگر اجازت ہوتومیں اپنے ہزرگوں کے مزارات کی زیارت کرلوں اُس نے کہا اس میں کو فی صلفتہ منیں۔ آپ اپنے باپ اور وا دای قبرے باؤل کی طرف کھڑے ہو گئے اور ملبند آواز سے کمنے لگے کہ میں آپ وگون کے فلوت کدے سے اپنی مرصنی سے با مرنہیں آیا چنداد کو سقد درستی بادفاہ کے بہنیانے کی کوشش کی ہے۔ بیرے گرکے چند افراد موجود ہی جی کے لئے ہیں نے کو فی خرجا نہیں چھوڑا۔ یہ کہ کہ آپ دوشے سے بابرتك وروانب برابك شخص كطرا تقا-اس نے جاندى كے سكے بيش كينے اور کہا یہ آپ کے اہل دعیال کا خرچہہے۔ آپ نے فرمایا کہ انہیں میرے گریہنجا و و كيوكم ال كے پاس كھ كھى بنيں-

آپ بادتاه ك الله كاه من سني تو بادشاه نه ديده دانسته ك كاطف توج يد

دی سزاینے پاس بلایا اورو ہال سے دہلی کی طرف روانہ ہوگیا۔ دہلی پہنچ کر سینے قطب الدین کو اپنے پاس ملاقات کے لئے طلب کیا۔ شیخ اندر داخل موتے تو وہ بیٹھا ہوا تھا۔ ہپ کو دیکھتے ہی اعظا دراس کے ہاتھ میں ایک تیراور کمان تھاجھے دہ درست کر رہا تھا۔

یرد دنوں چنریں شخ کو دیکھتے ہی ہاتھ سے گرگئیں تنظیم کے لئے آگے مڑمعا اور مصافحہ کیا بصرت بھے نے بادشاہ کا ہاتھ کیٹر کراتنا دیا یاکراس کی انتھول سے انسو نكل آئے جیائچ بیظالم بادشاہ جرمزاروں مشائخ ادرعلماء كواپنى عوارى نوك سے ینچ لاچکا تھا۔ شِنح کامعتقد ہوگیا۔ کہنے لگاہم آپ کے شہر گئے تھے۔ آپ نے نة مهمسه ملاقات كي مد مهرماني فرمائي اور مد مي فوش كيا يصفرت سينخ في فرما ياكدورولين اپنے چرے میں بیٹو کرتمام سلمانوں کے لئے دعاکر تاہے۔ اِس میں سرچیوٹا بڑا شرك بونا فقرول كودر بارس است سعدور كماكرو بادشاه كاب كى ير باتيں بڑى پندائيں اور خوش ہوكر كنے نگاكر آپ كى جور ضى ہو كى وہى كرول كارير الأن كوئ اور فدمت مو توعكم كريس صرت شخف كماكم ميراطكم يهى سے کہ مجھے بہال سے رضت کر دیا جائے تاکہ اپنے فلوت کدہ میں بیٹے کر ذکر فدادندى مين مصروف رمول - باد شاه نے صرت شيخ كورخصت كيا . اور شيخ فروز احد ضائر نی کو ایک لاکھ رویبہ دے کرشنے کے ساتھ بھیجا بصرت شخ نے حيب روپول كى تقيليال دىجھىي تو فرما يا نعو د بالندمن دالك ايك درويش كو ایک لاکھ رویے سے کیا فائرہ ہے۔ اسے بادشاہ کی فدمت میں وا پس مے او بادخاه نے پیاس ہزار رو بیر دکھ لیاا ور بیاس ہزار رو بیر دوبارہ ہے کی فدمت ين بيعا - أب ن عيرانكاركيا - مخاد آب في مرت ايك بزاررو بي ليااوروه میں شخ فروز اور صباء برتی کے سامنے عزبا بین تقسیم کردیا۔

مهم لخوال مهر منور قطب حق

سال وصل آل سشير ابل يقين

اپ شخصام الدین سوخت کرائے ہوئی الدین سوخت کے بڑے سواج معین الدین خور دفدس سرہ نہ الدین جراغ دہوی دعمۃ النہ علیہ کے مربیہ بھی تھے اور فلیفہ بھی۔ بڑھے سے بین فلید الدین جرائے دہوں آپ کارتبہ بہال کک تقاکہ اس کوجس جیز کی صرورت ہوتی براہ دارت صرت خواج بزرگ معین الدین حسن سنجری رحمۃ النہ علیہ سے عاصل کر لیتے ۔ آپ کے خواج بزرگ معین الدین حسن سنجری رحمۃ النہ علیہ سے عاصل کر لیتے ۔ آپ کے چوٹے بھائی کا نام شخ قیام الدین تھا وہ بڑے ہی خواجورت بہا دراور تظیام الدین تھا وہ بڑے ہی خواجورت بہا دراور تھا المحقیام الدین تھا وہ بڑے ہی عمل عادا ورمثا المحقیام ہوئے۔ بردگ نظے۔ اللہ دونوں بھائیوں کی بڑی اولاد تھے جن میں علماء اورمثا المحقیام ہوئے۔ اسے سات سوراکا سطح بجری میں فرت ہوئے۔

معین الدین جواز دنیاسف رکرد برسمین الم الم حنت گشت منظار معین الدین متوکل رفت مرد تباریخیش چیک رورگشت کمور

آپ اودھ کے عالم اجل تھے۔ ۔ آپ کاظام ری اور باطنی زاج عالم اجل تھے عالم الد باطنی زاج عالم الد باطنی زاج عالم الد باطنی زاج عالم الد بھا تھا ۔ الد جہ الد بھی کو بعیت نہیں کیا کہ تے تھے ۔ اور باطنی کیا کہ تے تھے ۔ اور بالد ت بیان کھی کو بعیت نہیں کیا کہ تے تھے ۔ فر ما یا کہ تے تھے اگر میرے پرومرشدندہ ہوتے تو میں یہ اجازت ناما نہیں والی کہ دیتا ۔ کیونکہ مجھ جیسے ناکارہ آدمی سے اِتنی عظیم فرمرواری لور کیا نہیں ہوسکتی ۔

میرص علائی سنجری کی کتاب فوا گدالفوا گدی حضرت خواجر نظام الدین کے ملفوضات بہت کے اور دن را ملفوضات بہت کے اور دن را مطالعہ کرتے وگوں نے آئی سے لیچے کر سمیشہ اپنے پاس رکھتے تھے۔ اور دن را مطالعہ کرتے وگوں نے آئی سے لیچ کا کہ تفوف دفقہ معدیث اور تفسیر کی ہزار اس کتابیں آپ کے پاس موجود ہیں۔ گر آئی سوائے فوا گدالفوا دک کسی ہیں دلچینی ہیں میں دلچینی میں دلچینی میں دلچینی میں دلچینی کی گابوں سے سالا لیت اوراسے تعوید بناکہ پاس رکھتے ہیں۔ آپ نے فرط یا کہ سلوک کی کتابوں سے سالا جہاں بھرا پڑا ہے گرمیرے بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے فرحت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات دل کو جس انداز سے درجت بیرو مرشد کے ملفوضات کے درجت کے درجت کے ملفوضات کے درجت کے درجت

آپ سات کنو باسط سال میں فوت ہوئے۔ علاؤ الدین چوا ز و نیاسف رکرو

بذات ایزدی سندمحو مطلق

دست شد نهرسال انتقائش علاد الدین عارف صاحب حق ملاد الدین عارف صاحب حق آپ کمال الدین علامہ کے بیٹے بھی تھے شخ سراج الدين فيني قدس سره: ورضيفهي برك صاحب كشف كرامت بزرگ عظے كوشش كرتے كمال كى كونى كوامت ظاہرة بونے يائے .آپ کے والد بزرگوارنے موت سے پہلے آپ کواپنے پاس بلا یا اور برطی روحانی تعتیں عطاكين -أس دن سے آپ حس بيزلگاه والت وه الله كي مجت بي مت بوجاتا -آب كى دفات سائ سوباسط بجرى كيم جادى الادّل كو بونى عقى -آب كا مزارضلع اجرآباد کے موضع پیرال تین میں ہے۔ مضخ د نيا و دين سراج الدين دنت چون ازجال بياغ جب ان سال تاریخ اوست ابل حسلوص مم دگرصاحب كرامت خوان

ہیں بڑے صاحب
سنے جلال لدین محود مائی بتی الگازر فی قدس مراہ کشف وکوارت سے
سنے جلال لدین محود مائی بتی الگازر فی قدس مراہ کشف وکوارت سے
سنریعیت طریقت ، حقیقات اور معرفت کے علوم میں اپنا تانی مذر کھتے تھے آپ
ضی سمش العمین ترک بانی بتی کے خلیفہ اعظم سے آپ کا اصلی نام محد بن محود بھا
لیکن بیرومرشد کی طرف جلال الدین کا خطاب ملا تھا۔ آپ کا سلسد نسب چند
واسطول سے صرت امیرا لمومنین عثمان ذی النورین رضی الند عنہ سے ملآ ہے
واسطول سے صرت امیرا لمومنین عثمان ذی النورین رضی الند عنہ سے ملآ ہے
آپ بجین سے ہی مذہ و محبت اور عشق خدا و ندی میں عزق تھے اور آخری عمر
سک اسی حالت میں رہے۔ آپ پر اکثر مدہو حتی طاری رہتی جب ماز کا وقت ہوتا

تواکب کے خادم آپ کے کان میں تین باری حق کتے۔ آپ ہوش میں آتے اور پھر نمازیڈھتے۔ نمازسے فارغ ہوکر کھر مراقبے میں چلے جاتے۔

شخ جلال الدين دحدوسماع مين شغول رسے آپ كى دعاكھى نامنظورى موتى زبال سے جو کھر فرماد بیتے وہی ہوتا۔ آپ کے جالیس خلفاء ہوئے ہیں۔ ہراکی خلیف على معلى مسلم تفتوف جارى بوا-آپ كى كتاب ذا د الآبرار تفتوف بسابك عمدہ تصانیف ہے۔ کہتے ہیں کہ شخ عبل لی الدین دوبار چ کرنے گئے۔ آپ کے لنگر میں کم از کم ایک منزار آوی صبح دشام کھا ناکھا تا اور اگر کھی خادم اورمربیکم ہوجلتے تو پھر معی ایک ہزار سے کم مہال ہوتے۔ توبازارے استے آدمی بلاکر وسترخوان بایک ہزار کی تعداد پوری کر میتے صرت شخ کشکار کا بڑا شوق تھا شکار پر جانے توغیب ت ایک ہزار آدمیوں کا کھا نا حبال میں ہما تا سیرالا قطاب میں مکھا ہے کہ شخ جال الدين إنسوى كاوه سلسله جوشنج علاؤالدين على احدم كى دعاس بندم وكياتها آپ کی دعائے دوبارہ جاری ہوگیا۔ آپ کی دعایہ اللہ تضاکہ شنخ بریان الدی ہانوی قطب الدين منور بالنوى اوريشخ نورالدين افدر بانسوى رحة التُرعليم آپ كى دعا سے صاحب کوامت ہوئے ہیں اگرچ یہ لوگ سلسدنظامیر جنتیدی والبقر سے مگر ضغ عبلال الدين كي وعاسے انہيں ببت فائده بينجا-

ایک و فعد شخ جلال الدبن دهمة النه علید سفری تقیدات ایک ایسے گاؤل یں فقر سے جہاں کے دہتے ہیں۔ اُن سے یں فلم سے جہاں کے دہنے والے تقیط کیٹ ہے جہا گئے کی نیاریاں کو دہے ہیں۔ اُن سے پوچھا تو انہوں نے بتایا کہ اس سال ڈالہ بادی کی وجہ سے ہمادی فصلیس تباہ ہوگئیں ہیں فلر نہیں ہوں کا اس کے با وجود اس علاقے کا حاکم ہم سے معاملہ اور باج وصول کرنے کے لئے سختی کرتا ہے۔ ہمیں اس کی اوا انگی کی طاقت نہیں۔ اس لئے ہم بیہاں سے جمال جا ناچا ہتے ہیں۔ آپ نے فر بایا اگرتم لوگ یہ گاؤں میرے ہاتھ بھے وواوراس کا جمال جا ناچا ہتے ہیں۔ آپ نے فر بایا اگرتم لوگ یہ گاؤں میرے ہاتھ بھے وواوراس کا

نام جلال آبادر کھ دو تو ہیں تہیں اتنارو پیردوں گاجس سے تم معا مدیجی اواکردوگے اورا میریجی ہوجاؤ گے۔ گاؤں والول نے بیبات مان لی بھراپ نے فر مایا کہ تہما رہے بیاس جتنی لوسے کی چیزیں ہیں ایک حکمہ مجھ کرلو۔ اور خشک کلای جمی لے آؤ چانچ اس حتی ہوتے ہی ایس جتنی لوسے کی چیزیں بیں ایک حکمہ دیا کہ صبح ہوتے ہی اس لوہ نے کو دیکھنا رخود ہی آ دھی رات کے وقت رب سے چیپ کراپنے وطن اس لوہ نے کو دیکھنا تو میں اور کی ما کہ اور کا کا مام حلال آبادر کھا۔ اور رسب کے رب امیر ہو گئے اور اس گاؤں کا نام حلال آبادر کھا۔

سيرالا قطاب ين مكهاب كمايك بارشخ جلال الدين رحمة المدعليه درياك كنادى پہنچے-آپ نے دیکھاكم ایك سندوجوگى انكھيس بندكئے دريا كےكتاكے يرمبيطاك -أس في المحيس كمول كرحض وديكاتوفرمايا .آپ بهت نوش قمت میں کرمیرے پاس آ گئے ہیں میرے پاس سائب پارس ہے۔ میں نے دل میں مبد كيا تقاكر وتخفى المحيس كمو ليرس ما مف آئے گا ميں اُسے ساك يارس ف دول گا-اب تم اسے لے اوا درا پنے استعال میں لاؤ۔ کہتم بہت خوش قسمت مع جنبیں الی دولت می حضرت شخ نے جو گیسے بچفر لے ایاا وروریا میں بھینک دیا آپ کی اس حرکت سے جو گی بہت ناراض ہوا۔ اور کھنے لگا۔ آپ کو اس پھر کی قدروقیمت معلوم نہیں کراسے تم نے دریا میں عینیک دیا سے اب خریت اسی میں ہے کہمیرا نتج مرجھے والیں دے دو صرت شخ نے جاب دیا عب تم نے تجر مھے بخش دیا تھا۔ میں جوچا ہتا کرتا۔ ابتہیں اس سے کیا سرد کارہے ؛ جو گی ہنوی كتا تقا-دوتا تقا-ادد كتا تقا-انوس نمنة اتنى بدى دولت كودريايس بھینک دیاہے۔اب تہیں میں ہراد نہیں چیوٹرول کا۔ تا وقتیکہ میرا پھرمیرے

والے ندکیاجائے۔ شخ یہ بات سن کومکوائے اور فرمایا دریا میں اُ ترجا وا ور اپنا بھر اُلے کہ کہ اسے بھراُ تھا کہ باہر لے آؤ ، مگر دکھنا اسی طرح کا اگر کوئی دو سرا بھر ملا تولا کے کرکے اسے ندا شالینا صرف اپنا بھر ہی لانا ۔ جو گی نے یہ بات قبول کرئی ۔ اور دریا میں کو دیا جا اس نے صرت پڑا ۔ اس نے دیکھا کہ بائی میں ہزاروں سنگ پارس موجود میں ۔ جیسے اس نے صرت شخ کو دیا تھا ۔ اُس کولا کے ہوا اور اُس نے کئی بھرا تھا لئے اور اُسے چوری اپنے مسلایں جگی ایا صرت شخ نے آواز دے کہ کہا اور نے ظالم تم نے اپنا و عدہ مجلا دیا جو گی مترمندہ ہوا ۔ دریاسے باہر آئیا ورسار سے بھر شنج کے سامنے لار کھے اور شخ کے تدمول میں گر کوللمہ بڑچھ لیا ۔ اور آپ کامرید ہوگیا ۔ آپ کی دعا سے وہ کما لات کو بہنے ۔

اسی کتاب میں ایک اورواقعہ کھھاکہ احدنا می ایک قلندر ترکستان سے مرشد
کی الاش میں چلا اور مہندوستان آپنچا۔ اس فی کھی کے جنگلات میں ڈیرہ جا ایا۔ اس فی پی نے پئی بت کے کئی مشائخ کو اپنے اس ادا دے سے آگاہ کیا۔ چانچی مشائخ کا ایک گروہ حضرت شنخ مبلال الدین کی قیادت میں تکھی کے جنگلات میں قلندر کے پاس پہنچا۔ جب کھانا کھلنے لگے۔ اور طعام سے کپڑا اعظایا۔ تو تنام خیرمتروع چیزیں پی ہوئی تھیں سالیں چیزیں تھیں منہیں شراعیت نے حوام قرار دیا ہے لیکن وہ اس انداز میں سے پکائے گئے تھے کر کھانے والے کو ترغیب دینے میں موثر تھا جوزت جبلال آلدین سے پکائے گئے تھے کر کھانے والے کو ترغیب دینے میں موثر تھا جوزت جبلال آلدین میں میں انداز کی بیال مالیاں نے مثال کو کہ یہ حوام کھانے دستر فوان سے اُٹھ کم خود شہادت دیں تاکہ اس قلندر کی بیال مالیاں میں جوام کھانے دستر فوان سے اُٹھ کم موزد شہادت دیں تاکہ اس قلندر کی بیان میں میں دید کے خدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہیں دیدہ حضرت شنخ کے قدمول برسر دکھ دیا اور نہا بہت عجز سے اعترات کیا۔ کہی کہیں دیدہ میں دیا ہو کہیں کہیں۔

دانستہ یہ کام اس سے کیا تھا کرد کھول کرمٹ کنے اپنی نگاہ سے معدم کر لیتے ہیں یا ہمیں میں شیخ کو کا مل وفت پاکرمر مدہدتا ہوں ۔ اور کھیل سوک کے سے ان کے ہراشا سے برزندگی وقف کردوں گا۔ صفرت نے اسے مرید بناکرد رجہ کمال تک پہنچا دیا ،

ایک دی صرت شخ جلال الدین رحمۃ النّدعلیہ کہیں جارہے تھے کہ ایک صعبت عورت ہر بیاتی کا گھڑار کھے جا رہی تھی۔ اس کے پاؤں کا نب رہے تھے اس نے بچھاکیا آپ کا کوئی اور آدمی پائی نہیں لاسکت ۔ کہنے گی۔ یی بےکس اور بیم ہما اوا ہوں وصرت نے پائی کا گھڑا اعظایا۔ اورا پنے کندھے پردکھ کر پہلنے گئے اوراس کے گھر پہنچے گھڑا رکھ کر فرمایا۔ آج کے بعد انت را لنّد یہ گھڑا بائی سے محرارہ کا گرین جانے کی صرورت نہیں ہوگی۔ وہنیون عورت اس گھڑے سے پائی استعال کرتی رہی۔ گھر یا تی کہی کم نہ ہوا۔

سلطان فروند الدین کے عہد حکومت میں صرب میانیاں ہا اللہ ہاں گشت
اوچ شرلیف سے دہلی تشرلیف لائے۔ الب بیاں آکر سخت بھار ہوگئے حتی کہ لوگوں نے آپ کوموت کے قریب یا یا۔ پانی بہت میں شیخ جلال الدین رحمۃ اللہ علیہ کو قلیبی اشارہ ہوا۔ کہ وہ فوراً دہلی بنج بی اورا بنی عربے دس سال صرب مخدوم جہانیاں کو مذرا نہ بہش کریں۔ آپ نور کوامت سے طے الارض کرکے فی الفورو ہی پہنچے۔ صرب مذرا انہ بہش کریں۔ آپ نور کوامت سے طے الارض کرکے فی الفورو ہی پہنچے۔ صرب مخدوم کی فدمت ہیں ہینے کواسلام علیکم کہا۔ اور آپ نے آنکھیں کھولیں آوشنے جلال الدین نے کہا۔ اکھیں تازہ وضو کریں۔ مخدوم نے وضو کیا۔ تو آپ نے دو تو ں ہا تھ بڑھا کو فرایا میں نے تبول کم نے کہا۔ اکھیں تازہ وضو کریں۔ مخدوم نے کہا ہیں نے تبول کم میں نے اپنی نہ ندگی کے وس سال آپ کو بختے ہیں۔ مخدوم نے کہا ہیں نے تبول کم میں نے اپنی نہ نہ کئے۔ مخدوم جہا نیاں صحت یا ب ہوئے حضرت کی صورت مال میں کے خرس کے کہا کہ اللہ بی نے نہ نہ کہ کے دش مورت مال مورت مال مورت میں کہ نے میں کہ اللہ بی نے نہ نہ کہ کے دشن مورت مال مورت میں کہ نے تبایا کہ بھے شنے جلال الدین نے اپنی نہ نہ کہ کے دشن میں صورت مال مورت مال مورت میں کہ نے تبایا کہ بھے شنے جلال الدیں نے اپنی نہ نہ کہ کے دشن میں مورت مال مورت میں کی خرتی ہوا کہ کھے شنے جلال الدیں نے اپنی نہ نہ کے دش

سال ديئے بين در نه ميرا وقت آبينها تھا بسلطان فيروز الدين كوصرت شخ جلال الدين كي ديارت سئيشر ق بوا كي زيادت كاسوق بديا ہوا۔ جنانچه وه چل كواني بت آيا اور آپ كي زيارت سئيشر ق بوا شخ جلال الدين رحمة الله عليہ كے بالنج بيليٹے تھے فواج عبد القادر و خواج الراہيم خواج شبلی خواج كريم الدين اور خواج عبد الاحد - آپ باني بت ميں نيج گنج ولا بت كملاتے تھے اگرچہ آپ كے خلفار كي تعداد چالين سے بھي ذيا دہ تھى ۔ گر آپ كاسلسله عاليہ شخ عبد الى قدس مرة سے جارى ہوا تھا ۔

مَشِيخ حلال الدين ياني مَيتى كى وفات ١١٧ ماه ربيع الاوّل هايم يه كومو في تقي آپ در منذ منه م

كامزادمانى يتيس-

> خداو تدایل جلال دیشکمار) مداوتد ۱۸۵

آپھن خاجر نظام الدین دہوی قدس سرہ کے ۔ شخ حجر قلندر فلر س سرہ : فلیفہ تھے۔ بچین میں اپنے والد محرم کے ماتھ ھر خواج محبوب الملی فدرت میں مامر ، وئے اور مرید ہوئے بھٹرت نواج کے وصال کے بعد آپ کے فلفائے کرام سے استفادہ کیا مولانا ہر ہاں الدین غریب شیخ فیالدین چراغ دموی رحمة الده علیها کے علاوہ دوسر سے خلفاء سے سلوک چینتیمیں تربیت بائی صفرت فیخ نفیر الدین چراغ دموی کے ملفوظات بیں ایک کتاب بحرالحجالس ترتیب دی سے متاب سے مصرت فیخ نفیر الدین چراغ دموی کے معال سے احوال رہضتی ہے۔ آپ بڑے کا مل مناع اور سخنور تھے۔ اگر چرآپ فلندری سلوک کے بھی وا قف تھے۔ گر قلندرانہ زندگی لیسر نہیں کی تھی۔

ا بك و ك آپ بجين ميں اپنے والد كے ساتھ حضرت خواجر مجبوب المي د ہوى كى خدمت میں عاض ہوئے مصرت خواج نے دسترخوان کچھیا یا تو آپ نے ایک روٹی کے دو سے کرکے ایک حصرات کودیا - شخ جمید نے بدوٹی کھانے کی بجائے اپنے پاس ركھ لى اور باب كرما غذبا مرنكل آئے . باہر چند قلندر بلطے تھے انہوں نے كها بينے زاد بين كي دو- سم نے روزه افطار كرناہے - آپ نے فرما ياميرے ياس تو كي تبيں قلندرول نے کہا۔ تمہارے پاس آدھی روٹی ہے۔ بیٹیس دے دو تلندول کے اس كشف يرضى حميد را عرال موت اورده روقي النبس در دى تعاندرول نے ردنی بانظ کردوزه افظار کیا۔ آپ کے والد نے فرمایا۔ حمیدتم نے یم کیا کیا بھرت کی عطاكرده دو في ال مندرول كودے دى - يہ تواليي تعمت تقى كرمات بيتو ل مك كام آتی تقی و الدگرامی ضغ حمید کو مکرا کرصرت نوا جرنظام الدین او ریا و کی خدمت میں واليس ك كف اورصورت حال سے آگاہ كيا.آپ نے مسكر اكر فرما يا چلودرولينول كا حق درولیٹول کو بینجادیا ۔ پھرآپ سٹنے حمید کے والدکومولانا تاج الدین نے فرمایا۔ فكريذكرور متهارايه بيا ببند قدر قلندر بنے گا۔ اس دن سے مولانا حميد كا خطاب عيد قلندرد كهاكيا ـ

آپ کی وفات مراہ ملے کو ہونی تھی۔

چر همیدا زیطف وانضب ل فدا رفت از د نیا و در جنت رکسید شاه عالیثان بگرسال وصال هم مخوال سرورکشبه ع فال همید

آپ شخ نسبر الدین اولیا در کار می المتدالید ایر خیر نسبالدین می در می المتدالید ایر خیر نسبالدین می در می المتدالید ایر خیر می الدین اولیا در کے مرد یقے والد جی بی بی می المان المثائخ خواج نظام الدین اولیا در کے مرد سفتے والد الدین کی نگر ان میں گذر اس من ان کے سے بعیت کرلی تھی اور کئی بارخواب میں اُن کی ذیا در سے اس طرح آپ ملطان المبتائخ کے اولیسی تقے اور کئی بارخواب میں اُن کی ذیا در سے بھی کی مقربین میں سے تھے۔

مقربین میں سے تھے۔

شنج کے مقربین میں سے تھے۔

مبارک بن سید محکومانی سیرالا و آنیا و کتاب کھی۔ بیدا تنی بے شال اور متند
کتاب سے جس میں جیثتی بزدگواران دیں کے احمال درج ہیں۔ یا درہے جیشتی
بزدگوں کے تذکر سے بین سیرالا د آنیا و کے نام سے دو کتا بین مشہور و معووت ہیں۔
ایک بردالدین اسحاق رحمتہ التہ علیہ نے کھی جس میں صرت خواج فرید شکر گنج کے
ملفوظات ہیں۔ دو سری اسی نام کی کتاب سید محد بن مبادک کرمانی کی ہے۔
ملفوظات ہیں۔ دو سری اسی نام کی کتاب سید محد بن مبادک کرمانی کی ہے۔
منجرہ جی جبکہ فیروزشاہ
تغیق کا ڈمانہ افتداری تھا۔

"محد بن مب رک میرعالم چوح کمشود بر وے عبنتی باب بخوان تحرید کن بنتار دریاب دگر سرور بنار بخش رست کرد محد بن مب دک میرا خطاب

آب عبی شنخ محود جراغ دبوی کے فلیفاور شنخ بوسف حیثنی رحمته التد علیه :- مرید تھے .ظاہری علوم نقه عدیث تفییر ين بلا مارته ايكايكمشهوركاب تحفد لفائح ب-اسي احكام سرع فراكف اورستين درج بن ردى خولصورت نظم مي تكمي كئي ہے اُس كا ہر ا يك شعر لفظ برختم موتا ہے كاب كا مرمي اپنے بيركي يول تعرفيف كھتے ہيں۔ يضخ معظم ببر مامحود آل صاحب قرآن چول او نباشد ہیچے کس ہم عتشم ہم معتبر عالم بعالم مثل اوبركة نديده مردى اندركوام تة مثل اوخيز و كجا دُور قمر اولود شخ مقتداا درحا بيمقت إ كشنداعي ديدبا جول دفت آل ابل نظر كومريمي بوسق كدا دروعظ سنخ حيندرا ازبرخلف وش تقابوالفتحال الوالنصر السي كو وفات ميدي هي من بوني عقى-

یوسف دین احسمدی یوسف کرد چل ازجهال بخلد مکان رملتش یوسف حقیقت گو یوسف حن ماه تا بال مدال

سيدتاج الدين شيرسوارفد سره التعليه كمشهور خليفها ورنامورمريد اب شخ قطب الدين منور بالسوى رحمة تھے۔ ہمیشہ زبدوریاضبت میں صروف رہتے ایک وقت الیا آیا کر حیکل کے درندے پرندے وچار پائے اور مولیتی آپ کے افتارے پر علنے ملے جامل میں جاتے اگر ا نہیں اپنے پیردوش خیمر کی زیارت کا خیال آٹا توکسی ٹیر ببرکو کمٹےتے اوراً س پرسوار ہو عاتے اور خونخوارسانپ کوا تھاتے چا بک بنا کرجل نگلتے اور شرکو جا نگلتے ستہرکے قریب بینج کرسانپ اورسٹر کوشہر کے باہر کھوڑ دیتے اور خود نظے یاؤں صرت پیرکی فدمت میں حاصر بهوجاتے ایک دن آپ بے خودی کی حالت میں مثیر ریسوارانے پیر کی حذمت میں جا پہنچے۔ آپ کے پیراس وقت ایک دیوار پر بلیٹے تھے سیّد تاج دیں کو شرر سوارد کھر کر فرمایا تاج دین شیروں اور حوانوں کو قابو کر لیناکوئی برطبی بات نہیں ہے النُّرك بندے تو د بوار كو كلم كريں تو وہ مجى على ياتى ہے - الحجى تك شخ قطب الدين كى زبان سے بیرا لفاظ نکلے ہی تھے کد دلیار چلنے ملی حضرت شخ نے دلیار کو پاؤل عاد کمکہام نے توبیہ بات تمثیلاً کی ہے ہم نے تمبیں تو بنیں کہا تھا کہ تم بیل بیدہ اہذا جہال سے جلی بووالس جاكر كمرى د بو-

سید ناج دین کاایک بیا تھا جے نین ابدال کتے تھے۔ بڑا ہی بزرگ اور تا ک الدنیاان ن تھا۔ اُس کے گھریں ایک بہت بڑا پچھر بڑا تھا۔ اور ابھی کک وہ پچھراُس کے گھرکی دہدیز کے یا ہر بڑا ہے۔ آپ اپنی زندگی میں ایک مکوٹ کا پیالہ اس پچھریولک دیتے تھے ۔ آنے جلنے والے اس میں نقدی ڈال دیتے تھے۔ شام کے وقت شخیبی ابدال ان چیزوں کو اعطائے اور کچی خرج کردیتے اور باقی عزیبوں میں تقسیم کردیتے ۔ اس بیا ہے کامعول میں تقاکد اگر بازاد میں غلام ہنگا ہوتا تواس میں پیسے زیادہ آتے اور اگر سستا ہوتا تو تقول ہے بیسے آتے ۔

ینج تاج الدین خمات سوچ راسی سجری میں وفات پائی۔
فیخ تاج الدین شد عالم دراوصات
تاج دین اعز از دنیا شخ حق بین گفته اند
کروچ ل رهات مجنت فلن تاریخ وصال
تاج فقر و نیز تاج شاه دین گفته اند

اخبارالاخيارس لكهاب كرسية ناج الدبن كامزاري انوار نارنول سي

آپ شخ عبدالمفندر قلاس سر 10- تقے بہت بڑے عالم دیں تھے۔ اورصاحب باطن درو بیش مجھے۔ تقریب کا میں تھے۔ اورصاحب باطن درو بیش مجھے۔ تقریب کی نقتگویں نصاحت و بلاغت مجری ہوئی تھی۔ آپ کے والد قاصلی دکن الدین الکندی مجھی وقت کے بہت بڑے عالم اور فاصل تھا بتدائی دندگی میں آپ درولیتوں کے منگر تھے اور شرعی مرائل پر بحث کرنے کے لئے حضرت چراغ دبوی کی فدمت میں جاتے۔ ایک عرصہ تھا اسی بحث و کو ار میں معروت رہے۔ بہت کا درفا ہری اور باطنی نعمتوں سے مالا مال ہوگئے بناقب الصد تھیں آپ کی مشہور کتاب ہے اس میں حصرت شخ کی کوامات کھی ہوئی ہیں۔ قامنی منہ الدین آپ کے مہی شاگر و سے۔

ايك ون قامنى تنباب الدين كوكهيس سے سونا طا دل ميں كمنے رككے كم اس سونے كو

میں اُس جگر چپاؤل گا۔جہال کسی کی نظر نہ پڑنے۔ اِسی عالت میں صفرت بینے عبد المقتدر کی خدمت میں پہنچے۔ آپ کی نگاہ قاضی پر بڑی تو فر مایا قاضی صاحب آپ سونا وفن کرنے کی نکر میں ہیں ، علم کا لوچھ کہال سے جا وکے۔

آپ اٹھا کیک محرم سائٹ سواکانویں ہجری میں فرت ہوئے۔ آپ کامزادلینے والد
کی قرکے ساتھ بنا یا جوخواج قطب الدین نختیارا دشی دھتہ التہ علیہ کے مزاد کے اصلیط
میں ہے۔ پاس ہی شیخ عبدالصدر ہونیوری کی خانقاہ ہے۔

چن باکوام خداوندی ونفن لا بیز ال رفت اندوار الفنادر خلدعالی مقت رر مساحب مخدوم شدسال وصالش نیز عقل او تا ه گفت اولی مقتدر فرمود و الی مقتدر

معارج الولا بیت کے معشق نے قاضی عبد المقتدر قدس مرؤ کی وفات کے متعلق دوروائیں نقل کی ہیں ایک تو یہ کہ شخ مرصوف تباریخ بھیبیں محرم الحرام مراف ہے کو فت ہوئے ۔ دو سری دوایت میں سال وفات مرائ ہے تکھی ہے سنیے عبد المقتدر سنینے نہ مان مشتح عبد المقتدر سنینے نہ مان مشتح عبد المقتدر سنینے نہ مان مشتح تا دونیا لیگاز اربہ شت کت آخر سال وصل اوعیاں از خرد سرو محب اہل چشت

يشخ علا وُالدين علاء الحق بن اسعدلا بموى قدس مره له رضي عنمان قدس مره

کے خلیفہ اعظم تھے۔ ابتدائی ُزندگی میں بہت خوسٹحال۔ دنیا دارعلما روقت اورا کابر زمان کی حیثیت سے رہتے تھے گریوب سلسلہ نظامیہ میں داخل ہوئے توسب ثنان و شوکت چھوڑ کرصرف یا دالہٰی میں شنول ہوگئے ۔

اخبارالاخیاریں مکھاہے کہ جن دنو حضرت بینے سراج الدین رضی حضرت خواج مجبوب المہاں سے خرقہ خلافت پاکر جدا ہونے گئے تو آپ کی خدمت ہیں ہدعا کی کہ رہاں ایک عالم دین اور دانش ور مفکر ہے جس سے ہمیں تاب بحث و مناظرہ مہیں ہے مگردہ عام طور پرسائیل دینیہ برگفتگو کرنے آجا تا ہے۔ آپ نے فرمایا جکر مذکروں وہ ایک دن آپ کام یہ ہوجائے گا۔ خیانچالیہ اسی ہوا۔

معارج الولايت كے مصنّف ملحقة بين كم علاء الدين صحح النب فريشي تقے۔ آپ كانسب امهرصزت فالدين وليدرضي النهومندس ملتاب - كمت بين كه شيخ وفي سراج قدس سرة كے بہاں آنے سے پہلے بڑے تنگراندا نداز میں رہا كرتے تصاور دولت اعتشام میں گزر کیا کرتے تھے آپ کی یہ بودد باش اور جامو جلال کی خری صرف خوا مِنظام الدین اولیا رالتٰدکو پہنچیں۔ تو آپ نے غصے میں فرما یا کہ میرا پر گنج شکر ہے اوروہ مصری کاخزامہ ہے۔ کر تکبر کی بوتک بہیں مینتف اپنے آپ کو گنج شکرسے بھی ا مانا وربر ترخیال کرتاہے۔ یا المنداس کی زبان کولگام دے کہتے ہیں۔ یہ بات مجتے ہی علاء الدین کی زبال گنگ ہوگئی کیکن جب سراج الدین رصنی سے بعیت ہوئے توزبان کھل گئی۔ اور بھربے دربے زمدو تقوی سے بندمقامات پہنچے کتے ين حضرت الشرف جها مكيرسمناني قدس سرهٔ اپني سلطنت كوخير باد كهد كرحضرت خصر عليه السلام كى دا بنائى سے آپ كى فدمت بين ما عز ہوئے۔ تو بہت سے مدا رج ماصل ك آپ کے فرنه ندا درسجادہ نشین نور الدین قطب عالم آپ کی توجہ سے قطب عالم بنے ین نفیرالدین مالک پوری آب کے فیفسے ہی مقامات عالی کو پہنچے وہ آپ کے ہی مرید تھے۔اللہ تعالیٰ ایک اور مقام پر کھا ہے کہ جن دنول شیخ علاءالدین صفرت سینیخ افجار میں ایک اور مقام پر کھا ہے کہ جن دنول شیخ علاءالدین صفرت سینیخ سراج الدین انی فلدس مرؤی فلدمت میں سر فراز ہو ئے اور دنیا وی خوا ہشات اور مال و منال سے دبتہ واری کا اعلان کیا۔ تو وہ اپنے پیرومر شد کے سفر میں ہم سفر دہنے۔ درولیٹوں کے لئے طعام پکا کہ ساتھ ہوتا ۔ بیگرم گرم دیگئے جضرت شیخ علا رالدین سر بر پر کھ یلتے اور صرت کے ساتھ ساتھ جلتے۔ اس دیگئے کی گری سے آپ کے سرکے بال جھڑ گئے تھے جضرت شیخ انی اکثر اوقات ال مقامات سے بھی گزرتے جہاں شیخ علار الدین کے رشتہ دار ہڑی شاہانہ نہ ندگی لیسر کرتے تھے۔لیکن آپ نئے باؤں اپنے شیخ کی سوادی کے ساتھ ساتھ جلتے۔ گراپنے بھائیول کو کرتے تھے۔لیکن آپ نئے باؤں اپنے شیخ کی سوادی کے ساتھ ساتھ جلتے۔ گراپنے بھائیول کو کرتے تھے۔لیکن آپ نئے باؤں اپنے شیخ کی سوادی کے ساتھ ساتھ جلتے۔ گراپنے بھائیول کو کرشتہ داروں کو اس شان د شوکت میں دیکھ کر صرت علار الدین برکوئی د نیاوی تا تر نہ ہوتا الدین برکوئی د نیاوی تا تر نہ ہوتا الدین برکوئی د نیاوی تا تر نہ ہوتا الدین برخوش خوش برخوش برخ

ایک بارھزت شنے علامالدین قدس ہو کی خانقاہ پر جیند قلندرا پہنچ -ان کے پاس ایک بلی تقی جود ہاں آگر گم ہوگئی اور کہیں جاپی گئی۔ قلندروں نے صنرت کو کہا کہ آپ کی خانقاہ میں ہاری بلی گم ہوگئی ہے -اسے کہیں سے تلاش کر کے ہیں دو۔ آپ نے فرمایا - میں کہاں سے تلاش کرووں ایک قلندر نے کہا "شاخ آ ہو" سے تلاش کرو گر ہمیں لاکر دو - آپ نے فرمایا تہیں تو شاخ آ ہو ہران کے سین سزا ملے گی ہمیں لاکر دو - آپ نے فرمایا تہیں تو شاخ آ ہو ہران کے سینگی سے ہی سزا ملے گی ایک اور قلندرا آگے بڑھا اس نے بدز بانی شروع کردی -اور ہے لگا -ہماری بلی تودینی پڑے گی ۔ ہم اپنی بلی کہاں سے لائیں ۔ کہا ہم اپنے ضیبوں سے لائیں ۔ کہا ہم اپنے خوایا ہم اپنے خوایا ہوئے ۔ تو ہاں تہیں تو نہادر نے فرمایا کہاں سے ہی ملے گی جیب قلندر فالقاہ سے روانہ ہوئے ۔ تو ہاں تو رہیں آ د ہا تھا ۔اور جی قلندر فالقاہ سے روانہ ہوئے ۔ تو ساختے سے ایک طاقتور ہیں آ د ہا تھا ۔اور جی قلندر فالقاہ سے روانہ ہوئے ۔ تو ساختے سے ایک طاقتور ہیں آ د ہا تھا ۔اور جی قلندر فالقاہ کہ د یا جس نے خوایا کہا تھا ۔اور جی قلندر فالقاہ صادر ایک کرد یا جس نے خوایا کہا تھا ۔اور جی قلندر کو اور اس وقت مرگیا ۔ یہ وقوں کہا تھا ۔اسے اپنے سینگوں پر اس کے خوایے اس قدر سرج گئے ۔کہوہ اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقوں میلی لانے کو کہا تھا ۔اس کے خوایے اس قدر سرج گئے ۔کہوہ اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقوں کے دور اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقوں کی دور اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقوں کے دور اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقوں کے دور اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقوں کے دور اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقت کی کور کی دور اسی وقت مرگیا ۔ یہ وقت کی کور کور کی دور کی

تلندرابنی گتاخی کی سراکو بینج گئے۔

شخ علادالدین قدس مره کی فانقاه کافی پیمت زیاده تھا۔ ہزادول دو پیردونہ
لوگول کے کھانے پرخرج ہوجا تا تھا۔ جومسا فررحاجت مندمقامی یا غیرمقا می آ بالیہ
کھا نامتا۔ جب بیخر باد شاؤ وقت کوئی توسخت جرال ہوا۔ کہ ایک درولیش اس قدر فرج کے کہا ل سے کہ تا ہے میری سلطنت کا سادا مال شخ علاء الدین کے دوروزه خرج سے تھی کہ ہے ایسے فعنول خرج آدمی کو منہر میں دکھنا اچھا نہیں ۔ چانچ اس نے عکم دیا کہ شہر سے باہر سادگاؤں میں کو نت کرلیں چانچ حضرت شخ منہر تھی پڑکر دوسال تک موضع ساریمی باہر سادگاؤں میں کو نت کرلیں چانچ حضرت شخ منہ میں ہوتا تھا۔ اس خیام پذیر ہوگئے۔ اورا پنے فادمول کو کہ مدیا کہ جس قدر ہما داخرج سنہ میں ہوتا تھا۔ اس کے پاس مال و دولت تو نہ تھا عرف والدی میراث سے دو باغ ملے تھے۔ ان سے کہ پاس مال و دولت تو نہ تھا عرف والدی میراث سے دو باغ ملے تھے۔ ان سے کہ پاس مال و دولت تو نہ تھا عرف والدی میراث سے دو باغ ملے تھے۔ ان سے کہ پاس مال و دولت تو نہ تھا عرف والدی میراث سے دو باغ ملے تھے۔ ان سے کہ تھا۔ وہ خرائہ غیب سے آتا تھا۔

ا خارالاخيار شنجرهٔ چنتيه اورمعا درج الولاميت كے موتفین نے آپ كی و قات يكم رحب سنده تكم رحب سنده تكروس معلى سند علاء الدين جوازعام بوديش زينت تاذه ليكن ارحب الآمد ولي رمب علاء الدين استار نخش و لي رمب علاء الحق و الدين استار نخش د گروالي علاء الحق و الدين استار خمل و كيروالي علاء الحق و المدين استار تر

مخدوم حمّام الدين فتح بورى قدس سرة بسي عقاع فافا وصاف موسون

تقے کشف وکرامت بیں معروف تھے معاصب معارج الولایت ملحقے ہیں کرحمام الدین اولبائے تاجدارا ولیائے باو قاریس ملنے جاتے تھے . آپ نے اپنی خصوصی توجہ سے بے بنا مخلوق کی را ہنائی فرمائی ۔ آپ کے خلیفہ شنح برص حیثتی رحمت اللہ علیہ کو بچین سے ہی تربية دى او نظاهرى وباطنى كمالات كسيني ديا. كهته بيس كه شيخ برهن الهي جيمال كى عمرين تقے كرآپ كے والد ما جدنے انہيں حضرت شيخ حسام الدين كى غدمت ميں بیش کردیا۔اورعرض کی صنورمیرے کئی بچے بچین میں ہی فوت ہو گئے ہیں۔اس بچے کو میں آپ کی مگرانی میں دیتا ہوں تاکہ بیطمعی غریک پہنچے۔ آپ نے فرمایا۔ انشاء النّديرببت برا پيربنه كا- باب نے عيركها واكراس بيكو تقور العام عيع عطافوا دياجكة ومرادل خوش بوجائ كا-آب فرمايا- يه عالم متر بوكارانشارا للله تعالى باب في عرض كيا يصنور علم معرفت المبير كم بغيرك في يتنيت بنيس د كهتا . أب نے فرما یا -التد کے فصل سے عارف ربانی بھی ہوگا-اور عربھی لمبی طے گی جیا نچہ صرت شخ حمام الدين في جيس فرما يا تقا- وليديى بوار

یشخ صام الدین معادج الولایت کی روایت کے مطابق سندھ میں فرت

شد بجنت بجدنی جهب ن فت یخ دین منتی حت م الدین گفت کروربال رهلت او کفت مرد ولی حسام الدین

نامورعلماء میں شار ہوتے تھے. نہایت متقی اور متورع تھے۔ ہزاروں لوگ آپ کی توجہ سے ہدایت یا فتہ ہوئے بنوا جرا ختیا را لدین عمرا میرچی قدس سرہ آپ کے خلیفہ تھے۔

شنجرہ چنتیہ اوردوس ندکروں ہیں آپ کا سال دفات سائے ہماگیا ہے۔معادخ الولایت کے مولف نے موجہ تحرید کیا ہے۔ گرہماری تحقیق میں بہلا قول درست ہے اور ہم نے جتنی بھی کتا ہیں دکھی ہیں۔ ال میں سال وصال انجے ہی دیکھا ہے

قاصنی ساد کی که شکش ما در گیتی نزاد شدچهانددارالفتا آن شیخ والا درعدم کن بیان محبوب خالق سال وصل آن گر

سائک مخدوم وسم مخدوم عالی کورت ۱۰۸ه سر

مشخ سعداللدكيس وازبن في متوكل قدس مرفي بها غيرالدين كفيرس وازبن في متوكل قدس مرفي بها في الدين علاوه آپ كواپنه والد ما جدشخ متوكل دمتالله عليه سه بهي فلانت عاصل على - نهايت پاكربيرت اورمتقى بزرگ تق معارخ الولايت كمولف نه لكها مه منخ سعدالله كوحزت خنرعليه السلام نه ايك كييه ويقيلى عطا فرمائي عقى - جهروقت درم و دينارسه بحرى رستى عقى - شيخ كوجب صروتت درم و دينارسه بحرى رستى عقى - شيخ كوجب صروتت درم و دينارسه بحرى رستى عقى - شيخ كوجب صروت من متن التي كيد من منهور موكفي الله بهروت بعرق الله يحت الله يكومزت منه منه و المنه و رمو كفي الله بهروت بحري الله يكومزت بعرق الله يكومزت بعرق الله يكومزت بين منهور موكفي الله يكومزت منهور منهور

ميرسيدا نثرت جهانگيرسمناني قدس سرؤ الساحي بعي خرقهٔ خلافت ملاتقا۔ معارج الولايت في آپ كاسال وصال ٢٠٠٠ مكام كلها س شنخ سعدالتُدكيب وارپر تندحیا زدنیائے دوں اندرخیاں ناصر دین کاشیف آمد رعلتنس بم عيال كر ويد تاج عارفسان

آپ خطر بندوتان بيرسيدان رف جها بجرسمناني قدس النداب المسامي كي عظيماوي اور نها بت متقی بزرگ تھے۔آپ علا رالدین نبگالی رحمۃ اللّٰہ علیہ کے مریدا ورخلیفہ تھے آپ کوچارول سلسلول سے نیض ملا تفا - کیو نکہ آپ کو دقت کے تمام بران عظام کی عجبت میسّر ہونی تھی اور آپ نے ہراکیہ سے روحانی تربیت پائی تھی۔ آپ کے والد ماجد سلطان اہاہم سمنان کے بادشاہ تھے ان کی دفات کے بعد سد برہما گیرسمانی تخت نشين بوك. چندسال حكومت كى عير تارك ماج وتخت بهو كئے. اور فق إو كے صلفي دا قل ہوگئے۔

معارج الولايت كے و تف نے لطا بُف الثر في كے والے سے مكھاہے كم سيّدا متْرِف جبا تُكْير ما درزاد ولى التّديّق سات سال كى عمر من قرآن ماك حفظ كر ليا ا در اتوں قرأت میں ماہر ہو گئے تھے جودہ سال کی عربس عقلی اور نقلی علوم سے فاع ہوگئے۔اسی سال آپ کے والدماجد کا انتقال ہوا۔ اگرچے آپطبعا قدار ملک کی طرت متوج بذی مگرامراء وربار کے اصرار بیآب تخت شاہی پرعبوہ فرا ہوئے آب امورسطنت سے قارع بو كرمضرت شخ دكن الدين علاء الدولة بمناني قدس سره

اور دورس مثائخ کی صحبت ہیں رہتے تھے۔ ایک دن صرّت ضرعلیہ السلام آئے
اور فرما یا۔ اگرچ آپ کوا مورسلطنت سے فراغت نہیں۔ گرنقش اسم الدرکے اجالی
معانی ذہن تین کر لیں۔ اور اسم فات کو دل کی زبان سے اواکرتے رہاکریں اورالفال
سے واقف ہونا چاہئے آپ صفرت ضرعلیہ السلام کے کہنے پرگامزن رہے آو آپ کو
بے پناہ روحانی فوا کر ماصل ہوئے پھر صفرت فواجرا ولیں قرنی رحمۃ المندعلیہ فوا ب
میں تشریف لائے اور آپ کوا ذکار اولیہ ہے داقف کر دیا۔ آپ سات سال تک
ان اذکار و و ظالف میں شغول رہے رمضان المبارک کی سنا میویں رات آپ فوا فل اوا
کر ہے تھے۔ اور ذکر میں بھی شغول رہے رضایا المبارک کی سنا میر نشر لھیت لائے اور آپ نے
فرایا۔

تهم خداخهای وسم دنیب ئے دول دین خیال ست وصال ست جول

راتب فذا بھی چاہتے ہیں۔اور و نیائے دوں بھی۔ یہ خیب ال مشکل ہے
اورا کیک حبول ہے ، بیٹا یا در کھو طلب فدا و ندی اور و نیاوی معا ملات کیجا نہیں ہو
سکتے۔اگرائیکو مجبوب کی طلب ہے۔ تو امورسلطنت کو بھیوٹر نا ہوگا۔اور مبلدی سفر کرکے
ہند و تان میں جا کر علار الدین بنگالی کی فدرست میں ما صری دیں۔ تاکدان کی دب اطت
سے فدا تک بہنچ سکو صرت ضرعلیہ السلام کے ارشا و برصرت سید میرار شرت جہا نگیر
نے فوراً آباج و تحق کو بھیوٹر دیا۔اورسلطان مجود کو اپنا جانشین مقر کرکے اپنی و الدہ
ماجدہ بی بی فد ہے بیگم سے ہندو ستان جانے کی اجازت لی۔ آپ کی والدہ ماجدہ نے
فرمایا۔ بیٹیا! ابھی تم پیدا نہیں ہوئے تقے۔ تو نھے صرت خوا جا حرکیوی قدس سرؤ نے
فرمایا۔ بیٹیا! ابھی تم پیدا نہیں ہوئے کے ۔ تو نھے صرت خوا جا حرکیوی قدس سرؤ نے
بیٹارت دی مختی کہ اللہ تن کی تا تہمیں ایک ایسا بیٹیا دے گا جس سے تمام دنیا روکشن ہو

تہیں بختی ہول۔

حزت میرجها نیجرتیس سال کی عرمی سمنان سے مندوستان روا مز ہوئے برصغير ميں سب سے پہلے آپ اوچ شراعت د پاکتان ، میں پہنچے اور صفرت محذوم سید جهانیال جهال گشت جلال الدین سے ملاقات کی بڑی روحانی نعتیس ماصل ہوئیں فیال سے روا مذہوئے اور دہلی سنچے بہال بزرگان جیثت کی زیار توں سے فیض عاصل کیا۔ دہلی سے مشرق کوروانہ ہوکر حضرت علاء الدین بٹگالی قدس سرۂ کی فدست میں بہنچے حضرت علادالدین کو صرت ختر علیه السلام نے صرت میرجبا ملیرسمنانی کی امد کی اطلاع مے دى حتى آب اپنے اصحاب كو لے استقبال كے لئے آئے بڑھے ملافات كے بعد بہا بت شفقت اورمجبت سے اپنی بہلی میں موار کیا۔اوراپنے ساتھ خانقاہ میں لے آئے اسی دن آپ کوبعیت فرمایا اورا بنالباس سینے کو دیا بھوڑے ہی عرصد میں آپ نے تکمیل اول کرلی اور آپ کرجہا تگرے لقب سے القب کیا گیا۔ خوقہ فلافت و مع كرج نبوركي ولايت يرامور فرما ياكيا-آپ نے عرض كى صفور جو نبود ميں توايك شربتر کی فراندوائی ہے۔ میری وہال کیا مجال ہو گی سٹیر بترے مرا دھاجی جراغ بہند سهرور دى غليمقه صفرت ركن الدين الوالفنتح بنيره متشخ بها والدين ذكريا ملتا في رحمة الغرطليم تھے۔آپ نے جاب دیا۔فکر ہذکر و تہیں تھی ایک شیر کا بچہ دیں گے جس سے بہلا سيرولا جائے گا- يسے ماكرظفر آباد ميں قيام كرنا-

میرجها نگرسمنانی اپنے پیرومرشد کے ارشاد کے مطابق جو نبور کور وانہ ہوئے۔ پہلے قصبہ محد پور میں قیام فرایا۔ آپ کے پاس اس علاقہ کے علماء و فضلا کی ایک جاعت طفے آئی دوران گفتگر صنور سیدالا نبیاء کے چارصحا بہ کیار کا ذکر جل پڑا حصرت میرجہا نگیر نے چاروں صحابہ کی شان میں ایک رسالہ لکھا تھا۔ آپ نے ان علماء کوام کے سامنے بیدرسالہ پڑھا۔ اس رسالہ میں تمینوں صحابہ کی نسبت صرت علی کرم المتدوجہ

ك مناقب اورمحا مد قدر ب زياده مكھ كئے تقے رحفزات علماء كوام نے اعتراض كيا اورحضرت کورافضی کہا گیا۔ اگرچ صفرت میرجہا بگیرنے انہیں قائل کرنے کے لئے بردی يحث كى اورېر ك و لائل ديئے عران علماركى رائے بتديل شكر سكے دوسرے دن اورزياده علماءكوام جمع بهوئ توييلسله بإقاعده مناظره اورمياحت كي صورت فتيار كركبيا. اورمحضرنام مكها حضرت ميرجها مكيركو تجع عام مين مناظره كرنے بدة ما ده كياكيا ان دنول ایک شخص سیدفال زبردست عالم دین تفاج ج نپورکے تنام علاقریس علماً كرام كاسرياه ماناجاتا عقاءاس في عبرات كوسركار دوجهال جناب عررسول الله صلى الته عليه وسلم كوخواب مين ديكها الهب نے فرمايا -جها مگيرانشرف ميراعگر گوش ہے وہ الیا نہیں ہے جبیاتم لوگ خیال کرتے ہو۔اس کے مقابلہ میں مذہب و تميص كام إترى ية ولائل-الرفيرية چاست بورتومعذرت كرك ما ئب بوكم صاف دلی سے ال کے پاس عاصری دو سیدخان علی علی الصباح آپ کی فدمت میں حا صر ہوا۔ قدم بوسی کی اور عرض کی صنور اعلماء کے استفسار کا جواب میں دولگا اب وجاب دینے کی صرورت نہیں تما زعمد کے بعد علماء کوام نے وہ محصر نامہ بیش کیاجس میں تینو ل صحابہ کوام کو صفرت علی پر فضیلت تا بت کرنے کے لئے ولأنل تق ابھى صرت ميرجها مگيرا مترت نے زبان مذكھو لى عقى كدسيد خال نے علما وکوام کو مخاطب کرے فرمایا کہ آپ کا اعتراض مبرجہا نگبر رپھرت اتناہی ہے كرا نهول في حضرت على كرم الله وجهد كي فضيلت مين مبالغه كبابيد النول في كها بال إسيدخان في كهاريدا عزاض الشخص بدكيا جاسكتا بع جوسيد مذ بو-يراعتراص سيديرينين موسكتا كيونكرا أركوني شخص البينے مال باپ كى عزت ادرمراتب بیان منہیں کر ٹاتواسے اسلام میں کوئی تھا مصل منہیں ہے۔ اسے اپنے والدین کے اوصات اور مناقب بیال کرنے سے بنیں رو کا جاسکتا ہے علمار کوام

نے فرمایا - کہ اس کمتہ پر پہیں کسی مجتہد کا قول جا ہینے یا کسی معتبر کتا ہے سند
جا ہیئے سید خان نے جا مع العلوم کی ہے عبارت بیش کی - إلناس اُ سُباالکّد بَیا
لایکلاُم السوحُبل عَلیٰ البَوی کہ دبسد ہدا دلوگ دنیا کے بیٹے بی کی شخص
کی اس بات پر ملامت نہ کر وکہ وہ اپنے والدین کی تعرفی کہ تاہیے) بیروا بیت ن
کرمعترض خاموش ہوگئے۔ اور بجت و کراد کوختم کرے مطلق ہوگئے۔
حضرت میرا نشرف جہا گیرنے جب دیکھا کہ علما مطلق ہوگئے ہیں تو تمام خلصین
کے لئے دعا خیر کی سید خان جو ابھی تک بے اولاد تھا ۔ چار بیٹوں کی نشارت دی جو
عالم خاصل اور کا مل نی العلم ہول کے ۔ اس کے با وجود جن معترفین نے دل میں
کدورت دکھی وہ اپنی زندگی بین کئی مصائب میں میتلا ہوئے۔

کردرت دکھی وہ اپنی زندگی بین کئی مصائب میں میتلا ہوئے۔

پرواندانال سوخت كرباشع با فناد با بدسوختكال سركردرافناد برافناد

تبض کرلی وہ نما دخیا نہ کمل ہونے تک شاعظا۔ بھا نڈا دردوس ہوگ اس کے سریانے پر پہنچے دیکھا تو واقعی وہ مرا بیا ہے۔ رونا دھونا سٹردع کیا اگرچے انہوں نے بڑی معافی مانگی معذرت کی مگرائپ نے کہا اب کوئی فائدہ منہیں۔ اس کوامت کی شہرت نے تنام علاقہ کے لوگوں کو آپ کا عفیتدت مند جا دیا۔

صرت عاجی شخ جواغ بندقد س برهٔ اس و لایت کے مالک تھے۔ پہلے پہلے
والب کوصرت میر جہا بگیر بمنانی کی یہ تقبولیت اور نظرت پندرند آئی۔ لیکن آپ کو
التی ہمت نہ تھی کہ اسپ کے خلاف اُ تھڑ کہ کوئی ایسا کا م کرسکیں بصرت کو لکیلیف بنچا
سکیں اسی اثنا میں ایک شخص کہیر بر بر پوری جود رہا رکا بہت بڑا امیر تھا۔ ظاہری علوم
کے صول کے بعد سوچنے لگا۔ کہ بیں کسی کا مرید نہ ہوں اور یا طنی کمالات عاصل کہوں
ایک دات خواب میں دیجا کہ ایک برخ دنگ بزدگ نے اسے اپنا مرید بنا ابیا ہے
مالک دات خواب میں میجا کہ اس سٹہر کا بزدگ توجاجی شیخ ہیں۔ بیں امنی کے پاس
عافر اسے اپنا مرید بنا ابیا ہے
عاد ک میں صاحر ہوا۔ گر بی نے آپ کود کھا، جو شکل وصورت کھے خواب میں دکھائی
گئی تھی وہ نہیں ہے۔ بہر مال میں کچھ دن آپ کی خدمت میں دیا۔ گرا انہوں نے
مجھے بعیت نہ کیا کچھ د آوں لید میں میر سیدا شرف جہانگیر کی خدمت میں ماحز ہوا
د کھے بی بیجان لیا کہ میر و بی شکل وصورت ہے جو النڈ تعالیٰ نے تھے خواب میں
د کھائی تھی۔ میں اسی وقت آگے بڑھاا و ربعیت ہوگیا۔
د کھائی تھی۔ میں اسی وقت آگے بڑھاا و ربعیت ہوگیا۔

میرے بعت مونے کے بدآ بنے حاصر بن محلی کو مخاطب کر کے فرایا کیر وہی نتیر کا بچہ ہے جس کی طرف شنخ علاد الدین نے اشادہ فرایا تھا۔ کبیر عیبے امیر ور نبیس کی بعیت کی خرسنی آوس سن خواجی بڑے فضبن ک ہوئے۔ جلال بیں ا کہ کہا کبیر کو انی میں ہی مرعائے گا۔ یہ بات سن کو صرت میرا شرف جہا بگیر نے فرایا غم مذکرو۔ تم پیر کبیر بنو گے۔ اور بوٹر سے ہو کر وفات پاؤ گے۔ تم ا بناکام کرو

ادرکسی کی پرواہ مذکرو پیرکبیر نے کہا دیپلے عاجی شنخ مرجائے ۔ پھر شنج کبیرکو موت
اسٹے ۔ چڑنکہ یہ تینیوں ادشادات اولیا والٹدکی زبان سے نکلے سنے ۔الٹدنے پولے
کردیئے ۔ شنخ کبیر پچیس سال کی عمر میں بوڑھے دکھائی دینے گئے۔ آپ کے بال بقید
ہوگئے ۔ شنخ عاجی چراغ شنخ کبیر کی زندگی میں ہی فوت ہوگئے ان کے پاپنے سال لعدشنخ
کبیر بھی فوت ہوگئے ۔

سنجره سينتيمين للهاس كرحزت سيدا منزف جها الكرو بتورك سيركه في كع لعب تھچیو چپر نٹرلیٹ تشرلین سے گئے ان رنول وہاں ایک کا مل جرگی رہتا تھا۔ اس جرگی کے پانچ سوچیے ہروقت فضایں برواز کرتے رہتے تھے حضرت کواس ج گی سے واط پڑا۔ جو گی نے کئی قسم کے استداج سنعبدے اور حلے گئے ۔ مرحزت پرمیر جہا تھے استرف ہروارسے بیج جاتے. ہخ تنگ ہکرج گینے اپنی فنکسن مان لی اور آپ کی فدمت بي عاصر بو كراسلام قبول كرليا و اوراين تنام چيو ل كو اي كامر مديموكيا حضرت جہانگیرنے جو گی کی قنام گاہ پر ایک خانقاہ تعمیرکدائی۔خاص محرہ بنوایا اورایک فرصت بخش باغ کی بنیادر کھی۔ جے روح آباد کے نام سے مشور کیا۔ وہاں سے شخ بدیح الدین مدارکوسا کھ نے کہ چے بہت الله کوروا مر ہوتے جرمین الشریقین کی زیارت سے فارغ ہوئے توشخ ید یع الدین تو واپس مندو تنان آگئے گرمیار شرت جہا نگر مدینه منورہ سے نجعت اسٹرٹ کوروا نہ ہوئے اور و ہاں سے لبندا دسٹر لیت اور کر ملامعتی پنچے۔ و ہاں سے روم پنچے جہاں صرت مولا ناجلال الدین رو می رحمة التدعليد كم سجاده نشين اور بليط سلطان دالاوردوسر سعمشائخ وقت كي زبارت کرتے ہوئے شام کوچلے آئے۔ دمشق میں صفرت فخز الدین عواتی کی زیارت کی ووباره كممكرمه بيني اورج اواكرك بغدا وآئے حضرت غوث الاعظم الم المحتبيق امام احدبن منبل رصنی الندعنهم کی زیارات بیعامزی دے کر کاشان جا پہنچے کیئے

عبدالرتاق کا شانی رضی الله علیه کی زیارت کی و بال سے سمنان آئے۔ ان دنول
آپ کی بہشرہ ابھی زندہ تھیں ۔ ان کے پاس کھی عرصہ رہ کر اس کی دلد ہی کی بھر
د بال سے اجازت مے کرمشہدمقدس پنچے ۔ ایام علی رصا کے کا شانہ بو منت کف
ہوئے اپنی دنول امیر تمور گورگانی بھی صرت امام علی رصا کے مزاد بیّد انوا دکی نیآر
کو آیا ہوا تھا وہ صرت میر جہا ٹیگر انٹر ف کا معتقد تھا۔ فدمت بیں صاصر بمو کر
قدم بوس ہوا۔

ای سنیدسد واند ہوکر ہرات آئے اور ماور النہرسے ہوتے ہوئے بنادا کے
یاس صفرت خوا جن نقشیند قدس سرہ کی ذیارت گاہ پر ماضری دی ایک عرصہ کمٹ ہال
قیام پذیر دہے۔ وہاں سے بھی خرقہ فلافت ماصل کیا اور سوک نقشیندیہ کے
مناصب ماصل کئے وہاں سے جی کر ترک تان پہنچے۔ اور صفرت خوا جراحد لیبوی
کے بیٹول کی ذیارت کی وہاں سے قند ہا ر۔ غزنین کا بل اور بخارا سے ہوتے ہوئے
متان پہنچے۔ مثال سے جل کر پاک بین آئے حصرت خوا جرد بیالدین گنج شکر کے
مزار کی زیارت کی۔ وہاں سے وہی پہنچے۔ وہی سے اجمیر شراحت پہنچے۔ اور صفرت خواج
مورا رکی زیارت کی۔ وہاں سے دہی پہنچے۔ وہی سے اجمیر شراحت پہنچے۔ اور صفرت خواج
مورا رکی زیارت کی۔ وہاں سے دہی پہنچے۔ وہی سے اجمیر شراحت پہنچے۔ اور صفرت خواج

ا جیر شرافین سے دوا نہ ہوکہ دکن میں صفرت سید گلیبو د ما ذرحمۃ النہ علیہ کی فدوت میں صاحری دی و بال سے سرانید ہیب د سری انکا) جا نکلے۔ اور پچھ عرصہ کے لبدگرا کا علیا واڑ کے داستے سے ہند وت ال آئے اور ادادہ کر لیا کہ اب عالم اسلام کے بزرگان دین کی ذیادت سے سفین فیض بردگان دین کی ذیادت سے سفین فیض ہونا چا ہئے۔ پچھ عرصہ اکدام کمرنے کے بعد کہ براور سیدعلی ہمانی قدس سرہ کے ساتھ ونیا کی سیرکو دوا نہ ہوئے۔ اپنے پیرومرشد علاد الدین منور کی فدمت میں بنگالیں صاحر عاصرت میں بنگالیں صاحر عاصرت میں عمدان چیت کے شرکات صاصل کئے۔ صفرت میرعی سمدانی کے مطرت میرعی سمدانی کے صفرت میرعی سمدانی کے معارت میرعی سمدانی کے سرکا سے صفرت میرعی سمدانی کے مصفرت میرعی سمدانی کے صفرت میرعی سمدانی کے سات

ساتھ سفرطی الارض کے اندازیں کیا گیا۔ کتا بول میں تکھا ہے۔ کراآپ نے اس سفر
میں ایک سونو بیران عظام سے باطنی فیضان عاصل کیا تھا۔ تیسری بارا وچ شر لیت
پنچ تو مخدوم سید مبلال الدین مخدوم جہا نبال قدس سرہ سے بڑا فیض بایا ۔ حضرت
مخدوم جہا نیال آج کک چارسو سے زیادہ مث کخ سے فیض پاچکے تھے۔ اس فیض
سے حضرت میرجہا نگیرا شرف کو بچرا لچدا حصد دیا گیا۔ اس دوعانی سیر کے بعد
اپ اپنے مسکن بچرا کردیام فرا ہوئے۔

ایک دن حفرت پرمیرجه گیرا نفرت قدس به ره دو جه آباد می تشراف فرما سخته بهت سے بزرگان و قت بھی عیس میں دوجود تھے۔ ایک قلندرعلی نامی اپنیائی سوقلندرسا تھیوں کو لئے ہوئے آیا اور آئی کی عبس میں آئی پنیچا اور لاطائل اور بے معنی گفتگو متروع کر دی۔ بوچھنے لگا۔ آپ نے جہا نگیر کا خطاب کہاں سے بایا ہے وہ فرمایا۔ آپ کی جہا نگیری کی تصدیق کیا ہے اور مجھے کس طرح لفین آئے کہ آئی جہا نگیر پیر ہیں قلندر کی جہا نگیری کی تصدیق کیا ہے اور مجھے کس طرح لفین آئے کہ آئی جہا نگیر پیر ہیں قلندر کی جہا نگیری تاریخ ای کہا ہے روان گیر ہی جہانگیر پیر ہیں قلندر کر ہوائی کی جہائی کے جہرے بی جبانگیر بی جہانگیر پیر ہیں قلندر کر ہوائی اور دیم کی تھیر ہوگیا روان کینے والا ایمی ہوں۔ بیر بات سنتے ہی قلندر کر ہو گھرایا۔ اور و بیں ڈھیر ہوگیا مریدا ورجم ایس میں شور بھی گیا۔ قلندر کے تمام مریدا ورجم ایسی آپ کے قدمول پر گریڈے اور مرید ہوگئی

معارج الولایت میں مکھاہے کہ ایک دل صفرت جہا نگر استرف قدس مرؤکو جوگیوں کے ایک بت خانے میں اسلام کی حقا نیت پرمناظرہ کرتا پڑا ان لوگوں نے آپ کی ولایت کی پکی دلیل ربر ہان قاطع، طلب کی۔ آپ نے بتول میں سے ایک پیقر کی مورتی کو اشارہ کر کے اپنی طرف بلایا۔ وہ اسی وقت آپ کے قدموں میں آ گری اور صفرت کی ولایت کی تصدیق کا اعلان کرنے لگی اس کو امت کو دمکھ کم

كئى ہزاد مندوسلمان ہو گئے۔

معارج الولایت میں ایک اور واقع لکھاہے کہ صرت جہا نگرانٹرف کی زندگی سے لے کہ آخر تک آپ کے باغ میں کوئی جانور پیچھ نہیں کہ تا اآپ کے روضے سے متصل حوض کا پانی آج تک مکدر لگدلا، نہیں ہوا۔ آسیب ندہ میر آپ کے دوضہ پرنظر بڑتے ہی صحت یا ب ہوجا آہے آپ کا اسم گرامی بچھ کہ آسیب ندہ پردم کریں تو آسیب بھاگ جا تاہے۔

آپ کے وصال کا واقعہ کتابوں میں بول درج ہے کہ صرت سیدجہالگار ترن سمنانی رحمۃ اللہ علیہ نے محرم الحرام کی تا میسویں تاریخ کو اپنے وقت کے چیدہ پیمیدہ مثائخ کو جمع کیا۔ ان سے ملاقات کی اور ایک ایک کو الوداع کہا۔ اپنے دینی بیٹے عبد المرزاق کوخوقۂ فلافت عطافر مایا۔ اور اپناجانشین قراد دیا۔ نماز ظہر کے لید قوالوں کو بلاکر مجلس سماع منعقد کر ائی۔ قوال سعدی شیرازی کا بہ شعر بیاھ دسے تھے۔۔

گربدست تو آمدست اسلم

قسندر رضین برکی مسلم

قسندر رضین برکی مسلم

داگرائی کے ماعقد سے میری موت آئی ہے توسم نونشتہ قلم برراهنی ہیں

یرمنفرسن کر آپ برو مبدطاری ہوگیا -اور بے ہوسٹی طاری ہوگئی آپ

اس قدر ترشی کے کر مدوصاب سے باہر تھا -ایک لمح تسکین ملی تو قوالوں نے یہ

سفر سنر درع کیا۔

خوب ترزیں دگرچربانشد کار یارخنداں آ مدبجا نب بار راس سے بڑھ کراچھا کام کیا ہو گا کہ بار ہنتے ہوئے بارکے قدموں میں جاگئے۔ ماس سے بڑھ کراچھا کام کیا ہو گا کہ مار ہنتے ہوئے بارکے قدموں میں جاگئے۔

سيرسبنند جال جب نال دا عال مي رو نگارخت ال را داینے مجوب کے حن دیال کوجی محرکہ دیکھ سے محرسکراتے ہوئے مجوب كومان قربان كردے.) یا شعار سفتے ہی آپ کے دل میں آگ مگ گئی سینہ دھر کنے لگامتی و شوق سے مرغ نسمل کی طرح تراپنے لگے۔ اس ہی ہے آپ کی طرح ذبین مید اوشنے لگے آخرا كي آه تكالى اورجان جان ستان كے بير دكردى . اناللدوا نااليهراجول حضرت ميرهما بكيرا مشرت قدس سرؤكي وفات تنائيسوي ماه محرم الحرام منه ١٠٠٠ كو بو ئي- اس وقت آپ كى عرايك سوميس سال تقيى ـ دوج آباديين جو باغ آپ نے تعمیر کیا تھا۔اس میں د فن کئے گئے . حضرت نے بہت سی قابل قار تصانيف ياد كارزمانه هيوارس - بشارت المرمدين اور مكتوبات بهت مشهوريي آب كے مالات يرلطالف استرنى ايك مشهورومعردت كتاب بے۔ جورفت المعالم دنيب بحبنت

پورفت الدعالم دنیب بحبت جناب میرانشرت سنیخ حق پیر بسال انتقت ل آن سنید دین عیال سند راه برقطب جهانگیر امام مومنال میرجهانگیر + مکمل عارف والاجها نگیر دبه تکمار)

واصل کامل مشرلیت + ولی مهند میرجنت + سید شرلین سید مدم ها مدم ها مدم ها واعد المشين مقبول + سيدممود ولي شريين مده مهمود عن شريين مقبول + سيدممود ولي شريين مده مهمود ولي شريين مده مهم مهمود ولي شريين مده مهمود ولي شريين معمود ولي شريين مده مهمود ولي شريين مده مهمود ولي شريين مهمود ولي شريين مهمود ولي شريين معمود ولي شريين معمود ولي شريين مهمود ولي مهمود ولي شريين مهمود ولي مهمود ولي شريين مهمود ولي مهمود ولي شريين مهمود ولي مهمود ولي شريين مهمود ولي مهمود ولي شريين مهمود ولي شر

چردنت از فنا سوئے دارالبعت عمر پینیوا را سنا ئے لیستین بگوسال و سے قدوہ وستگیر مینٹیو اسٹے لیستین میر پینٹیو اسٹے لیستین میر پینٹیو اسٹے لیستین میر پینٹیو اسٹے لیستین

آپ صرت شخ نفیرالدین چراغ دہی قدس مولا تا خواجی قد سس سرہ اسرہ کے خلیفہ فاص تقے مولانا معین الدین عمرانی رحمۃ اللّه علیہ کے شاگر دیتھ اور صرت قاضی شہاب الدین کے ات دمکرم تقے مصاحب اخبار الاخیار فرماتے ہیں جن دنوں صفرت مولانی خواجگی دہی میں زیرتعلیم تھے۔اور صفرت مولان معین الدین کے سامنے ذالواد ب طے کئے ہوئے

تحے ساتھ ساتھ ہی شنے نصیر الدین محود چراغ دموی دعمۃ الشعلیہ سے باطنی دوز سکیماکرتے تھے مولانامعین الدین کو شنخ نصیرالدین محودحراغ وہوی کے پاس ان كاجاناا ورتصوت كرموزها صل كرناا عجانبين مكت عقار آب انبين والماني سے منع بھی کیاکرتے تھے۔ مگرمولا ٹاخوا علی کو دو توں سے عقیدت و مجبت بھتی وہ ان دو نوں بزرگوں کی قلبی پر کاش کی وج سے ایک گونہ عذاب ہیں تھے ایک دفعه ولا نامعین الدین کوضیق النفس اور تے کا شدید حمد موا اطبارتے جاب دے دیامولانا بھی اپنی ذندگی سے مایوس ہوگئے مولانا خواعلی نے اپنے ات دمكرم كى خدمت ميں بنايت وردسے عرض كى حضوراب اطباء آئے علاج ے عاجر- ہو گئے ہیں . اور عزیز واقارب بھی آپ کی ذند گی سے مایوس ہو چکے ہیں۔ اس ناامیدی کے عالم میں اگر آپ اجازت دیں تواللہ سے التجا کی جائے اوركسي مرد فداس استدعاكي جائے وال دنول د بلي شهر مي حضرت شيخ نفيالدين محودچراغ د ملی تجاب الدعوات ہیں اگر آپ ایک باران کے پاس تشراف ہے عائي اورات معافراين - بوسكتاب كهاب كد عاسه التدتعالي صحت عطا فرمائے۔ مجھے کا مل یقین ہے کہ ان کی لگاؤ کیمیا اٹرسے کا مل شفا مل جائے گی به بات سن كرا كرچه مولانا كا ول تونهيں چا ٻنا تھا۔ مگرمرض كى شدت اورلاعلاج ہونے کی وجسے راحتی ہو گئے اور صزت شخ نفیرالدین کی فدمت بیں ماضر ہونے کے لئے تیار ہو گئے حضرت شخ لفیرالدین جراغ داوی کو مولانا کی بھاری کے علم میں ہنے کی اطلاع ملی۔ تو گھرسے اعظے اور آپ کے استقبال کے لئے آگے بڑھے اپنی فانقاہ میں لے جاکہ بڑے اعزازے سطایا ۔ ہر قسم کے کھانے دستر خوان پر سجادية. اورساده چاولول كاايك طشت سائت لاركفا يجردي كاايك بياله جو بظاہراً دم كى من والول كے لئے نقصان دہ ہے . بيش كيا اور فرما يا صرت

مولانالبم الله كيجة اوركها يئ مولانات طوعًاد كرما بيند لقم الحلي اورمنه مين دورون بربوكي حلى كم مين دال و درسترخوان مين اليا تولانا كا دمه اوركها نسى ذورون بربوكي حلى كم آپ نے و مال قے كودى اسى وقت طشت لاكرد كھا گيا . اور دولانا كے بينے سے مبغم اور سفرا تمام و كمال بائر لكل آيا . اسى وقت آپ كاسينه بلكا ہو گيا اورائي كوسىت كا مله ہو گئي آپ صحح البدن گھر گئے . اور دوسرے وال سے صحت مند ہو گئے اس وال سے مولان معين الدين محفرت بينے نفير الدين محود قدس مره موسى تا مند ہو گئے۔

مولانا خواجگی نے نور باطن سے امیر تیمور کے دہلی پر حکہ کی خریایی۔ تو اس کالپی بن نشر لیف لے گئے کچھ عرصہ وہاں ہی قیام فرما ہوئے۔ امخر کار ۱۹ اوھ بن فرت ہوئے اسپ کامزار کالپی میں زیادت گاہ خلق ہے جواجگی چہ ل رفت زیں دار فنت سال دھسل اس و لی متقی خواج سی دل فرمود نیز خواج سی کی تا می و لی ایز دی

آپ بھی صرت نصیرالدین محود چراغ مستخ احمد تھا نیسری قد س سر فہ اور ملی کے سریدا و دخلیفہ ہوت تھے ۔ اگر چرائی کے درمیان محبت اور الفت تھی۔ گر اگر چرائی سے اور حضرت مولا ناجوا جگی سے موافقت نہ کی حتی کہ امیری تمید کی ایس نے دہلی چوڑ نے میں مولا ناخوا جگی سے موافقت نہ کی حتی کہ امیری تمید کی فرجیں دہلی پر حکد آور ہوگئیں اور دہلی اور اس کے مضافات کو تاخت و تا راج کم موافقت و تا راج خم ہوا دیا۔ مولا نا احد اور آپ کے رہ تنہ دارگر فنار کر سلے گئے تاخت و تا راج خم ہوا

توآپ كوا ميرتيورك سامن ميني كيا كيا- آپ كيا ورشنخ الاسلام جو حضرت مولانا بربإن الدين غيتا فى صاحب مدابرك درميان محلس من مى سخت گفتگو ستروع ہو گئی۔امیر تمویر نے کہا کمولا ٹابر ہاں الدین صاحب ہدایہ تقے اور ان کے لوتے کورج بہنچیاہے کہ وہ در مار میں آپ سے اعلیٰ عبکہ رہیجیس مولانا احد نے فرمایا كربر بإن الدين نے نو ہدا يہ لکھتے وقت فلال فلال مقام پيغلطي كي ہے عزت توعلم سے ہوتی ہے . کتاب سے نو نہیں ہوتی ۔ شیخ الاسلام نے جواب دیا کہ وہ مگر د کھائی جائے جہال صاحب مدایہ نے غلطی کی تنتی مولانا احد نے اپنے ٹاگردوں اور مبيول كو حكم دياكه وه صاحب مدايه كي غلطيال بيان كريس-امير تمور في صاحب ہدائیے کے احر ام اور شخ الاسلام کے مقام کی وج سے بات کا رُخ مورد دیا۔اورکہا كريه موصوع كسى اورمحلس مين اللها يا جلئ مگريميريد بات كسى موقعديد نه بوسكى -مولانا احدود ملى سے نكل كركائي كوروا مذ ہوگئے اوروبال ہى سبے مگر حضرت مولانا خوا على كرسا تقرجود ورساية مراسم تضانبين قائم ركها والب والم لابي معمد میں داصل محق ہوئے۔ آپ کامزارمبارک بھی کالیی میں ہی ہے۔ وہ محل ا جا بت بھی ہے۔ اور مقام بر کات وحنات بھی یہ بات بڑی مشہور ہے کہ آپ کے مزار ماک برج شخص صدق ول سے چالیس دن متواتر ما منری دے گا۔ اپنی مراد پائے گا۔آپ کے سالان عرس بربے بناہ ہجوم ہوتا ہے جن لوگوں کو آسے روعانی نسبت ياعقيدت سے وہ دوردرازراتنوں سے چل كرينتے ہي

مشیخ دین احد چواز فضل حندا دنت از دنیب بجنات النعیم مهت محن دوم مکمل روملتش نیزاحب مدمتفی عابد سیم نیزاحب مدمتفی عابد سیم

آپ شخ صدرالدین مکیم کے فلص و بتول اب ي مدرالدين سيم على ودول يضودون في السيرة في السيرة ورضي ودول مسرة في الدرشيور في السيرا و دوم المان المراد ومن المراد ومن والمراد ومن المراد ومن المرد ومن المراد ومن المراد زندگی میں دہلی کے مشہور علماء میں شار ہونے تھے اور دہلی کی جامع مسجد میں درس قرآن دیاکرتے تھے۔ مگرجب جذب حقیقی نے الٹرکیا نوشنے صدر الدین حکیم قتل مرہ الحكيم كے مربد ہو گئے ریاصنت اور مجابدہ اختیار كرليا فقرو فاقدا و رمحنت كے اوجود کام نہ بناتوا یع مرشد مکرم کے سامنے فیکایت کی آپ نے فرمایا تم کتابیں پڑھنا يرها نا كيوردو وكتابي عبارى مليت بي بن انبي ا واليا ہی کیا۔ مگر حید نا در اور لطیف کن بیں اپنے گھرس رکھ لیں -اس کے با وجود بھی آپ کے دل پرع فال فداوندی کے دروانے نہ کھل سے۔ ہ خرکار شام کی تمام كتابس جع كرك درياك كنارے بيٹھ گئے اوركتا بوں كودريا بردكرنے لگے۔ ساعدہی آپ کی آنکھول سے آنسوکے دریا بہدرے تھے۔ اس مالت میں آب ك دل كى تختى ما سواى الترك نقش سے پاك بولكى دا درصفى باطن بر رب المعبود كانقش مرتسم بركيا-اورتقور اليس عرصه بي كالمين وقت بي بو گئے . ہزاروں طالبال حق آپ کی خانقاہ میں جع ہونے مگے بنانچ قاسم ہوی جيبيات كفليفرين في محد عليلى تاج جنبورى أب كوريد بن كيُّ شاه عاشقان جناب موسلی آپ کی خلافت سے مشرت ہوئے۔ شنخ حاجی جراغ ہند قدس سرہ طفر آیادی جیسے مثابیرسلاطراقیت میں آئے۔ شخ جال اوجر سننخ مظفر للجى كے فليفہ مقص صزت شخ فتح الدك معاصر تقے-آب كے مريد باعثا

آپ کی وفات الممشیس ہوئی۔

جناب شیخ فتح الندمست بول چوح مجننو د بروے عتنی باب بچو دصالت ما مام اولیا خاص بچو دصالت ما نور دین فقاح الواب بعت ما نور دین فقاح الواب

ہپ شخ سعداللہ کیں الدین فقال فدس سرۂ المتعال : قدس سرۂ کے مرید بھی سے الدیکو الدی مرید بھی کے الدیکو الدیکو مرید بھی الدیکو میں مرید بھی الدیکو میں الدیکو میں الدیکو میں الدیکو میں الدیکو میں الدیکو میں الدیکو الدیکو الدیکو الدیکو الدیکو الدیکو الدیکو میں متوطن ہوگئے اور طرابقہ ملاتاتیا الرکہ لیا سرعام سنزاب نوشی کرتے بھنگ کو استعمال میں لاتے علما دستہ نے آپ کے اس دویدی نشکایت آپ کے والد مکوم استعمال میں لاتے علما دستہ نے آپ کے اس دویدی نشکایت آپ کے والد مکوم سے کی۔ شخ سعد اللہ نے ایک کو ال حرکات سے دو کئے کی بڑی کو ششش کی بھگ

ہی منزاب میں نندیں ہو جاتا ۔ پھرشنے معدا کندنے کہا کہ میرے سامنے کنویں سے پانی نکال کرلاؤ۔ جب کنویں سے پانی لاکر میش کیا گیا تو یہ بھی منزاب بنا ہوا تھا بھر دریاسے پانی منگوایا گیا۔ مگروہ بھی آپ کا ہا تھ لگتے ہی منزاب ہوگیا۔ جب بیص صورت حال دیجھی تو انہیں اپنے حال بچھوٹرویا۔

حب طرف سے مانی لا یا جا تا۔ یا وضو کے لئے بھی مہیا کیا جاتا ۔ تو آپ کا ما تھ لگتے

حضرت شیخ معدالله کا وقت دهلت آیا تو آپ کا برا بیار تید معین الدین وجود عضار آندی الدین وجود عضار آن الله کا برا اس مشرا بی واسق فاحرا و را برای الله و مهیں گیا بوا ہے ۔ فرطایا - اس مشرا بی واسق فاحرا و ربعتی عین آلدین کو سی بلالاؤ - عین الدین اس وقت مشراب فاحدیں معظم

سے بیب والد کی طوف سے آنے والے آدمی کو آتے دیجھا۔ توباتی کو کہنے گئے ایک آخری بیالہ بلا دو۔اب ہم پریشراب بند ہونے والی ہے بما تی نے پیالہ بھر کردیا۔ آپ نے ایک آخری اورا سے توڑ کر اپنے والد کی فدمت بیں حاضر ہوگئے بھڑت بننے سعدالتد نے خرفہ فلا فت اور دوسرے والد کی فدمت بیں حاضر ہوگئے بھڑت بننے سعدالتد نے خرفہ فلا فت اور دوسرے بترکات ان کے والے کئے۔ اور خود واعی اجل کو بدیک کہا۔ بین الدین والد کے مرفے کے بعد سجاد و مشخیت پرمند نشین ہوگئے۔ پابندی شربعیت کو نے گئے اور اسے متنے متنے و پر ہیز گارینے کہ اس سے بڑھ کرتھور نہیں کیا جاسکا۔

شخ عین الدین کاسال دصال سلامی سے آپ کامزار کمنور میں ہے۔ جوعین الدین ولی بادی قست ل زدنیا سوئے جنت گشت پدرور عیال سند طرفہ سال انتقالش زنورالعسین عین الدین مسود

DAYY

اس ملک کے فرد و کلال آپ کے مربیہ بننے نگے۔ ہزادوں لوگ آپ کی مجالس کے
اقر سے فلا الربیدہ بن گئے۔ آپ کاسلسلہ آج ہک دکن ہیں دائج ہے۔ حضرت
سید محد گلیبو دراز قدس سرہ کی شہرت کی ایک بڑی وج بیر بھی ہے کہ ایک دن
وہ اپنے دوسرے ساتھیوں کے ساتھ اپنے پیرومر شدشنے نفیرالدین محود جراغ
دلوی کی پاکی اٹھائے دہلی کے بیدونن بازارسے گزررہے تھے۔ آپ کے سرکے
ملے لمیے بال لٹک کر پاکی کے نیچے تھیٹس گئے۔ آپ ادب واحر آم کے بیش نظر
ان بالول کو نکالنے کی بجائے یا کی کے ساتھ ساتھ دوڈتے دہے۔ اور ایک لمبا
فاصلہ چلتے گئے مصرت شخ جراغ دلوی کو آپ کی اس کیفنیت کا علم ہوا تو آپ
نہایت فوش ہوئے اور صرب تگیبودراز کی اس جا نشاری اور ادب پر بیہ
شعب رکھا۔

مركومريدكتيد كسيو درازت والنه فلات ميت كه اوعش باز شدا

آپ کے مرفیل میں سے ایک شخص شنج محد نامی تھا جس نے آپ کی مجالس کی گفتگور پر شتم کا ایک تاب د ملفوظات ، ترتیب دی اوراس کا نام جرامع الکلیم رکھا۔ یہ کتاب بڑی پینداور مقبول ہوئی۔ اور چیٹیتی مشائخ اسے اپنے مطالعہ میں رکھتر تھے۔

معادج الولايت كے مولف نے مكھاہے كەيد محد كليبودراز قدس سرة مرابع ملا ملا ميں بيدا ہوئے الوس مرة مرابع ملا ميں بيدا ہوئے اور مرابع ملا ميں فوت ہوئے ۔ اس طرح آپ كى عمرا كي سوپا پخ سال تقى جب آپ كادصال ہوا۔ آپ كى وفات فيروز شاہ بن غياث الدبن بن

وا: جِنْحَصْ صفرت كيو درازكامريد بوكا في غداك تم ب وه ذند كي مي عشق باز بوكا-

محدثاہ بن سلطان علاوالدین بہنی کے عہدا قدار میں ہوئی۔ آپ کامزار میا انوار دکن میں کلیر کے مقام پر ہے۔

الشرف الأولاد آل مرتفنی مشیخ دین سید محد پیشوا، ادی محبوب آل بوتراب کن رقم تولیب داش شاه بها زیب تاج عارفان وسلس نجال سم رفت می بادشاه التقیاء

DAYO

حضرت سيدمحر كسيد درا زابني وفات سامك سال يسطي متره جادي الاقل الم عطر سوسي ميس ميد خصر خان بن مك سليمان جرد بل كے باد شاہ تقے سات سال وو مینے اور دو دن حکومت کرنے کے بعدد بلی میں فرت ہوئے اور دریائے جتا کے کنارے مقام گئی خفرس و نن ہوئے۔ یہ بادشاہ خاندان ساوات خضر خانیا کی ملطنت كاباني غفا اس كم مختفر حالات يه بن كه خفر غان ناصر الدين محود شاه تغلق کے زماند اقتدار میں متان کا گورنر تھا جب امیر تنمورنے ہندوتان رچملد کیا نواس نے تیمور بادشاہ کی بڑی فدمت کی اور بڑے کارنامے سرانجام دیئے۔ امیر تیموروای جانے نگاتو تمام مقبوضه علا تے خصر فال کے والے کرے گا مگر گجرات اور مالوہ كى حكومت فيروزشاه بليجي كودے كيا بيانچيشاه رخ مرزا جواميتموركا بيا عفا. كے ز مانے تک بیمکومتیں قاعم بیں اور سکہ اور خطبہ تنجورا ور شاہ رخ کا ہی جیتا رہا بیا وشا سخادت اوربهادری میں برامشهور تقاا در اپنی دعایا کے آرام کابہت خیال رکھتا عقاء اس کے زملنے میں ساوا ہندوت ان برا خوشحال دیا۔ عام ہوگوں کے دل بادشاہ

کی میت سے پڑے تھے۔اس کی وفات کے بعد معز الدین الوالفتے - مبادک شاہ تخت نفین ہوا۔

ہے بھی شیخ فیم متو کل گنتوری فلاس سرہ نہی شیخ نفیبرالدین چراغ دہوی ۔ مشیخ فیم متو کی گنتوری فلاس سرہ نہ کے خلیف اعظم سے ۔ آپ کے والد ہرات کے ملاقے سے ہندوستان میں آئے اور تصبید الحقی میں قیام کیا۔ اور آپ کوشنے نفیبرالدین خرقۂ خلافت ملا

ایک دفه آپ بہڑا ہے ہیں اپنے جرب بیں بیٹے ہوئے تھے۔ جرب کوشیخی

لگاکہ بندد کھا ہوا تھا۔ آپ نے اچا تک دیکھا کہ ایک ہوگی اپنے تمام بدن پر فاکسر طے

ہوئے جربے کے کونے ہیں بیٹھا ہواہے۔ حضرت شنے نے یہی نظر ڈالی معلوم کیا کہ

بہ جرگی اپنے تقر ن سے بہرے جربے ہیں آبیٹھا ہے۔ آپ نے اس کی طرف کوئی توج

بہ جرگی اپنے تقر ن سے بہرے جربے ہیں آبیٹھا ہے۔ آپ نے اس کی طرف کوئی توج

مددی اور اللہ الند کرنے ہیں مشہور رہے۔ آخر جوگی اٹھا اور سلام عوض کیا ۔ شنے نے

سلام کا جماب دیا جرگی نے آگے بڑھ کر آپ سے مصافحہ کیا اور صفرت شنے سے باہم

کون امٹر وع کیں جھڑت شنے اپنے جربے ہیں جی طرف نگاہ ڈالنے ہرطرف ہرچیز سونے

کود کھائی دیتی تھی۔ گرشنے نے کسی چیزی کوئی پرواہ سکی۔ جوگی نے سمجھا کہ شنے بے پواہ را میا

ساآد می ہے۔ آگے بڑھا شنے کے قدم ج ہے اور کہنے لگا ہیں قومرف آپ کوآٹر ار ما

تقا۔ یہ کہ کہ کر کلمہ بڑھا مسلمان ہوا اور شنے کا مرید ہوگیا۔ ایک ون شنے نے جوگی کو کہا

اب دہی کام کر د بچرگی نے بڑا زور لگا یا گر کوئی چیز سونے کی نہ بن سکی۔

اب دہی کام کر د بچرگی نے بڑا زور لگا یا گرکوئی چیز سونے کی نہ بن سکی۔

ایک بارعز بزنامی ایک آدمی صفرت شنخ کی فدمت بین عاصر بهواا ورعرض کی کرمجھ علم کمییا آنا ہے اگر آپ کہیں تو میں آپ کوسکھا دُوں لیکن صفرت شنخ نے انکار کردیا وہ کہنے لگا میرے پاس مقورًا سا اکسیر موجودہ سے سد کھولیں۔ اس سے ایک فرزہ ایک من لوہ پر پر پر پینکیس تو وہ سونا بن جائے گا۔ شنخ نے اپنے بھانچے

علاؤ الدین کو بلایا ورکہا کہ استخف کو دھکے دے کرکاؤں سے نکال دو۔ اسپ کی و قات محمد مجری بیں ہوئی اور اسپ کی عرسوسال سے بھی زیادہ مقی ۔

> چون محد سشیخ متو کل ابین رفت از د نیالفبنسردوس بین گفت سرورسال نقل آنجنا ب مرست د کا مل محسد ایل دین

آپ شیخ افتیادالدین عمرایدی کے ...
منتنخ لوسف بدہ ابر جی فلاس مسر کا اسم بدا ور فلیفد تنے بھرت مخدوم بھائیاں سید عبلال الدین اُ جی ستر لوٹ اور شیخ صدر الدین داجن قبال سے بھی خرقہ مظافت حاصل کیا تفاد اگر چر مید دو فول بزرگ سلسائہ سہرور دیا کے عظیم ش اسم سے تھے۔ اس طرح شنخ لوسف کو سہرورد ی اور جینی دو نول سلسائہ سے نیض ملاتھا۔

معادج الولا بت كے مصنف محصة بين كم شخ يوسف ايري كے آباؤا مداونوان كے علاقے سے ہندوسان كے علاقے سے ہندوسان كے علاقے سے آئے اور يہاں اير ج كے تصبيميں كونت يغزيہ ہوگئے الله تعالىٰ نے شخ يوسف كوا و ليا والله كى محبت سے بڑا فيض بخنا۔ برطے بلندمقامات بريہ نے اور بڑے صاحب كوامت بزرگ ہوئے۔ آپ مريوں كى تربيت بيں بڑے ہى مصروف رہتے مصرت امام محدعز الى رحمة الله عليه كى منہو كى تربيت بيں بڑے ہى مصروف رہتے مصرت امام محدعز الى رحمة الله عليه كى منہو كى تربيت بيں بڑے ہى ماونگ آپ كى بہن منہاج عابد بن كافادسى ميں بڑا الجائز جمهدكيا۔ مخدوم محد شخ ساونگ آپ كے ہى خليف اعظم منف آپ نے مريد خطرت شخ يوسف صفاح الله كى تربيت الله كي بہن منہ يوسف رحمة الله كى محدى كے ہى خليف اعظم منف آپ كے مريد خطرات شخ يوسف رحمة الله كى مريد خطرات من كور الله كار برا الله كار الله كار برا الله كار برا الله كى الله كى الله كار الله كار برا الله كار برا الله كار الله كار الله كار الله كار الله كار برا الله كار الله كار الله كار برا الله كار برا الله كار برا كار الله كار برا كار برا كار برا كے ہى خليج كے ہى خليف الله كار الله كار برا كار برا كے مصنف تھى آپ كے مريد خطے الحق كار الله كار الله كار الله كور الله كار برا ہم ہم الله كار الله كار برا ہم ہم الله كار الله كار الله كار الله كار برا ہم كار الله كار الله كار الله كار الله كار الله كار الله كار برا ہم ہم ۔

معادج الولايت بين كلها به كمر شخ بوسف ۱۳۸۸ بهري بين فوت بهو تحاس وقت توت فوت خوان فعت سنا رہے عظے آپ کوا پنے خانقاہ کے صحن بین و فن کیا مالوہ کے بادشاہ نے آپ کے مزار پر بڑا عالی شان گنبد تعمیر کروا یا . بوسف وین نبی سنیخ ز مان رفت از و نیا چو در باغ جنال گفت سرور سال نقل آنجناب پوسف ثما فی محسبوب جہال

آپ اہلطرلقت کے اُستاد اوراد ہا۔
میسے احد عبد الحق رود لی قدس مرہ استقیقت کے تبار تھے معرنت کی
دیون کے اِتف اور حضرت بینے علال الدین بانی بیٹی کے خلیف اعظم تھے بچیس سے
می الندی محبت اور عشق سے سینہ سرشار خفار صفرت مرشدی مجبت سے پہلے ہی
بڑی دیا ضین کرنے رہے جب بینے جلال الدین کی خدمت میں حاضر ہو کہ مربیہ
ہوئے تو بڑے مبندمقامات اور کرا مات کے مالک بن گئے ۔ پیرو مرشد کی دفات
کے بعدان کی مندار ارشاد پر علوہ و فرما ہوئے۔

ابھی آپ کی عمرسات سال تھی آپ کی والدہ انہیں نمازِ تہجدکے لئے اسھایا کر بتی تھیں۔ بیا اوقات الیا ہوتا آپ والدہ سے بچدی بچدی اُٹھ کہ گھریں کی کہ نے میں چلے جاتے اور نفل پڑھنے گئے والدہ کو پتو تا تہ وجت انہیں الیا کہ نے منع کر دیا۔ سیس جو نکہ آپ کے دل میں اللہ کی مجت موجز ال تھی بارہ سال کی عمری اپنے گھرسے نکلے اور اللہ کی طلب میں دہلی بنجے۔ اُن دنوں آپ کے سال کی عمری اپنے گھرسے نکلے اور اللہ کی طلب میں دہلی بنجے۔ اُن دنوں آپ کے بھری تھے وہ بڑے دائنورا ور عالم بھرے موائی تھی الدین ایک وینی مکتب کے مررا ہ متھ وہ بڑے دائنورا ور عالم

فاضل النان تھے۔ اس کمتب میں آپہنچے۔ تو آپ کے بھائی نے آپ کوظا ہر بی علم کی گا ہیں پیٹھا نائٹر دع کمیں۔ گرآپ نے کہا کہ مجھے علم معرفت سکھا دیں۔ بیز نکہ آپ ظاہری علم سے ول جیپی تنہیں دکھتے تھے۔ مدرسد چیو لا کرصح ااور سیا بان میں لکل جاتے اور اللہ کی عبادت میں مشغول رہتے۔ وہ ایک عرصہ تک اسی حالت میں ہے آپ کو الہام ہوااور آپ غائبانہ حکم کیانی بیت پہنچے۔ وہ شنخ جلال الدین بانی بتی کی خدمت میں رہ کرعارفان حق میں شار ہونے گئے۔

شخ ملال دین یانی پتی کوشخ احرعبدالحق کے آنے کی خربوئی آپ نے اپنے خادموں کو حکم دیا کہ آج اعلیٰ قسم کا کھا ناتیا رکیا جائے۔ اوروسیع پیا نے پر ترخان بچیا یا جائے۔ کھانے میں مکروا ورخرام چیزی بھی رکھ دی جائیں۔اورسا تھ ہی بہت عمدہ کھوڑے جن برزرین زینیں آراسنہ موں سمارے دروازے کے سامنے کھرے كردينے جائيں۔ آج ہمارے پاس ايك اليامهمان آر ماہے حس كاامتحال ليناہ جب سارے انتظامات ہو گئے۔ دسترخوان ریکھانا لگاد باگیا۔ شیخ احد عبدالحق آپ کے دروازے برینیج ۔ توآپ نے دیکھا بڑے عمدہ گھوڑے سونے کی زینوں کے ساتھ تیار کھڑے ہیں دل میں خیال آیا کہ جو تخص اتنی شان وسٹوکت سے رہتا ہے وہ ونیادارہےائے محبت المی سے کیا واسطہ۔ تاہم آگے بڑھے دستر خوال کھا كراس يطرح طرح ك كهانے د كھے ہوئے ہيں ا در سراب كے برتن بعرے ہوئے میں اور دوسری کئی مکروہ چیز ہے بھی موجود میں۔ وہی سے والیس موسئے۔ اورسال دن علتے رہے۔ شام ہوئی تو لوگوں سے بوجھا کم جس تنہر میں سنجا ہوں-اس کا كيانام بدولون ني بتا ياكم ياني بت وخيال آياكه شائد مي راسته مجول كيابول رات شہر کے باہر راے دہے صبح ہوئی تو دوبارہ یانی بت سے دوا مد ہوئے۔ سارادن چلتے رہے شام کو ایک شہر میں پہنچے غورسے دیکھا تو وہ شہر مانی میت ہی

www.makuaban.org

عقا بميرے دن پيرشرسے نكلے اور الي طرف دوا نہ ہوئے الي اليے جگلي جا پہنچے جہاں راستہ محبول بگئے۔ بڑے پر بیٹان ہوئے ایک خشک درخت کی مہنی ہے دیکھاکہ ایک خولصورت سانوجوان سرنیجے جھکائے بیٹھاہے -اس سے بچھا اے بوان آیادی کاراسته کدهر سے-ائس نے کہاکہ تم راسته مجول چکے ہو-میح راستہ شخ جلال الدين ياني يتى كے دروازے سے بجول آئے ہواب كدهر جاؤنگے۔الرتبين میری بات پریفتین نه آئے تو وہ سامنے دیکھیوو ہ دوشخص آرہے ہیں اُن سے پو پھ لینا شخ اجرعبدالحق چندقدم چلے و کھاکہ دوسبرلویش آدمی آرہے ہیں۔ ان کے نزد بك جاكرسلام عرض كياا ورصح واستدبي هيا- أنهول في بحيى كها كم صحح واستدوم سننخ جلال الدبن مانى بنى كے دروانے سے سى مجول آئے ہو۔ سننخ كريقبن موكماً كر مجيد سے علطي ہوئى ہے۔ يہ مجھے غيبي رسمانى مدرسى ہے۔ خيالات ميں تبديل تى تووالیس یانی بت کوچل بڑے حضرت مخدوم جلال الدین کی خدمت میں حا صر ہوئے اس وقت اپنی ٹوپی اُتار کرخوا جشمس الدین ترک رحمته الله علیه کے مزار کی گردیں لببط رہے تھے۔ وہی ڈی شخ احد عبدالحق کے سربرد کھی نان اور علدہ عنا بت فرمایا مرریهوئے۔ آپ نے فرمایا فیخ احد تمہارے دل میں ال چزول کی تمناعتی اس لئے پیچیزیں مل گئیں۔ اسب نے ازراہ تصدیق تین بارحی حق کما حضرت يشخ جلال الدين نے بھي جواب ميں نين ماري حق حق كيا آپ كام تھ مكر ااور عقوالے ہی وقت میں آپ تو تعمیل کے مدارج طے کروا جیئے اورخ قد خلا فت عطاكيا ورفرمايا ميں نے اللہ سے دعاكى تفى كروه ہمارے سيسلے كوتمہارى دساطت سےجاری رکھے خیانچرالیا ہی ہواہے۔

شخ احدعیدالحق روول کے ہزارون شہورخلفاء ہوئے ہیں اور آپ کے لاکھوں مریدوں نے آپ کی ترمیت سے بڑے درجے حاصل کئے ہیں، وہ دینا

کے تمام ممالک میں آپ کے سلط کونے کہ پہنچے عرب وعجم سے لے کرمین اور روس تک بھیلتے گئے بغرضیکہ دینا میں الیسا ملک بنہیں جہاں شنخ احد کا خلیفہ ذہنی ہو۔ آپ کے ایک بیٹے کا نام شنخ احد محد عارت تضااور آپ کے ایک پوتے شنخ محد بن مارت مضاور آپ کے ایک پوتے شنخ محد بن عادت بھی صاحب کمال ہوئے ہیں۔ شنخ عبدالقدوس گنگوھی بن اسما عباح نفی شنخ جلال الدین محمود تھا نیسری۔ شنخ عبدالنفوراعظم بوری اور شنخ جان محرج نپوری میسے عظیم القدر خلفاء ہوئے ہیں۔ آپ کے خلفاء دینا پر چھا گئے۔ اور دقت کے اولیا، عبدے تعلیم القدر خلفاء ہوئے ہیں۔ آپ کے خلفاء دینا پر چھا گئے۔ اور دقت کے اولیا، سے آگے نکل گئے۔ ہمرا کی خلیفہ سے علیا کہ دہ سلسلہ جاری ہوا۔ سلسلہ عالیہ ماہر پر شنج شیخ احد عبدالی کی ورباطت سے ہی چھیلا۔

یشنخ عبدالقددس گنگوهی نے اپنی کتاب انوارالعیون میں آپ کے حالات اقوال کرامات اورمقامات مکھے ہیں۔

معاد چالولایت کے مفت کھتے ہیں کہ شخ احمد عبدالحق سیدنا فاروق اعظم رصنی الند عنہا کی اولادسے تھے ۔آپ کے دادا بزرگوارشنے داو دحضرت عرضی لله تعالیٰ کی اولاد میں سے تھتے اور عرب سے جیل کہ بلخ ہیں سکونت بذیر ہوئے بلاکو فا کے حلے کے لید جندسا تھیول کو لے کر ہندوت ال پنچے ادر سلطان علاؤ الدین خلجی مجم اس وقت دہلی کا با دشاہ تھا کو سے ۔آپ نے آئیں اودھ کا گور زم قرر کر دیا۔ آپ کا مزار تصبہ رودلی ہیں ہے ۔آپ کے ایک پوتے شنج تھی الدین تھے اور دوسرے کا مزار تصبہ رودلی ہیں ہے ۔آپ کے ایک پوتے شنج تھی الدین تھے اور دوسرے سنخ عبدالحق ۔ دونوں اپنے زمانے کے مشہور مقتداء ہوئے ہیں۔ شنج تھی الدین کا مزار علوم کے میں میں عالم و فاصل تھے اور دوہلی میں رہتے تھے۔ شنج احم عبدالحق باطنی علوم کے علوم میں عالم و فاصل تھے اور د ہلی میں رہتے تھے۔ شنج احم عبدالحق باطنی علوم کے علوم میں عالم حق اور اپنے وقت میں اُن کا کوئی تھی تانی نہ تھا۔

سیرالا قطاب کے معتنف مکھتے ہیں کہ حب شیخ احد عبدالی کے گھریں بہلابیا بدا ہواتو اس کا نام عزیز رکھا گیا۔ پیدا ہوتے وقت اُس کی زبان بہت کا تفظیماری

بياحس كانام عارت تفازنده ربا ورجب بوكرجك مبتدمقامات بريهنيا-

شخ احد عبدالی اپنی زندگی کے ابتدائی دنوں میں سجد میں تشرفید ہے جاتے ہاتھ میں جھاڑو ہو تا اور ساری سجد کو صاف کرتے بیسلد بچا ہیں سال مک جاری رہا آپ التٰدکی یا دہیں اسنے مشغول رہتے کہ آپ کو یہ بھی معلوم نہ ہو تاکو سبحد کا لاستہ کو اسام ہیند یا کو ن سا دن ہے ۔ جب سفر پرجاتے قرم بد آگے آگے حق حق کے نعرب بند کرتے دوا نہ ہوتے۔ پشنے اسی آوا ذر پر قدم الحالت جاتے ۔ آج تک اس سلائ عالمی احد یہ چشتیہ میں یہ بات جاری ہے کہ آپ کے مربد ایک دوسرے کو حق حق کے آپ جب وہ ایک دوسرے کو حق حق کے بین جب وہ کسی کو خط کھتے ہیں قوط کے سرنا مے پر تمین بارحی حق حق کھو دیتے ہیں۔ اسس کسی کو خط کھتے ہیں قوضط کے سرنا مے پر تمین بارحی حق حق کھو دیتے ہیں۔ اسس کاندان میں آج تک یہ رسم جاری ہے۔

بعض علما وكوام في السطريق كا دكوفلات منت قراد دياب ينا نجاس المراكم كا المحالة كا المحالة كا المحالة علما ومثائخ في إس عادت كو هجوال دياب لين الجوى كم بعض حصرات المين خطول يوتين ما وحق حق حق من مكوديت بين وشخ جلال الدين في شخ احد كو

عبدالحق كاخلاب د با تفااوراس فاندان كه اكتر مريد كلمُ حق كمت فقد اورعش و مجت بين من حق اورعش و مجت بين من حق ا

سے الا تطاب میں ایک اور عگیہ پر کھا ہوا ہے کہ ایک دن شنے احم عیدالتی نے اپنے دوستوں کوفر ما یا کہ خوا جراسحان گازدونی کی خانقاہ پر آج جوچراغ جل دیا ہے اوہ قیا مت کک دوکشن رہے گا۔ سم بھی آج ایک دیگ پکا رہے ہیں جس سے قیامت لوگ کھا نا کھاتے دہیں اور اس دیگ سے کھا ناختم نہیں ہوگا۔ آپ نے ایک دیگ منگوائی اور دیگ دان پر رکھی نیچے آگ جلائی اور کھا نا پکانا سروع کردیا اور دیگ کوراستے ہیں رکھ کر آوازدی کرچوشنم سیال سے گزرے گا وہ بیاں سے کھانا کھائے جائے اور اس میں کمی نہ ہوتی تیرے دن کھانا کھائے گے اسے عبدالحق التر تعالی راز ق ہے وہ لوگوں کورزی دینا جانتا ہے۔ تواک کام سے باز آجا۔ یہ کہا اور دیگ ویگ دان سے نیچے اتا دی۔

کام سے بازا ہے۔ یہ کہا اور دیگ دیگ دان سے نیچے اتار لی۔ شخ احمد عبدالحق رحمۃ التّدعلیہ بندرہ جمادی الثا فی آٹھ سوھیتیں ہجری میں ن

فوت ہوئے۔

مشخ عبدالحق حدر نست ازداد دهر مشخ عبدالحق حدوه گراں ماؤ حق مقتدائے اہل حق

آپشاه فیروز کے نزدیکی رست ندوار ایک شاه فیروز کے نزدیکی رست ندوار ... شخ ستیر قال میک رحمت الله علیه استے دایک عرصه بک المنیا اورام اد کے اندازیں زندگی بسر کی داتنے متکبر ورشت نور اور متکبر نظر کرکسی کو آپ سے

بات کرنے کی جرائت مذہوتی تھی۔ اچانک شیخ دکن الدین بن شیخ شہاب الدین امام کی نگاہ بڑی۔ تو آپ کے مریم ہو گئے۔ ہرونت خوف الہی سے روت و رہتے بسلسہ چنتیہ میں سے آپ کے علا وہ کسی نے اسرارا البئی کو خاش نہیں کیا اور دنہی جذب دستی کا اظہار کیا حص قدر صفرت شیخ شیر خان نے کیا تھا۔ آپ کے آنسواس قدر گرم تھے۔ اگر ایک قطرہ کسی کے ہا تھ برگر بڑتا توجل جا آب نے علم تفرّف و قوید میں جیندگراں قدر کتا بیں کھیں اور امیر ضرو کے دیوان کے جواب میں ایک و بیان کھی اور عین الفیار کی تہدد آت بر تعیقات مکھیں آپ کی کتاب یوسف و در تیجا اور مراق العاد فین لوگوں میں بہت مقبول و مشہور ہوئی سے کی کتاب یوسف و در تیجا اور مراق العاد فین لوگوں میں بہت مقبول و مشہور ہوئی گئی۔ آپ کو مقبول النّد کا خطاب ملا تھا۔ آپ کی و فات السم میں بوئی تھی۔ آپ کو مقبول النّد کا خطا ب ملا تھا۔ آپ کی و فات السم میں بوئی تھی۔

ستیرخان چیل زدار فانی دہر یا فت و صلے لفت رب سجانی دل بسال وصب ال اسے سرور گفت سنیر دیر یزدانی

PAMA

صرت سیرخان دعم الله علیه کی دفات کے ایک سال بدی مسلامی میں بہت معزالدین ابوالفتح مبارک شاہ بادشاہ میراں صدرا و رفاضی عبدالصور کے معقول مقتل ہوا تھا۔ اور مربقام کو شلہ جے اس نے تعمیر کرایا تھا۔ دفن کر دیا گیا۔ اس نے تیم سال اور ایک ماہ حکومت کی متی یہ بادشاہ خوسترو ئی۔ نیک سیرتی اور خوش افلاتی میں بڑامشہور تھا اس کے قبل کے لبداس کا براور زادہ محد خان تخت نشین ہواا ور محد شاب سے مشہور ہوا۔

چوکش مظلوم ذین د مربد امت مبادک سشاه و الاجاه مقبول بیالس گو ا من د مربد الفشنخ دگر و الی دین سلطان مقتبول مسلم

آپ صرت يدمو د جراغ يشخ قوام الدّبن في سهرر دي قدس سره د د بوي دعة التُدعيد كفليف عظے مرابد میں صرت محدوم جہانیاں سیدهبلال الدین کی خدمت خاصر ہو کرمر مد ہوئے اوراس طرح اوج سرلف بين روحاني تربيت ماصل كرك مبند مقامات برينج آپ بڑے علیل القدر مزرگ تھے۔ آپ کے مقامات اور مراتب رہبت کم اواگوں كى رسائى موى ب- آپ كے ملفوظات ميں لكھا ہے كہ ايك ون حفرت سينے قوام الدبن محلس ماع مين بليط مخط - مگرسماع مين وه ذو ق پيدايذ بهوا -جومواكرما عَنَا آبِ كُفر آئے۔ فرمانے لگے۔ آج مجھے سماع میں ذوق منہیں آیا۔ ایسامعلوم ہوتا ہے کہ گھر میں کو نی الیبی چیزہے جس کا بیا تنہے ۔ گھردا یوں نے بتایا ۔ الیبی کوئی چیز بنیں آئی۔ آپ نے تلاش کیا۔ تو گھر میں بانے گڑی ایک ڈلی بڑی ہوئی تھی۔ جو آپ نے علاج کے لئے منگوائی عقی۔ آپ نے گڑا اسٹایا۔ اور ماہر عار عزیبول میں تقتیم کر کے محلیس ماع میں آ جیٹے۔اس طرح آپ اس ذو ن سماع سے محفوظ ہوئے۔ عِلَى النبس طلب عتى -

کتے ہیں۔ آپ کے پیرومر شدمخدوم جہانیاں قدس سرہ کی و فات کا وقت قریب آیا۔ تو آپنے حضرت قوام الدین کو بلاکر بوچھا۔ کرمیرے بعداس سلسلہ کی مجادگی کسے دینی چاہئے آپنے کی عوض کی اس عظیم ذمہدا دی کے لئے صنرت سیّد صدر الدین

راجن قبال سے زیادہ موزوں دوسرائٹف منہیں ہے۔ چانچر محدوم جہانیاں نے شخ قدام الدین امین کے متورہ سے ایسا ہی کیا۔سیدصدر الدین راجن قبال کو سجاده نشین بنایا مگرسا تقهی اپنے دوسرے فرزندمیرسیدناصرالدین کو بھی تبرکا خرقهٔ خلافت سے نوازا مصرت میدنا مرالدین کی والدہ نے جب یہ وا تعدات توفر مایا - شخ قوام الدین نے اپنے مشورے سے میرسے بیٹے کو سجاد گی سے محروم كرديا إ- الله سعين عبى وعاكم تى جول كريشخ قوام الدين سجاده نشين بيل بن سكيس كے حضرت شيخ قوام الدين نے سنا . تو فر ما يا - مجھے بے حدمسرت ، وئى ب کہ بی بی صاحبے نے بیرے سلب ایمال کے سے بدوعانہیں کی سجاد گی کی صرورت نہیں يس توصرف ايمان كى دولت كاطالب مول "اكرچ مير سے بيٹے سجا د كى سے محروم رہیں کے مگرمیرے خلفار جومیری معنوی اولا دہیں اس سلسلہ کوجاری رکھیں گے۔ چَّانچه شِخ قوام الدين نے حضرت مينا کوسجاد ه نشين بنايا . آپ کاا پنا مبيًا سشيخ نظام الدین سبت بڑا دنیا دار ہونے کی وجرسےسلسلہ کی ترویج سے محوم رہ گبا شجرة حیثتیہ کے مولقت نے بیٹنے قوام الدین رحمته الله علیہ کی وفات مشک پیر لکھی ہے۔ آپ کا مزار کھنویں ہے۔

قوام الدین جواز فقتسل المی زونیارفت در فردو سساعلی وفاتش گفت دل سلطان محندم دگر منسرمو دممندوم معلیٔ

سارج الولا بتاورم تب مفوظات شخ شخسارنگ حشی فارس سرف مین نے العاب جوزت شخ سازگ ل تبدائی

زندگی میں ہندووں کے بہت بڑے روساء اورامراء میں شمار ہوتے تھے۔ وامن اسلام میں آئے۔اس وقت آپ کی ہمٹیرہ سطان محد بن فیروز شاہ با دشاہ وہلی کی بیوی بنی تفیں۔ آپ اسی وساطت سے دربار دہلی سے منسلک ہو گئے تھے اورماک سارنگ كملات عقداسى دوراك آپ نے مندوستان كاسارنگ شهر آباد كيا تفاجب سيد مخدوم جلال الدين اوچي اورسيد صدرا لدين را حن قبال دېلي مي تشريف لائے توان دنول شخ سارنگ ایک خوبرداور نوخیز نوجوان تقے. بادشاہ نے ان دو نول بزر کان دین کے کھانے کی خدمت شخ سارنگ کے سپرد کی ہوئی تھی۔ ایک واج خرت راجى قتال نے كہا "سارنگ إاكرتم يانچول نمازيں با قاعد كى سے بيڑھنا ستروع كردو تومی صفرے بخدوم جہانیاں کے کھانے کا تبرک کھلاؤں گا جی نکہ اس وقت ان کی ہا بت کا وقت البہنچا تھا۔اس نے بدس طاسی وقت قبول کرلی اور بانچوں غازین باقا عد گیسے اداکر ناسروع کر دیں بنانچہ آپ کو صرت مخدوم جہا نیاں کا بس خدوہ تبرك اجِيالگا - شخ سادنگ كواس كھانے ميں ايك عجب مذت متيسرآئي - ايك من حضرت صدرالدين قبّال نے كہا سارنگ اگرتم ہرروز نما زا سرّاق اورجائت باقامةً سے بڑھنا شروع کردو تو میں اور تم اکتھے مبیر کر ایک دستر خوان برکھا نا کھا باکر برگے ا بنول نے یہ بات بھی قبول کر بی۔ اب مخدوم جہا نبال ۔ صدر الدبن قبال اور ملک سارنگ ایک ہی دسترخوال پر کھانا کھانے گئے۔ اس قربت سے شخ سارنگ کے ول میں روحانی روشنبال گھر کرنے مگیں۔ آپ شنخ قوام الدین قدس سرہ کے مربد ہوگئے اوراس طرح آپ کوسلسد حیثتیه کا فیض ملنے لگا ۔ مگر ملک سارنگ اعقبی مک شام بند جاہ وجلال میں رما کمتے تھے۔جب حضرت سلطان فیروزشاہ کا انتقال ہو گیا توان کی عگر سلطان محدین سلطان محر تخن نشین ہوئے تو حصرت سارنگ کادل وريارشا بي سے ا چا ك بوكيا - آپ سب كھ ھيوڙ كرالندكي ماد ميں مشغول ہو گئے

تام مال ومتاع غریبول میں تقسیم کردیا۔ اہل وعیال کو نے کریا پیادہ چھ کوروا نہ ہوگئے چونکہ بیادہ چلنا جانتے نہ تھے قافلہ سے پیچے رہ گئے۔ پاؤل میں جھالے بڑگئے قافلہ دُورْنکل گیا۔ ایک دن اپنے اہل وعیال کو کہنے گئے۔ اب میں بھی اور تم لوگ بھی تھک کرچ دہوگئے ہیں۔ اعظوا ورمیرے پیچھے پیچھے چلو۔ ابھی تمین قدم انتخائے تھے کہ آپ قافلہ میں پنچے گئے اور مدینہ پاک کے قرب میں جا پہنچے۔ جے کے لعدا کی عرصہ سک مکہ اور مدینہ میں قیام کر کے حربین الشرفین کی مجاوری میں دہے۔

عرصه بعد واپس مهند و ستان آئے۔ اور صفرت شیخ بوسف برها برچی کی مجلس میں رہنے گئے۔ آپ سے خرقۂ فلانت پایا اسی اثنا ہیں اپنے پیر و مرشد کی حبت بی ذیارت کرنے لکھنو آیا کرتے تھے بجب صفرت شیخ قوام الدین قدس سر ہ کی و فات کا وقت آیا تو آپ نے فرایا کا کش آج شیخ سار نگ میرے پاس ہوتے تو ہیں انہیں خرقۂ فلافت و تیا۔ آپ نے بھر بھی بوگوں کو اپنا ایک ان سلا کفن وے کر انہیں خرقۂ ضلافت و تیا۔ آپ بعد از و فات کہا کہ جب شیخ سازگ آئیں۔ تو انہیں میرا یہ تحقہ دے و بنا۔ آپ بعد از و فات کھنوا آئے تو اپنے کا تبرک کفن ما صل کیا۔ بھر حضرت شیخ مینا کو روحانی تربیت دے کرحضرت شیخ قوام الدین کا سجادہ فشین مقرد فرما دیا۔

کتے بیں شخ صدرالدین قبال رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے بزرگول کے حب ترکات حضرت شخ سار بگ کو بھیجے۔ گرا آپ نے لینے سے الکارکر دیا۔ گر بعد میں حضرت شنخ صدرالدین نے بڑے اصرار سے فرمایا۔ یہ تبرکات صرف آپ کے لئے مخصوص ہیں۔ انہیں قبول کر لیں۔ اس اصرار پر آپ نے دہ تبرکات لے لئے آپ کی و فات کے کہ میں ہوئی۔

چرادنگ ازجهال خت سفربت بجنت شد بفضل دوالحبلال چرسرود ازخرد پرسبدسانش ندا آمد و می محند دم عالی

آب فامنى عبدا لمقتدر قاصى شهاب الدين دولت آيادى قلاس سرة كيعظيم شارد نخاور صرت مولانامحد خواعبى كے مربد خاص تقے صرت ميرانشرف سمناني قدس التروامامي كى مجالس سے معى استفاده كيا تھا۔ آپ ظاہرى علوم ميں مكينائے زمانہ تھے اور باطنى ا سراد میں کا مل وسترس رکھتے تنفے ہماری قلم میں وہ طاقت نہیں کہ آپ کے کمالات علميد كوضبط تحريمي لا ياجا سكے اور ہمارى زبان ميں وہ قوت گو بابئ ننبيں كه آپ كے امرادكوبيان كياجابك آپ نے اپنى على شهرت سے ايك ذمانے كومتا الكيا كافيہ كى سترح اليبى زبان مي لكھى كەعلماء عش عش كدا عظے علم نحوميں كتاب الارشاد بے مثال كاب تحرييكي علم بلاغت مين بريع البيان آپ كيمشهوركتاب، اسيطسر قرآن پاک کی ایک تفسیر بخرمواج ہے جوزبان فارسی میں مقبول ہوئی ۔ آپ نے ایک رسالهٔ تقتیم علوم میں لکھااورایک رسالهٔ تقتیم فصاحت میں سپر د قلم کیا تھا آپ كوستعرو شاعري مين بهي كمال عاصل تضايينا نجرآپ كاايك شعر تونه بان ذ دعام بر كياتها يجآب نے بادشاہ وتت كى خدمت ميں ايك خوبرد كنيز يينے كى سفارش يس لكها تقار

> این نفش فاکسادکه آنش مزلئے اورت بربادگشت لائق ہے آب کردن است شخصے بنال فرست کدیا برکسرم نہد رمیز دیم منی و تکبر کردرمن است ا

مل ، کے باد ختاہ آپ جانتے ہیں ۔ ینفس مبیدجی کی سزاا کی ہے یہ تباہ ہوگیا ہے اسے ہے آب ہخم ، کو دینا مزوری ہے آپ کوئی الی شخصیت بھیجیں جو مبرے سرمر پاؤل سکھ کواس نفس شر میکا تکمرا و رخو دی کو توڑ کو دکھ دے ۔

باد شاہ اس ادا کوسمجر گیا اور کنیز آب کے پاس بھیج دی۔

اس نے ایک اور کتاب مناقب السادات کھی تھی جس ہیں اہل بیت کی مجت کو بڑھے عرب بہرائے ہیں بیان کیا تھا۔ اس ہیں ہے نظرانداز ہیں سادات کوام کی عزت دمنزلت کو بیان کیا گیا ہے۔ اس کتاب کے تکھنے کی وجربیب بی کہ بادشاہ کے درباد میں اجمل نامی ایک سید ذادہ تھا۔ چنا نچہ آپ نے علوم دینیہ کی خطمت کی بنا پر سید ذادہ سے اپنی برنزی ظاہر کرتے ہوئے۔ ایک ذبردست کتاب کھی۔ اور یا دشاہ کی فدمت میں میش کر کے اپنی متدفریب تو کوالی ۔ دات کو خواب میں سیدا لا بہیا مکی ذیادت نصیب ہوئی۔ نوآپ نے تافتی شہاب الدین کے اس قعل کو ہُرا منایا ۔ صبح نیادت نصیب ہوئی۔ نوآپ نے تافتی شہاب الدین کے اس قعل کو ہُرا منایا ۔ صبح اس قطر تواس کتاب کو دریا برد کر دیا ۔ سید ذادے سے معافی مانگی اپنی مند کو آپ کے بعد دکھو ایا اور سائٹ ہی سادات کی عظمت اور عصمت پر ایک ذبر دست کتاب کے بعد دکھو ایا اور سائٹ ہی سادات کی عظمت اور عصمت پر ایک ذبر دست کتاب کی جو بڑی بیند کی گئی۔

اخبارالاخیار میں آپ کا سال وصال میں کے مقابے۔ شہاب الدین چورفت ا ز عالم دہر بجنت گشت روسشن آک عسلم وصالت کن رقم توقیرا کیا وصالت کن رقم توقیرا کیا دگرفت را شہاب الدین مرعلم

DAYA

آپرببدمی گیسید درا زقدس سره کو بیت میرسید بیرالسرق سره کو خفی آپ کو بین میں ہی خوقد خلافت مل گیا تقا۔ صاحب معارج الولایت نے کھاہے۔ کہ ایک دن صرت مید محد کسیو دراز دمنوفر مارہے تھے۔ مسے کرنے ملکے تو سرسے عمامی اتاد کرنیجے رکھا میّد یّد اللہ اللمی بیج

تے۔ پاس بیٹے ہوئے تھے عمامه اس یا اورا بنے سر رد رکھ لیا۔ آپ نے دیکھ کرفر مایا بیٹا تہیں یہ خلعت مبارک ہو۔ یہ نتہا داحق تھا۔ تنہیں مل گیا ہے۔ اس دن کے بعد آپ جے بھی مرید بنانے اس کی نسبت سیّدید اللہ سے سی کم کرواتے گراس مرید کی تربیت خود کرتے ۔

اخبارالاخیادنے یہ واقعہ مکھاہے کہ سیّدیدالتٰدنوجوان ہوئے۔ تواآپ کی شادی ایک ہوئے۔ تواآپ کی شادی ایک ہنایت خوش شکل دولی سے ہوئی۔ رات مجگر عروسی کوسیا یا گیا تو مبر بدّالله اپنی و ابن کے پاس پہنچے تو اس کے صن کی ناب مذلاکر آپ نے ایک نفرہ مارار اورجان دے دی مسیح د ابن نے آپ کواپنی بفل میں بہنچیا وراپنی جان قربان کر دی اس طرح یہ دو نول مجازی عشاق واصل بحتی ہوگئے اور امنیس ایک ہی تبر میں د فنا یا گیا۔

سِیدید اللّٰہ قدس میرہ میں ہوئے نظے
کر دسفر حویل زحب ں فنت
میر مید اللّٰہ کئے ہفدہ طبق
مر د خدا کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کی اللّٰہ کے اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کے اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کی اللّٰہ کے اللّٰہ کی اللّٰہ

آپ شخ فورالدین المشہورفورفط عالم برگال فدس سر الله شخ علادالدین قدس سرہ کے فرز نداورفلیف طریقیت نظے۔ سند دستان کے مشہور مشائخ میں مانے جاتے ہیں بڑے صاحب عشق ومجست اور ذوق و شؤق کے مالک عظے۔ صاحب تقرف وکرا مات ستھے اپنے والدی فدمت میں رہ کر بڑی دوھانی منزلیں طحکیں

اور درج تطبیت کو پنے اس طرح آپ قطب عالم کے خطاب سے مشہور ہوئے۔ اخبارالاخياريس مكها ہے كه آپ اپنے والدكى خانقاه كے تمام اموركو اپنے ا كقت مرانجام د باكرت عقر كراع دهونا. فانقاه كوصات كرنا . ياني كو لاكر نمازیوں اورمسافروں کومہیا کرنا جنگل سے مکرطیاں لاکر لنگرتیا رکرنا۔سب آپ کے ذمه تھا حلی کہ درولینوں کے کیڑے دصوتے ۔ گندگی کا اعظاما ۔ اوربیت الخلا مکی نجاست ہمٹا نا بھی آپ کے ذمہ تھا۔ ایک ون ایک درولیش کو آدھی را ت کے وقت بيشي در دا علاه الحاد ، كي طرف عجا كا- و بال شخ علا دالحق اپني رونره فدمت برمصرد ف عقراس درولش كوزور سے جربا خاند آيا-اس كا كي علارلحق کے کپڑوں پر جا بیا اجتی کہ آپ کا حسم بھی آنودہ ہوگیا۔ گراپ کے چرے پر نہ مل الهيادية أب في السبات كونا كوار محدس كيادوسرى طرت آب كوالد الني بية كي اس الحارى اور فدمت كو وكيرب عقد اس قوت بدواست كوديكي كوفر ايا. بيا إ مجھے تہارى اس فدمت سے بہت فوشى ہو ئى ہے . مگر آج كے ليد تہیں کسی اعلی منصب برمقرد کیا جا تاہے۔

ضخ حسام الدین ، کی پوری رحمۃ الدّعلیہ کے مفوظات میں ہے وا تعہ درج ہے کہ جن دنوں شخ علاء الحق اپنے والدی خانقاہ میں کرٹیاں لاکرمہانوں کی خدمت کی کرتے تھے۔ آپ کا ایک بھائی اعظم خان بادخاہ دقت سلطان تعلق کا وزیرتھا ایک دن شخ علاء الحق سر رپکڑیاں اعظائے گزرے تواعظم خان نے روک کرکہا میں دن شخ علاء الحق مر رپکڑیاں اعظائے رہوگے ۔ آپوُ اِ میں تمہیں کسی اعلی تنصیب میں گئی کب کک خانقاہ کی کوٹایاں اعظائے رہوگے ۔ آپوُ اِ میں تمہیں کسی اعلی تنصیب پرلگا دیتا ہوں۔ جہاں تم آرام سے زندگی بسرکرسکو۔ آپ نے فرمایا بمہارامنصب اوراکوام عارضی اور وقتی ہے۔ گر میری خدمات ہمیشہ ما دگار دہیں گی بیں اوراکوام عارضی اور وقتی ہے۔ گر میری خدمات ہمیشہ میں دگار دہیں گی بیں ان خدمات کوچے دل کو تیا رہمیں۔

تذکرہ الا قطاب کے موّلف نے آپ کا سال دصال ساف شہ کھاہے ۔ آپ کا مزار تصبہ بندا وہ بُگال میں شنخ رفعت النّدا ورشنخ الور آپ کے صاحبزاد سے تقے ادر آپ کی وفات کے بعد سجادہ نشین ہنے ۔

> چوتور الدین اذیں دنیائے نانی منور سشد بفرد و سسس معلیٰ بگوتا ریخ اوسسس المدایت وگرقطب الله انور تحبت بی الله الارتخاب

مريدا ورفليفه عقر . ظاهرى علوم مي كيتائية ما منه عقر . باطني علوم مي كمال ماصل كيارا ورراه طرلقيت ميں گام زن ہوئے تجربدو تفريد ميں كمال يا يا-اہل دنيااور علال دنیاسے ہمیشہ دورر سے ماحب سرالاقصاب ملحتے ہیں کہ آپ مجالس سماع برپاکمتے۔ اور ذوق دستی میں وجد کرتے بچ بکد آپ کی المکیس کسی حیمانی بیاری سے بیکار موکی تقیں ۔آپ چلنے بھرنے سے معذور تنے گرمحلس ماع میں وجداوررقت میں بروكا طسامتے ملاتی تقی داپ سب ناده وجد كرت ببض ا وقات آپ رقص و د جد كى هالت بين هيت يك عابينية ايك بار وجد کی الیمی ہی عالت میں آپ کے چیا کشنے اوائن موجود تھے۔ آپ نے آگے بطه كرآب يه ما تقرر كلما ورفر ما بالشبلي به توا ظهاد كرامت ب اوركرامت بر علس ننبس وکھائی جاتی۔ اس دن کے لبدائپ نے کبھی و جدور تت کا اظہار منبس فرماياا وربهيته فاموشي سيسماع سنتريخ

یشخ شی کے زیادہ مربیدا فغان تھے۔ آب نے ایک دن دعا کی کہ میرے
مربیدا فغاندل کے تیر کانشا نہ کھی خطا نہیں ہوگا۔ اس دن سے افغان ایسے نشانہ
باز ہوئے کہ کھی کوئی تیر نشانہ خطا نہ کہ تا تھا۔ یہ افغان جیں نشکہ میں ہوتے۔ وتیمن
کو تیروں کے نشانے میں لاکر تباہ کر دیتے تھے۔ ایک بارا یک افغان نے اس دعا
کو الذمانے کے لئے ایک تیر آسمان کی طرت بھینے کا جب تیروالیس آیا تو تیرا یک
اثر ماکو چر تا ہوا والیس آیا تھا تو کہنے لگا دا تعی اولیا را لٹڈکی کوامت حق ہے۔
جن کے کہنے پرایک تیرنشانے کو خطا نہیں کرتا۔ ان کی زبان سے نکلا ہوا تیر
کی خطا ہوتا ہے۔

سیر الاقطاب نے آپ کی تا دیخ وصال سا ۱۹۵ شد کھی ہے۔ سند حجوا ز ونیب مجنت یافت جا صفرت سنبلی سنسر مردوسرا سال وصل ا و مجر سنسلی تفتی میز سنبلی و اصل دین پیشجوا نیز سنبلی و اصل دین پیشجوا

سید محد کسید دراز قدس سرہ کے خلیفہ سید محد کسید دراز قدس سرہ کے خلیفہ میں میں مالے الدین قریشی قدس سرہ کا بہت میں کا الدین قریشی قدس سرہ کا بہت میں کا الدین قریشی کوالیا ہی کے نام سے شہرت ملی نظا ہری اور واطنی علوم میں کمال رکھتے تھے تجرید و تفزید میں مجی ہے مثال تھے رسادی زندگی گو شد نشینی میں گزار دی۔ یا دا الہی کے بغیر زندگی کا کوئی مشغلہ مذرکھا۔ اپنے فادم کو فر ما یا کرتے تھے ۔ گھر کا کوڈ اکرکٹ بھی سامنے نہ میں کی کوئی مشغلہ مذرکھا۔ اپنے فادم کو فر ما یا کرتے تھے ۔ گھر کا کوڈ اکرکٹ بھی سامنے نہ میں کی بیٹ کا کوئی مشغلہ مذرکھا۔ اور ما دو دا ویک آگر کے آثا رنظر آتے ہیں اور ما دو دا وندی ہیں مخل ہوتے ہیں آپ سے میں فرت ہوئے پر ایشان کرتے ہیں اور ما دو دا ویک آگر

رفت چی از جہاں مجنب لد بریں بادی مقت داء علاء الدین سال ترحیل دیے عیب ان گردو از ولی حشراً علاء الدین

BABH

آپ شخ بېرام چينتى صايرى قدس سرة بركيم بيال الدين بانى بنى قدس كو شخ بېرام چينتى صايرى قدس سرة بركيم بيان باصنعايس سے قيملوم ظاہری اوراسرار حقیقت ازبر کرنے کے بعد خرقہ خلافت ملا اور تصبیرناوہ من قیام برر بدئے چ کہ تصبہ بیدو کی دریائے جنا کے کنارہ پر دا تعربے ۔ انفاقاً سیلا فی موسم میں دریا کارخ اس تصبہ کی طرف ہوگیا - برقصبرسیلاب کی زومیں آیا قدوہاں کے باشدے آپ کی فدمت میں ما عز ہوئے . اس تصبے کے تنام اول حضرت سینے جلال الدین یانی یتی کے رید تق ان سے ایک خطر شخ بہرام کے نام نے آئے۔آپ نے شخ بہرام کو مکھا۔ اپنے قصیہ سے نکل کرقصیہ بیدولی میں چلے جائیں اور دریاجمنا كوردك دين -اوراس وقت يك وبال قيام كرين حب مك درياا پنارم خنين بدل لیتا ہے صرت بیرور شدکے مکم سے بیدولی پنجے اور دریا کے کنارے پر کھڑے ہوکرا بناعصار گاڑ دیا ورکہا بہاں سے ہٹ جاؤ۔ دریا آسترآ ہتدا پنا رخ بدلتا كيا اوردوميل دوربين لكا-آب اسي تصيد من قيام فرارب اكدادلان كوكسي قسم كاخطره شدب آب في ندلى مجراس تصبيب تيام كيا- يبال مي وصال ہدا۔ آپ کا مزاد لوگوں کے لئے دارا سفارہے جو بیاد ہو ماہے ایک بار حاضر ہونا ہے اور شفایا تا ہے۔

سالاتفعاب میں ہے کی ایک کوامت محصی ہے کہ اعداد میں اللہ بھوال وملی

نے ایک مندو کو اس علاقہ میں مختارا دا صنبات مقرر کر دیا۔ دہ مندو بڑا متعصب تھا۔ عام زمينول كوسركارى كهاني ميل لا تاجاتا وه اس تصبيبي يتجاتو خانقاه كما تقدى ہدنی عام ذین کوسرکاری زمین قرار وے گیا جتی کہفا نقاہ کی فاص زمین کے لئے بھی مرکاری کا رندول کو حکم دیا کہ جریب لاکراسے بھی سرکاری تحدیل میں لایا جائے۔ سرکاری کارندے اس زیادتی سے بچکیاتے تنے خود گھوڑے بیسوار یاس کھرا ہوا اور کارندول کو حکم دیا کہ اس زمین کو جریب سے نابول - اسی اثنا ، میں آپ کی خانقاہ کے مجاور مبت پریشان ہوئے۔ ایک مجاور روضے کے اندرجا کر فریادی ہوا كر حضرت! اس ظالم نے آپ كى دى جوئى زمينين فنجند بيں سے لى بين ا ب فانقاه كى فاص زمين بھى لينے كے در ہے ہے۔ امدا د فرملينے - كہتے ہیں وہ مجا ور قبرسے ليٹا فرياد كرر ما تقا كه بامر شور وغل موا- با مرتكلا ديجما تو مندو كهورس كى زين سے اليلا اور بوابیں معلق ہوا ۔ لوگ بے نسی کے عالم میں شور وغل مچا رہے ہیں مجا در میروتحال دي كروايس قرري يا ورعرض كي صنوراس خبيث كوزين برگرايش وه زين برگرا اس کی ٹائلیں ٹوٹ گئیں۔اور مازولیٹت کے پیچیے بندہ گئے وہ زمین ریتوپ رم عَمَا لَكُوون كَى عَقى اوراس كررت وارفر مادكررس عقد آخروه مجاورول كمياس عاصر ہوئے۔اسی مجاور نے قبر رہے اکر دوبارہ سفارش کی اس کو اندر لائے ۔ تو دہ تنفایا ہوا۔ اس ندہ کے لئے اس نے غانقاہ کی زمین کی طرف آئکھا تھا کر منہیں دیکھا بلکر شام تصب کی زمین مرکبھی سرکاری قبضہ کا خیال کک نہ لایا۔

سال وصل اسے شداز سرورعیاں زبرہ آوٹ ق قطب الاتقیاء

ا بسخ بیرونی میدالدین اگری میرونی میدالدین اگری میدالدین اگری میدالدین اگری میدالدین اگری میدالدین اگری میرونی میدالدین اگری میرونی میدالدین المسلم بیرونی میرونی میرونی

بجنت چ دفت ا زهب ان فنا کبیران سنه پیر به نا دیپ تباریخ تر جبل آن سن ه دین بگوقیب له انها جنت کبیر محرفت کبیر

آباب نے دا داعیدالمقترر دم الدین المقارد منا الدین المقترر دم الدی المقترر دم الدی المقترر دم الدی المقترر دم الم المان کے مولا ورضای میں میں المان کے مولفین نے لکھا ہے کہ شیخ ابوالفنج بوده ماہ کت منادج الدولین الموالفن کے دوادا عبدالمقتدر دم الد علیہ کو بڑی المدین الموالفنج میں دکن الدین ابوالفنج میں دوردی ملیانی دعم المدی در میں ایک رات خواب میں دکن الدین ابوالفنج میں ورددی ملیانی دعم المدی در میں ایک رات خواب میں دکن الدین ابوالفنج میں ایک رات کو الا ہے اس ویکھا ۔ آپ نے فروایا عبدالمقدد منہارے گھر میں ایک لاکا پیدا ہونے والا ہے اس کا نام میرسے نام پر ابوالفنج دکھتار چانچاسی دن جب چاند کی جود ہویں تاریخ کی

آپ بیدا موئے۔ اسی دن شخ جال الدین جوشنج عثمان سیاح کے مرید تھے۔ آپ کے گھر تشريف لائے بچے كو بېلى نظرد كيد كرفر ما يا عبدالمقتدر؛ متهارا كراس نورانى بچے كى وجس نورس عرمان كالمشغ عبدالمح صزت شغ عبدالمقتدر كيسيط صزت شخ عبدالمقتدر كى زند كى مين من فوت مو كف تق فواجاكان جينيته كاسله خلافت آپ کی وساطت سے آگے جیلا۔ آپ سندارتا دربتشرلین فرما ہوئے تو کھ عرصہ کے بعد اميرتمورگورگانی دېلي پيهمله آورمها آپ بھي اس افرانفري ميں دېلي هيوڙ کرء نپور پيلے گئے رجونیورمی آپ بہایت بے سروسا مانی کے عالم میں سنچے اورکسی گردر کے بغیر ر ہائش بذیر رہے کھ عرصة تك ایك ورخت کے ذیرسا یہ بسراكم ليا بحدواري كايم عالم مذكهان كوكيوملتا مذكسي كاست المتح بجيلات جماني طورياس قدر كمزوريد گئے کہ چیلتے جلتے مانگوں میں رحمنہ طاری ہوجاتا کھ عرصہ کے بعد حضرت عبدالمقندر كا ایک مربدتنجارت کے لئے وہل سے جونبور ہیا۔ ہب کو دیکھ پہچان لیا ندرانہ پیش کیا مگرآپ نے انکارکرویا ۔ آپ کو تبایا ۔ کم سجد کے قریب ہی ایک مکان ہے مالک مگان آ فروخت كرراب الرأب اجازت وي تويه مكان خريد لباجات اوراب اس مي ر النش كرليس مكان كي تبيت اس سود الرفي ما من لا ركهي - مكرات في في سانكا كرديا بكرجيدون صبرو قناعت سے گزار نے كے بعداللّٰہ نفالىنے اپنے خزالةُ عني سے آپ کو بہت سی دولت دی۔ آپ نے وہ مکان خرید لبا۔ ساتھ سی ایک عالی شان خانقاه تغییر کمه لی اور بڑی اسوده زندگی گزار نے مگے ۔ کئی سال بعدوہی سوواگر دوبارہ جونپور آیا . تو آپ نے اسے اپنے پاس بلالیا . بڑی عز ن اور توقیر دی - بیطے بلیطے سود اگر کے دل میں خیال آیا کہ جو شخص اس حالت میں زندگی بسر کررہا ہے وہ برطا وولت مند ہوگا۔ آپ نے اس مود اگر کے اس خیال کومحسوس کو لیا۔ پاس بلا کرکہا عزیز من میرے یاس بڑا خرا منہ ہے۔ وائی م فذوالا کمرہ مونے سے بھرا پڑا ہے اور بائیں

م عقروالله چاندی سے بڑے . گریسونا ورچاندی چدوں کی نظرے محفوظ ہے گران و نوں ہوگاں و نوں ہوگاں و نوں ہو اگرنے دل میں و نوں ہوگاں کے مال بچردوں اور دام نوں کی دسترس ہے۔ اس موداگر نے دل میں خیال کیا ۔ کہ صفرت کے بیا لفاظ میرے لئے مدعا بیں ۔ دو تین داتیں گزری تھیں کہ اس موداگر کے مال کوچ در ہے گئے۔

ا خیار الا تنیار میں لکھ ہوا ہے کہ صرت ابوالفتے کے گھر میں ایک بارسونے کے ملکم طوں کی بارش ہوئی۔ شخ فخر الدین مجنوری اور شخ محد آب کش آپ کے شہور فلفاء میں سے میں اور آپ وقت کے کا ملین سے ہوئے ہیں۔ صاحب معارج الولا بت نے آپ کی تاریخ ولادت محرم الحوام کی چودہ تا ریخ منعی ہے اوروفات بوز مجمعہ تیرہ رہیے الاقل محمد تیں ماریک میں کے دور مکور سے تعا

سته دنیاد دین الوالفتنی حق بین که ذاتش مرسند راه صواب ست ولی حق من بوالفتنی تولید دفاتش نورحق فتاح باب است

DADA

آپ شیخ احد عبدالی قدس سرؤ کے فرزندار مجند الی قدس سرؤ کے فرزندار مجند ... منظم علام خطارت فدس سرؤ برا در فلیف اعظم تھے ۔ والد کی دفات کے بدرمند ارشا دیر مبیطے اور ہزاروں طالبان حق کی داہنائی فرمانی ۔

معارج الولا بت کے مصنف نے مکھاہے کہ صرت بننے احد عبدالی کے جو بھی اولا دہوتی زندہ ہمتی تھی۔ آخر کار آپ کی بیوی نے آپ سے ہی شکایت کی۔ آپ نے فرمایا۔ جو بچر بھی پیدا ہوتا ہے۔ حق حق حق کرکے فوت ہو جاتا ہے میرے ملب میں صرف ایک الیما بیٹا ہے جو زندہ رہے گا گرا بھی مک اس کی پیدائش کا وقت نہیں میں صرف ایک الیما بیٹا ہے جو زندہ رہے گا گرا بھی مک اس کی پیدائش کا وقت نہیں

آیا بین ایک مفریہ جاد ما ہوں والی بہ اکر تہیں بناؤں گا۔ کچے عوصہ کے بعد صرت سفرسے والی آئے اور گھر قیام کیا ۔ ایک سال گز را تھا۔ کہ اللہ نے بیٹا دیا جس کا نام عارف رکھا گیا آپ نے اپنی بیوی کو فروایا اسے کچے بنہ کہنا اور اللہ کی شام برت کو کا بڑا ہو کہ فل مری اور باطنی علوم کا ریگا نہ روز گار ہوا ۔ اور فیض جا دی ہوا کو خرت شیخ محم صورت شیخ عارف کے ایک فرز ندشیخ محمد خرف سلسام شینتیہ کو فروغ نجتا یہی شیخ محمد مہیں جو سے بیل میں جو کے بیل میں جو سے بیل سال کی مقبی میں فرت ہوئے۔
میں فرت ہوئے۔
میں فرت ہوئے۔

چ زیں د نیائے دول دخت مفرات جناب سننخ عارف واقف من عجب تاریخ وسلنس عبدہ گرت زقطب المحق معلیٰ عارف حق محمد

ہپ یہ محدگسیودراذر حمتہ ایس الفتی علائی فرایشی کالیوی قدس سر کا الدعلیہ کے فلیفہ فاص سے الیا الفتی علائی فرایشی کالیوی قدس سر کا الدعلیہ کے فلیفہ فاص سے عدم فل ہری ادر باطنی میں معروف زمانہ ہوئے طریقت و شریعت کے الم مانے گئے تقد حرمین الشریفیین کی ذیارت کو گئے کتا بعوارث العارف آپ کا گان مایہ تصنیف ہے تصوّف میں ایک اور کتاب کملہ بھی آپ نے تعمی اسی طرح تقوق میں مثاہرہ کتاب بھی تھی آپ کی وفات سر اللہ شرکہ ہوئی مزار فرا تو تقوق میں مثاہرہ کتاب بھی تھی آپ کی وفات سر اللہ شرکہ ہوئی مزار فرا الدی میں ہے۔

پورفت از عسالم فانی بجنت مشرا بل یقین با دی ابوالفنتج چوسال انتقالت حب تنم از دل بگفتا میر دیں با دی ابوالفنتخ

ای صفر الترجیتی قدس سرهٔ اور میرید فی الترجیتی قدس سرهٔ کے مرید تھے اسلامیدی فدمت میں ماغز ہوکہ دو مانی نیف پایا کہتے ہیں جیں دن حفرت گیبود داندی فدمت میں ماغز ہوکہ دو مانی نیف پایا کہتے ہیں جی دن حفرت گیبود داندی فدمت میں ماغز ہوکہ دو مانی نیف پایا کہتے ہیں جی دن حفرت گیبود داندی میں عشق و محبت میں بھی گرفتاد ہوئے ہو۔ آپ نے ازرہ ادب عرض کیا یصفورا میں عشق و محبت کو کبا جانوں میں تو آپ سے بیچیزی حاصل کرنے کے لئے حاصر ہوا ہوں: آپ نے فرایا بیرسے اس سوال کامقصد یہ ہے کہ میں تہا رہے دل کی کیفیت معلوم کو کو اور نہا رہے نظریات کا اندازہ کو سکول تم پردہ بنہ ڈالو. بلا کم و کا مت میرسے دوال کا جواب دو۔

آپ نے فرمایا۔ حضور جوانی کے جوش میں مجھے ایک خولھورت ہندوعورت
سے مجت ہوگئی تقی میں اس کو زرستا تقاء مسلمان ہونے کے با وجود میں نے
فرناد بنینا متروع کر دیا۔ اور اپنی مجبوب کے اشار سے پروہاں رہنا متروع کر دیاجہاں
ہندوعور تیں بلا جمج کے جاستی تھیں۔ آئی بات سُنی توصرت خوا جگسو دراز نے
اُمٹے کہ آپ کو اپنے گئے سے لگا لیا۔ اور فرما یا عشق عالی ہمت ہوگاں کا شیوہ ہوتا
ہے۔ تم نے بڑی بلند ہمتی سے اس داہ کو افتیار کہا ہے۔ اور عشق کی تلخیاں اور
ہے تا بیال برواست کی ہیں۔ اب ہیں تجھے مشق حقیقی کی منازل طے کرانے ہیں آبانی
موس کروں گا۔

چنانچاسی دن آپ کو معیت کیا - شخ فریدالدین گنج شکردهمته الترعلیه کے جرمے بیں بھا یا - بہ جرہ صفرت بختیار کا کی دعمته التدعلیہ کے روضهٔ مبارکہ بی ہے اور دومانی تربیب دے کرمرد کا مل بنا دیا -

صفرت شنخ پیارا کی دفات مصاف می بهوئی۔ چواز دنیب الفردوس بریں رفت ولی صاحب تعیف رید پیارا مرور مضد عیاں سال و صائش ذکائل صاحب التو چد سیسارا

آپ دیاد کھنے کے معاوب دلائے تھے۔ شخ بیٹا دیشن محروثیتی) فارس سرہ نہ بین سے بی صرت سنے قوام الدین رحمة التعليدى تربيت ميں رہے اور آپ سے سى خرقه فلافت ماصل كيا آپ كا اسم گرای اس لئے میں کہ کھا گیا تھا کہ شخ قدام الدین کا ایک بیٹا تھاجس کا نام نظام الدین محرمینا تقاروہ دنیا دی خواہشات کی تکمیل کے لئے با دشاہ وقت ملطا محدين فروزانه كدرياديس الازم موكيا اورترقى كرت كرت بيدمناصب يرجا بنها في قام الدين كوسط كاس حكت بريدًا انسوس بوا-اسس ايس كرآب ول بردات من على الدين منا صرت شخ قوام الدين كى فدمت يس مصروف رسے آپ بڑی فدمت کرتے گرصرت شخ قوام الدين آپ يوخوش منهو يُصفح أخر كادأ ب نے فيصد كرليا اپنے والد قوام الدين رحمة التّدعليدكي غانقاه پرهاصر بهو كرمعانى مانگول اوراپنے والد بزرگوار كوفراتی طور برآگاه كيا -چانچه دربارسے روانه موئے اور گھوڑ سے برسوادسی والد مزرگوار کی خانقا ہیں جال ہو گئے۔والدنے اپنے بیٹے کو اس حالت میں گھوڑے پرسوار دیکھا تو فرمایا او

ابكارا ايك دروليش كى خانقاه مي كھوڑك بيسوار ہوكر آگئے ہو۔ اس نے اسى وقت كھوڑك كوروكاتاكم با برجاكر با بياده حاضر ہو۔ كر كھوڑك كا يا وُل بدكاراور اس كھوڑك سے كر يڑك اورو بال مى بلاك ہوگئے۔

اس موقعه به آپ کی خانقاه میں ایک درولین قطب الدین موجود تقایصرت
کی خانقاه اس پر بیلی و فرا بار میرا دل چا ہتا ہے۔ تجھے دعا دول اللہ تھے ایک
بیلیا دے اس کا نام شخ محد مینا رکھنا یہ میر سے بیلے کا نعم البدل ہوگا اہم
اس دعا کے نتیجہ میں شخ قطب الدین کو اللہ تنائی نے ایک بیلیا دیا جس کا نام
شخ محد مینا دکھا گیا ۔ یہ بجہ بیل ایما حضرت شخ قوام الدین کا منظور نظر بنا ، طبغه تقام
پر بہنچا ۔ اور دوعانی تربیت باکر صفرت قوام الدین دحمة الله علیه کا خلیف اور فیانین
قراد دیا گیا ۔

حضرت بینا تارک الدنیا تے۔ آپ کو دنیا اور علائی دنیا سے کوئی سروکا م مذخفا۔ آپ نے بڑی ریاضتیں اور مجا ہدے کئے۔ ایک دات دیوار پر ببیٹے عبادت کررہے تھے۔ نیند آگئی۔ دیوار سے ذبین پر آگرے۔ اس کے بعد کبھی نیند مذہری کی۔ عبادت کے دوران اپنے چارول طرف گھاس رکھ لیستے اور کا نٹے بچیا لیستے۔ اگر نیند غلبہ کرتی تو کا نٹے چاہتے جس سے بیدا د مہوجاتے بسردیوں میں قبیض عباکہ کر پہنتے تاکہ

مفنڈک سے بیندرز آئے۔

صزت پننے مینا سنکھٹی میں فدت ہوئے۔ چوا زدنیب لفردوس بریں رفت محسد شاہ دین مفت ہول احمد وصالت کی بیان معشوق مجنے دم وگرف ریا فلیل حق محسد

آبة قطب العالم شخ نور الدين قدس مركا يشخ سمس لدين طاهر قدس مسرف سي فليفه اعظم عقر صاحب ا خارالاخيار نے آپ کوسید کبراور بزدگ ببندم تبت کھاہے آپ ایک موپیاس مال جیئے۔ اپنے مرشد کے علاوہ آپ کوخوا جمعین الدین حس تنجری سے بھی نیف ملا تھا۔ آپ یں نہائبت اورعفبدت سے اجمبر نشرلین میں رہے اس عرصہ میں او ُباا جمیر کے شہر میں منہ آپ نے تھو کا اور منہی اک صاف کیا ۔ پیٹاب کے لئے شراجیرسے دُور با ہر چلے جاتے تھے ، تنہر من داخل ، وسنے یا رہتے تو با وصور ہتے تھے۔ بیاحترام تھااس تنہر پر فد کاجس می حضرت خواجراجمیری اسوده فاک بین -آپ کی وفات المميم من بونی تقی-يوشمس الدين لفرد وس برس دفت وصال ماك آن فورستيد آناق باولی عبوه گرث رتاج عزت دو باره گشت رو کشن شمع عشا ق

آپ صرت شنے پیادا کے فلیف اللم میں شناہ جلال الدین گیراتی فدس سر ہ و بڑے صاحب تفرن اور کامل شنخ طریقت تقے۔ آپ کا وطن گیرات تھا۔ گر نبگال میں زندگی سبر کی۔

اخباد الآخیار اور معادج الولآیت می مکھا ہے کہ آپ اپنی فانقاہ میں ایک شاہ ہے تحت پر باد شاہوں کی طرح بیجے تھے۔ اور اپنے مریدوں اور فادموں کے نام بادشا ہوں کی طرح فرمان مباری کیا کہ نے تھے۔ آخرا کی بد باطن شخص نے بادشاہ وقت کے کان مجرے کہ شاہ جلال الدین آپ کی ملطنت کے اندوا کی متبادل ملطنت میں کم کان مجرے کہ شاہ جلال الدین آپ کی ملطنت سے ہاتھ دھو تا پڑیں گے بادشاہ اس کی باتوں میں آپ کہ واپنی ملطنت سے ہاتھ دھو تا پڑیں گیا وران کے مریدوں کو قتل کر دیا جائے۔ چنانچہ فوج نے بڑھ کو خانقاہ بی آپ کے مریدوں سیت کو قتل کر دیا جائے۔ چنانچہ فوج نے بڑھ کو خانقاہ بی آپ کے مریدوں سیت کی تریبی تھی۔ تو تناہ جلال الدین اوران کے مریدوں سیت میں آپ کے مریدوں کو نہذینی کر دیا جی کہ اندین میں آپ کے مریدوں کو نہذینی کر دیا جی کہ اندی کو مریدوں کا نعرہ کی گار جاتھ کے انداز آل دی کا دیا ہو کہ گر بڑا۔ آپ کے سر مان یا دھان یا دھان کا نعرہ مادار آپ کا سرتی سے جُدا ہو کہ گر بڑا۔ آپ کے سر سے الند الندالند کی آواز آل دہی تھی۔

آپ کی منہادت کا یہ وا تعہ سلامی میں ہوار دفت چول از جہاں سخلد ہریں سینخ والاجلال عسالی جاہ گفت سرور بیال رملت او والی حق حب لل سنسہنٹاہ

DAAI

آپ تاہ فورالدین قطب العالم کے مربی تھے بلد نسب شاہ کا کو قد سس سرہ اللہ معزت با بافرید تھے بلد نسب من من اللہ معزت با بافرید تنکہ گئے سے جا ملا ہے بھرت سنے پیرم رحیتی لا ہوری دھ اللہ علیہ سے بھی فیضان پا یا تھاخر قد افلانت حاصل کرنے کے بعد آپ کو ولا بت لا ہور ملی ایک کیٹر مخلون آپ کے نیف سے متفیض ہوئی۔

مذار مبادک لا ہور بیں ہے عالم کے مولّف نے آپ کا سن وفات سلم شرکھا ہے اور مزار مبادک لا ہور بیں ہے عالم کے مولّف نے آپ کا سن وفات سلم شرکھا ہے اور مزار مبادک لا ہور بیں ہے عالم

چاند د نیائے دول دخت سفر بست جناب سف و الاحب ه کاکو چو سرور جست تا ریخ و مالش نداست د شاه اکبر سف ه کاکو

مادر حرت شاه کاکودهمة الدمليد کامزاد مبادک ميد شهيد گنج نو کها با ذاري واقعب ببال محد شاه کاکوهي آباد تھا۔ جيد والا الکوه نے اس مين محد دادا فکوه محلات دادا فکوه کے ساتھ ما تقصرت شاه کاکوه ایرانی کے کا تقول جو نقصان پنها اس مين محد دادا فکوه محلات دادا فکوه کے ساتھ ما تقصرت شاه کاکو ده تا الدّی کامزاد تھی ہيوست زمين ہوگي بیکھول کا دور آيا توانهول نے اس مقام کو فصوصی طور براپنی بربرت کاف بربا یا تھا۔ يہ بربریت ایک انتقامی کادر وائی تھی معنول کے ميدسالار نواب عبدله صحفان بربریت کاف بربا یا تھا۔ يہ بربریت ایک انتقامی کادر وائی تھی معنول کے ميدسالار نواب عبدله الله کے دورا قداد بين سکھ ليرول اور باغيول کو اسی مقام بربھائي دی جا يا کرتی علی ادر نواب ميس الملک کے دورا قداد بين سکھ ليرول اور باغيول کو اسی مقام بربھائي دی جا يا کرتی تقی اس مزاد کو در بافت کہ کے اپنے مربیدوں کو توجه دلائی۔ وہ ایک عوصة ک اس مزاد بھرکس فتم اورد گردسو مات ا ماکر نے مین متحد رہے تقریم کھول کے اقداد کے بورميال سلطان تھیکيدار نے من مال کے محلات کے کھنٹریات کی اينظيل بين مروع کيس توميور شهيد گنج مزاد صرت کاکو بحد والا انتہا میں توميور شهيد گنج مزاد صرت کاکو بحد والا انتہا میں توميور شهيد گنج مزاد صرت کاکو بحد والا انتہا کے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے میں توميور ہون کی تور والی مورت کاکور محله والا انتہا کی مقتل کے معنظر والین کے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کے کھنٹریات کی انتقال کے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کی انتقال کے محلات کے کھنٹریات کی اینظیل سے محلات کی دران محلات کی انتقال کے محلات کی انتقال کے معال کے محلات کی انتقال کے معال میں مدر انتقال کی انتقال کی محلات کی انتقال کی محلات کی انتقال کے محلات کی انتقال کی مدر کی کھنٹریات کی انتقال کی محلول کے انتقال کی مدر کی کھنٹریات کی انتقال کی محلول کے انتقال کی مدر کی کھنٹریات کی دورات کی مدر کے انتقال کی کھنٹریات کی کی کھنٹریات کی کھنٹری

ا بسطن الدین قطبه المسلم الله بین قدس مراه مرکی الدین قطبه الم الدین قطبه الله بین قطبه الله بین قطبه الله بین الله بین من الله بین الله بین من الله بین مین آپ کے عظیم متن نئی میں شار ہوئے ہے۔ آپ فود لکھتے ہیں کہ فلافت عاصل کرنے مقامات اور کو امات کو بیان کیا گیا ہے۔ آپ فود لکھتے ہیں کہ فلافت عاصل کرنے کے بعد میں نے سات سال مک فاقد کشی کی۔ اور فقری میں بیر کی۔ بیاس ملتی تو پانی پی لیت اور ماد فدی میں منفول ہو جا یا کرتا تھا۔ ایک دوز میرے ایک جیئے نے میوک اور بیا سے تنگ آکر روتے روتے میرے کے میں باہیں ڈال دیں۔ میں فیر بیان ڈال دیں۔ میں نے جیئے کے تعلیمان اور دونے سے متا تر ہو کو صوف اتنا کہا۔

اسعب - چول توني - جمحومني - دا ندبس-

ایک دانے کوترس عباؤں - اسی وقت ایک خص کھانے کا ایک طباق المطلق المطاف آیا

دبقیطانید، ادردوسرے مقامات کے نشانات مٹ گئے۔ پیرسچد تنہید گئے کی بازبابی کے لئے تحریک چلی تو اللہ اس مارے علاقہ کو مکھوں کے میں سرایم سن گورز پنجاب اور سرکندر حیات کی وزارت کے دوران اس مارے علاقہ کو مکھوں کے حوالے کو دیا گیا۔ اگر جہ آنے پاکستان کو بنے بیالیس مال ہو چکے ہیں اور سکھوں کو بیباں سے گئے بھی موصہ ہو گیا ہے۔ مگر ابھی یک نہ مہور تنہید گئے تعمیر ہوئی۔ نہ کا کو نشاہ کا مزار بنا آپ کے مزار پر ما شھ تین سو سال تک عرکس منایا جاتا رہا ہے۔ جہاں ربیع الاقول کی بار ہویں تاریخ کو نعت خواتی ۔ قوالی ۔ اور علمائے کو ام کی تقاریم ہواکہ تی تھیں ۔ حضرت بار ہویں تاریخ کو نعت خواتی ۔ قوالی ۔ اور علمائے کو ام کی تقاریم ہواکہ تی تھیں ۔ حضرت کا کو نشاہ صوف فقر ہی نہ سے در دنیا وی طور پر بڑے مصاحب ترویت تھے ۔ مربیہ کے منابع سنینے لورہ میں آج کہ کا لاشاہ کا کو آئیپ کی جاگر باید کو تا نہ ہ کر تا ہے۔ اس السلامی منابع سنینے لورہ میں آج کہ کا لاشاہ کا کو آئیپ کی جاگر باید کو تا نہ ہ کو تا ہے۔

حالانکداس سے پہلے ایبالہ منہیں ہوا تھا۔ ایک اور خض ایک من دال ہے کوآگیا مجھے بڑی ندامت ہوئی کر میں نے کیا کر دیا۔ کہ لوگ کھا نا اور دال لئے آرہے ہیں بیں نے اپنے آپ کو لون طعن کیا۔ اور بڑی طامت کی۔

ايك مقام يو كلحق مي كه يك كتابين توبهت يا ديخيس بمرحب مي البيني بيرو مرشد كي و ل برا بنا سرد كها تو ي المراكم الو ي المراكم على المرتب و و على على المراكم الر كونى عالم دين مير عاسف كتاب مرايب في النظ تويي اس كاسارا مطلب تفوت اورسلوک میں باین زول آپ فرماتے میں کم ابتدائے کا دمیں میرے والداس لئے ناراض تقے کہ میں نے مشکل سے علم حاصل کیا تھا۔ اسے کیوں برباد کر دیاہے۔ بیات جب مید بیرومرشد نے سی تو فرما یا که دروایش کی دلی فامش موتی ہے کہ وہ اپنے آپ كونوك شمشير كيني د كھ ليكن علماء چاہتے بين كم لوگول كواني تلواد كے نيچ كھيں مردی وه ب بودونول کام کرتے الوار چلانا بھی جا تنا ہو اور تنوار کے سامنے گلا كُلْ فَي كَ لِيْ يَهِ وَالْمُ الْمُوبِعُوا لَهِ وَالسَّرْحُ لُ بِمالَمِهِ مِيرِ عِذِبات كايد عالم تقا كرمير ب لبول بيالتُدكانام لينامشكل عقا-الركب بيلفظ التُدآ عا ما تويي بة ناب موجاتا ورلوك مجه ويوانه سجين لكت عظ جب مين اپنے بير كى تلاش مين گرسے نكل توقدم قدم سے أواز آتى جيا آؤ ميں تہارے سامنے بول . فكر شكرو

ایک دن میں کتنی میں سوار ہوا۔ تومیر ے ساتھ ہی ایک پھٹے پیانے کپڑون الا درولیش بھی سوار تھا۔ کتنی پانی سے کنار سے بچہ آگئی ۔ گروہ دردلیش دریا میں ڈوب گیا کی شخص نے اس کے ڈوبنے کی طرف خیال تک نذکیا ۔ میں موضع نیٹروہ میں آیا حزت کے قدم چوہے ۔ غورسے دیجھا ۔ تو صرت قطب العالم وہی دو سنے و الے در ولٹ تھے "

شخصام الدین مانک پوری سلامه هی فوت ہوئے۔ پول صام الدین سنب ہر دوسرا رفت از عالم لفب ردوس بریں گفت سال انتقبال او فرد ما دی مشکل کشا مطلوب دین

آپ صفرت شنے میں الدین خیر آبادی فلاس سرہ اندین صدود پر عنی سے کا دہندہ ہے
سے اور الدین خیر آبادی کرتے سے بچرید و تفرید میں اپنے بیرو رشد کے بیرکاد
سے دوجدو ساع کے ولدادہ سے بلا نمور فقہ اصول میں صاحب تصیفات تھے شرط
مصباح اور شرح کا فیہ آپ کی نصافیت ہیں آپ نے دسالہ ملکیہ کی بھی ایک شرح
مصباح اور شرح کا فیہ آپ کی نصافیت ہیں آپ نے دسالہ ملکیہ کی بھی ایک شرح
مکھی تفتی خزانہ طلابی کی طرز پر مجمع السوک مکھی جو حضرت شنے میں اور اپنے احوال و آناد
پر شتن ہے بوراد ف المعادف کو اپنے پیرومرشد سے بیٹر ھاکرتے تھے بیشنے سعدالدین
خیر آبادی کے بہتے شبے مریداور شاکر و تھے ظاہر علوم میں آپ کے شاگر دمولا نا اعظم
میں دشنے جو اپنے ذما مدے نامور فقیداور عالم سے میں شہرت یا فتہ تھے ۔ آپ کے فال
میں دشنے مبادک سند ملہ جو بشرادیت وطرافیت میں شہرت یا فتہ تھے ۔ آپ کے فال
میں دشنے مبادک سند ملہ جو بشرادیت وطرافیت میں شہرت یا فتہ تھے ۔ آپ کے فال
میں دشنے مبادک سند ملہ جو بشرادیت وطرافیت میں شہرت یا فتہ تھے ۔ آپ کے فال
میں دشنے مبادک سند ملہ جو بشرادیت وطرافیت میں مشہرت یا فتہ تھے ۔ آپ کے فال

سعد و بن اسعد و سعید زمن شدز دنیب چو در بهشت بری گفت سرور بسال تاریخیش کاشف حق سعیب د سعد الدین

DANY

آپ ایک واسطہ سے صفرت سید محد کھیے و درا ذر محت شاہ مبا بحی قدس مسرہ از الدعلیہ کے مرید تھے کا مل درویش اورا کمل عام دین مخت آپ کے ذمانہ میں مندو کے علاقہ میں آپ کا یا نے کا کوئی بزرگ نہیں ہوا تھا۔ آپ اس و لائیت کے بیخ طریقت تھے۔ ایک سو مبیں سال زندگی یائی تھی۔ جبکہ آپ کے پیر ایک سو بیاس سال جئے تھے۔ ایک سو مبیں سال زندگی یائی تھی۔ جبکہ آپ کے پیر ایک سو بیاس سال جئے تھے۔

صاحب اخبار الآخيار مكصة بيس كم آب جب كى بيلى ماريخ سے اعتكاف والے جرے کو پیروں کی جنائی کرکے بندکر دیا کرتے تھاس طرح آپ پیراہ تک کھائے یے بغیر ذکرا الی میں منفول دہتے ستے جس دن جرے سے با ہرآنے کا ادادہ کرتے تو ا ندرسے زورزورسے اوازیں دیتے۔ اور اوگوں کو ہدایت کرتے کہ جرے کے دروازے سے دُور دور چلے جاؤرجب مربد چلے جاتے تد آپ دردازے کے بھر مِناكر با مرتشر لعب لاتے الركوئي اتفا قاسامنے اُجا تا بشخ كى جلالى نظراس يرشيعاتي تووہ درون نک بے ہوش بڑا رہا تھا۔اس شہر کا قاصنی آپ کے کمالات کانگر تقا ۔ اس نے کئی بارا ہے کا محاسبہ کیا ایک دن آپ جرے سے نکلے تو قاضی استے تها- آپ کی نگاه قاضی پر برسی تدوه بیهوش بهوکر کر بیا- اوردو دن تک بیار م ایک دن فاضی صفرت شیخ کے احتساب کے لئے آپ کے گھر آبا۔ پالکی ہم سوارتھا ۔ شنح کے مکان کے دروازے برمینجا تو دروازے پردستک دی بشخےنے كو عظم سے ديكي انو بالكى الحانے والول كے پاؤل زمين ميں دھنس كئے قاضى كے م عَدْ كَانْ سِكْ ورْهُ زِينَ يه جا كرا قامني مشريعيت كابرا بابند تقا . اورا متسابي سخت گیر تھا۔ دوبارہ در ہ اعلیا اور کو سے پھر صفے لگا۔ حضرت شخ نے دوبارہ اس برنگاہ ڈالی -قاضی کا ہا تھ مکیط لیا اوراو پر لے گئے -قاضی نے دیکھا کہ متراب كى صراحى يرى سے قاصنى نے پوچھا يەكىيا ہے . آپ نے صراحى سے ايك بياله عجركم

پیش کیا تووہ فالص شربت تھا۔ شخ نے فرمایا لبیم الندکرے نوش فرملیئے . قامنی شرمندہ ہوکرینیے اتر آئیا۔

شاہ میا بنجی کی دفات سومم شمیں ہوئی۔
میا بنجی سٹ ہ شہنشاہ عب لی
چورفت از وار دنیا سوئے جنت
رقم کن کا شف ممیت زیالش
دگرفت رما زہے برا کرامت

البصرت جاغ دہوی کے سیدی ایسی ایسی قدس سرہ نے خلیفہ اعظم سے بچر پیدوتفرید مِن كِيّاتُ زما منه عقد آپ تے اپنے احوال ومقامات بر مکھاہے اس کے براسے سے عقل حیران رہ جاتی ہے وہ اپنے وفت کے کاملین میں سے تھے۔ آپ کی ایک تصنیف بحرالمعانی ہے جس می توجید کے خفائق اور مونت کے اسرار تحرير مين اس مين من مناكمتنافات كف كن مين اس كتاب كے علاوہ آپ كى دوكتابين د قالُق المعاتى اورحقالُق المعانى بهي ابل معرفت بين بزي مقبول مو يحقيل امرار وج يرايك رساله بي ينج نكات اور برالانساب دوايسي رسام ين. جن میں اہل بہت رسول کے نصائل اور کما لات بیان کئے گئے ہیں اورا پنے آباد امداد کی نبت کو بان کیا گیا ہے آپ بڑے بڑے دعوے کرتے ہی لیکن حب ہم ان دعووں کو عورسے دیکھتے ہیں تواس نتیجے پر پہنچتے ہیں کہ وہ حق بِمبنی ہیں۔ آپ كوالندتعالى نے برى لمبى عمر بختى متى . خاندان تغلق سے لے كوسلطان بدل لودھی تک زندہ رہے۔ آپ کی عردوروسال تھی۔ آپ کے آبا دا مداد کا تعلق کو کوم

سے عقا بندوتان آئے توسر بندمین تیام کیا آگے مزارسر بند شرافی بی ہی ہے۔ اینی کتاب بحرالمعانی بین مصفتے بیں کریں سابط سال تک ظاہری علوم حاصل کو ر با معرفت وطرافقت سے بے خرد با اگرچ میں نے ظاہری علوم میں بڑا کا ل حاصل كيا بكر باطنى اسرارسي فرتفا اب ين وه چيزي ديجتنا بول جرعام نظرول سے فائب ہیں اوروہ باتیں سنتا ہول جنہیں تام کان نہیں سن سکتے۔ آپ اس كتاب ين تطبول وليول - اوتارد - افراد اور جال الغيب ك حالات مكية بن - ال صرات كرمقامات ومراتب كواليے انداز ميں بيان كيا ہے كراس سے مراح كرتفورنبي كيا جا سكتا ياك فرمايا ہے كمين ان تمام صرات سے ملا بول استفادہ كيا ہے اور ان کے مقامات ومرابت سے آگاہ ہوا ہول بھر مکھتے ہیں۔ نین سو بچاس ابدال لیے ہی جددیا تے نیل کے منبع بر سیاٹعل میں دہتے ہیں۔ میں ان کے یاس حاصر ہوا۔ اوران سے ملاقات کی تفید وہ خامرش بہار وں میں فاموشی سے دہتے ہیں۔ورخول کے یتے کھا کر جیتے ہیں کہی کھی لنخ بیابانی کھا لیتے ہیں۔ ان کے علاوہ افراد لاتعداد ہیں۔ میں اکثران سے عمی ملا ہول۔ وہ عام لوگوں کی نظروں سے پوشیدہ رہتے ہی كرقطب وتت انبيل دي ارتبائد ان تمام صرات مقدسه بي سے دواد قاد اليه بي ج مقام معنوقيت مك پنج بي وه اس مقام يديس-كداس مقام يكسي دوسرے کی رسائی بہیں ہے۔ان میں ایک توشیخ سیدعبدالقا درجیلانی رصنی الشعند بي ا ورد وسرے خواج نظام الدين اولباء النّد مدالي في رحمة النّد عليه بن روحاني طور بردونول دوح آحرى كامظبر بس مي اكب دن دريائ نيل مي اكيكتني ميشيا تقا بمرے ما كة معزت خضر عليه اللهم بھي بيركدد ہے تقے - يم مشابده لايذ الى بِكُفتكوكردب عف م ي صرت خفر عليه السلام في تايا - كه اس كائنات مي سيد عبدالقادرجيلاني اورخوا جرنظام الدين اوليا دوايس بزرگ بس جرمقام معتوق

اور محبوبی برفائز میں۔

ایک اور مقام پر تکھتے ہیں۔ کہ میں نوسے سال صحوبیں دیا۔ اور اکیس سال سکر کی حالت میں دیا۔ ان ایّام میں جھے ماسوی اللہت کسی چیز کی خرر نرحتی۔ میں ایک عرصہ کک جوار لعقوب اور مینی میں دیا ہوں۔ انہوں نے میرے مقام صحوا ورسکر کا ذکر کیا ہے۔ میں اکسی سال سکر میں دیا ۔ مگراب میں چند مال سے ستی سے فرد آئیے کے مقام پر آگیا، مول۔

صدیدم فرد بشتم کم درخود زنسرد بت بے انوار دارم اگر موسی نیم موسیچه مستم داون سینه موسیقار دارم

جب فرد حقیقت سے ترتی کر کے صرت شنے نفیرالدیں مجود جراغ دہوی اسکے بڑھے۔ توہی ان کی لا ہخائی ہیں تجلی صفات سے تجلی فات کے مقام فردا نیت ہیں ایا۔ توہی سنے فرد حقیقت کو خواب ہیں دیکھا جو ذکر خفی کر رہے تھے۔ بین کی فدرت میں ماضر ہو کر فاک آستان کو اپنے چرے پر ملنے کی معادت ماصل کی توفر مانے گے " ملے شہبا زمیدان لا ہوت اور لے پاک باز عالم جروت اور لے با ذیا فتہ عالم مکوط دفارو سے میری آنکھوں میں ایک سلائی سے مرمہ ڈالااور فرمایا میں میں میش آبیا تھا۔ رات ہوئی۔ توہی نے وہاں سے پرواز جری اور ختلان سے مصر پہنچا۔ اور شنخ او صربیمنانی قدس مرف کی قوم ایس قدم ایس کی ۔ اس وقت آپ قطب عالم کے منصر بی بیا افرائی اس وقت آپ قطب عالم کے منصر بی بیا افرائی ایس نے ہما یے نہا پیشفت تو ہما ایس کے نہا پیشفت سے نوا اور افراد ایس کو نہ عطا فرمایا ، میرے علادہ اس جرے ہی دوا ورافراد سے اپنی الفاظ اور افرائی میں ایک کو نہ عطا فرمایا ، میرے علادہ اس جرے ہی دوا ورافراد سے اپنے جو افرائی میں ایک کو نہ عطا فرمایا ، میرے علادہ اس جرے ہی دوا ورافراد سے اپنے جو افرائی میں ایک کو نہ عطا فرمایا ، میرے علادہ اس جرے ہی دوا ورافراد سے اپنے جو افرائی میں ایک کو نہ عطا فرمایا ، میرے علادہ اس جرے ہیں دوا ورافراد سے اپنے جو افرائی میں ایک کو نہ عطا فرمایا ، میرے علادہ اس جرے ہیں دوا ورافراد

www.maktabah.c

بھى موجد تھے -ايك توسونى تھے . اوردوسرے ايك طالب علم تھے . تام كى مازيد كے بعديس نے دہاں سے پروازى ادرعتادى ما زحضرت تطب العالم شخ اومدمنانى معة التعليم كي يهي موهى وات كوتين بارقرآن باكفتم كيا-اورتيره بارك مزيد يره - اس دات ميراتلب دسيع موتاليا - اودميع ش عظيم ك كنكرون مك جابينيا مجے مزید دسعت ملی تو مجھے اوں دکھائی دیا . کدع ش عظیم میری نگاہ میں ایک رائی کے دانے کی طرح سے میں نے اپنے آپ پرنگاہ ڈالی۔ تومیرے بدن کا روال روال ایک تصویرینا ہوا ہے اور برتصویر میری ہمشکل ہے۔ اب بیصور تیں منا شروع ہوئیں تام ا فلاك - آفاق - اماكن - جام انفس بي كيف نظر آف لك - تمام تجليات اسماء صفات ا فعال اور الثمار محو مون في كل ايك المحميكية من تحصير بزارعالم نظر آف كاوركام المي كوبلادا سطرت المحيط الله الله الله على عبدى على عبالى - الوار حلالى - وانت بین الجلال والجال می تعلی دات کے کلام سے بھی مشرف ہوا اوراس مثابدہ کی مینیت كوباين منبي كمياجا سكتا - اسى دن مين في مقام لا بهوت مين نزول كيا - يمعت م فردانیت ہے۔ جلی ذات کے بعد میں سره روز تک عالم صحومیں رہا۔ اس دوران صرت شخ او مدالدین سمنانی کھی کھی میرے جرے میں تشریف لایا کرتے تھے اور میری بینانی بربوسه دیاکر تے تھے اگر حضرت سمنانی میرے عال کی گرانی مذفواتے توجرے كے مران مجے مردہ جان كرد فن كرديتے.

آپ نے بحرمعاً فی بی ایک اور مقام پر مکھاہے کہ حضرت ضرعلید السلام نے ایک سوال کیا گریں ان کے سوال کا جوانب دیا کرتا تھا۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ انبدائے حال میں کئی سال تک بھے حضرت ضرعلیا لسلام کی ملاتات کی تمنا ہوئی جب ملتے تو میں بعض سوالات کرتا تھا۔ وہ ان کا جواب دینا مناسب خیال نہ کرتے تھے۔ آج ان کی خلام ش ہے کہ دہ سوالات کریں میں جواب دینے سے آخرا ذکرتا ہوں۔ اس کی وج یہ خلام ش ہے کہ دہ سوالات کریں میں جواب دینے سے آخرا ذکرتا ہوں۔ اس کی وج یہ

ہے کہ وہ اپنی ذات کی حفاظت کے درہے میں لیکن مجھے اگر ہزار جانیں بھی دی جائیں تومی انہیں اللّٰدی راہ میں قربان کرنے کوتیار ہول مجھے قوصرف فیرالکلام کی فکرہے میں اتنی بات کرتا ہوں جو مختصر ہو گرنہا یت صروری ہو۔

ی کھے دقت بھی اجالی طور میا لفاظ کا استعال کرتا ہوں اگرا سرارا المبلیہ کو مفصل کھنا شروع کروں تو مجھے تورات کی طرح کئی اونٹ درکا دہول کے جن برا بنی تحریر یہ لادسکوں میری یہ بابقی فرقان غظیم کی شرح ہیں۔ اور بہی فیرالکان ہے آپ نے برالمعانی میں کھا ہے کہ ہیں پورے ہیں سال اپنے ہیروم شدکی استان پرسر نیاز جھیکا نے رہ ہوں۔ اس ادادت کے بعد ہین کا مول ہیں شفول ہوگیا ۔ ایک تو یہ کہ پانچول وقت میں اپنے ہیروم شدکو وضو کر انے کے لئے پانی نے کر حاضر رہتا ۔ دوسرے ال کے جے کا جراغ روشن رکھن میری ذمہ داری کھی ۔ اگرچراغ دکھنے کی جگدنہ ملتی تو ساری ساری وات اپنے ہی و مرشد کے اتفجا کے لئے برات اپنے ہا خذید الحق المرائ منا نظیم سے اپنے ہیروم رشد کے اتفجا کے لئے مطی کے ڈھیلے تیار رکھتا تھا ۔ ہر دوزتازہ دھیلے لاتا ۔ پہلے انہیں اپنی گالوں سے مطی کے ڈھیلے تیار رکھتا تھا ۔ ہر دوزتازہ دھیلے لاتا ۔ پہلے انہیں اپنی گالوں سے مطی کے ڈھیلے تیار کو تا کہ کے الکے مقار کے ایک الموں نے کرتا ۔ بھرا کی سے دورا قدار میں مرانجام دیتا دہا ہوں ۔

اس کے بعدایتے پیرومرشد کی اجازت سے بین سوبیاسی اولیا داللہ کی زیادت کرنے لکلا۔ میا ولیا واللہ اللہ کی زیادت کرنے لکلا۔ میا ولیا واللہ اللہ اس زمانے کے مشا ہیر مشائخ تے ۔ نام بنام قرب بہ قربہ ملک بہ مکن مدمت میں بہنچا۔ دُور درا زسفر کئے۔ بہنی ان عالات کو ابنی ایک ادر کتاب میں بیر دقام کیا ہے۔ میں اس سفر میں صفوان بن تھی جوعبدالمنا ت کے بھائی تے ۔ ملا بہ بزرگ صفور میدالا نبیا وسلی اللہ علیہ وسلم پر ایمان لائے تھے۔ میں انہیں ایک غادیں ملا جس دن میں نہیں ایک فادی تو اس دفت وہ نوسو بارہ سال کے ہو چکے ملا میں کے تو بھے ۔ ہیں نے مجھے تبایا کہ مصفور نبی کی تو اس دفت وہ نوسو بارہ سال کے ہو چکے لئے دعا میں ہے۔ ہیں درازی عمر کے لئے دعا

فرائی تھی صفوان کا واقعہ آپ کی کتاب بر المعانی میں تفصیلی طور پر موج وہ مے بھریہی داقعہ آپ کی کتاب بحرالان ب میں بھی ہے۔ اگرچراس داقعہ کوہم احادیث اور سیرت کی کتابوں میں نہیں پاتے تاہم مہم نے بجرالمعانی کے حوالے سے بید واقعات ورج کئے میں ۔

برالمعانى كي آخرى مصين ايك مقام يد فحت بين كرمين تأئيس اه مح م الحوام بروز جمرات اپنا چینیسوال محتوب لکھ رہا ہوں میراقلم عثن کے اسراسے میدان میں مطال ووال سع ميرا تلم جب اس على مينيا. زُدُ ني عِنبًا وُ زُدُدُ حُبُ " و مجه كمي الكرو اس سے مجت بڑھتی ہے ، تو میں کا نپ اٹھا۔ سرزا فو پرد کد کرسوچے لگا۔ بے فود ہوگیا اسی عالم بنجوری میں مجھے مرور کا ننات صلی الترعلیہ وسلم کی زیارت نصیب ہوئی میں تے ديكها حصنورسيدقبابي مبوه فرابي رتمام صحابها وراوليائ امت سعلس عجى وفي ب سید ناصدای اکراورسیدناعلی کوم الله و جرمیسرے مرشد حضرت نصیرالدین محود چراغ دہلوئ کک تمام اولیائے است موجود ہیں اسی اتنا ہی صفور کر فورقے فارسی نبان مي مجهم خاطب فرمايا - اعمير عبير تم عشق حضرت لم يزل لا يذال ميمت مودا بني كذاب بحرالمعاني مهارى فدمت مين بيش كرود بس اسى وقت بنيتس كمتوبات جومكل كف عقد اور برهیتيدوال كمتوب جوائعي نامكمل عقا- بيش كيا جعنور كورت مبارك بولا مكها بضورت ان تمام كمنوب كونكاه نبوت سدا بك المحدمي ريط ليافر مايا - المحد للتد الذى المُهَكَ يُا ولدى علم الاسواد واد شرك الله في زيادة عكمك پھرآپ نے فرمایا حضرات رمجوالمعانی کامو تف ایک ابیامرد سے جس نے قرآن مجید کے معانی اورمطانب كو بجرالمعاني بين جمع كيا ہے۔ اگر آج دنياكے سارے علوم عوبوجائيں۔اور ال سے ایک درق بھی مذر ہے بہ شخص قلم اسماکوان تام عبوم کواز سرف فت ریک -416

اب نے مجھے کم دیا۔ بیٹا اس کے بعد علوم اسراط لہیا کو صحوا پی نہ بھیرا کرو۔ اس
سے امریشریفی کو نقصان پہنچیا ہے۔ بیں نے قدم بوسی کر کے آپ کے فرمان کو قبول
کیا اور اس مکتوب سے آگے ایک عرف بھی نہ لکھا صفور نے بیری کما ب بجرالمعا فی کو
صفرت علی کرم النڈ وجر کے ہاتھ ہیں دے دیا۔ آپ نے نگاہ ولا بُیت سے بڑھ کر صفرت
خواج صن بھری کو کپڑا دی آپ نے خواج عبدالوا حد بی نہ یکو دے دی اس طرح
منا مختا کے سلسلرسے ہوتی ہوئی خواج سنجے نصیر مجمود جراخ دہلی کو دسے دی گئی۔
مام منتا کے سلسلرسے ہوتی ہوئی خواج سنجے نصیر مجمود جراخ دہلی کو دسے دی گئی۔
صفرت بید مجمولے بینی سلامی میں فرت ہوئے بیر و فات سلطان مبلول لودھی کی
وفات سے ایک سال قبل ہوئی تھی سلسلہ تپنید ہیں آپ جیسا طویل العرکو کی بزرگ
منہیں ہوا۔

چول محسد ابن جعف رفردیں گشت از دنیا مجنت جائے گیر گفت سرور پیر کا مل متقی آھنت سرور پیر کا مل متقی

سال وصلحت ٦ ل شربرناوير

کہتے ہیں ایک دن صرت بینے محرمحبس سماع میں تشرلیف فرما سے قرالوں نے ایک ایک ایک دن صرت بینے محرمحبس سماع میں تشرلیف فرماتی علی ایک ایک میں تاہمانی تحقی فیلے کو اس قدر رقت اور وجد طاری ہوا ۔ کرروع حلتے مگی ایک واقف حال نے قوالوں

کوکہاکہ اب البی غزل جھڑو جس میں قرب وصال کی کیفیت بیان کی گئی ہو۔ قوالوں است عار وصل شروع کئے قوضے کے دل کی کیفیت نوسشگوار ہوگئی اور چیرے پردونق آگئی لیوں محسوس ہوتا تھا کہ از سر نوزندگی آگئی ہے اور سنسخ میں تازہ روح کام کرنے لگی ہے۔

ایک بارا یے کے گورا ک الگ گئی غلہ دان بین ص قدر آئندہ قصل کے لئے بيجد كه عقامًام كا من م جل كي فصل كاموسم آيا - تواب كو بنايا كبا - كدسارا بيج تو عرصه مواهل كي تفافران كي مم تونود سوخة جال بي عيلا بيج كوميا كركها كيا-الله كى باركاه مين مع عدا على كركف لكاء الداللد مرارتوايف كرم اورمنى میرے کام سنوار تاہے اب میری التجا پرفصنل فرما میرے پاس غلہ وال میں وہی: پیج تقا جومل گیاہے اب میرے پاس تو کھر بھی نہیں تیرافضل ہی ہونا چاہئے۔اب بب توجلا ہوا بیج ہی اپنے کھیت بن ڈالول گا۔اور کیا کرسکتا ہوں کہتے ہیں کہ جلے ہوئے بیج سے اتنی نصل ہوئی کم ایک ایک بوٹے کے سابھ سات سات فوشنے نکا اور ایک ایک فوش میں عرب موئے دانے وگول نے دیکھا توحیران رہ گئے یہ بات بادشاہ وقت سکندرلودسی کےسامنے بیان کی گئی تو بادشاہ نے دونفل اوا كركے الله كا فتكرا واكيا - كرميرے عہد مكومت ميں ايسے ايسے صاحب كرامت لوگ بھی موجود ہیں جن کی و عاسے علے موسئے بیجسے بھر اور فصل پدیا ہوتی ہے!۔ ايك مجلس سماع ميں آپ برومدطاری مقااور آپ رقص كر رہے تھے اس علاقہ کا ایک امیرا ور رئیس مندو و ہاں سے گرز را محلس ساع کے پاس کھڑا ہوکہ سننے لگا چند لموں بعداس ہردقت طاری ہوگئی وہ چلاکراپنے سا تقیوں کو کہنے لگا مجھے بیال سے سے علور ورن میں اپنے دین سے دست بردار ہو کرمسلمان ہوجاؤل گا اس کے ما تقیول نے اسے اعظایا۔ اور دُورے گئے۔ کھ وقت کے

بدوہ ہوش میں آیا تو کہنے لگا۔ بیسلمان اپنے ضداکو اعظائے دتص کررہے تھے اگرچند کھے اور عظرتے تو میں ملمان ہوچلا تقاا وران کے پاؤں میں گرکر ہندودیّت سے توریکر سنے والا تھا۔

معادج الولائيت نے آپ كاس و فات سند ملك ملا ملك اپ كامز ار ملآوه مضافات قنورج بيں ہے۔

> پواز د نیانفینسر دوس بری رفت محسد طارح معسدا جامرار وصال اوز بیرمحسب میرم گیر دگرمنسر ما محسدتا جابرار دگرمنسر ما محسدتا جابرار

صرت شخ مبنیدسن فی میں فرت ہوئے آپ کا مزارصاً دیمی واقع ہے سننے عالم - عالم و عامت ل مبنید سال ترمیکش م حیشم ا ذخرد

گفت کامل خواجرد اصل جنید

سین عالم عالم و عامت ل جنید شدی از دنیب بفر دوسس بری سال ترحیلت جرحت از خرد گفت کا مل خواج و اصل جنید سیست کا مل خواج و اصل جنید

آپ صرت شخ كبير كفليفه اعظم تق. شخ حسين ناگوري قدس سره به عدم ظاهري د باطني مي كمال ماصل كيا عقا شراحيت وطراحيت او رحقيت مين ابل مندوستان كام مان عاتے تقال كى ولايت اورعظمت برِتمام إلى النّرة الل عظمير عصاحب ذوق إلى مجت ك پیشوا - زمروتقوی می اینی شال آپ تھے گرات میں دہ کراپنے بیرومرشدسے المری اور باطنى علوم ماصل كئے اپنے وطن واليس اسے كئى سال صرت فوا جرمين الدين اجميرى رحمة الشعليه كم مزار رئيا أوار يرجيا وررب اورالشرتعالي كيعيا وت مين فول دب جن دنول اجمرومان موليا - اجمرك كرد ونواح مي وحتى ما نورول كالبيرا عقامرت آپ اکید ہی حفرت نواج اجمیری کے جرے میں قیام فرارہے اھی حفرت فواجراجیری کے مزاد پر عارت مذبئ عنی آپ نے کئی سال محنت کر کے كبندكه واكياا درشا ندارعارت بنواني بيراكي وقت آيا كمصرت فاجاجيري ك روعاني علم ين الور چلے كئے و بال ايك دارالعلوم قائم كيا اور لوكول كوعلم كى دولت سے مالامال کرنے میں صروف ہوگئے۔ آپ نے قورالنبی کے نام سے قرآن ماک کی تیس میدوں یوا یک تفسیر ملص ہے ہر اور سے کی علیحدہ علیحدہ طلب

اس بیں معانی اور بیان کی روکشنی میں مطالب بیان کئے گئے ہیں علوم و بنید کے علاده اسرارالهيديمي بيان كرويئ بين-آپ كى ايك كتاب مفتاح بين بهت متہور مونی -آپ کے قلم سے اور بھی کئی رسائے اور تعیوت کی کتابیں سامنے آئی ہیں۔آپ نے شخ احد فزانی کی سوانے کی سرح مکھی ہے۔ اس کتاب کے بیٹھنے سے معنور سرور کا انتات کی ذیارت ہوجاتی ہے۔ آپ برات خود صرت مورا تبیاء صلى الترعليب وسلم كى صنورى مير رست تقد آپ كے پاس زمين - باغات اور كنويس جننے ميم فق بصنورك نام نامى برنتاركرك عزياء بن تقسيم كرويئے گئے۔ ایک بارالیا ہوا کہ آپ نے بہت سے لوگوں کی دعوت کی۔ گراپنی افطاری کے لئے تقور اسا کھا نا رکھ لیا۔ کچہ دیرلعد جندما فرانسنے جنہس پیلے ندکسی نے دیکھا تھا۔ ندانبیں کوئی بنیجا ننا تھا۔ بیسادے مافرکو ڈھ کے مرض میں اس مدیک مبتلا تھے كران كى الكليول سے قون اور پيپ رستى تنى انبول نے آپ سے كھانے كے لئے کھے مالکا۔ آپ افطاری کے لئے جو کھر ساگ دمی اور چاول دکھے تھے۔ انہیں نے دبا وه شام تک کھاتے رہے افطاری کا وقت ہوا تو وہ کہنے لگے اب ہمارا جو مطا جر کچھ بچا ہے۔ اس سے دوزہ افطار کریں۔ آپ برغلبہ حال نفا۔ آپ نے ان کابی خورد کھا ٹائٹروع کردیا۔اسی دن سے آپ کے فتر مات رومانی اور ظاہری کھل گئے اور اب برالله كى دهمت كى بارضي بون مايس-

صرت مین ناگرری رحمة الدهاید بهبی پرسفرکیا کرنے تھے۔اس بهبی کوخود ہی علات ادرایت بدوں کی خود ہی خاطرو ملا رات کرتے تھے۔لیکن اباس نایت ہی میلا کچیلاا در بوسیدہ بہنا کرنے تھے معاصب الاخبار الاخیار لکھتے ہیں کہ میں نے آپ کوالیے لباس میں اپنی آتھوں سے دیکھا ہے ایک شخص شیخ عبدالقادر نامی با دشتا ہوں کی اولاد بیں سے نظامان دنوں دہلی ہیں دہا کرتا نظاوہ نظراندلباس

میں دہتا تھا۔ وہ اکثر صرت حین کے پاس صاصری دیاکہ تا تھا وہ تین کیروں میں رہتا ۔ لیگر ی قبیض اور شوار ایک ہی دنگ کے ہوتے ۔ جن کی قیمت ایک روپیم سے ذیادہ نہ ہمدتی تھے ۔ سے ذیادہ نہ ہمدتی تھے ، اس درولیش کو بہت عزید رکھتے تھے ۔

ايك باراك على سماع مي تشريف فرما تق قوالول كى ايك غزل يراكب يد وجدطاری ہوگیا وہ اسی حالت میں اسٹے اور گھربار حجوڑ کر شہر کے با ہرصح ایس چلے كُنَّةُ أَبِ كَي يِجِي يَحِيمُ مِلْ كَانَامُ لوكُ جن بين سلمان غير سلم سب شامل مقر بولين وال بي نظم راصة يرصة بي عقي عق محواس ايك بهت واي عيل ب. اب اس کے کنارے پر پہنچے تور کنے کی بجائے یانی بیسے یوں گزرے جیسے فتلی بہ كُنت بين - اب كم ما عقرى ما موك على يانى كى هيل يدس كذر كم العبة قوال كن رسى يدرك كف اوروه كك ندج اسك اسطرح كي يوما ستد آكم جاكررك کئے ملطان عیات الدین کی بڑی خوا بش متی کہ آپ کیمی ان کے دریادیں تشراف لائي -اس نے کئی با والتماس کی کرائب مندوا میں قدم دنچه فرما بیں مگرائب مبشید الکار كرويت ايك بارسلطان كے دربادي صفورمرود كا ثنات كا "موت مبارك" لايا كيا وكول في الله الرصرت يتن حين كوالياد لكواس بات كي ترينجاني جائے تو وہ غود مخود وربادیں آئی گے جانچہ ماوشاہ نے اپنے سرکاری درا نع ے صرت کے شہر می " مونے مبادک " کی آئد کی خرعام کردی عضرت سنتے ہی تار ہو گئے اپنی بہلی پر بیٹے صلواہ وسلام پڑھتے روانہ ہوئے رحیب آپ اس شہرکے زديك بينجية تو بادشاه استقبال كے لئے أسك أي اس نے ديجها ايك كردا ورخف علاآر اب ادرسیول کوخودسی مانک را ہے۔ لوگول نے باد شاہ کو تنا یا کریمی صرت حین ناگوری میں بلطان نے آگے بڑھ کرسلام عرض کیا۔ آپ نے فرمایا میں تو صرف موے مبادک کی زیارت کو حاصر ہوا ہوں موسے مبادک "ما شے لایا گیا

تو تو ئے مبارک اُڑکہ آپ کے ہا تقدیم اینچا۔ باداناہ بڑا جران ہوا۔آپ کواپنے والدی قبر رہے گیا۔ آپ نے دعامغفرت کی اورسائھ ہی اس کے والد کی قبریں لعداز وفات کے مالات بیان کئے۔ باوشاہ نے آپ کی خدمت میر تی تی تاف میش كئے اورنقدى تھى ندركى كرات نے قبول كرنے سے انكاركرديا . گراسى عيسى صرت شخ کے بیٹے کے دل میں خیال آیا کہ اتنا مال و دولت والیس کرنا اچھاہیں صرت شيخ نے بيٹے كى خوامش كو كھا نب ليا - فرما يا - بيٹا - بيسانب بيس كو ئې عقلمند سانپوں کو اپنے گلے نہیں ڈال ایکن اگرتم اس برقربان ہی ہوگئے ہو تومی تصیحت كرنا ہوں كراس رويے سے حفرت خواج معين الدين اجميري كے مزار كى تعمير كود اور جوروبيربي اپنے دادا كمزاركى تعيرس مرف كردو _ مجے ميرے بيران عظام نے تا یا عالم کر آیک وقت آئے گاکہ تہیں بہت سامال وزر مے گا۔ شایدیال وزرومی ہو لیکن آپ کے علم رپیر دو پیرے بیالیا اور صرت اجیری کے مزادمبادک كى تعمير من كادياكيا روضه مهارك كى تعمير توحزت نے كردى - كر لعد مي ملمان بادتها بو نے دوسری عامات بنائی تھیں اسی طرح حضرت شخ حیدی نے خوا ج عیدالدین حیثی كامزادينايا . گراس كىچاردلوارى لىدىبىمان بادشا جول نے بنائى تقى معطان محرتننت نے اس مقره کی عارات کوبڑے عالی شان طریقہ سے نبایا تھا۔ حضرت شخ حبین ماگوری رحمته التٰد علیه کی و فات الله هم میں ہو ئی تھی۔ كردرهلت جواز جب ال فنا ت بدار الاسلام فاص حين عار<u>ت مت</u>قى است فا رخبش ہم بعب ما امام فاص میں

المي حامد شاه فدسس سرة ، فضي ضيح نبيت بيندمقامات اورا على فات كالله عقد على مالك عقد على مالك عقد من الله عن الله

سلطان شمس الدین التمش کے ذماندا قد تاریب گردیزسے دوجائی مندوسانی بیس آئے۔ ان بین ایک کانام بید شهاب الدین اوردوسرے کا بیدشمس الدین تھا۔

میرشمس الدین تومیوات کی طرف جا کر آباد ہوگئے۔ البتہ سید شهاب الدین دہی ہی درجے دائجی سید شهاب الدین کا خطاب تھا۔ آپ راجی حا مرشاہ کے جدا مجر تھا تبدائی ذرندگی بین سیاہیاند دیاس میں دہا کرتے تھے۔ حام الدین مائک پوری کی عبس میں آئے تو مام بیاس زیب تن آئے گے۔ آپ کی ذیر شکرائی سے بناہ دیا ختی کی میں معمود مند سب اس طرح صفائی یاطن حاصل ہوئی اگرچ آپ فارمیادت فداوندی میں محرو مند سبے اس طرح صفائی یاطن حاصل ہوئی اگری دوسرے کے احوال باطنی یا خفیہ حالات استفادہ کرتے تھے۔ کہتے بین اگر کسی دوسرے کے احوال باطنی یا خفیہ حالات فام ہرکرنا ہوتے تھے۔ کہتے بین اگر کسی دوسرے کے احوال باطنی یا خفیہ حالات فام ہرکرنا ہوتے تھے ایک کے دل کی اصلاح کو دیتے تھے۔

آپ مانافیت میں فرت ہوئے۔ مانک پورمیں مزار بیا افراد ہے راجی بید تور جود ہلی کے سا دات میں نور علی فور سفے آپ کے ہی فرز ندار مجند تھے۔ آپ بھی اپنے باپ کی طرح بڑے صاحب کوامت واحوال بزرگ تھے۔ پیا ہیا نہ نباس میں اپنے آپ کو ستورد کھا کرتے تھے۔

ماید ذاست احدی وولی تطب ویس حاید حند اونبی دنت بچ ل ا ذجال نجلد بي گفت مرود بسال تاريخش

آپداجی ما مرشاہ کے مرید تھے۔ بیدنورین آپداجی حامرتاه کے مرید تھے۔ بیداور بن شخ حس طاہر قدر سس مسرہ :- حامد خاہ کی مجانس سے بھی فیض پا پا تھا۔ آپ کے والد شخ طا ہرماتان سے علی کرد ملی آئے اوردینی علوم عاصل کرنے مگے ایک عصة تك بهار على كئة اور وال ره كرفنغ بده حقانى ك مدسمين يطعقد ب فنع حس بهارمیں ہی پیدا ہو تے ہوش سنجالا - تودینی علوم میں معروت ہو گئے اور ما عدّما عدّمى موفت كى منازل ط كرتے رہے اور در دلينوں كي مجست ميں بہنے لگے ال دندل آپ نے ابن عربی کی کتاب فسوص الحکم ایک بزرگ سے باط صنا شروع کی آپ کے والد نصوص کے اسرارسے برگیانہ بھی تھے۔ اور فلات بھی تھے ایک دن والدف آب سے توجدو جردی کے موضوع برگفتگو کی آپ نے ظاہری ملوم کی روسنی میں اس مئلہ رپات کی جس سے آپ کو اطبیان ہوگیا۔ اس دن کے لعد آپ نے فصوص کی مخالفت بھوالد دی اہنی و نوں شنخ راجی حامد شاہ کی مشخیت کی مشرت سالے ہندوتان میں پھیلی تھی۔ شخ طا ہرحن آپ کو دیکھتے گئے بیلی ملاقات میں ہی آپ مريد ہوگئے .علمائے کوام بیسے جو شخص سے سے پہلے آپ محصلقدارا دے بیں آیا حرت شخص طا مرتقة آب الرجيع نبورك مثالخ مي سعق مرسلطان كندر اودھی کی درخواست برج نبورسے دملی چلے استے۔

سلطان سکندرکاایک بھائی۔ آپ کا مرید تھا۔ اسکے دماغ میں ہمیشہ سلطنت عاصل کرنے کی کشمکش تھی۔ ایک دوز آپ کی فدمت میں عاضر بوکرا اصرار کرنے لگا کہ میرے لئے سلطنت دہلی کی دعا فرمائیں۔ صفرت شیخ نے اسے اس اوائے سے دوکااور فرمایا اللہ تعالی نے تہا رہے بھائی کوا مورسلطنت دیئے ہیں تم اس کی سلطنت میں دہ کرفدمت خلق کرو۔ یہ بات سلطان سکندر نے سنی تودہ آپ کا مزید معتقد ہوگیا۔ آپ کو نہایت احرام سے اپنے شاہی قلور کے قریب کو تحک بجی منظل جو معتقد ہوگیا۔ آپ کو نہایت احرام سے اپنے شاہی قلور کے قریب کو تحک بجی منظل جو

سلطان محد تنتی کے قلعہ میں ہی عظرایا۔ آپ ما دم وفات وہاں ہی تیام فرارہے۔
اخباراً لاخیارا ورمعارج الولائیت کے مولفین نے آپ کا یوم دفات چوہیں سیط لاول موقات کے مولفین نے آپ کا یوم دفات چوہیں سیط لاول موقات کے مولفین بوجی گواں موقات ملمسلوک و توجید میں آپ کی ایک کتاب مفتاح الفیض بوجی گواں قدرہے۔
قدرہے۔

ت د ز د نیا بو در بهشت برین عن آن محسن جهان مروم هر دو تا دیخ رملتش سرود د یب فیضاست - تطبحی مخدوم د یب فیضاست - تطبحی مخدوم

سنے بخیبارقد س مرہ استے۔ استان زندگی بی ایک سوداگر کے غلام
عقی بر بر شاس تھے وہ سوداگر آپ کو خالف علاق میں جا ہرات خرید نے کے لئے
ہی بر جو ہر شاس تھے وہ سوداگر آپ کو خالف علاق میں جا ہرات خرید نے کے لئے
ہی باکہ اتھا۔ ایک بارشخ بختیاداسی سلسد ہیں صرت شخ احد عبدالی قدس سرہ کے
سنہ میں آئے۔ ہر دو ذہبع و شام صرت شخ کی فدمت میں عاظر ہو کہ کھوشرت احر عبدالی
ماہ کہ اسی طرح مبع و شام آتے رہے۔ کھوٹے ہوتے دہے۔ گرچھٹرت احر عبدالی
نا کہ اسی طرح مبع و شام آتے رہے۔ کھوٹے ہوتے دہے۔ گرچھٹرت احر عبدالی
قرضے بختیاد رہمتی طاری ہوگئی۔ شخ بختیاد ستی کے عالم میں بولی گتا فائد باتی
کوشے۔ وہ صرت احد عبدالی کو کہتے۔ جب اللہ تعالی نے آپ کو اتنا صاحب کو امت
با یا ہے تو اپنا فیض تھیم کیوں نہیں کرنے اقدال اسراد و معادت پر نجیل بن کر کیوں
بنا یا ہے تو اپنا فیض تھیم کیوں نہیں کرنے اقدال اسراد و معادت پر نجیل بن کر کیوں
بیطے دہتے ہو۔ ال کی میر با میں اہل خانقاہ کو ایھی مذاکمین گر آپ بردا ست کرتے کیے
موصد کے لعد آپ نے اس پر ایک نگاہ اور ڈالی تو آپ کو صاحب ہو ش بنا دیا۔

اب شیخ بختیار حضرت احررود لوی کے مربد ہوئے اورسب کچھے حجیوا چھا الاکر خانقاہ کی خدمت میں لگ گئے حضرت احد عبدالحق رحمته الله علبہ نے فرما یا بعب مک اپنے مالک سے اجا زت ہے کر اس کی ملازمت اور غلامی سے نجات نہیں یاؤ گے خانقاہ میں نہیں رہ سکتے جیا نخچہ شنج مجتبار والیں اپنے مالک کے پاس دہلی گئے اس نے شنح کی مالت دیھی توانہیں آزاد کردیا ورتمام فرائف سے سیدوش کردیا۔ آپ وایس آئے تو ہمة تن خدمت خلق مين شغول مو گئے . ايك دن حضرت شخ احد عبد الحق نے فرطايا. بختیار اِس فانقاہ کے صحص میں اب کنوال کھود ناچاہئے۔ یہ بات سنتے ہی بختیارنے كدال اتظائي اوركنوال كھو ونا شروع كرد باكئي دن كھودتے رہے آخركنويں سے پاني تكل آيا كنوان تيار موكيا توآپ نے فرا ياكنوي كي طندرى ملى سے ايك چورتراصف بنا نا چاہیئے حس بردرونیش مبھاکریں شیخ بختیار نے ساری مطی سے ایک جیوترا بنا دیا۔ ایک دن حصرت سینے احمد عبدالتی نے فرمایا بختیار بیکنواں باہرسے مٹی لاکروچ کردو يشخ بختيار بابرسے مطی لالاكركنواں ٹيركرتے گئے كنواں پر برگيا اس عرصد كے وران سفيخ بختياد في كيمى مذ إي اكدالساكيول كرنا بان كى اس ادا برصرت احدرودادى نے نیفنان کے دروازے کھول دینے اور آپ بیند مقامات پرجا پہنچے۔

ایک دن صرت شخ احمد عبد الحق قدس سرهٔ اپنے جُرے کے دروازے پرتشرافی فراعظے شخ بختبار بھی پاس ہی کھڑے تھے ،آپ نے شخ بختیار سے پوچھاتم کوئی غیر معولی چیز دیکھ رہے ہو۔ دبکھا کہ سادا جرہ سونے کا بنا ہوا ہے ، آپ نے نز سر مایا ، بختیار! اپنی صرورت کے لئے سونا اعظا و عرض کی حضور اب تو آپ کی غلامی ہی میراسونا ہے مجھے اس سونے کی ضرورت نہیں ہے ۔

شاه الم حبت سنيخ بختيار پول به نجت خود كبنت يانت جا بادى نيض است سال ومسل او نيز بارد حق ولى مقست را د

آپ شنے فتح اللہ جو نبوری کے لیک مرک اور شنے فتح اللہ جو نبوری کے لیفہ اظم میں ہونی ہوری کے لیفہ اظم میں ہونی ہوری کے دالہ ماجد دہا ہے۔ دہا کے معروت افراد ہیں سے تھے۔ تیمور با دشاہ کے حملہ کے وقت یہ لوگ دہا ہے ہو نبور چلے گئے۔ اور د مال ہی رہنے گئے۔ شنح محد عیلی ابھی ہجے ہی تھے کہ شنح محد عیلی ابھی ہجے ہی تھے کہ شنح محد عیلی ابھی ہجے ہی تھے کہ شنح الوالفتح کی مجلس میں حاصری دیا کرتے تھے اس طرح آپ کو فقراء اور درولیشوں سے مجلت ہوگئی حضرت شنح ابوالفتح کی خدمت میں حاصر ہوکہ مرید ہوئے۔ ملک العلماء قاصی شنماب الدین سے ظاہری علوم حاصل کئے۔

اخبارالاخیار بی مکھاہے کہ شخ محرمینی کو عبادت اللہ بین اس قدراستغراق تھا کہ آپ کی نشست گا مکے پاس ایک درخت اکا وہ بڑا ہو تاگیا ہے کہ آپ نے ایک دل اپنی نشست پر کھیے ہے گہرے پائے بوچیا کہ یہ ہے کہاں سے آگئے لوگوں نے بتایا ، آپ کے سر مرایک درخت مبند مہد گیا ہے ، اس دن سے آپ کو بہتہ میلا کہ یہ درخت ایک عرصہ سے آپ کی نشست گا ہ پراگ ہے آپ ہمین مراقبہ میں دہتے ، آپ کو مدین مرحقے ، آپ کی گردن کی ہٹریاں اُنجر آئی تھیں ۔ اور آپ کی تطور تی سینے کو لگتی تھی ۔

می گردن کی ہٹریاں اُنجر آئی تھیں ۔ اور آپ کی تطور تی سینے کو لگتی تھی ۔

آپ کا درصال سال میں کو ہوا ، مزار مبادک جو نبور میں ہے ۔

راوج چرخ مسكن ما فت آخ - پوعلبلى آل ولى علينى نانى خود فرمود سسال ارتخالش - ميما دم زكى علينى نانى اله

ہپ شخ اجن کے برہی بوصرت سنے اپیجابی المیرور المارمتو کل فدس سره از مان مقامتی مارسی المی میروم شد تقدیر می ماندی میروم شد تقدیر میروم الله میروم شد تقدیر میروم میروم شد میروم شد میروم شد میروم شد میروم شده میروم ش زاہدا درمتقی تقے رات ہوئی ۔ گھر میں جو کچھ ہوتا۔ ہما یوں کو دے دیتے تقے جتی کم گریں یانی بھی اتنا ہی دکھتے جو ناز ہتجد کے وضو کے کام الاسکتا تقا امراد اور دنیا دارول کوایتی مجلس میں آنے کی اجازت نہ دیتے تھے۔ایک دن دہاں کے ایک ایرادی نے آپ کے صاحبزادوں سے درخواست کی کرھزت کی نیاست کی اجازت ہے دیں۔ آپ نے بچوں کے اصرار براجازت تو سے دی مگر فرمایا وہ لوگوں كج تول مي مي المي المي الما المروه اين دولت اورمال كاعزور ر کھتاہے توایتے کھردہے۔شام کاوقت عقا۔دوامیر ادی آپ کے کھرماض مونے دیکھا۔ کد گھریں اندھیراہے۔ سے کے پاس دینے کا تال خرمیانے کے لئے بھی بیے بہیں ہی رضت کے وقت شخ کے صاحزادے کو کہنے لگا۔ کل میرے یاس آتا میں تیل کا ایک گوالے دوں گا۔ یہاں رکھ این جب ختم ہوجائے توا ور سے آ مالائے تىل كى كى قى دوسر ب دى شىخى فى دىكھا كھر مى كئى جراغ دوش مى . بوھا يە روشنی کہاں سے آئی۔ بجول نے سارا واقعد سنادیا۔ آپ نے ساما تیل لیا۔ اور محلے عزیول می تقیم كردیا اور فرایا -اس امیرادی كومنع كردوآ ننده تیل مد

آپ کی وفات سلاف شمین ہوئی تھی۔ چوں عبزیز اللہ متوکل نقر الدفن بنہادور باتی ت م سال وصل اولیرورٹ عیال از عبیب من عزیز محت م آب جنبورکے اہم علماد کوام میں مولانا الدد ادہ و نبوری فدسس سرہ اسے عقے۔ آپ نے درسی اور فتی کتا بیں کھر در اور تقییر مدارک کی ستر میں کتا بیں کھر در والانام پایا تقالی افید کی ستر میں کھی تقییں۔ دینی علوم میں صفرت قاضی شہاب الدین کے شاگرد تھے اور دومانی طور پر حضرت داجی حامد شاہ کے مربد تھے۔

جی دفیل صرت طا ہرس قدس سرہ صرت راجی ما مدانا ہ قدس سرہ کے مربد ہوئے تومولانا الله داد نے انہیں ایک مخلص دوست کی حیثیت سے کہا۔ یا رقم نے طالب علموں کی عرت کو یا مال کردیا ہے۔ اور اپنے علم وفضل کو ایک روایش راجی عامد شاہ کی مربدی میں ڈال دیاہے صرت طاہر حس نے کہا صرت آؤیکی ون داجی ما مدشاہ سے مل لیں ۔ عیر جو دائے ہو گی اس بھل کریں گے رصرت حسن طاہر مولان الله واد كو مے كر صفرت داجى كى فدمت ميں بينيے راسته ميں مولان الله دادنے چندلید شکل اور دقیق مائل ذہن میں دکھ لئے کہ ما مرشاہ راجی سے بوهيول كالمة تاكهوه عملى طور بيرزير بهوجايش حضرت راجي حامداتاه كامعمول تضاكه ان کے پاس ج شخص اس ، قلبی بھیرت سے اس کے دل کی بات بالیتے اور اسی براپنے وال پرگفتگو کرتے تھے حضرت مولانا الله دادنے مداید عصندی اور مدارک کے بعض مشكل مقامات ذہن ميں رکھے مندمت ميں پنجے تو در يافت كرنے كے بعدراجي عامد شاہ رحمتہ النّد نے مولان النّد دا د کو مخاطب کرے کہا۔ مولان ایک زمانہ تھاکہ مجے ہداید کی اس عبارت پراشکال تھا۔میرے سلمنے بیجاب آیا۔ پھر مجھے عضدی کی فلال عبارت پیشکل در میشی آئی- تومیرے ذہن میں میرجاب آیا ایک باریچے تفیر مدادک کے فلال مقام پر کن بڑا تو مجھ اس جواب نے داہمائی فرمائى بے آپ توعالم دين بين -آپ اس بيمزىدروشنى ۋالىس گےمولان اللهداد

جران رہ گئے۔ اور قدم بوس ہو کرمر مدہو گئے۔ اور آپ کی نگرانی بیں روحانی مزلیں طے کرنے نگے۔

> آپ کی وفات سطم می ہوئی۔ حبان بہاللہ داد چول اللہ داد روح اوراحی مجنت راہ داد عقل سال انتقت ل آل جناب گفت مصب ح بہشت اللہ داد

آپ جامع عدم متربیت برخینت اورطراقیت مین کامل سخ احمد محید تنیین اورطراقیت مین کامل سخ احمد محید تنییبانی قدر س سره بی شخط وارع تقوی ذوق و حالت مین کامل تقریم معروت اور بهی عن المنکری پا بند سخط ظاہری و باطنی علوم صفرت بین ناگری قدس سرهٔ سے حاصل کئے سہتے ہیں کہ اعظار ہ سال کی عمر میں آپ نے دینی علوم پر درس دینا شروع کر دیا تھا ۔ آپ نار نول میں پیدا ہوئے ۔ اجمیر شریف مین زندگی کراری اور ناگر دمیں وفن ہوئے ۔ آپ کے والد مکرم قاصنی مجدالدین بن قاضی تاج الففنل بن شمس الدین شیبانی صفرت امام محد شیبانی قدس سره کی اولاد میں تاج الففنل بن شمس الدین شیبانی صفرت امام محد شیبانی قدس سره کی اولاد میں صاحب تھے مضرت امام محد شیبانی سنے حضرت امام محد شیبانی سنے مقلے مضرت امام محد شیبانی سنے حضرت امام محد شیبانی سنے محد میں اللہ علیا اللہ علیا کہ محد شیبانی سنے محد میں اللہ عامل کی اور آپ کی مصاحب تھی افتال کی مصاحب تھی افتال کی اور آپ کی مصاحب تھی افتال کی محد مصاحب کی مصاحب تھی افتال کی مصاحب تھی افتال کی مصاحب تھی افتال کی مصاحب تھی افتال کی مصاحب تھیں افتال کی مصاحب تھی افتال کی مصاحب تھیں افتال کی اور آپ کی مصاحب تھیں افتال کی مصاحب تھیں افتال کی مصاحب تھیں افتال کی مصاحب تھیں کی مصاحب تھ

آپ کے والد مزدگوار قاصنی مجد دالدین کے سات بیٹے تھے۔ ساتوں ہی متعقی پر ہزگار میدین اور نیک میرت تھے بہت سے بڑے بیٹے شنخ احمد تھے جوعلم وعمل میں سب پر فاکن تھے۔ علی قوت سے اپنے معاصر علما، سے بحث کرتے اور فالب آتے آپ عربی اور فارسی دو نوں زبانوں میں تقریر کیا کرتے تھے جوانی میں ہی ھزت

حین ناگوری کے مرمد ہو گئے تھے بجٹ وجدل سے توبد کرکے ریاضت اورمجامدہ افتیارکرلیا طرافقت کے رموزا پنے بیری مگرانی میں حاصل کئے اعظارہ سال کی عمر میں اجمیر شراعی چلے آئے اور سترسال تک اسی مقام بیعبادت وریا صنت میں گزار دينے۔ آپ کوفاندان بوت سے بڑی محبت تقی کہتے ہیں کم عشرہ محرم اورد بسط لاول کے بیلے بارہ ون ننے کیڑے زیب تن مذکرتے تھے۔ اور ان دنول میں زمین بربستر بھاكرسوتے اوربادات كے مزارات برا عمان كياكرتے تھے مردوزسيدالانبياءاور ا بل بعیت برد رودسلام برصنے مچر کھا نا پکا کرالصال تواب کے طور ریز با دیں تقسیم كياكرت نظاعتره محرم كي دوران شربت كاايك كلواحس مين دوده طاهوتا تعاليف سرمیا تظاکمه سادات کے گھروں میں حاضر ہوتے اور تقسیم کیا کرتے تھے بھران کی تھیجت سے تیموں اور سکینوں کو باتے ان ونوں اسس قدررو تے گویا واقعد کر بلاان کے سامنے رونما ہوا تقااسی طرح جب بعض عور توں اور را کیوں کو وا تعات کر ملا پر مقتے سنتے توان کی در دناک آواز ہر وجد کرتے اور آئکھول سے خون کے آنسو بہاتے۔ ال کے علاوہ آپ کامعمول تھا کرصی برکوام کے عربوں کا استمام کرتے تھے۔اورٹ کنے عظاماً کی وفات کے ونوں ر فائخہ خوانی کولتے اور تبرک تقتیم کم تے تھے۔ سماع کی مجالس کا ابتام كرتے سے دركھى لباس ماخرہ سنتے ندىفىدكىروں كاابتام كرتے جب جالس بى بىھتے توشىرى طرح بارعب بىھتے عقے ان مجانس يں اللدرسول كا قدال كو بڑے جاہ وجلال سے بیان فرما یا کرتے آپ کے بیان میں اتنا رعب وجذبہ ہوتا کہ روسا، وامراء بھی د بک جاتے تھے اگر آپ کے پاس کوئی مجدوب یا دیوانہ آجا تا تو بڑا ادب كرتے تھے۔ البتا بنى تعظم و توقر سے منع كرتے سے داركونى شخص آكر يہ بال كرتا كرمين فے رسول خدا صلى الله عليه وسلم كونواب مين ديكھا ہے۔ تواسے اپنے سامنے

بھاتے فود باادب ہو کو ببھے جاتے اوراسے فواب کی تفصیلات منا نے کا کہتے اور
سنتے رہتے۔الیسے شخص کے پاؤں چرہتے اوراس کے کپڑوں کو بار بارا پنے ساتھ لگاتے
اگر کوئی یرسنا تا کہ مجھے فلاں جگہ یا مکان میں حضور کی زیارت ہوئی ہے وہاں جاتے اور
اس جگہ کی تریارت کرتے اس عگر کی مٹی کو اپنے چہرے پر بیٹے تھے اگر دہاں تچھڑ ہے اگر
قوان بھروں کو دھو کر پانی چینے تھے اور اپنے کپڑوں پر عطر کلاب کی طرح چیڑ کئے اگر
کس شخص کو کسی سید کے ساتھ مٹرعی طور پر چھ گڑا ہو جاتا۔ تو وہاں بذات فود پنج جاتے
اور منت دیماجت سے ان کی ملی کراتے اور فرما یا کرتے کہ سادات کو ام اور اہل بیت
کے ساتھ مٹر لویت کے موضوعات پر بات تہیں کرنی چاہیے آپ سادات کی مجل ہیں تقریر
کے ساتھ مٹر لویت کے موضوعات پر بات تہیں کرنی چاہیے آپ سادات کی مجل ہیں تقریر
کے ساتھ مٹر لویت کے موضوعات پر بات تہیں کرنی چاہیے آپ سادات کی مجل ہیں تقریر

جن دنوں اجمیر شراعت پر ہندو کو سنے حملہ کر دیا تقاا ور دا ناسانگہ نے متہر رقبینہ کو لیا تقا اور سے شار مسلمانوں کو متہد کر دیا تقا جسرت بننے احمد خواج سین الدین اجمیری رحمتہ الله علیہ کے حکم سے دس دوز قبل اجمیرسے بیٹے گئے سنتے گرجاتے جاتے عام مسلمانوں کو آگاہ کیا کہ لوگو ؟ ان دنوں اجمیر یہ نظر حبلال ہے حضرت خاجہ کی خمامش ہے کہ اس شہر کو عام مسلمان خالی کرجا بیس چانچ بروز اتوار سلمانے یہ کو مسلمانوں کی ایک بڑی جا عت کو سے کو اجمیر سے دوا تہ ہوئے آپ کے چلے جانے کے دوسرے اتوار کو کھا دنے اجمیر میے حلے کہ احمد کو ایسا ۔

صفرت شنے احد شبیانی رحمۃ اللہ علیہ کا معمول عقاکہ آدھی رات صفرت خواج معین الدین قدس سرؤ کے روضہ ہیآتے نماز تہجد بیسے جی کہ نماز چاشت یک یہاں ہی وظالف میں صووف رہتے چاشت کے بعد دارالعلوم میں تشریب ہے جاتے طلبار کو دینی کتا ہیں بیس المرتے عقے دو پہرکو قبیولہ کرکے اعظتے تو ظری نماز اداکرنے کے بعد پھر وظالف میں مصروف ہو جا یاکر نے تھے عصر کی نماز کے بعد تفییر مدالہ کا

درس دیتے دعید اور عذاب کی آیات پر طارد تے . آپ کی آنکیس روتے رفتے مرشرخ ہوجا یا کرتی تقیس تفییر مدادک کو صوفیا مذا نداند میں بیان فرماتے - یہ وہ اصراد و مقائن تھے ۔ جو آپ کے مشائخ صفرت شیخ حیدن ناگوری اور شیخ حمید الدین صوفی قدس مرہا بیان فرما یا کمرتے تھے ۔

یادرہے کہ شخ احراکھارہ سال کی عربی اجمیر شرایت آئے۔ اور فو سے سال کی عربی وہاں سے نکا۔ چارسال تک نارٹول میں دہے۔ ایک ول الندوین نامی میزوب آیا۔ اور کہا شخ احراپ کو آسانوں پر آپ کے پیرومرشد نے بلایا ہے۔ آپ میزوب آیا۔ اور کہا شخ احراپ کو آسانوں پر آپ کے پیرومرشد نے بلایا ہے۔ آپ یہ بات سنتے ہی اسے قبر سان پہنچے ۔ اور جان وے وی۔ آپ مالت سکوسے باہر آتے تو با تق اعلائے کم بیر تحرید ہے۔ بھر بے فود ہو جائے۔ اسی طرح حب آپ کی وفات کا وقت آیا۔ تو آپ نے بیروکر میر پڑھی ، النداکبر کہا ، جان الند کے ہروکر دی۔ یا نے ماہ صفر سے 14 میں النداکبر کہا ، جان الند کے ہروکر دی۔ یا نے ماہ صفر سے 14 میں النداکبر کہا ، جان الند کے ہروکر دی۔ یا نے ماہ ماہ ودانی کو پہنچے۔ آپ کو دی۔ یا نے ماہ ماہ ودانی کو پہنچے۔ آپ کو

سلطان التاركين حميدالدين كے مقروبي اپنے پيرومرشد كے قدمول بيں دفن كيا گيا صاحب اخبار الاخيار نے آپ كاقطعة تاريخ بول تعمامے اور يرتطع مصرت مولانا محد نار فدل قدس سرؤ نے كہا تقار

> نظر بسته بود احد محسد شیبان د دول عذا بیچو زا بدوس بر که تاریخ بال سیب رخود نارنولی بر آور د از جله سیخ نزاید بر آور د از جله سیخ نزاید

شاہ سیدوبڑے ماحب علم وفض بزرگ تے بھزت ماحب علم وفض بزرگ تے بھزت منا ہو کہ سیدو قد کس سر فائد فی سے البتدائی عمری بڑے ماحب تروت اور دولت مقد تھے۔ شاہی دربار بی ایک اہم عہدے برقی علاقے سے دہا کہ تے تھے۔ آپ ایک فولجورت عورت کے کہویہ ہوگئے۔ گراسی اثنا بیں اللہ تعالی نے اپنے دوق وطلب سے نوازا رھزت مانک بوری کی فدمت میں دہنے گے۔ اعلیٰ میاس ترک کرکے فقرانہ لباس بہن میا۔ پیم مانک بوری کی فدمت میں دہنے گے۔ اعلیٰ میاس ترک کرکے فقرانہ لباس بہن میا۔ پیم اسی فقرانہ لباس بہن میا۔ پیم اسی فقرانہ لباس بین اپنی مجدوب کے باس جا پہنچے۔ اس نے دیجھے ہی کہا سیدو اِن ہے دن اسی فقرانہ لباس بیں اپنی مجدوب کے باس جا پہنچے۔ اس نے دیجھے ہی کہا سیدو اِن ہے دن آلیا ہم دولی النہ ، ہوسکئے ہواس دن سے لوگ اسے تبدوالیا کہنے گے۔ کچھ دن گردے تو اس عورت نے بھی تو بہ کہ کی اور صرت سے ام الدین نائک بوری کی مرید ہوگئی دونوں نے سادی نہ ندگی یا وفذاوندی میں بسرکہ دی سیدو اچھے سخورا ورثا حربی دونوں نے سادی نہ ندگی یا وفذاوندی میں بسرکہ دی سیدو اچھے سخورا ورثا حربی مقربی ایوا۔

دل گویدم سید دمگرا وال خود یک یک باد آندم که خودمی آیداو سید و کجا گفتار گو

آپ سوم من فرت ہوئے تھے۔

چرت سردار جنت سید فلد جناب سنه و پیر جنت سبت اریخ و صال آس شیر دیں مجگو سید ومعلق میر جنت

آپ جونبوریں پیدا ہوئے آگرہ تیں دہے اور دہلی میں فرت ہوئے کہتے ہیں کہ عصر کے وقت وہ شام کا انتظار کرتے اور اس قدر ٹوش ہوئے جیسے کوئی اپنے مجبوب کے استقبال کو کھڑا ہو۔ شام ہوتے ہی جربے میں چلے جاتے۔ دروا زہ بند کر دیتے جراغ درکشن کرتے اور باد فلا و ندی میں مشغول ہو جاتے۔ دن کے وقت فرصت ملتی تو علوم تھنون پر کتا ہیں کھتے تھے جب کتاب کمل ہو جاتی اسے جلا دیتے۔ یا لینی سے پرزہ پرزہ کر دیتے۔ آپ کے ایک مرید آپ کوشاہ خیالی کہا کرتے تھے۔ آپ کے ایک مرید آپ کوشاہ خیالی کہا کرتے تھے۔ آپ کے ایک مرید آپ کوشاہ خیالی کہا کرتے تھے۔ آپ کے می مرید تھے۔ شاہ عبد الی محق و محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ کے چیا تھے۔ آپ کے ہی مرید تھے۔ شاہ عبد الی محق و محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ کے چیا تھے۔ آپ کے ہی مرید تھے۔ شاہ عبد الی محق و محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ کے چیا تھے۔ آپ کے ہی مرید تھے۔

اخبارالاخیادیمی آپ کی وفات ستائیس ماہ رجب سم میں جو گئے ہے۔
ہول حسن گشت جب اوہ گربر بہشت
صور ست ما ہتا ہے پُر اندار
ذاکر پاک سے ل وصلش داں
ہم بخدال آف ہے پُر اندار

آب مریدفاص صفرت بین محدین است میدفاص صفرت بین محدین است عبدالقد وس گفته محدین است عبدالقد وسی محدین است عبدالقد و بدوسهای میرا پنا مساوی عبدالتی حیثی صابری عقد معاصب علم وظل نفتے ۔ ذوق و حلادت بین کمال پایا تھا۔ وجدوسهای میرا پنا افاقی بیس دکھتے تھے اگر چاطا ہری طور پر شیخ محدومته الدّعلیہ سے بعیت تھے ۔ گر باطنی ولا پر شیخ احد عبدالتی رحمته اللّه علیہ سے نسبت فاص اویسیدر کھتے تھے اور آپ کی دومائیت سے کمیل حاصل کی تقی آپ کی ایک مشہور تصنیف جسے افراد العیون کے نام سے مشہرت بلی سات فنون میں ترتب وی گئی ہے ۔ پہلے فن میں صفرت شیخ احد عبدالتی کے منا قب اور متفاور پر متا الله علیہ عالم کر مقامات و اینی نسبت اور اظہار بندگی اور اعتقاد پر دوشنی ڈالی گئی ہے۔ ایک مقام پر کھتے ہیں کہ ایک ان شیخ احر عبدالتی رحمته الله علیہ عالم کر ومتی میں فرما یا ۔

" والتُدمحد حجاب المدورية در ذات پاک حق حجاب نبود " دمحد مصطفیٰ التُد کا حجاب بن گئے در سرالتّد کی پاک ذات میں کو بی حجاب نہیں ما)

ہوش میں آئے تومر مدوں نے عرض کی صفور آج آپ کی زبان سے بیکلم وار دہوا ہے آپ نے فرمایا۔ توبہ تو بدنو ذباللہ من ذالک رمیں گناہ کمیرہ کا مرتکب ہوا ہول۔

مجےاس کاکفادہ اداکر تا ہوگا۔ بیسخت سرد اول کاموسم تھا۔ دات کے وقت دریا کے
کنارے جارہے تھے ایک جگر پانی کی تنہ پر برت جی ہوئی تھے ۔ برف کو تو اڑ کر خو د
پانی میں کھڑے ہوگئے۔ اور سادی دات مدکتے رہے۔
بیانی میں کھڑے ہوگئے۔ اور سادی دات مدکتے رہے۔
"محسد قائم و دائم ہیں "

برنانی دات ادرسردی کی شدت سے آپ کا بدلی علم ملد سے بھٹنا شروع ہوگی ابھی ماہ سے بھٹنا شروع ہوگی ابھی ماہ تک دات الیا عجامہ ہ کستے بھر جاکور سکور آپ بھر ماہ تک دات الیا عجامہ ہ کستے بھر جاکور سکور مائل ایک اور مقام پر لکھتے ہیں کہ ایک بارشیخ احر عبدالحق نے اپنے آپ کو قبر میں زندہ ور گور کر لیا ۔ اس طرح آپ بھر اہ تک قبر میں دہے بھر ماہ کے لیعد مریدوں نے آپ کو با مزلکالا۔ تو آپ کا حبم نجھت و نزاد تھا دوئی میں بیٹیا محفی سائس کا سلد جاری تھا۔ مزادوں لوگ ذیارت کے لئے جمع ہوگئے اور آپ کی ذیارت کی

مان كتاب الواليون ولقرص تيخ عبدالقدوس كتكوبي قدس مرة كااد وترجم محد نظام الدين عن كان الله والمحد المكنون كنام مطبع جائى وبل سے تائع كيا تقا - جي اوالا الله والمكنون ك نام مطبع جائى وبل سے تائع كيا تقا - جي اوالا الله والمكنون ك نام مطبع جائى وبل سے تائع كيا تقا - جي اوالا الله يم فائد لائتى بادك بور بهاول بور قد و واره چها يا - اس كتاب بي فاضل مولفت نے اپنے دو مانى مرشد شخ احر عبداله تى دعة الله عليه ك مقامات كو بلاى تفسيل سے بيان كيا ہے - اسى طرح آپ كى ايك اور كتاب كتاب كتاب كو الله الله يم توات قدول يد محق مونى فاؤ تركين نے روم الا مي مين تائع كى ہے اس كتاب بي محفرت كتاب كتاب مين الله يم الله يم الله على جو تسوّت الدور فال كافر يہ بين فلسفه وحدت الوجود كى ترجانى ميں ال كمتو بات كا الميك اسم مقام ماصل ہے الله في دور ميں اس فلسفه كو عام كرنے ميں جس قدد صحد ليا ہے - اس كى تفسيل الهيں الكو بات سے ملتی ہے - اس كى تفسيل الهيں الكو بات سے ملتی ہے - اس كى تفسيل الهيں الكو بات سے ملتی ہے - اس كو بات كو سلسله جنتي كى الميك الميم درستا ويز سمج عام بات ہے -

آپ کھتے ہیں کر صفرت بینخ احمد عبدالحق نے اپنی و فائٹ سے پچاس سال بعد مجھے باقاعدہ روعانی تربیت سے نوازا تقا اور و فائٹ کے بعد آپ کے فیضان نے جیجے کمیل کے مراحل طے کوائے تھے۔

معارج الولایت میں لکھا ہے کہ شخ عبدالقدوس گنگو ہی رحمۃ الدّعلیہ ولی ادر ذار تھے۔ آپ کی ذبان سے جوبات نکلتی پوری ہوجاتی. قوت علال کھیتی بالری سے حاصل کرتے ۔ موسم پر جوغلہ آتا ۔ پہلے درولیٹوں کوتفییم کرتے بھرا پنے لئے اتنا الکھے حس سے چند لقے تیار ہوتے رہیں ۔

سیرالانظاب میں مکھاہے کہ ایک بار صفرت بینے عیدالقدوس گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ پانی بت کے ضلع میں موضع چھاج لور میں تشریف لے گئے۔ آدھی لات کا وقت ہموا۔ تو آب نے آوازیں دے کہ کہا۔ لوگو اجلدی اس گاؤں کو چھوٹ کو با ہمر چلے جاؤ لینے مال واب اور دونیٹیوں کو بھی با ہمرہے جاؤ۔ یہاں آگ کا طوفان آنے والا ہے آپ کی اس آواز کو لوگوں نے عام فیقر کی صداسجے کو نظرا ندا ڈکر دیا۔ آدھی رات کے بعد عین گاؤں کے درمیان سے آگ کے شعلے لیکنے سگے اور تمام کا تمام گاؤں جلاکہ راکھ کو دیا۔

اخبارالاخیار کے مولف معصر بی صفرت عبدالقدوس گنگوہی کے مریداور خلفا بے سفاد سفے ۔ آپ کے ایک خلیفہ مجبور نامی بزرگ تھے ۔ بود مگریزی کا کام کرتے تھے ۔ اور ہندو بھے بھٹرت کی لگاہ نے منظر مرن انہیں دولت اسلام بختی بلکہ روحانی ترتت سے خدار سیدہ بھی بنا دیا انہول نے سلام ہے بی وفات بائی ۔ یہ آپ کے خاص خلفار بی منماد بھوت نقے بننے مجبور کے علاوہ شخ عمر بھی آپ کے خاص خلفار بی سے خفے ایک منماد بھوت نقے بننے مجبور کے علاوہ شخ عمر بھی آپ کے خاص خلفار بی سے خفے ایک دن شاہ عبدالرزاق دن شاہ عبدالرزاق آپ کو طفے آگے ۔ آپ نے تنام مریدوں سے شاہ عبدالرزاق کی ملاقات کو الی ۔ آخر بی شخ عمر کو کمیٹر اا ور فرما یا کہ بیر آپ کا مرید بھوگا ۔ اسے سائڈ لے کی ملاقات کو الی ۔ آخر بی شخ عمر کو کمیٹر اا ور فرما یا کہ بیر آپ کا مرید بھوگا ۔ اسے سائڈ لے

جائے۔آپ کے ایک اورفلیفہ عبدالنفوراعظم بوری بڑے صاحب کراست ہوئے ہیں آپ بیندمقا بات اوراعلی مناصب کے مالک تھے ۔آپ کو جناب رسالتما بسلی اللہ عديدوسلم كي فواب مين زيادت موئي آي نے انہيں بزيان خودالله وسلى على محمد وعلى آل محمد بعد داشم يك الحسن يُرهايا تقاً-حنرت شخ عبدالقدوس منكوبي رحمة الشعلبيكت الاولاد بزرك عق يشخ رك يي ایک صاحب عرفان بزرگ تھے آپ کے ہی بیٹے تھے ۔اسی طرح شیخ عبدالکبلمروت بربالا برآپ کے سجاد ہ نشین بنے تھے آپ کے ایک پوتے شیخ عبدالبنی قدس سرا منے جواپنے ذماندیں بہت منہور عالم دین کی جنسیت سے معروت ہوئے۔ آپ کواپنے بزرگوں سے مشار توحید وساع میں افتلات البے-ان کے والدتے ایک کتاب اباحت سماع دسماع اورقوالی کے جواز، میں تھی تقی ۔ مگر آپ نے اس کے کارومیں حرست سماع مپرایک کتا ب تکھی۔اوراپنے والد کے نظریات کا روکیا۔ایک دفت آیا كه تنهنشاه مندوستان نے آپ كومند صدر جہاں پر پٹھایا - بير منصب اہل علم وفضل ميں سب سے اونیا عقا اس عہدہ پر فائز ہوئے کے بعد صفرت مولا ٹاعیدالنبی کو تکجرا ور

ما دیشن عبدالنفوراعظم بودی قدس سرهٔ کے علاوه صاحب اقتباس الا نوار نے آپ کے اور کئی خلفاء
کے نام بھی لکھے ہیں جن میں شخ عبدال الدین تھا نیسری فاروقی شخ عبدالعزیز کواندی پشن عبدالا در در الدر من و الدر من الدین اکرائیاءی اور شخ عبدالوحلی قدس شخ عبدالا حد فاروقی و والد صفرت مجد دالف شافی مبدم رونیع الدین اکرائیاءی اور شنخ عبدالوحلی قدس مرجم اقتباس الانواد کے فاضل مو گفت صفرت شنخ محداکم قدوسی نے آپ کے خلفاء کی تعداد یا نی ہزاد تھی جن کی وساطت سے ملد الرحی شاد و سید کو بدی منہرت ملی۔

نخوت نے ایا آپ اپنے مجمع علماء واکا برا بل علمسے بڑی درشتی اور نخوت سے

بیش آنے لگے۔ ایک عصر کے لیداکبر بادشاہ کامزاج مجھی آپ کے خلات ہوگیا۔

ائب کوتید کرلیا گیا۔ تید فائذ میں ہی سلامی ہیں فوت ہوئے تھے۔
اخبارالاخیار نے صفرت عبدالقدوس گنگوہی کی دفات میں 10% مکھی ہے، ب
کامزار دہلی کے قریب گنگوہ میں ہیں ہے۔
چوسٹی خقد س واقد کس عبد قدوس
ملک قدس اذحق یا فت شن ہی

زمشتا ق جنال سائش عیاں شد
دگر مشتا ق عجو ب المی

ما در صاحب اتنتاس الانوار نے آپ کی وفات ۲۳ جادی الاخر ۱۹۳۳ جو تکھی ہے آپ چوداسی سال کی عربی فرت ہوئے ۔ نیتیں سال وہ دلی میں رہے۔ تفتیس سال شاہ آیاد میں گذارے اور چودہ سال گنگوہ میں رہے۔

لاد کھے ۔ اور میال بڑھا کے سامنے یخنی کا پیالہ رکھا ۔ اور ملک محد کے سامنے طفیے
کی پلیٹ دکھ دی تینوں کی بہی خواہشیں ختیں یہ دیھ کر تدنیوں بڑسے حیران ہوئے ۔
آپ نے فرمایا ، با باحران ہونے کی ضرورت نہیں اللہ تعالیٰ اپنے دوستوں کو دنیا دارس کے سامنے نثر مندہ نہیں ہونے دیا اُن سے جوچ نے طلب کی جاتی ہے وہ بھیج دی جاتی ہے ۔ مشن عبد الکبیر میں فوت ہوئے تھے ۔

ہے ۔ مشن عبد الکبیر میں ہونے میں فوت ہوئے تھے ۔

در جرکم کی زحت ور فلد یا فت

در جرکبری زحق و رخلد یا نت چ ل کبیرآل شیخ اکبر دستگیر هست تا چ الاُلقیب تا دیخ او هم نسر مد الدهر سلطان الکبیر هم منسر مد الدهر سلطان الکبیر

آپ جو نبود کے مشہود

من خو بہارالدین جو نبود کی قدس سر افہ است ان کے ہیں سے تھے ۔ صرت

من خو جو علی کے مربیعے ترک و تج بیدا درصد ق و درع میں نا بت قدم سے ۔ کہتے

ہیں ۔ کہ ایک شخص شیخ حیدی نام کھا۔ جو گجوات سے جل کہ آپ کی زیادت کے لئے

ہیا ۔ بیشخص شیخ محدعلہٰ کی زیادت کرنا جا ہتا تھا۔ شیخ بہا وُالدین طالب علم ہے۔

دہ اس فوجوان کے ساتھ بھی اعظے بیٹھے لگا۔ اُس نے دیکھا کہ شیخ بہا وُالدین فوجان

میں جو ۔ وہ ساتھ ہو لیئے جکل میں بہنچ کو اُس نے کہیا کا ایک نسخ نکا الا اور اُس کو دے کہ

میں جو ۔ وہ ساتھ ہو لیئے جکل میں بہنچ کو اُس نے کہیا کا ایک نسخ نکا الا اور اُس کو دے کہ

ہی ہے اور فیقر ستی تھے صرورت ہو اِس کا استعال کر نا۔ اگر ختم ہو جائے تو بھر مجھے

آگر کہنا۔ یا کہ تہمیں میں کو ٹی اور عمل سکھا دوں۔ شیخ بہا وُالدین نے عرص کیا میں تو ، ۔

آپ سے کسی اور کیمیا کی امید سے کہ آیا تھا۔ مجھے اِس کیمیا کی صرورت تہیں۔ جھے

آپ سے کسی اور کیمیا کی امید سے کہ آیا تھا۔ مجھے اِس کیمیا کی صرورت تہیں۔ جھے

آپ سے کسی اور کیمیا کی امید سے کہ آیا تھا۔ مجھے اِس کیمیا کی صرورت تہیں۔ جھے

قریر گیمیا گری فائدہ نہیں بہنچ اسکتی۔ یہ بات صفرت شیخ محرطیلی نے سنی قربر سے
خوش ہوئے اورائس کی باطنی تربیت بہذیادہ توجہ دینے گے رایک عرصے کے بعد
شیخ محرطیلی نے آپ کو فلافت دی اور خرقہ تبرک دیے کورضت کردیا۔
شیخ محرطیلی نے آپ کو فلافت دی اور خرقہ تبرک دیے کورضت کردیا۔
شیخ بہا وُالدین نے شیخ حین کا دائن کچھ لیا اورالتجا کی۔ کہ مجھے بھی کچھ وائت
سے صدمانا چاہئے۔ انہوں نے فرایا۔ تہا دا پیراسی شہر میں رہائے ہم سے قرائن کی موت کا موقت ماصل ہوسکت تھا۔ ایک عرصہ کے لید شیخ بہا و الدین شیخ محرطیلی کی
مجس میں دہے۔ مرید ہوئے۔ بڑی میٹی پائیں گرا بھی تک فلافت مذملی تھی کر حرت
شیخ کی موت کا وقت قریب آگیا تھا۔ آپ نے مرنے سے پہلے فرایا۔ بہا وُالدین
بہارا خرقہ فلافت ایک سید کے پاس ہے جو مائک پور میں آئے گا۔ کچر عرصے کے
بہارا خرقہ فلافت ایک سید کے پاس ہے جو مائک پور میں آئے گا۔ کچر عرصے کے
بدر راجی صامرتاہ جو نپور آئے شیخ بہا وُالدین اُن کے استقبال کو آگے بڑھے۔ بہا ہی

سینے بہاؤالدین سیم ہے میں فرت ہوئے۔ رفت الدونیب بفردو سس بریں چوں بہاؤالدین ولی نیکوشعار افراب مبنتی سند عبوہ گر برسال وصل الس عسلی تبار

آپ فواج حین ناگری کے مرید شخ فالوگوالیاری قدس سرہ الباری برستے۔ اپنے وقت کے مشہور بزرگ تھے۔ آپ کو شنج حین سرمست جینتی جو شنج اسمعیل کے بیٹے تھے سے فلافت میں۔ اس کے علا دہ آپ کورو عانی طور رہنواج معین الدین اجمیری رحمۃ اللہ علیہ

سے بھی فیض حاصل ہوا تھا۔ آپ سے انہیں بڑی عقیدت تھی۔ شخ نظام الدوری اور شخ اسمعیل آپ کے فلیفہ تھے۔

یک میں اور الدہ خیار میں آپ کا وصالِ و فات سنے کھٹے ہے جبکہ شجرہ حیثتی میں سے ہم مکھا ہواہے

سنیخ خانو چوں گفینس کردگار خوان نعمت یا نت ان خوان جنال شاہ خلدست ایے جوال تاریخاو نیز کا مل حق من خانوان

29 PG

آپ خواج کی در بین میں سے فور الدین اج دیمی رحمۃ الدعلیہ اندر بی خواج کی اولاد میں سے سے بڑے پاکیزہ افلاق کے مالک ہے۔ آپ میں فرشتوں کی مفیق بائی جاتی تھیں۔ علم علم معلف وکرم سخاوت وعفو کے جاسع تھے۔ اہل دنیا سے کوئی سروکار مزد کھتے تھے۔ جوچ کھانے پہننے یا دہنے کی ہوتی اسے بقدر صرورت ماصل کرتے ہوگ آپ کو فرید ٹائی کہا کر تے تھے۔ آپ کو فواج تطب الدین بختیار میں مصل کرتے ہوگ آب کو فرید ٹائی کہا کر تے تھے۔ آپ کو فواج تطب الدین بختیار میں کی فریست میں کہ ایک دولیش موج کے بہر کی فدیست میں کہا اس کے پاس تریاق اکر تھا۔ اُس کی فاصیت سے مقی کے جس کہ ایک دولیش کوئی ہوری ایک دولیش کوئی ہوری ایک دولیش کوئی ہوری کے باس تریاق سے شفا ہو جاتی بھوراتی بھوری کے اس درولیش کوئی ہمارے پاس مجی بڑا ذہورست تریاق ہے آؤامتحان کریں ۔ جانچ ایک زندہ چڑیا کہ کوئی اُس کے مذہب ذہروال دیا گیا وہ اس وقت مرکئی ۔ آپ نے فرمایا کو نواج قطب الدین کے نگر سے سوکھی دوئی کا ایک گوا لاؤ۔ اُس کے مذہب ذہروال دیا گیا وہ اس وقت مرکئی ۔ آپ نے فرمایا کو خواج قطب الدین کے نگر سے سوکھی دوئی کا ایک گوا لاؤ۔ اُس کے مذہب ذہروالے میں گیا کہ کا ایک گوا لاؤ۔ اُس کے مذہب ذہروالے میں گیا کہ کو ایک گوا لاؤ۔ اُس کے مذہب ذہروالے میں گیا کہ کو ایک گوا لاؤ۔ اُس کے مذہب نے نگر سے سوکھی دوئی کا ایک گوا لاؤ۔ اُسے پانی میں گھو کہ

مرده چایا کی چرنج میں ڈال دو۔ وہ اس وقت زندہ ہو کہ اُڈگئی۔
سنج علاو الدین سنے جمھ میں پیدا ہوئے اور ۱۹۸۸ جم میں فوت ہوئے
آپ کا مزار پُر افعار د ہلی میں ہے۔
د لی و متفی و سنینج عب الم علا ر الدین جناب شاہ مصوم دنستم کن مرسف ابرار وصلش بعت ر ماحق نما مهدی محت دم

س خانواده خينيه كفيض مافته ملطان حبلال الدين قريشي قدس مرة · درويش تق صاحب احوال و مقامات بزدك عق باطني طور ريالك تفي مكرظا مرى طور يرايك مجذوب كي حيديت سے رہتے تھے صحاء و بیا مانوں مل محدث دہتے تھے اور صرف مخصوص مردے کے لئے لباس پینتے تھے وہ علوم عقلی نقلی رہی اور حقیقی کے ماہرین میں سے تھے جب كيمي ظا مرى علوم كا اظهار كرتے تو لوگوں كوجيران كر ديتے تھے مجود تھے . نوجوان تھے مركسي نفساني چيزى طوت توج ندويت تقے كسى كومريد ند بناتے تھے اور فرما ياكرتے تقے میرامرت ایک ہی مرید ہے ص کا نام متام ہے وہ بھی آپ کی طرع دشت وبايال ميں گھومتا رہتا تھا۔ آپ بعض او قائ عربي فارسي مبندي زبا ذ ل ميں بير م تقربيك تے مع جب أغاز كفتكوكرتے تو برى تصاحت كے ساتھ طوبل كفتكوكرتے عظ بب نهايت مذيات مي تت تو محلس سا عد كوسح ا دبيا بال كى طرف نكل مات ملامحرنا رفولی فرماتے ہیں کہ ایک ول جامع معیدمیں آئے صفول کوچرتے ہوئے ا مام کے مصلے پر جا کھوٹے ہوئے اس وقت شہر کے مجتب بھی سیدیں بیطے

تے اور فجر کی ناز کا وقت تھا۔ فوش الحانی سے قرأت کا آغاذ کیا۔ اور بیشے ہی گئے سرسے ننگے نماز بی ھا تے رہے۔ لوگوں کو آپ کی اس عادت بہاعتراض ہوا، تو آپ نے نئے مرکے جواز اور طبی قرأت کے حق میں وہ علی دلائل دیئے۔ کرتمام لوگ مبہوت ہو کہ رہ گئے۔ جب عذبات میں شدت آئی مسجدسے اعظے اور صحوالی طوت نکل گئے۔ کہتے دہ گئے۔ جب عذبات میں شدت آئی مسجدسے اعظے اور صحوالی طوت نکل گئے۔ کہتے میں آپ کے ایک عیقیدت مندتے آپ کے اقرال جمع کو کے ایک کتاب لکھی آپ کی ضدمت میں لایا۔ آپ نے اس کتاب کو اعظاکہ کو یں میں بجیدیک دیا۔

آپ بڑے رقبی القلب تھے اور عشق و محبت میں ڈو بے د ہا کرتے تھے۔اکٹریہ شعر آپ کی زبان پیہوتا تھا۔

> عاصل عنقت تتاسخن الرث ببیش نبیت سوخستم و سوخستم و سوشتم کیمی یمصر ع بیر هنته -

مه خام مجم پخته سندم سوخستم! کهتے بیں ، آپنے پانچ سال کک کئی ب کے بغیر سی علم حقیقت ماصل کیا تقان پانچ سالوں میں آپ نے کہی کسی انسان کی شکل نہیں دیکھی بیا بان میں سے درخوں کے پتے اور جواری لوٹیاں کھا کو گذارہ کیا آپ کے امتاد رجال الغیب سی تقے۔

ا خبارالا خیار نے اسپ کی نہ ندگی کا ایک واقعہ مکھاہے۔ کہ ابتدا سے کا دیں نوجانی
کے عالم میں ایک خولھورت شخص بدعائش ہو گئے۔ یہ مجازی عشق عشق عشق میں تبدیل
ہوتا گیا صحرائے اجمیر می گھومتے رہے۔ بھر رجال النیب میں سے ایک شخص سے ملاقا
ہوئی۔ جوص و جال ظاہری میں بھی بے مثال تقا۔ آپ اسی کے پھیے پھیے روانہ
ہوگئے۔ اور ایک عوصہ تک اس کے پھیے بھرتے رہے۔ کسی نے آپ کو نبایا جس شخص

کے پیچے آپ بھرتے ہیں وہ صرت خصر علیہ السلام ہیں۔ آپ نے فرما یا بہیں خصر علیہ السلام کی ملاقات سے پہلے سخت بارش ہوتی ہے لیکن بیماں ایسا وا تعربہیں ہے یہ کوئی مروال غیب سے ہے۔

سنجرہ سینتید کے مولف نے اس واقعد کو ہوں مکھا ہے کہ دہ صَرْت خفر ہی تھے لیکن اخبار الاخیار نے اس شخف سے میان کیا ہے ضفرت نے اس شخف سے میان کیا ہے ضفرت نے اس شخف سے سات سونچیس علوم ماصل کئے تقے۔

حضرت جلال الدين قدس سرؤ فرما ياكرت مق كدميرا استادا تناحيين عقامكه شا مدحفرت كوسف عليه السلام كاعكس جبيل موروه اتناغوش أوازب كمحضرت داود عليه السلام كے علاوہ ووسرے شخص كواليي خوش الحاني نفيب بنہيں ہوئي. فراتے ہیں میں مرید ہوا تو فرمانے لگے۔ جاؤ کہیں نوکری کدو- میں نے فرکری کدل بڑا مال جمع کیا۔ گر ہربادمیرے مرسندنے کہا اسے عزیبوں میں تقتیم کردو میں نے تین بار مال جمع کیا۔ اور صرت کے حکم میغربیوں میں تقسیم کردیا اس طرح خالی ہاتھ بھر میں اسی فوش شکل فرجوان کے پیچے ہو لیا مگروہ مجھے دور صحرا وُں اور حبالول میں لیے چوا۔ حتی کہ وہ میری نظروں سے فائٹ ہوگیا۔ میں نے ایک الی جونیری دیجرہ، دیھی جس کے اندریاتی کاحیثما کیل ما تفا۔ اس جرے میں میرے شخ بیع نظرا کے وہ اندر رہتے ہیں اس مجمع کے دروا زے برعظمار متاعقا۔اس طرح یا نجے سال گزر گئے صرف نماز کے وقت مجھے شیخ کی زیارت ہوتی تھی ان پانچ سالوں میں مجھے شیخ کی الكابول سے تين سوسے زيادہ علوم حاصل بوسے باقى علوم كے سے فرط نے لكے اب آگے نہ پڑھو متہارے اندر برداشت کی طاقت نہیں میروه روحانی بزرگ و بال سے میل بڑے میں ان کے پیچے بی عقامتیٰ کمیری نگا ہوں سے اوجل ہو گئے میں آج مک ال کے فراق میں میتلا ہول -

حفرت شنخ جلال الدين إليت بيرومرشدك فراق مين دو تربيت ديالي سے مکریں مارتے اور زور روائے و تے عقے ایپ کی زبال پر بیستو ہوتا۔ وركيش مونس تنهائي وركيش مرمد بنياني ما دركش رفت دولت ازسر ما ہماتے برہ پداز کشور ما كبى كبى يرشوروها كرتے تھے۔ من مت معظم بثيار نخابم سند اذروزي وتلاشي بزار نخوامم تند ايك دن چندكىميا كرمفزت شيخ علال الدين قدس سره كے سامنے كيمياكرى كے كمالات ساد ہے تقے اتب نے عفتے ميں اكركها - تف تهادى كيميا كرى يوتف متارى كىمياكرى يو- تف تف . تف آپ نے تف تف كها . تو آپ كے منے مقول کے میذ قطرے سامنے پڑے ہوئے بیش کے تھال پر بوٹے کیمیا گرول نے د کھا قوتقال سوتے کا بنا ہوا تھا۔ آپ کھ عرصہ دہلی دہے پھرآگرہ میں آگئے۔ مصور میں پیٹی سال کی عر میں فوت ہو گئے۔ آپ کامزار مندوا سے محقریب ہے۔ بهب را جلال در خلد برس دنت مي سلطان حب لال الدين محقق

في نور الكرامت وصل اونيز مبلو نور الكرامت وصل اونيز حب لال الدين قرليثي منبده حق مرم ۹ م ماحب خبارالاخيار نه كها المحال مرابع المعالي المرابع حضرت شخ علاوالدبن ا جود منى سے بعیت تھے ، گرسلسد شطار میر کے مشائخ سے بھی فیفن یاب ہوئے تھے میاس صرف صروری پر دے کے لئے پہنتے تھے برنگ عیرتے تھے کہمی فقرار کے ساتھ کھو منے تقے اور کھی کھی تنہا بھی عیرتے رہتے تھے ذكر بالجر كرتے ول يضربين لكاتے - بعض اوقات ان كى ضربس البيي ہوتيں تقیں جیسے ہتھوڑے آئرن پر ارے جارہے ہیں - کتے ہیں آپ کوایک مندو عورت سے محبت ہو گئی تھی۔ مگر وہ عورت آپ کی کشش سے اپنا مذہب محبور كرم مان ہوگئى ۔ اس عورت كے ركت ته دار محدز مان خان جربا بربادشاہ كا قريبي عقا . فرياد مے كركئے محدر مان نے بيغيام بھيجاكماس عورت كو گھرسے بابركال دو نہیں تو میں مہارے گھر روعلہ کردول گا آپ تلوار مکی ایم اسلا آئے اور گرج كرفرانے لگے -اب اس عورت نے الام قبول كريا ہے -اب يس أس كافرول كے والے كرنے كو تيار منبي بول - اگرتم جنگ كرنا چاہتے ہوتو ميں بھى تیار بول -اس بات سے وہ ڈرگیا -اور خاموش ہوروالیں حلاگیا-آپ اوا ایم میں فرت ہوئے تھے۔

> سيد فردوس سند باغروجاه پو تکه سلطان جهال منتاق حق فاص حق سلطان وفاتش کن رقم هاص حق سلطان وفاتش کن رقم

بارد مگر کن میسال مثناق حق <u>۱۹۹۶ ه</u>

برا معاحب كمال وحال تق مبذب وسكر سيدعلى قوام قدس سرة بين شهور تقديكن آپ كى طبيعت ايك مال بدند رستى عقى كيمى خرقدُمت رئح ببناكرتے كيمي سابد باس بين ليتے غفے أب سادات سوا منرسے تھے ۔ مرفلافت شیخ بہا دالدین جونبودی قدس سرہ سے یائی تھی۔ آپ کومقبولیت فاص اور حالت مخصوص حاصل تھی فنوحات کے دروازے آپ پر کھلے تھے چار بویاں تھیں۔ فتوعات مربدوں سے کرتے تھے كتية بين چاليس سال تك آپ نے كسى فا دم يا ملاذم كو مذحكم ويا اور مذكو ئي چيز مائلی۔ مگرآپ کا مبر کام آپ کی مرحتی کے مطابق ہوتا رہا ایک رات اعظے۔ اور بيط بوئے تے۔ وہ فادم جو ہردات آپ کے وضو کے لئے یا نی لا یاکر تا تھا بھول گیا۔ آپ نے اندھیرے میں ہرطوت م عقر مارے مگر مانی کہیں نہ ملا بھرسو گئے چند لمول لبد بیاس لگی دوباره ا عظے بیاس کی شدت ہو ن - موت قریب آتی تطرانى مراس عالت ميس عي كسى كوا وا دوس كريانى نه مانكا مرنا قبول كرايا مروه عادت نظیوائی آخری بارادهرا دهرا ته مارے توغیب سے بانی کا ایک کوره آیا الله كانشكراد اكيا. يانى پا اوروضوكركے سجدہ ميں گرگئے۔

فرما یا کہتے ہے۔ ایک دن رسول فداصلی النّدعلیہ وسلم کی خواب میں ذیارت
ہوئی۔ ہے ہے فرمایا علی تم اپنے درواز سے بر ڈھول بجاتے رہتے ہو۔ میں نے
عوض کی یا رسول النّد ۔ بہ ڈھول بھی آپ کا ہی ہے اور دروازہ بھی آپ کا
عطا کہ دہ ہے ۔ علی بیجادے کی کیا صفیفت ہے ؟ حصنور نے فرمایا ۔ علی میری
امت کے لئے دعائے فیر کیا کہ و تمہاری دعا قبول ہوجاتی ہے تم متجاب لد توات ہو
ہی فرمایا کہتے ہے۔ مجھان لوگوں پرتنجب استاہے کہ قوالوں کو فرمائش کرتے
ہیں کہ فلال غزل سنا دُ۔ فلال فدت بیا صد شھے توجوغزل اور ندت سناتے ہیں ایکی

ملتی ہے۔

صاحب اخبار الاخیار نے آپ کاسی دفات منطقی مکھا ہے اور مزار پُر اندار جونپور میں ہے۔

س ل وصالش چېستم زدل گفت که محن دوم معلی علی همه ۹۵۰

حزت واج شخ محدص طامرقدي شخ عبدالرزاق جنبالة قدس سرة المرة كرمدادر فليفه عقديد صاحب کرامت اورمقامات بزدگ تھے۔ اسپ کو الٹرتغانی نے بینعمت عطافرمائی عقى كەجب كھي كسى بزرگ كى زيارت مطلوب بوتى فواجگان حيثت يا جناب غوث الاعظم كے در باريس بنج جاتے ۔ آپ يرتمام بندگوں كى قري مشوت موجا ياكرتى عقين ابل بيت سے برى محبت تھى معارج الولايت اورا خبارالا خيار كے مرتفين نے مکھا ہے کہ ایک سید زادہ کسی جرم پرگرفتار ہوگیا۔ آپ نے جاتے ہوئے اسے تیدیں دیجیاتوا کے براھ كرضانت دى اوراسے كہا بشهرسے عمال ماؤتهارى عِلْم بَي سزا كالوں كا - اس قسم كى بے بناہ تكاليف اپنے ذمر سے ييتے اور تكليف أعقات اوران كاليف كوخنده بيثانى سدردات كرت عقريغ عبدالذاق شخ ا مان الندياني يتى سے مئلہ توجيد واطلاق ميں گفتگو كررہے تھے۔ اس اپنے كنف سے متقد میں كى كما بوں كوسامنے لاتے جاتے اور حوالہ بیش كرتے جاتے تھے سدعلی جنی من مزار او دھانہ ہیں ہے آپ کے ہی مرید ہیں۔ یہ بزرگ برا معمر - ذاكراور صاحب فكر تق - اخبار الاخيار اورمعارج الولايت مي صرت عيدالرزاق كاسال وفات منطق للهاب-

عبدالهذا ق ازجهال چیل دخت بست مست وصل آل سند اہل عتیر عابد رزاق والا مرتبت قطب حبنت عابد رزاق نیز قطب حبنت عابد رزاق نیز

آپ صرت فرين مرائع المنهور بيت المنهور بيت المنهور بيت قدس سرة الدين المنهورية الدين الدين بن فيرالدين بن فيرالدين بن فيرالدين من الدين من من الدين من المنهورية الدين المنهورية الدين المنهورية الدين المنهورية الدين من الدين الدين من الدين ا

آپ کوکرامات تو ور فریس ملی تقییں۔ آپ را ہسلوک میں اپنے والدی قدم مقدم پرگامزل آپنے ابتدائی عمراج دس و باک نین میں گزاری بڑے مجا بدساور ریا فتیں کیں ایک وی فقیم کے ابتدائی عمراج دس و بیت اللہ کو روانہ ہونے کی تیاری کروا ورصفور نبی کو میں اللہ علیہ وسلم کے روضے کی زیارت کا شرت ماصل کو و اورصفور نبی کو میں اللہ علیہ وسلم کے روضے کی زیارت کا شرت ماصل کو ایس بیوئے اوائے ہی تین عبائیوں کوسا تقدے کوفتکی کے داستہ دیا دمبیب کو دوانہ ہوئے اوائے دوانہ و کے دوائی عادل شاہ و حکمران اجازت پاکر قلعا میر کی طرت روانہ ہوئے۔ و ہاں کے والی عادل شاہ و حکمران فا نہیں ہے آپ کا بڑھ کو استقبال کیا اور بڑی مسترت کا اظہار کیا۔ آپ عادل شاہ و حکمران سے دوست ہوکر سیدھے پاک تین آئے اہل وعیال کوسا تقد کے کر بریان پور چلے گئے اور باقی عمروبل ہی قیام فرما دیے۔

سم في برحالات معادرج الولايت فقل كف بي صاحب معادج الولايت

نے آپ کاس د فات نہیں بتا یا مگر شجرہ چنتیہ میں آپ کی دفات سے وہ کو مکھی ہے۔

> چ يوست يوست مصر مجت ذد نيا رخت خود برلبت بهشت خرد بيت مجت گفت تا درخ وگرت رمود كامل يوست چينت وگرت رمود كامل يوست چينت

آپ کا اسم گرامی عبد الملک تفاضاب اپ ۱۵ مرای خبرامل هاسی شخامان التربانی بتی قدس سرهٔ اسان الله تقاریخ محرص قدس سرهٔ كے مريد تق البيك والدحن طا مرداجي حامد تاه كے مريدين فظ مرعوم ميں آپ نے مودو دلاری کی شاگردی کی فائدان حیثتیر کے علاوہ آپ کو دوسر سے اسلوں سے بھی نسبت عاصل بھی مشرب قلندر بیر میں دو داسطوں سے صرت شاہ نعمت للد كرمانى سے نسبت ہے شاہ لخت المدصوفي علماء ميں متازميں اور صرت محى الدين ابن عربی کے تابعین میں سے ہیں۔آپ اپنی تقریدوں میں مسلد توحید پر برطی میے معنی گفتگو کیا کرتے تھے اور اس موضوع بہا پ کولیدی مہارت حاصل تھی۔ آپ نے توحيد يركني كما بين كلهيس بين اس سلسدين اثبات الاحديث بوى مشهود كماب اسی طرح آپ نے صرت جامی کی سوانے پر بڑی میسوط سترح مکھی تھی۔ فرمایا کرتے تقاكر على حالات ا عازت ديت توسي ملد توحيد كوبرسرمنر بيان كرتا فرما ياكرت تقے۔ ابتدائے مال میں میرے یا س مشلہ تو حید بیدد و دلسیس تقییں گراب اللہ کے فعثل سسولددليلين بي فرماياكرتے بهار سے سامنے دروليني دو چزول سے ماصل بوتي ب را کی متذیب اخلاق دوسری فدمت ابل بیت - فرما یا کرتے کمال عبت بیر

ہے کہ محبوب کے متعلقین سے تجاوز نہ کرسے کمالات محبت میں بیچیز ضروری ہے کہ محبوب کی متعلقین سے تجاوز نہ کرسے کا اتباع پر قائم رہے اور صفور سے مجبت اور اتباع کی علامت بیرہے کہ آپ کی اولاد اور اہل بیت سے مجبت رکھے اور انہیں دل وجال سے عزیز رکھے ۔

اخبارالاخیار میں مکھا ہے کہ آپ کو اہل بہت سے اتنی عجت اوراحرام تقاکہ آپ پڑھاتے ہوتے۔ قوکوئی سیدزادہ کھیلت کھیلت آپ کے سامنے آجا تا۔ قوائب کتاب اٹھائے اس وقت مک کھٹے سہتے جی یک وہ سیدزادہ وہاں سیف میں دالسے وہ اورا

سے خود ہی والیں مر علاجاتا۔ شیخ امان الله نماز میں ایاک تعبد وایاک نستعین مرصے توکئی مار کم ارکرتے

حتیٰ کہ کئی بار بے خود ہوکر کریٹاتے تھے اور اس طرح مرہوش ہوتے کہ قیام کی ہمت

ىندىتى اوراس طرح آپ كى كىئى منازى دوت بوجاياكرتى تقيس-

موت سے چند دل قبل آپ نے اپنے دوستوں کو تبایا کہ میں ایک سفر رہا ہوں۔ شیخ ذکر یا اجود ستی آپ کے فاص مرید سفے رعوش کی حضور سم دوستوں میں سے کون کون فادم آپ کے سفر میں سم کاب ہوں گے۔ آپ نے فر فایا ۔ اگر سفر ذمینی ہو تا تو بعض احب ساتھ ہوتے۔ گرید سفر توجھے تہا ہی کرنا پڑے گا۔ اس کے بعد آپ اس کے بعد آپ اس کے معرکے تمام اسنیا دکو ایک ایک کرکے تقسیم کیا۔ کتا بوں کو بعد آپ اس کے طویت کدہ میں دا قل ہو کہ ان کے درویوار کوالوداع کہا۔ کچھ دنوں بعد آپ کو معلو سے کہ دورویا دوروی اور کو دور سے ختم ہوجا ہیں گے۔ اس دن درہتے التا فی کی گیارہ تا دیخ تھی۔ سادی عمر کے و دو سے ختم ہوجا ہیں گے۔ اس دن درہتے التا فی کی گیارہ تا دیخ تھی۔ سادی عمر کے و دو سے ختم ہوجا ہیں گے۔ اس دن درہتے التا فی کی گیارہ تا دیخ تھی۔ آپ نے حضرت فو ف الاعظم رضی المد عنہ کا سالا مذعرس کیا۔ تبرکات تقسیم کئے۔

پنتطعام اوگوں کو کھلایا-اب ربیع افتانی کی بارہویں تاریخ ہمگئی۔ آپ پرموت کے اتاریخ ہمگئی۔ آپ پرموت کے اتارفا ہر ہونے گئے فرماتے گئے۔ مثا نُخ طریقیت تشریف فرما ہے۔ بجھ سے توحید کا فتو تی طلب کورہ ہے ہیں۔ چند کلیات توحید سے بیان فرمائے۔ بارہ ربیع الثانی محصیہ کو دصال فرما دیا۔

صفرت المان الله بإنى بتى كے بڑے مرد بيتے۔ ان ميں شخ تاج دين ذكريا اجود منى اور شخ دكن الدين اجود منى آپ كے فاص فلفا ميں سے تقے بشخ سيف الدين اجود منى الله عليہ كے والديكوم عقے . آپ كے فليفہ تقے ۔ رحلت شخ عبدالى ت دبلوى رحمة الله عليہ كے والديكوم عقے . آپ كے فليفہ تقے ۔ رحلت شن فلا ہر ست سيد شبت مناب الله الله عليم بخدال فاص حق المان الله دالى ففن سے الى الله الله الله دالى ففن سے لى گو ترخ الله جا ه دالى فين في والى و سنت والى جا ه

آپ صرت شخ الاسلام ذكر بالمتانی مرسوفر بیشی فلرس سره از منت شخ الاسلام ذكر بالمتانی مرح محزه د مرسوفر بیشی فلرس سره از منت میل اولادس تقے نبیت طلبح مرسیدگسید درا زرحمته الله علیه سے تقا برسے عظیم اور با كرامت بزرگ تھے معروالا دقات اور دائم العبادت تقے سلطان بہول كے زماندا قدار سے اسلام شاہ كے دور عكومت تك زنده ورب و ابتدائى زندگی میں با دشاہ كی ملازمت كرتے تھے ور مراح والت بہرہ دیتے ہوئے دل میں خطے و ایک وات بہرہ دیتے ہوئے دل میں خیال آ یا بھے اس كی ملازمت كرنا چاہئے جومرام افظ بن سكے و بیت بال آ تا بخت ہوا کہ وید روز بعدا جمیر شرافی جلے گئے وہاں ایک دیوا نہ می دور مرزہ نامی ملاد اس سے رومانی نیمن ملا ربعد بی شخ احرم و شیبانی سے بیت ہوئے اور مازل اس سے رومانی نیمن ملا ربعد بی شخ احرم و شیبانی سے بیت ہوئے اور مازل

سلوک طے کرنے گئے اپنے وطن والیں آئے. ملا زمت ترک کی بقصیر دہر سوج نار نول سے بین میں کے فاصلہ پرہے قیام کر لیا۔ دہر سو کے ساوات جاہل تھے۔ اور شرافت کی ذندگی سے وگور جاچکے تھے۔ آئپ نے ان لوگوں کو ظاہری اور باطنی علوم سے آگاہ کیا۔ لوگوں سے نذرا نے آتے آپ ان سا وات پر خرج کر دیتے تھے۔ زیادہ فتہ جات آئے تگیں تو فقرا ومساکیوں میں با نگنے لگے۔ اپنے اہل وعیال کو بھی اتنا ہی صفتہ دیتے جتنا عام لوگوں کونصیب ہوتا تھا۔

ا خارالا خاری کھا ہے کہ صرت شنج عزہ قدس سرۂ نے اپنے ایک مربی فاص کور گیتان کے علاقہ میں کھا ہے کہ صرت شنج عزہ قدس سرۂ نے ایک مرفی کا اس نے دول میں خال کیا۔ کہ پہلے ہزدگ اپنے مربیوں کا اتنا خال دکھا کہتے ہے تو بانی کی بجائے دودھ ملاکہ تا تفا میں آج بانی کے قطرے کو ترس ترس کہ مرد ہا ہوں۔ دورسے ایک چروا ہا جیڑ بحر یاں ہا نکے نظر آیا جب یاس بنجا تو دیجھا۔ کہ اس کی بنا میں ایک شکیزہ ہے جس میں بانی موجو ہے۔ مربیہ نے کہا۔ اس دیگستان میں بانی ہال اس مشکیزے سے جھے تھوڑا سا بانی بلا دو اس نے کہا۔ اس دیگستان میں بانی ہال اس میں دودھ ہے اگر جا ہو تو بلادوں۔ جتنا پی سکتا تھا۔ بیا۔ کچے دور میلا تو بیاس اس میں دودھ ہے اگر جا ہوتو بلادوں۔ جتنا پی سکتا تھا۔ بیا۔ کچے دور میلا تو بیاس اس میں دودھ ہے اگر جا ہوتو بلادوں۔ جننا پی سکتا تھا۔ بیا۔ کچے دور میلا تو بیا سی کہا ہوتا ہی تابی ہوا۔ رسل می ایک جگہ نظر بیڑی میچھے یا تی کا چیٹمہ بہدر ہاتھا۔ پاس گیا سیراب ہو کہ بیا۔ اور خیال کیا یہ تمام صرت شنج حمزہ دھت ہے۔ اللہ علیہ کی کوامت سے۔

معاصب اخبار الدخیار نے لکھا ہے صرت حمزہ کچیس ربیع الثانی عصرت میں کھیں دبیع الثانی عصرت میں کھیں دبیع الثانی عصرت کو نماز مغرب پڑھار ہوئے تو واصل کین ہوگئے

مقیم رومند حسله بری گند جو قطب اولیب مخدوم جمزه گو انفنیس ولی تا ریخ ترجیل دگراهل صفا محند وم حمزه دگراهل صفا محند وم

سن من سام الدین مقی ملیا فی قدس مره ایس شار بوت بین الله کے منہور الله فی ملیا فی قدس مره اسیس شار بوت بین الله و نیا داری سے معلی فیض یا یا تھا۔ زا ہد متھی ، عاشق ۔ بیش الله و نیا داری سے کوئی داسطہ منہ تھا۔ دوزی کے معاملہ میں بڑے محاط تھے ، ملال کا در تی ماصل کرنے کے لئے مختصر سی کھیتی باٹری کہ لیا کر سے سے ایک و قت آیا ۔ کہ ملک میں بعض وا د ثمات کی وجہ سے کا تشکادی میں بھی رو کا و ٹ آگئی تو بھوک اور فاقہ افتیار کر لیا ۔ کئی بادالیا ہوتا کہ بوتا کہ بوتا کہ دوسروں کو کھلا و سے اور خود دست کش رہتے ۔ آپ اسی خیال میں آخری دم مک کھانے سے فیتنا کہ سے دیے۔ دور و دست کش رہتے ۔ آپ اسی خیال میں آخری دم مک کھانے سے فیتنا کہ سے دیے۔

ایک بار آپ نے اپنے گرکھا ناتیاد کو ایا ۔ جب کھا چکے قو فرمانے گئے کہ آج چھاس کھا نے سے بوچھ اور کد درت محس ہوئی ہے معلوم ہوتاہے کہ اس میں کچے ملادٹ کی گئی ہے۔ کھا ناتیاد کرنے والوں سے دریافت کیا تو انہوں نے بتایا کہ ہنا بیت احتیاط سے کھا ناتیاد کیا گیاہے۔ ہاں کھا نا پکا نے کے لئے جب ہمہایہ سے آگ لینے گئے تو اس کے صحن میں حن وفاشاک بڑے ہے۔ وہ بھی ساھا ہے آگ نیے ہے۔ آپ یوسٹن کو اسٹے ہمسا ہے کے یاس گئے بحق وفاشاک کو بلااجازت اٹھالاتے بیرمعذرت کی ۔ اوراسے اس کی قیمت اواکر کے واپس آئے

أفي عِيراً كُومِين ليا.

ایک بارا آپ کی علبس سے کوئی شخص اعطا اور غلطی سے آپ کا جو تا پہن کرمپلا گیا اسے دو سرے روز علم ہوا توج تا دالیس لے کہ این ۔ آپ نے بینے سے انکار کردیا فرما یا جب ایک چیز ہما دی مک سے چیلی جائے وہ دو سرے کی ملیت ہو جاتی ہے ۔ جب کہ تم اس کی قیمیت نہ لوگے میں اسے والیس لینا جائز نہیں بھتا۔ ایک کوشہ میں بیٹے ارہتا اور عبادت میں شغول رہتا اس کی انھوں سے انسو بہتے رہتے تھے۔ بیٹے ارہتا اور عبادت میں شغول رہتا اس کی انھوں سے انسو بہتے رہتے تھے۔ ایک دن ایک شخص آپ کی قدمت میں ایک رو بیر لے کر بطور نذرا نہ حاصر ہوا ایک فرمت میں ایک رو بیر لے کر بطور نذرا نہ حاصر ہوا آپ نے دو بیر یہ دو جی ایم نے بیا یا کہ بیر سکہ رائے الوقت ہے۔ آپ نے اسے لوچھا بیر کس کام آتا ہے۔ اس نے بیا ای کیا اسے قبول فراکوا سے والیس کردیا ۔

یضخ حیام الدین قدس سرہ کا انتقال سلامی میں ہوا تھا۔
پول حیام الدین حیام الدین حق سالک دین را ہنا ئے متقی سند چو زین عالم مگو تاریخ اد زاہد دین پیشو اے متقی

094.

ہویں۔ بخاری شراعت کی شرح فیف الباری آب نے تکھی تھی۔ دسالہ سر اجیہ کو نظم
کیا۔ نفس ومع فت کی تحقیق میں بڑا عمدہ دسالہ تکھا تھا۔ بیترت پر بھی آپ کی تا بیں
ملتی بیس سفرالسعادت پر حواشی تکھے۔ آپ کی تکھی ہوئی گتا بیں اہل علم کے حلقول
میں بڑی بیٹ دی گئیں۔ عمر کا اسم وی حصہ فقر وفاقہ میں گردادا۔ علائی ونیاسے کنارہ
کش ہو گئے تھے۔

ا خبارالا خیارا در معادج الولایت میں کھاہے۔ کہ آپ کے آباؤا مداد زید آپ ر سے جوج نپور کے مضافات میں ہے نقل مکانی کر کے دکن آگئے تھے آپ دکن میں ہی پیدا ہوئے اور وہاں ہی تھیں علوم کیا وہاں سے گرات آئے بھروہاں سے چل کرحرمین الشریفین پننچ جے کے بعد والیس آئے تواحد آباد میں قیام کیا۔ محد میرم خال خال خان ال کی استدعا پواحد آباد سے دہلی آئے۔ دہلی میں ہی مراقع میں انتقال کیا۔

> عب دالادل اوّل ازروز قیام رنت مشل گل بب غ مینتی سال وسس شخ مجوب آمداست سهم جمد الا ول جوآلاخسر ولی

آپ شیخ حاصلی طفر آیادی قدر سره بر ادر خیفه حسن طا بر کے مربیجی تھے استی فالی طفر آیادی قدر سرم برائد برائد در الله معلم الله برائد کا بدر ما بدا در معالی معاصب استقامت و کرامت بزرگ تھے فرمایا کرتے تھے بی نے تیس سال جہاد کیا ادر اس نفس آمارہ سے لو تاریخ الله بحصوس ہوا ہے کہ بینفس ملیدان ان کو کون کن داؤ و بیج سے مغلوب کر تا دہ تا ہے ۔

نصيرالدين مايول باوشاه نے كئى باركاشش كى كرآپ ندوارة قبول فراليں

گرہرباد الکارفر ما دیا کہ نے تھے ایک بادشاہی مرتبت کے بادشاہ نے کہلا ہیجا آپ جو شہریا جاگیرانے نام پر کھھ دیں۔ وہ آپ کے لئے ہوگی۔ گرآپ نے فرمایا مجھے بیرچیزیں در کا د نہیں ہیں ہم نے اپنے پیرومرث سے وعدہ کیا ہے کہ جم کھوٹائیں گے اپنے فدا سے مانگیں گے۔ ہما یوں نے کہا۔ اچھا بیرچیزیں اپنے بیٹوں کے لئے گے اپنے فدا سے مانگیں گے۔ ہما یوں نے کہا۔ اچھا بیرچیزیں اپنے بیٹوں کے لئے کے اپنے واصل مے این میں انہیں افتیار ہے۔ اپنے لئے کیا چیز حاصل کریں۔ آخر کا دیرفرمان آپ کے بڑے جمیعیدالٹدی فدمت ہیں بیش کیا گیا انہوں نے جمی معذرت کر دی۔

قاصی فال پندرہ ماہ صفر سنگ ہے کو فوت ہوئے۔
اله فضائے سامنی ہر دوسرا
کر ذفاصی فال چ در حبت مکا ل
سال وصلش میں ضی مہدی گو

آپ قاضی خان ہتی کے خلیفہ اس عبد العربی میں اس علی العربی کے خلیفہ اس عبد العربی ہوتھ کے ملیفہ العربی میں العربی کے مثال منے رقد میں المال منے مام ورمنا صبر وقعل میں ورجہ کمال کو پہنچے ہوئے تھے جس برنگاہ ڈالتے خدا رسیدہ بنا دیتے سے حالت وجد وساعیں حالت اضطراب میں دہتے تھے آپ نے میں سماع میں ہی جان دے دی اس آبیت کریم فسکی الدی سید کا الملکوت کی شعبی والب ہ توجعوں کی ساعت پر جان دے دی۔ آپ کو چرشخص آئی۔ جا دد مجمعنا سمان اللہ سمان اللہ میں الل

آپ کی دلادت جونپورمیں مراہمی میں ہوئی-اور دفات بھے مجادی آلاخر الاعلام کا لاخر اللہ کا لاخر اللہ کا لاخر کا لاخر کا لاخر کا تعلقہ وصال اکس طرح کو ہوئی۔ یہ کا قطعہ وصال اکس طرح کھھا ہے۔

یشخ کا مل عادت دوران خود عبدالعزید سندی دادا بل دل را مجلسش ما داریم بنت مرج از ادصاف ابل الله در عسالم بود حق تعالی را دل قطرت بذات اور شت یاد گارا بل حقیقت او بود ورد وران خوایش گشت زال تا ریخ خونش یادگارا بل حثیت

یشخ عائم تقی بن حما کالدین بن عیدالملک بن فاقتی فال آب کے پہت الصابری الشافر لی المدینی قد کسس سرہ العزیز نہ آبائے کوام جونچور میں تھے۔ گراہ بربان پور میں پیدا ہوئے آپ کے والدمات اللہ کی عرمی آپ کو باجن حیتی بربان پور میں لے گئے۔ باجن حیتی کے بیرول کا مسلہ حضرت فواج معین الدین ائیری کہ جا مانا تفاو ہاں سے و دو وحیتی کہ جا مانا تفاو ہاں سے و دو وحیتی کہ جا مانا تفاو ہاں سے و دو وحیتی کے باخ بات کے لاد و بارمین مشؤل ہو گئے۔ ایک ورباری امیر کی فدمت میں ذکری کو سے مالدارین گئی الدارین گئی اسی اثنا میں آپ کو فدا طلبی کی گئی ہیں ذکری کو سے مالدارین گئی منزیس طے کیں۔ خوقہ فعلا فت بایا۔ وہاں سے بی حاص مالدین تنقی کی فدمت میں ملتان پہنچے۔ بڑے فیل فت بایا۔ وہاں سے جل کو شیخ صام الدین تنقی کی فدمت میں ملتان پہنچے۔ بڑے فیل فت بایا۔ وہاں سے جل کو شیخ صام الدین تنقی کی فدمت میں ملتان پہنچے۔ بڑے فیص ما صل کے وہاں

سے ہی حرمین الشریفین کوروا مذہوئے و ہاں آپ کو الوالحن مجری قدس سرہ ہو وقت کے قطب الا قطاب عظے ۔ کی مجت نصیب ہوئی ۔ و ہاں ہی شیخ محد بن محد بن محرسفادی قدس سرہ سے قادر میں سلسلہ میں خرقۂ خلافت پایا آپ سے ہی سلسلہ شاذلیہ کی تلقین کی ا جازت پائی۔ آپ کوشیخ الو مدین شعیب المغربی قدس سرہ سے مدینی سلسلہ میں خلافت ملی۔

آپ مکرم میں ایک عرصہ بک قیام پذیر رہے وہاں ہی آپ نے سلسلہ
تفانیف ستروع کیا۔ کہتے ہیں آپ نے ایک سو سے ذیادہ کتا بیں تصنیف کیں۔
ان بیں سے جع الجوام عے جا مع صفر تبین الطراق ۔ مجوعہ حکیم کبیر ۔ بڑی شہور میں
شخ ابن جر المکی ان دنوں مکہ کے ممتا ذعالم دیں تھے۔ آپ کے مربع ہو گئے۔
اسی طرح اور بہت سے علماء وفقہا بھی آپ سے بیعیت ہوئے۔ وہاں سے
دوا نہ ہو کر گیرات آئے اور بھردکن آئے کے اکم گیرات سلطان بہا درنے آپ کی
مرمت میں حاضری کی التجاکی گر آپ نے اجا خات سلطان بہا درنے آپ کی
عبدالمندن میں کو اپنا سفارستی بناکر اجازت ماصل کی اور ذیارت سے مشرف ہوا
دوسرے دن سلطان سنے ایک کروڑ رو بیر آپ کی خدمت میں تذرکیا۔ یہ نذرانہ
قامنی عبدالمندکو دیا تاکہ آپ انکار نہ کہ ہی۔

ا خارالا خیار میں کھا ہے کہ ایک و ڈیرنے آب کی دعوت کی۔ اور ساتھ ہی
عرض کی حضوراس دعوت سے میری عُرض بہ ہے کہ آب کا قدم میرے غریب فانہ
میں آنے سے روحانی برکات نصیب ہوں۔ آپ نے فرما یا بتین شرطین ساسنے
دکھیں بھرآ دُں گا پہلے بہ کہ مجھے جہاں دل چا ما بھیطوں گا۔ دو سرے جوچز بھے
اچھی لگی وہی کھا دُں گا۔ تھیسرے جس وقت میراجی چا ہا۔ اُٹھ کہ چلاآ دُں گا۔ وذیر
نے یہ تبینوں مشرطیس تبول کرایی۔ چا نچے دو سرے دن حضرت نے روٹی کے چند

المرائع المنام كالمنام كالمنام كالمواقا معزد مهان الني الني نستنول يربيعي عقر آپ آئ اور دروا ندے كالا مع معزد مهان الني الني نستنول يربيعي عقر آپ آئ اور دروا ندے كالا مى جوتول كى جگه كے سائقه مهال كوئى فرش نه بچها تقار ببي گائى كئى كى صنور آگة تشراه في الله كر آپ نے اپنى مشرط ياد دلائى - كھانا چناگيا كئى قىم كے اعلى كھانے لگائے گئے . شيخ نے اپنى جيب سے دوئى كے سو كھے كوئے تكالے اور كھانے مشروع كئے معاصب منيا فت نے عرص كى صنور ميد لقے قوتنا ول فرمائيں . آپ نے فرما يا . يدميرى دومرى مشرط تھى ۔ ہے ہي كھانا الچھا لگتاہے . آپ الحے اور محلس كو ھيوڑكر كھر آگئے ۔

ا خبار الاخیار می صرت نے اپنا ایک واقعہ نقل کیاہے۔ کہ ملال کا مال كبعى صنائع نهين موتامي ايك بارمندوتان سے ايك جہاز بربيط ع كے لا مكر كرم جارم عقا يمندريس طوفان في جها ذكو مكروك مرديا جهازك ايك كرد برعم چند دورت جيك ميري كي كتابي تقيس. وه مجي ميريا ما بج كئير مكرياني سے جيك كئيں حس تختے رہم سواد تھے - ميت چاتا سامل مندا مد جا لگا۔ ہم اترے میں نے کتا ہیں اٹھا ئیں دھوب میں خشک کیں۔ مگر وہ اتنی برهبل عتين كريس انبيس الماكرسفركرنے سے قاصر تفا۔ فيانچريس نے انبين دين کھود کر د فن کیا اور اس پینشانی لگادی کہ کھی موقعہ ملا۔ تو اکر لے جاؤں گا۔ روا نہ ہونے توصح اویں سخت گری عقی ۔ پانی کا نام ونشان مذ تھا بہرطرف مایچا يس في دعاكى . بارالى - ابنى رحمت سے پانى بھيج دد يھنے د يھنے بادل آئے۔ ا ور زور دار بارش بونے لگی۔ موسم خوستگوار مو گیا اور یا نی پینے کومل گیا۔ میں ع کو پہنیا .صفادمروا پرسعی کرنے کے بعدجیند لمح ایک مگر مبط تفاتو کی بدوسریہ كتابول كالمقاد كه إيني كن على ممن بيكتابي بيني بي . كمول كوديم كين

تودہ میری ہی کتا ہیں تقیس مول میکا کوخر مدلیں - ال کے کا غذمی سے المے ادر جودے ہوئے اللے الحداللد ماری ادر جودے ہوئے اللے الحداللد ماری کر میں باتی کی مردسے انہیں عیلی وکر تا گیا ۔ الحداللد ماری کرت بھی صالح نہ ہوا تھا۔

یشخ علی متقی جی دنول مرض الموت میں تھے فرما یا بجب یک ہمادی آگشت منہادت حرکت کرتی رہے۔ جال بوکہ انھی روح بدن میں ہے۔ جب بیرحرکت ہے دک جائے۔ توسیج لینا کہ اب روح پرواز کرگئی ہے چنا نچہ البیا ہی ہوا۔ اخبار الاخیاراورمعارج الولایت نے آپ کا سال ولادت مصف کھلے اور و مبال بوقت مبیح دوم ماہ جادی الاخل ہے جہ کو ہوا تھا۔ آپ کا مزار پُر انوار ککہ مکوم میں ہے اخبار الاخیار کے موقف نے آپ کا مادہ تاریخ و فات شنج مکہ اور منابعت میں ہے اخبار الاخیار کے موقف نے آپ کا مادہ تاریخ و فات شنج مکہ اور منابعت بیں ہے۔ نی سے تکالا ہے۔

شخ عبدالی محقن دہوی آپ کے شاگر اور مرید سے آپ نے اخبار الاخبار میں کھا ہے کہ آپ کی وفات کے بعد میں آپ کے خلیفہ شخ عبدالوہا ب کے ہال قیام پزیر تھا ایک دن میں آپ کے مزاد پڑا اوادی زمایت کو گیا۔ میں نے مزاد پر کھوے ہوکرا بنا حال بیان کیا اور عوض کی حضور میں آپ کے خلیفہ کے پاس رہ انتا ہوں آپ انہیں توج ولا بنی کو وہ میر سے احوال وافکار پر زما وہ نگاہ رکھیں لات ہوا ہیں دیکھا کہ حنفی مصلی کے ساتھ جناب شخ ایک تخت پر علوہ فرا ہیں۔ اور میں مو دب سامنے کھڑا ہوں مجھے ناطب ہوکر فرما یا۔ تم نے ہمادی قبر رہے کچے میں مود ب سامنے کھڑا ہوں مجھے ناطب ہوکر فرما یا۔ تم نے ہمادی قبر رہے کچے میں مود ب سامنے کھڑا ہوں مجھے ناطب ہوکر فرما یا۔ تم نے ہمادی قبر رہے کچے سامن اخبار الاخیا د میں بیردو ایت بھی تکھی ہے کہ شخ علی تنفی کی وفات کے بارہ المان میں دون کرنا چاہا مصرت عبداللہ بوا۔ لوگوں نے لاش کو صلحارا ور اولیاں کے قبر سال بدا ہو کے قبر سال میں دون کرنا چاہا مصرت عبداللہ با فعی کی ایک قبر میں اما نتا ادلیاں کے قبر سال میں دون کرنا چاہا مصرت عبداللہ با فعی کی ایک قبر میں اما نتا اولیاں کے قبر سال میں دون کرنا چاہا مصرت عبداللہ با فعی کی ایک قبر میں اما نتا اولیاں کے قبر سال میں دون کرنا چاہا مصرت عبداللہ با فعی کی ایک قبر میں اما نتا اولیاں کے قبر سال میں دون کرنا چاہا میں دون کرنا چاہا مصرت عبداللہ با فعی کی ایک قبر میں اما نتا

د فن کیا گیا تھا اتفا گا قبر کو کھولاگیا نوائب کا بدن اسی طرح صیح وسالم نکلامالانکه کمکی مٹی کا بیرا ترہے کہ نین چاہ ماہ میں بدن کو کھا جاتی ہے اور مرد ہ کا نام دنشان بھی نہیں رہتا۔

> مامی دین را ہنم را ه حق مرست داعلی علی والی دلی سال وصلت گو علی شیر حث دا هم مخوال محندوم دیں عالی علی

سنے اور الدین ہونیوری قد س کے بھیے ہے اور وقت کے بھیے مقا ور وقت کے بھیے مقا ور وقت کے بھیے مقا ور وقت کے بھیے مقا اور وقت کے بھیے مقا اور وقت کے بھیے مقا اُن بیں سے مانے جاتے تھے آپ کی عرسوسال سے بھی زیادہ تھی آپ اس قدر نا تواں اور منعیوت تھے کہ جب تک آپ کو دونوں بازوؤں سے سہالانہ دیا جا آ عقار اعظم نہ سکتے تھے رگراس نا توانی کے باوج دی بس سماع میں جب آپ پر دقت طادی ہوتے میں جب آپ پر دقت طادی ہوتی تو بغیر کی مہارے کے اُنظ کھڑے ہوتے وجدیں آپ پر دقت طادی ہوتے وجدی طرح تندرست ہیں۔

جن د نون آپ کے والد صفرت شخ بہا را لدین اپنے بیرو مرشد شنخ میلی قدس سرؤ کی خدمت میں ر ہا کہ تنے تقے تو ہر دوز میں کی نما ذصفرت شخ کے پیچے اداکیا کرتے تقے آت ہر اولی قضا نہ کی۔ ایک بار صفرت سشیخ بہا والدین کا ایک لوکا فرت ہوگیا آپ تجہیز و تکفین میں مصروف دہے توآپ کی تکبیرا ولی قضا جو گئی اور آپ میں کی فاز کی جاعت میں تشہد میں جا کر ہے۔ می تنزید میں جا کر ہے۔ می تازک جاعت میں تشہد میں جا کر ہے۔ می نازک جاعت میں تشہد میں جا کہ ہے۔ میں نازک جاعت میں تشہد میں جا کہ ہے۔ میں نازک جا عدت میں تشہد میں جا کہ ہے۔ میں نازک جا عدت میں تشہد میں جا کہ ہے۔ میں نازک جا عدت میں تشہد میں جا کہ ہے۔ میں نازک جا عدت میں تازک جا جہ ہے۔ ایک جا عدا ہے۔ ایک جا حدا ہے۔

بیٹا نہیں مرے گا۔ خانجہ آپ کی دعا سے آپ کواللہ تعالیٰ نے او ہن دیا ہے۔
صفرت شنج علی رحمۃ اللہ علیہ کی د عاسے بڑی لمبی عمرا ور مہت سے کمالات ملے۔
اخبار الاخیار ہیں آپ کی وفات سے ہے۔
پر تو افکن سے دبخیت مثل ماہ
چر نکہ او ہن مظہر نور حب ال
رملتش شاہ ولا کیت اکبراست
فیض مولا نیرسال وصال

صرت الليم پنى كے والدين دېلى دفع إير، بي أب كے پاس بى قيام فرما تھ توفوت ہوئے يضح موسى كا بنا بيا ند تھا -آپ نے صرت اسليم حينى كوا پنا

بیابنا کرپرورش کی اوراس پرورش میں آپ نے بیٹی محنت اور شفقت سے حصہ
لیا۔ آپ سفر کوروا نہ ہونے گئے۔ تو فرطیا جیراا ورکوئی بیٹیا نہیں۔ دل نہیں چا ہتا
کرآپ کو جانے کی اجازت دول۔ آپ نے فرطیا۔ اللہ نفائی آپ کو بیٹیا دے
گاجب فیخ موسیٰ کے ہاں بیٹیا پیرا ہوا تو صفرت شیخ اسلیم چینی فتح پور دہی سے
سربند کوروا نہ ہو گئے۔ اور شیخ مجد دالدین جواس دقت کے ملک العلما نقے۔ ان
سے ظاہری علم حاصل کرنے گئے کہی کھی آپ سربندسے تکل کر تصبہ بہدائی چلے
جانے تھے یہ قصبہ سرمدسے تین میل کے فلصلے پر ہے دہاں شیخ ذین الدین تی الدین تی کامزاد ہے۔
کامزاد ہے آپ اس مزاد بی حاصری دینے تھے۔

اخارالاخاركممنت ني كمل كرآب ني المه و جرى مي ج کے لئے روانہ ہوئے وہاں ایک عرصہ رہے اور کئی ججاد ا کئے ایک مدت مك نيى كريم صلى التدعليد وسلم كے مجا وربنے و ہال سے دخست ہوئے آدعوب دعج كى سيركو نكل برك بزركول كى مجالس سي فين يا يا ماور برك برك الم كام كت قطب العادفين شيخ الإبيم حينى كوابنا بيرومر سد بناكر فرقد فلافت عال كيا عرب مين بهت و لوك ل كومريد بنا يا اورخ قد خلا فت مجى عطاكرتي ب سيد محدلولي يضخ محود شامي شيخ رجب على متولى روصنه منوره دمول كريم صلى المدعليه وسلم اوردوس بہت سے عربی سرفاد آپ کے مرمد بھرئے اور فلانت یا فی مندوستان والس است توكوه سيرى (فتح بيد) برگوشهُ نظبني اختياري رياصت ا در مجا مده میں مشور ہوئے۔ شادی کی اورصاحب اہل عیال بنے . آپ نے کوہ کری برسی بڑی بڑی ماریس -باغ - تا لاب اورکوئی تعمیر کئے سام و جری میں مول بقال نے آپ کو بہت پر بشان کیا۔ چانچ آپ نے نتے پورسکری کو تھو اکردوبارہ ج كو چلے كئے -اور دتائے اسلام كاسفركرك والي آكئے -

معارج الولايت بي لكھا ہے شير شاه سورى كى وفات كے لجد حب اسلام شاه
في باد شام ہت كا اعلان كيا . تو تنام شاہى لشكراس كے بڑے بھائى عا دل فال كے
ساتھ مل گيا . اسلام شاہ نے اپنے ايک فاص آ دمى كوصرت سليم شيق كے پاس
دعا كے لئے بھيجا . آپ نے فرا يا كرسلام شاه كوكه دوكدوه فى الفور كھوڑے به
سوار ہوكر با ہر نكلے جتنے فوجی اس كے بھائى عادل شاہ سے مل كئے ہيں وہ تہا الے
نام ہندوت ان كى باد شاہى كھردى ہے ۔ اسلام شاہ با ہر نكلا - سامالشكر ساتھ الگيا
اور مهند وت ان كے اقتدار بواس كا قبضنہ ہوگيا ۔

قامنی غیا فالدین ابراسم آباد کے قاصی تقاور آپ کے فلیف فاص تھی عقد ابك دن قاضى غياث الدي كها صنور د بلى كابا دشاه سلطان محد عادل ميرا واقت ہے۔ میں اس سے ملاقات کی اجازت جا ہتا ہوں . گرآپ اس سے منے کی اجازت دیں۔اورسائقہی آپ کے پاس ایک عراقی گھوڑا ہے اگر آپ مجھے عنایت فرمائیں تومی اسے بطور تحفہ دے دول حفزت سیم عنی نے قاضی صاحب کوسلطان سے منے کی اجازت میں دی اور گھوڑا بھی دے دیا ۔ گرساتھ شرط رکھی کہ بادشاہ کو تبا دینا کہ بی گھوڑا اس کے لئے حاضر رہے گا۔ اگر کوئی دوسرائتحض اس بیسوار ہوگیا تو اس كى معطنت كوزوال آجائے گا۔قاضى غياث الدين شاہى دريارسي ينج عراتی گھوڑا پیش کیا۔ بادشاہ بڑا خوش ہوا ۔ مگرسا تھ ہی آپ نے اس بر واضح كردياكم آپ كے سوااس بركونى دوسراسوارند ہو۔ ورند آپ كى سلطنت زوال پدیر ہوگی۔ ہادشاہ نے تسلیم کر لیا۔ کچھ دن گذرے قاصنی صاحب نے دیکھا کہ بارشا كا ايك خاص ملازم اس كھوالے بيسوار جا رہا ہے حضرت سليم عنى كے ياس آئے ذكركياكي فرمايا أج سے اس كى ملطنت تو زوال بذير مونا سروع مولئى ب اورچندونون مین اس کی سلطنت کا تخت الث و پاگیا

معادج الولايت ميں لكھاہے كم فتح لوركيدى كى تعميرسے بندرال سال قبل حصرت شخ سلیم حیثتی نے لوگوں کو تبایا کہ ان بہاڈوں بر عالی شان عمارتیں نبیر کس اگرتم لوگ اب مبی و مل حریلیاں بنا لو توبڑی تیت یا ؤگے کیونکه اس وقت ایک كر ماريسى نبي فريدى ماسك كى ولول نے كہاكم اس ديانے بين كون ويليان نمائے بہال توجا کے در ندمے پریشان کرتے ہیں کھے عرصہ بور شہنشا ہ اکبر صرت سلیمیتی کوسفے آیا۔ اورعقیدت واوا دن کا اظہار کرتے ہوئے۔ اپنی بیوی کوحزت کے چرے میں عقرایا جہاں اس کا بٹیاجہا گیر پیدا ہوا۔ پیر کیا تھا۔ دہلی کے روساا درامراء فنع بدر مي اپنے محلات بنانے ملے . بادشاه كا آناجا نا ہوگيا۔ بهت برّاشهر منيمًا كيا- لوكول كواب عيكه ملنا محال موكني- اس ستهر بيشابهي رعائيتي ہونے مگیں مصرت سین سلیم چنی کے سے ایک شا ندار خانقاہ مسجد اوردوس محلات بنائے ملے حصرت ال مكانات ميں منتقل ہو گئے۔ آپ كى سجد كا يوم تاسيس تاني المسجد الحرام سع برآمد موتاب- اورخانقاه كاسك بنياد خانقاه اكر

حفرت بیخ سلیم بیتی ج بیت الله سے والبس آئے تو آپ نے لینے مریدوں کوفر ما یا اب میں یا تو توک مقال دگفتگی کرووں گا یا توک طعام احبای نے عرض کی صفور توک گفتگوسے دوحانی فیض کا سلسلہ دک جائے گا۔ آپ نے فرمایا انجابی توک طعام کروں گا۔ چنانچہ اس و ن سے ذندگی کے آخری کمحات تک آپ نے کھا نا توک کر و یا۔ ایک میفنہ لیدچند لقے کھاتے ان میں بھی گوشت نہ ہوتا تھا۔ ایک ون مروف کے موصوع پو گفتگو ہو دہی تھی اپنی و نول گو پال گویئے کی بیٹی نے دبی میں باوٹ ہی فرمت میں عرض کی کہ اگرا جاندت ہوتو میں اپنے والد کو پال تا مشکل ہے تا بک کی ہڈیال دکن سے جاؤں۔ بادشاہ نے کہا اب ان ہڈیوں کو بہا نامشکل ہے تا بک کی ہڈیال دکن سے جاؤں۔ بادشاہ نے کہا اب ان ہڈیوں کو بہا نامشکل ہے تا بک کی ہڈیال دکن سے جاؤں۔ بادشاہ نے کہا اب ان ہڈیوں کو بہا نیامشکل ہے تا بک کی ہڈیال دکن سے جاؤں۔ بادشاہ نے کہا اب ان ہڈیوں کو بہا نیامشکل ہے

اسنے تا یا صور گوینے کی ہلای می سوراخ ہوتا ہے نیں اس موراخ سے بنیان اول گی مصرت سلیمتنی نے یہ بات سنی تو فرما یا گویئے ہدی میں ایک سوداخ باتے م مگریم مرود کے دلدادہ اپنی ہڑ اول میں کئی موراخ برداشت کرتے ہیں سے کہم كراتب في ايك تيزنشتر ال كالوشت جداكم كيدى نتكى كى وول نے دی کیا کہ آپ کی دان کی ہڑی میں استے سوراخ ہیں جس طرح شد کے چھتے میں ہوتے ہیں۔ پھر فرما یا سرود کی قدر وقیمت ہم جانتے ہیں۔ یہ قوال بیچارے کیا جای جن دنول مضرت شخ سليم فيتى وقدس سرة - كرسے با برسفرس بوت تونور باطن سے گھر کے تمام حالات دیکھ لیا کرتے تھے یعنی کد گھر میں ضروریات زندگی بھی فائبانہ مہیا کرتے رہتے تھے آپ اپنے خطوں میں لکھتے تھے کہ حضرت گنج کنٹس كريال محية مام عالات سے الله كرتى ين ادريس كركے سے مام ضروريات اہی کے با تقول بہنجا تا ہول حرت ہے کہ بیتام چزیں گھریں بڑی ملتی تھیں۔ ایک دن حضرت فانقاہ سے نعل کرمیے کی نمازی سے معید کی طرف ما رہے تھے۔ برا مده میں ایک درویش کوسوئے ہوئے پایا . تواسے جگا کر فرمایا - بھالی درویو سے رون الھيكو نا الھا نہيں ہو تا ما عظو منا زكاوقت ہوكيا ہے۔ مناز يوصور ورويش اعقا يشرمنده بوااور كن لكا وا قعى مي خواب مي ايك درويش سي تعبر رما عقا حضرت شخ سلیم حیثتی رحمته الله علیه کے خلفاء کی خاصی تعدا دعرب وعجم اود دوسرے اسلامی ممالک میں بائی جاتی تھی۔ مگریم ال میں سے بعض شہور فلفا كنام كلصف بداكتفاكرت بين شخ فتح التدسخصيلي . شخ كمال الدين فشخ بالالمالدوي يشخ محدمروالي بشخ محد بخاري بشخ سيدجو د ملوي بشخ كبيرسار مك يوري - شخ محرغوري شخصين مدالين يشخ ولى ساكن تصبه مود - شخ حادكوالياري شخ مقوب كتيرى يضخ ركن الدين وشخ حاجي حيين وشخ بجهاري وشخ سده بإرى بني اسرائيلي

سيد منين شخ عبدالوا عدساكن أكره ، شخ جلال حافظا مام بشخ امام صوفي سر مندى

رحمة التعليهم اجعين-

مارج الولايت بي لكھا ہے كہ صفرت بننج الليم حيثى رحمة الله عليه كاايك خورد سال بنيا تھا جس سے كوامات كا اظهار سواكرتا تھا۔ ابھى وہ ايك سال كى عمر ميں تھا كہ لوگول كواس كى كوامات سے فائدہ بننجيارسال كى عمر ميں ايك دن وہ مال كى گود سے غائب ہو گيا۔ گھر ميں بڑى تشويش ہوئى بصفرت دو سرى منزل برتشريف فرمائے۔ وہ بچ خود بخود اب كے ياس بہنج گيا۔ اس كانام تاج الدين تھا۔ الرصائى سال كى عمر ميں فرت ہوگيا تھا۔

حضرت شخ کا وصال بروز جمعرات انتین ماه رمضان المبارک الم اله کو ہوا۔
آپ کے دو نول فرز ندشنخ احدا ورشنخ بدرالدین رحمۃ الله علیم انے آپ کا سد ماہ بی ایک دو نول فرز ندشنخ احدا ورشنخ بدرالدین رحمۃ الله علیم انتقاد ورفرایا
برکھا۔ شنخ بدرالدین کو تو آپ نے زندگی بیں ہی اپنا جانشین مقرد فرایا تقادس کر صرت گنخ شکر دحمۃ الله علیہ نے بحر الدین کو اپنا جانشین مقرد فرایا تقادس کی اتباع صروری ہے صرت کا مواری افوار فرقے پور سیکری بین زیادت گاہ ما افوال

اسم الاو ليا, سلامت دو اسم سيم يا اسلام !! گشت محند دم صدق رمبر عشق سال توليد كش اذخرد لا تام قطب والاسيم محذوم است سن ترضيسل ان ذوى الاكرام سن ترضيسل ان ذوى الاكرام

آپ اعظائین دلقده سنده شهیں واصل بی ہوئے تھے۔ حس چوں عب کم ذوالجلال زونیاہے دول رخت متی بدیست

آپ بیشہ کے اعتبارے جولائے تھے گر سین تھے تھے ما یک قدس مر فہ مضرت شخ اسلیم نتے پوری کے مرید تھے ریاضت ۔ زہدو تقویٰ سے زندگی بسری اورصاحب کوامت واستقامت ہو گئے ۔ آپ کا نام زہر بیے جانوروں کے علہ کے فلاٹ اکسیر کا کام کرتا ہے بضوصًا سائے کا زہر آپ کے نام سے ہی معدوم ہو جا تا ہے ۔ آپ کوہ فائک لچر میں دہا کہ تے تھے رصاحب شخرہ چٹنیز نے آپ کا سال و قات سلم فی تھا ہے۔ بہر سال ارتحسال آبخاب سے در بہشت چو ل تھی دوشن فیمیری پرست بہر سال ارتحسال آبخاب سے دندا و عقل بیری پرست

رکھے سخے اللّٰہ تعالیٰ نے آپ کوعلمی اور دوحانی کرامات سے نواز ا تفاحر میں الفین میں ایک عرصہ مک رہے وہاں کے علمادمثا کخسے علمی استفادہ کرتے رہے۔ شخ على متقى كے يمى فاص شاكرد رہے - ايك عرصه كے بعد واليس وطن آئے وطن میں آکرآپ نے اپنے علاقہ اور خاص کراپنے تبیدوں میں رائج بدعات کی يريخ كنى منز وع كر دى اور لوگول كو علم حديث كى تعليم دينے كے لئے كئى مدارس قائم كئے بيرتشري اماديث يربرى مفيدك بي محيي ان مي ايك كتاب محالي كرام كه ذكر خیرمیں ہے۔جس کا نام مجمع البجارہ ایک اور کتاب جس میں اسمارالرجال کی تصبح کی گئی ہے لکھی۔ یہ بڑی مختصر مگر دنید کتابیں ہیں۔ آپ نے اپنی تصانیف میں اپنے اسادعلی متقی قدس سرہ کی بڑی تعرافیت کی ہے ۔ آپ اپنے بیرا ورمرشدگی ومتيت كے مطابق اپنے شاكردول كے لئے فودىيا ہى تيادكياكرتے تے بيض ادقات بين ديتے ہوئے بھى يا ہى كوهل كرتے رہتے تھے ،آپ فرما ياكرتے كه" با تف كارىي دل ماريس اورزبان گفتارين شغول رسني چاسيئ "كسي في اين علاقي مين بمرى رسومات کوخم کرنے کے لئے کو سشیں کیں اور لعبن بڑے بڑے لوگوں کو دین کے خلات کام کرتے ہوئے دوکا ۔ اس طرح بہت سے لوگ آپ کے دیشن بن گئے اور بدمعاستول سے مل كراك كوشميدكرا ديا۔

آپ کی شہادت کا دا قعہ ۱۹۸۴ میں دونما ہوا تھا

پاک دفت ازجال بخسدین سینخ ذی جاه متقی طاهر ارتحالش بدان توتاج شرف مهم مخوان وارث بني طاهر

آب شيخ يوسف رحمة الله اب سے وسف رعمالہ شنح نظام الدین کمیاری علیہ رحمۃ التدالیاری : کے فرزندار مجند مقادر بربان بوركى دلايت كے صاحب مفب سقے بڑے متقى مير بز كارا وردوق ورفوق. كے مالك تقے معارج الولايت ميں لكھاہے كه آپ اپني دالدہ كے بيٹ ميں مارہ ال تک دے بڑے علاج کردائے گئے بڑے بڑے طبیبول سے مشورے لئے گئے مرکوئی فائدہ مذہوا آخربارہ سال کے بعد شیخ نظام الدین بیداہوئے عالميس دن كزرنے كے بعد والدہ نے عسل كيا اورمسكراكم اپنے ميے كو كہنے لكيں " میں تہارے لئے بارہ سال مک کووی دوائیاں کھاتی رہی ہول اور بری ہی تكليف كاسامناكرتى رہى بول" مال كى بات سُنتے ہى شاہ يجهارى في الكي کھولیں اور فرمایا" امال آپ سے کہر رہی ہیں وہ تمام کردوسی دواٹیال میں ہی بارہ سال آپ کے بیط میں رہ کو کھا تا رہا ہوں" مال چالیس دوزہ بچے كمنه سے يه بات س كرجران ره كنين اوراسي حراني اور ارمين فوت بوين آب کی بڑی بین بی اللہ دی نے آپ کو اپنی گود میں اُعظایا ور پرورش کرنے لگیں رجب روے ہوئے تو پاک بین کے دینی مررسہ میں علم حاصل کرنے لگے ایک من آپ نے خواب میں دمکیما کر حضرت گنج فتکر رحمۃ الله علیہ نے آپ کے سرمیہ الك الويى ركه دى باورفره يا العنورالعين الله تعالى في تمهر خرقة فقرعطاكيا ب اورمكم دياب كرحرمين سترلينين كاطوات كرويجب آب اعظے توايخ والله بزرگارٹا ہ پوسف کی خدمت میں عاضر ہو کراپنی خواب سائے۔ یا ب نے اس کو ج رمانے کی اجازت دے دی ۔ آپ شخ بیگی شخ سوتا ۔ شخ میدالدین شخ محود کے ساتھ بریت الند نترلیف کوروا نہ ہوئے۔ آنہنی د نول شاہ لوسف پاک بین میں ایک قلعدمی قید مرکئے ماول شاہ بادشاہ کوشاہ یوسف سے بڑی عقیدت

عقی۔ آپ کی فدمت میں گزارش کی کہ آپ السرکے قلعے میں مقیم رہیں اور اپنی

برکا ت سے بوگوں کو نواز تے رہیں۔ آپ نے ایک دن عادل شاہ کو وصیّت کی کہ

سرا بیٹیا شاہ بخاری خشی کے داستے کعبۃ اللّہ گیا ہے وہ جج کرنے کے بعداس طرف

آٹ گا۔ مُنہا رے لئے صروری ہے کہ اس کی فدمت میں سرگرم رہو تمہادی جو بھی

مراد ہوگی اُس کی دعا سے پوری ہوگی۔ بچرشاہ یوسف نے شیخ صین کو مبلایا اور نہیں

مثالی فلانت عطافر ای اور خود فوت ہوگئے ۔ جب صرت شاہ بجہادی مکے سے اس اس کے استقبال کے لئے آیا

اور بہت ساندا مذمدت میں میشی کیا۔ گر آپ نے قبول مذفر مایا۔

اور بہت ساندا مذمدت میں میشی کیا۔ گر آپ نے قبول مذفر مایا۔

کتے ہیں کرحفرت شاہ پہاری نے پانچ مرتبہ عج کیا بگرآتے جاتے کھی کعیہ كىطرف نيت نہيں كى۔ كريں دہتے ہوئے چواے كے جوتے نہيں يہنے۔ آپ كے پاس ايك برتن تقاص بي سياه اورسفيد كھيو تھرے دہتے اب كونينداتى آد ا پنام تھاس برتن میں ڈالتے کوئی مجھو کا ٹنا تواس کے در دسے نیندجاتی رہتی۔ اور آپ مبادت مين شغول رہتے صرت شاہ قدس سرة ايك عرصة تك دن کوروزہ رکھتے اور سادی دارت کھڑے دہتے رچھ ماہ کے بعد آب ایک بار کھانا کھاتے وہ بھی جُرکی دوٹی اپنے ہا تھسے پکاتے آپ کی پکائی ہوئی دوٹیوں میں اتنی برکت ہوتی کہ خود کھانے کے بعدا پنے دوستوں میں جن کی تعدا دنین سوسے بھی زیادہ تفی تقیم کردیتے۔ ایک دن آب کے ایک دوست نے درخاست كى كە تىچ مىں آپ كے لئے رو بى يكاؤل كا-آپ نے فرماياتم نہيں بيكا سكتےجب اس نے بڑی صدی ترآب نے اجازت دے دی۔ ده دو فی پکانے سکاآگ عِلا في تووه جيك كرآك كو تعيونكيس مارت لكاساً ك نے براه كر اس كى سارى واوي جلادی آپ نے اُسے دیکھ کر فرما یا میں توسیلے ہی جاتا تقاکہ میری دوئی کوئی دومرا

نين پكاست

سین میدالدین مینی نے آپ کے ملفوظات میں مکھا ہے ایک ول صرت شاہ نے آسان کی طرف نظرا تھا گیا ور آپ کی ملفوظات میں مکھا ہے ایک ول صرت شاہ کے آسان کی طرف نظرا تھا گیا ور آپ کی نگاہ لوج محفوظ پر میرانام درج ہے ۔ آپ اسٹے مجھے اپنی عبار میٹیا یا ایک شال عصاالہ مستلی عطافہ مایا اور اپنی خاص مگیری مرسے آتاد کر میرے مر رید کھ دی ۔ بھرا نیا جمیہ مبارک مجھی بہنا دیا۔

معادج الولایت بی کھاہے کہ جن دنوں شاہ کہاری بر مان بور بی مقیم عقے تو آپ کے دمنو کرنے کے لئے دریائے تبتی سے بانی لا یاجا تا تھا۔ شخ محمود ذای درولیش بانی لانے کی فدمت بیں مقرد تھا۔ ایک دل صن ت شاہ نے شخ محمود تا کو یا دفرایا۔ تو دوگوں نے فرایا وہ تو آپ کے لئے بانی لانے در کیا پر گیا ہے آپ نے یہ بات سن کر بڑا افسوس کیا فرایا میرے لئے بانی لانے پراللہ کے بندول کو آتی مشقت کرنی پڑتی ہے آسی وقت اعظے تو اپنا عصائد مین بر مارا جہاں سے بانی کا جشمہ البنے لگا۔ پھر آپ وہاں سے باہر نکلے آپ نے دیکے موالی کہ دہ بانی تھا تھیں مارتا ہو آآپ کی طرف آر باہے۔ آپ نے فرایا لیے بانی مجدی نہ کو د آ مستر مجلو بات ہو آآپ کی طرف آر باہے۔ آپ نے فرایا لیے بانی مجدی نہ کو د آ مستر مجلو تا کہ ہم لوگ متہا دے باس دہ سکیں بانی آسی وقت زمین میں غائب ہو گیا لیکن عام آتا و لی ہے۔ آس حیثی کا کام آتا و لی ہے۔ عاد ل شاہ جو بر بان بود کا باد شاہ تھا اس نے آپ کے لئے بڑی عظیم انسان خانقاہ بانی تھی آپ کا مزاد اسی خانقاہ بیں ہے۔

ی پی اور کا محالی کا

فرسته گوخفید معرفت فوان دگرونسر ماسخی عب بدیکهاری

آب مفرت شخ الليم حثى كفليفه تق شخ بیارا چشتی قدس سرهٔ اوراپنے وقت کے عظیم شائخ میں شار ہوتے تھے ۔ کہتے ہیں کہ شہزادہ سلیم جہا گھرکواس کے والد جلال الدین اکبرادشاہ اپنے ساتھ لے کو صرت نواج معین الدین اجمری کے روضه منورہ کی زیارت کو كئے اس مفرس شخ بياراكوساتھ لے لياكيا۔ تاكدوہ شنزادہ جہا مگيرى نگراني كرسكين اتف ى اليا ہواكم اجمير من سنج كرشنزاده بيار ہو كيا-اس وج سے اكبر مادشاہ بڑا ہى بويشان ہوا۔ اكبرنے نشخ بياداكوكها كم آپ كے بيرومرشدنے ہمارے ساتھ اس کئے جیجا تھاکہ شہزادے کی دیکھ بھال کرسکیں۔ شیخ پیا رانے بواب دیا کہ ہم صرت کی فدمت میں عرض تھے دہے ہیں۔ آپ جو کچے فرا میں کے اس بيمل كيا جائے گا. خِانچ آپ نے ايك شاہى قاصد كے ماتھ شيخ سليم كے نام عرصی مکھی حس کے جاب میں آپ نے مکھا کہ یادشاہ کو کہہ دیں کہ انشاراللہ شہزادہ تندرست ہوجائے کا چونکہ ہم نے تہیں شہزادہ کی حفاظت کے لئے جیجا تقا اس لئے شہزاد ہ کی بماری کو اپنے حتم بہدے او خط بڑھنے کے بعد شخ پارانے بادخاہ کوتستی دی اور شہزادے کی بماری اپنے آپ پر سے لی اور شہزادہ ندرت ہوگیا۔ شخ بیاراس بھاری میں کئی مہدینوں تک مبتلارہے۔

ایک بارشخ پیادا با دشاہ کے دریاسے اُٹھ کراپنے گر آرہے تھے راستے میں ایک مت ہا تھے نے بیجد کردیا۔ ہاتی آپ کے نزدیک بہنچا توآپ اپنے گوڑے سے اُٹرکر فوراً قبلہ اُرخ کھڑے ہوکر نماز پڑھنے لگے۔ ہا تق آپ سے

مك كردوسرى طرت چلاگيا-

یشخ بیا را سکم فی کوفوت ہوئے آپ کا مزار میُرانوار دریائے نبرد کے
کنا رہے پر ہے جو دکن اور گجرات کے درمیان ہیں ہے۔
چواز دنیب بفردوس بریں نفت
سند مطلوب پیایدار حمت النّد
عیب نشتہ فخن رن الافوار تاریخ

وكرمسبوب يارارحت الله

آپشیخ شخیلل الدین تھانبیسری الکابلی قدس مرہ رحمت لندا میردوس کے گنگوہی کے فلیفہ اعظم تھے۔ ماں باپ کی نبت سے فاروتی تھے۔ آپ کا اس وطن بلخ تھا۔ آپ کے والد کا نام قاضی مجمود تھا۔ سات سال کی عمر میں قرآن پاک یادکہ لیا ۔ اورسترہ سال کی عمر میں سارے علوم سے فارغ ہو گئے۔ آپ درس بھی دیا کہتے اورنیو کی بھی کھا کہتے تھے۔ آخر کا دشیخ عبدتد وس گنگوہی کے ظاہری اور باطنی طورسے مرید ہوگئے۔

کتا بول میں لکھا ہے کہ آپ کی ابتدائی زندگی میں ایک شخص بڑی تو کش اواز سے عزل پڑھ رہے تھا۔ شخ اُس کی اوازش کر ہے ہوش ہوگئے اور کو مظے کی جیت سے نیچے گر بڑے ۔ وہ نیم سبل پر ندے کی طرح تر پنے گے۔ اور زمین پر لیٹتے جاتے ہوش ای تو اُسی ون حینتہ صا بر یہ سلسلے میں واخل ہو گئے اور بڑے مقا مات مک پنچے آپ سے بڑی کو امتیں طا ہر ہو میں آپ اس طرح یا دا اہلی میں عزق رہتے کہ مرید آپ کے کان میں نما ذکے وقت التٰد اکبر اللہ

كتة توجير جاكراك كوموش أنا ورغازا داكرتي الراك نعت يا قوالي سُنة توومدكر نے ملتے سامنيت سابريد بن آپ كرتبدوالابزرگ كوئى نہيں ہوا۔ ایک شخص شخ جلال الدین کے مریدوں سی سے تھا۔وہ کئی سال آپ کی خدمت میں ریا مگراسے کچے فائدہ نہ ہو۔ ایک دن صنور کی خدمت میں مبتیاول میں خال کور ہا تھاکہ پانے زمانے میں شخ بجم حین کبری بڑے صاحب کامت بزرگ تھے جستھن میا ایک نظر ڈالتے اُسے ولی اللہ بنانے۔ إن ونوں ایسے بزرگ کہاں۔ شخ جلال الدین نے اُس مرید کے دل میں اس خیال کوفود ہی معدم کرلیا۔ اور فرمایا بال ان دنوں میں بھی ایسے بندے اس دنیا میں میں ج ایک نگاہ سے طالب حق کواللہ تعالیٰ مک بینجادیتے ہیں۔ یہ کہاا دراُس شخص يدايك تيزنگاه ڈالى وه ائسى وقت توپ كرنيٹنے لگا تين دن تك بے ہوش ر با تیسر سے دِن ہوش میں آیا توشنے کے قدم چیم کرعرض کی مجھ اِتنے سالوں میں وہ چیز نہ ملی جوایک نظر میں حاصل ہو گئی ہے وہ اُسی ہفتے فرت ہوگیا حضرت شيخ كوائس كى موت كى خبرينجى توات نے فرمايا برايك كوبرداشت كى طاقت نېيى بوتى - يېدې چاده مېنى نگاه كى تاب نېيى لاسكا ايكې تظر مي وت بوگيا-

سے ہول الدین کا ایک بٹیافت ہوگیا کئی دنوں تک اُس کے صدمے سے آپ مجلسِ ساع میں نہ جاسکے۔ اور یہ در دھقیقی محبت میں تبدیل ہوگیا۔ شخ کی تفصیلات میں سے کمتو بات قدر سید بہت مفید کتاب ہے۔

شخ ملال الدين چوده ماه ذالج ومهيديسه وسالك يعريس وت بوك

على صاحب القباس الافوار صرت مولانا شيخ محداكم مقدوسى قدس مرة في آب كد دباتى الطفوري

آپ كامزارتقانيسرس-

جلال ازجهال چوں مجنت رکسید بے سال ترخیب ال مجان رسی کمال ریاه شخ پاکیزه دل سن عیاں دیگرمت ماہنا ہے عزت جلال

آپ صرت مصباح العاشقيں ملاوہ رحمة الله الله على الله و رحمة الله الله على الله و رحمة الله الله على الله و رحمة الله على الله و الد في منظم الله على الله و الله في الله و الله و

ربقیہ مائید اور مسلم الات سرد تذکرہ کرتے ہوئے لکھا ہے کرنیخ جلال الدین فارد تی محود تھا ہیسری قدل مرفی جالیا ہی طرف جالیا ہی طرف جالیا ہی کے گاؤں مرفی جالیا ہیں کے ہوت سے مرمد آپ کے گاؤں میں دہتے تھے ۔ ایک بارصزت گلو ہی آپ کے گاؤں آئے تو میداور مدر سرصزت جلال الدین کے ارت اور تدوی کا گوارہ بنا ہوا تھا۔ آپ نے صفرت کے مرمدوں کو کہا۔ سناہ متبادے گر تبادامر شدوقاص بھی ہا اور ما حلی فرت بھی کہ تاہے ۔ مرمدوں نے صفرت کے مرمدوں کو کہا۔ سناہ متبادے گر تبادامر شدوقاص بھی ہا اور کا تا بھی ہا ورکا آفا و بھی کہ تاہے ۔ مرمدوں نے صفرت کنگو ہی کو آپ کی طور آئے ہی تربیات من کی تو آپ نے فرایا۔ بال رقص کو تا بھی ہا اور کو الما الا تدریس میں موروف تھے۔ آپ نے ایک سرمری نگاہ ڈالیا اور بھی ہو گئے اور وہ ہو اور کی بیس رقس کو ایک میں اس کے ۔ اور دوریا فت کیا میال فیڈ کہاں سے مشرت میلال کے تام ظامری عدم سلیہ ہو گئے اور وہ وا تھی تو ہے ۔ کہ اور کی اور میں میں میں میں کہ نے تھے۔ آپ نے سادی عمرا پنے مرشد کی فدمت ایک ۔ اور سلم حیثیتی صابر میں کی ات اور میں میں دن دات ایک کرد ہے وا بھی میں میں میں دن دات ایک کرد ہے وا بھی میٹر کے تھے۔ آپ نے سادی عمرا پنے مرشد کی فدمت گواردی ۔ اور سلم حیثیتی صابر می کی ات حت میں دن دات ایک کرد ہے وا باتی الگی صفحہ بیر ملا خطرون کا نیس کی داروں کی ایک سلم کی بات اور کو کو کھی اور دن کا بیل کرد سے وا باتی الگی صفحہ بیر ملا خطرون کا نوری کی در ایک کرد ہے وا باتی الگی صفحہ بیر ملا خطرون کی کرادری ۔ اور سلم حیثیتی صابر می کی ات حت میں دن دات ایک کرد ہے وا باتی الگی صفحہ بیر ملا خطرون کا نوری کی در اسلم حیثیتی صابر کی کرائے حت میں دن دات ایک کرد سے وا باتی الگی صفحہ بیر ملا خطرون کا نوری کی کرائے میں دن دات ایک کرد سے وا باتی الگی صفحہ بیا حظرون کی کرائے میں دن دات ایک کرد سے وا باتی الگی صفحہ بیر ملا خطرون کا نمی کرائے دوری کرائے دیں داری کرائے دیں کرائے حت میں دن دات ایک کرد دیے وا باتی الگی صفحہ کی بی کرائے دی کرائے دیں کرائے حت کی کرائے دیں کرائے دیں کرون کر کرائے دی کرائے دیں کرائے دیں کرائے دیں کرائے دیں کرائے دی کرائے دیں کرائے دیں کرون کرائے دیں کرون کرائے دیں کرائے دیں کرائے دیں کرون کرون کرون کی کرون

پاگئے بن بوغت کو پہنچے تو اپنے پیرومرشد کی دو مانی تربیت اور فیضان سے مبندمرات پر پہنچے عِشق ومجت میں باکمال ہوئے صفور و استقامت میں نگا ندروز گار ہوئے آپ نے بے شار سفر کئے ۔ بزرگان دین کی مجالس سے فائدہ اٹھا یا۔ آپ کا کلام مہندی اور فارسی اشعار سے پُر ہے۔ آپ کی ایک کتاب ہما بُن وحوت بزنجش بڑی مٹہور ہوئی اور ہندی اشعاد میں راحی تخلص فرماتے ہتھے۔ اور فارسی اشعار میں مشاقی فرماتے۔ آپ جانے مرت یشخ عبد الحق محدث و ہوی رحمۃ النّد علیہ کے چیا ہتھے۔

صاحب اخبارالاخیارنے آپ کی تاریخ ولادت مح می اوروفات بتم ربیع الاول و می می ہے اور بیقطعہ تاریخ لکھا ہے۔

> مخدوی عارف زمان مسنستاقی و سے گفت بوتت نقل مشتاق حقم حفا چ تا ریخ و مست تش گریست نوکر تیکشش بهیں سخن کر د رمست

آپسلد جنت میں اہل کال بزرگ ہدتے ہیں۔ شخ اسحاق قرس سرہ ،- بڑی ریاضیں کیں۔ مثان سے دہی آکر قیام

دلتب حافیہ اکب بی آپ کے متاز فلیف تھے جلال الدین اکبر الاہم میں آپ کی فدمت میں مامز ہو کو مصار ف تصوف پر گفتگو کر تار ہا۔ اور فلسفہ وصدت الوجود کیہت سے نکات خاص کئے فیفی نے تقا نمیسٹریں حاضر ہو کر علمی مباحث کئے بریل نے خود آگرانی ذہنی شکلات کا حل تلاش کیا بصرت شاہ کمال کھیلی قدس سرہ سیا ہیا نہایس میں آپ سے ملے احد ایک مجلس معام میں ترکت بھی کی۔ شاہ قمیص رحمۃ اللہ علیہ نے آپ کی نگراتی میں ایک علیم کا ا آپ کی کتاب اوشاد الطابین آپ کے از کادر موز کا ذخیرہ ہے آپ کے خلفاویں سے نظام الدین ملجی بڑے با کمال بردگ ہوئے ہیں ان کے مقصل حالات بھی اقتباس اللا فواد میں ملتے ہیں۔

فرمايا يرسى لمبي عمرياني وفرما ياكرتے تھے . مجے ايك بيٹے كى آكر دوسے جب بيدا مو كا. پچرمی اس د نیاسے ماؤل گار نهایت کبرستی میں اللہ نے ایک بٹیا دیا بیٹے کی بیدائش كے بعداین فادمركو بلاكر فرما يا گھري جو كھے ہے ہے آؤ . فادمدنے كما آ بے كھر یں کب کوئی چیزدہتی ہے۔ جو لے آؤل و فرمایا آج جو کھے متاہے ہے آؤ ۔ فادمردو سرغلداوردوكيرك لائي-آب ودنون چزين فقرائح والے كردين . مير فرمانے لگے۔ آج ساع کوجی چا ہتاہے۔ کسی قوال کو ملالاؤ۔ خادمہ نے کہا آپ کے پاس کیا ہے جو قوال کو دیں گے آپ نے فرما یا بلاؤ۔ میں اسے اپنی مگردی اور میا در دے کہ فوش کرلوں گا۔اسی اثنا میں اپنے ایک دوست کے گھر چلے گئے و م اعلی ساع بر یا تھی بٹریک ہونے۔ دجدمیں آئے رونے مگے بے اختیاری کے عالم میں گھر سے با ہرائے اور اپنے گھر آگئے فرا یا آج جمعہ کادن ہے جام کوبلاؤ ۔ جامت كوائي عنسل كيا دوستوں كواكي ايك كركے الوداع كہا قرآن ماك كى ايك منزل یڑھی اور جان مان آفرین کودے دی ۔ آپ کی وفات موج کے ہوئی۔ بجاسحاق ازجهال دخت مفربست بسال رملت آل سشكوه آفاق بكواسهاق محن دوم مكن وكرسيه مطبع خاص اسحاق

آپ ظاہری اور باطنی علوم بیں استے عثمان زندہ پیرفد سرمرہ اسکالرکھتے تھے اور السلاجینید کے متازمتائخ میں شاد ہوتے تھے۔ آپ کے تین بھائی صفرت بیخ صین صفرت بیٹن محدوقدس سرہم تھے۔ بین حمین آپ سے بڑے تھے دہ اپنے والد ما جد کی ذندگی میں ہی انتقال فرماگئے تھے۔ ال کے دو بیٹے بین خ

نورالدین اورشیخ عفور ماد گارزمانه رہے ۔جب آپ کے والدشیخ عبدالكبيرنوت ہوئے۔ توصرت شخ عثمان ہی سجادہ نشین بنے۔ گرسائق ہی شخ حیبن کے دونوں بیٹوں شیخ اندرالدین اورغفورالدین نے بھی سجاد گی کا دعویٰ کردیا اور فتو حات ا در نذرانول مر محلكيط ا كعط اكرديا وه حضرت شخ سنمس الدين ترك اور شخ جلال الدين یا نی نتی کے مزارات کے نذرانوں کا دعویٰ بادات اسلطان ایرا ہیم اور طی کے دربار میں نے گئے بادشاہ بذات خوداس مقدم کے تصفیہ کے لئے دہلی سے یاتی بت ہیا۔اگرچہوالدہ ماجدہ اور صرت کے مربدا در شہرکے امراء شنخ عثان کی مجادہ نی پرا منی تے لیکن بادا ہ کی طرف داری اور درباریں از درسوخ کی وج سے سجاده نشینی دو صول می تقیم کردی گئی۔ پہلی عید کے دن دونوں سجاده نشین تمر سے باہرائے اور دونوں میں سخت اوائی ہوئی۔ شیخ حین کے بیٹے اپنی موارلوں سے نیچ گرگئے اور زخی ہو گئے وہ عیدگاہ تک نہ پہنچ سکے ۔اُس ول سے إلى لوگول کومقابعے کی طاقت مذرہی اورسجامہ نشینی شنع عثمان کے پاس ہی رہی-سرالاقطاب مي الحصاب كرحيو ليس سے دواردى ايك مندوايك المان آس میں اختلات رکھتے تھے۔ان کے معلمے میں فیصید نہیں ہوتا تھا دونو رحضرت ینخ کی خدمت میں آئے دونوں کی باتیں سنی اوراس نتیجے پر پہنچ کر سلمان سچاہے چانچة پنےملال كے ق يس فيلدكر ديا - مندوف احتجاج كياكم آپ نے محض ملان ہونے کی دجرسے اُس کے حق میں فیصلہ کیا ہے ورنہ میں زیادہ حقدار عًا صرت شخ يه مات س كرم اتبي بي على كن اور تقور لى در بعد سرأ علاكم فرمایا کہ متباری عورتیں جلہ میں قم دونوں کے لئے حکم دیا جا تاہے کہ سیدھے گھر چلے جاد سیے کے گھر میں لاکا پدا ہوگا ور چوٹے کے گھر میں لاکی پدا ہوگی ۔ دونوں اس بات برراضی ہد گئے ۔ ا در گھر چلے گئے کھ و نول بدملان کے ہاں و کا پدا

www.intersicrocinsorg

ہواا ور ہندو کے لڑی۔ دونوں نے صزت شخ کا فیصلہ مان لیا اور کھگڑا تھے کردیا۔
یضخ عتمان کے بیٹے شخ نظام الدین نے ایک نیا کنواں بنوا یا۔ وہ اپنے والد
کی خدمت میں حاضر ہواا ورائناس کی کہ آپ فاتخداور دعا فرما میں آپ نے فرما یا
پہلے دعوت کا انتظام کر دھیں میں ایک گائے ذبح کروا وراشنے من گندم کا آٹالاکھانا
پیاو اور عزیبوں میں تقییم کرو عیر میں متہارے سئے دعا کروں گا بیٹے نے کہا میرے
پاس تو ایک بکری ہے میں اس سے زیادہ کیا کرسکتا ہوں ، آپ نے فرما یا ہماری
نابن سے جو نکل گیا ہے اُسے پورا کر و ور مذبح کے ڈر ہے کہ متہا را کنواں گرجائے گا
نیج نظام الدین دعوت کا انتظام کرنے سے ہمچکیا تے دہے اور کنواں ٹیجے سے
میٹر گیا ۔

سینخ عَمَّان سَفِ ہُر اَ نُوسونوں ہیں میں فرت ہوئے۔
سینخ عَمَّان ہیں عالمگر حیثت!
دفت از دنیائے دون انڈ جان
رعلتش دکن جہاں عَمَّان بگو
نیز قطب الواصلین عَمَّان بُوان

آپ بیدرا جی حامد شاہ کے مرماور در است خوانیال حقیقی قدس مسرہ اور فلیفہ ہیں آپ کو کئی بار صرت خور علیہ اسلام کی عجب بھی نصیب ہوئی اور آپ نے صرت معین الدین الحمیری دعمت الله علیہ سے بھی دو حانی فیصل با یا تقاریہ بات با یئر نبوت تک پہنچی ہے کہ صرت خواج میں الدین نے آپ کو باطنی طور بیصر ت خصر علیہ اسلام کے والے کر دیا تھا مندی ذبان کا میر شعر معادج الولايت میں بھی متا ہے اور شرح الحروث العالیات

مِكْ مِكْ عرج صرت واجي حضرت نبی رسول بذاجی دانيل جرير گٿ کنيان حنب رت نواجی خضر مهند و نیا

یعنی حضرت خوا جرمیین الدین دائمی اور باطنی عمر کے مالک ہیں۔انہوں نے جایا كروا نيال كوظا مركرين اورا ولياء الترمين أن كاايك مقام متعيين كرين فياتيه ا بنوں نے خواب میں صفرت وا نیال کو حفرت ضرکے ہوا ہے کر دیا۔ سینے دانیال ۱۹۹۳ میں ہوئے ہوئے اُس وقت آپ کی عرامی او

گیاره سال تلتی ـ

چول جناب دا نیال محست رم یافت از د نیائے دول بائ وصال سال وصل اوبجر متاز وقت مم بخوان بدرالكراست دانيال

آپ صرت نوام سیمتی شخ فتح الدرين سبها حيثى قدس سرة الميضية سكرى كے بيالاكى جوٹى رعبادت بيس شغول رہتے تھے -ايك دن سيخ سدهارى جوصرت شنخ اسلیم کے قلیفہ تھے آپ کو دیکھنے کے لئے پیارٹ کی چوٹی پر گئے۔ چند مع بیٹے توشخ فتح اللہ نے ہوا میں اٹر نا شروع کر دیا۔ شخ سدھاری نے دوڑ كرآپ كادامن كردا اور كيني كرينچ لائے اوراپني عبد بيغياديا. آپ نے كما شخ سدهارى تم جانت بوكريس كهال جار با تقا- انبول نے كهاكر مجمع معلوم نبيل

شخ فتح الله نے تبایا کہ آج میرے پرومرشداسیم حینی کی فالقا ہیں بہت ہے بزرگ جمع ہوئے تھے حضرت غوت اعظم اس محلسے واپس ہوتے ہوئے ۔ اسطون سے گزدے تھے میں اُن کی فدمت میں مامنری کے لئے آگے بڑھا جب تمنے میرا دامن مربط آنو صرت غوث اعظم نے مجھے اجازت دیے دی توہیں والیں ا بنی مگرمیآ گیا در مرادا من تهارے افقیں رستا ورمیں بغداد جلا جاتا معارج الولايت كمصنف في مكهاب كرشيخ فتح التدال يره صفح اوراً مي تفے۔اس سے علماء کوام کو بیا عراض تھا کہ ہے علم دلی اللہ نہیں ہوسکتا۔ بیربات آپ كے خليفہ شيخ و جميرالدين في شنى تو آپ كوبيرى ناگوار گردى وايك ل حضرت یشخ فتح الندروے خوش بیٹے ہوئے تھے اور شخ وجہیہ الدین آپ کی خدمت ہیں ماصر عظے .آپ نے فرما یا د جہیں الدین آج جو کھی انگناہے ۔ مانگ او اُنہوں نے آپ کے سامنے علماء کوام کا عتراض پیش کیا اور عرض کی که آپ میری سائروان آب نے فرما یا کہ اعتراص کونے والے عالم دین کومیرے یاس ہے آؤ بشنخ وجہدالدین ایک بہت بڑے عالم دین کوجے آپ کی بے علمی براعراض تھا۔ اے آئے۔ آپ نے اُس عالم دین کوفر مایا آپ جوکتا بیں جا بیں میں اُسے بڑھ کوئنا دیتا ہوں۔ اُس عالم دین نے ہدایہ بیش کیا۔ آپ نے پوچھاکہ اس کوا ڈل ت پڑھوں یا آخرسے یا درمیان سے انہوں نے کہاکہ درمیان سے پڑھیں۔ آپ نے يشخ وجهيدالدين كوكهامين زباني بإهتاجاتا بهول اورتم لكحقة عباؤر آب نة تفريبادد صفح راه ديئے اور تھی مونی عبارت ائس عالم دين كو دى اورفرماياكر برعبارت كتاب كى تحرييسے الالد- وه عالم دين حيران ره گيا-اسى و ن كے بعد تمام علما يوا آپ کے معتقد ہوگئے۔

جب مفرت شیخ المیم حینی فرت ہوئے توآپ کے بڑے بیٹے شیخ احد نے

یفت ابدالفتی موسی این ابدالفتی ابدالفتی ابدالفتی میں فرت ہوئے۔

یافت بول الدالفتی کارخولیش

باہزاران سنتے در مک جب ان

سال دسل او مگومفت عشق

ہم مجذال فیاض حق ای مهرمان

و فات د نوسو ننا نوے ہجری در 196ھ

ہیں شیخ نظام نارنولی فکرس مرہ اور شیخ خانو قدس سرہ کے مربدان میں سکونت پذیر رہے اور ہزاروں طاببان حق کو چالیس سال تک روحانی تربت دیتے رہے آپ کی توج سے بڑی کثیر مخلوق راہ ہلایت پر آئی سفینۃ الاولیا ہیں لکھا ہے کہ شیخ نظام رحمۃ اللہ علیہ ہرسال نادنول سے یا پیاوہ چلتے اور خواجب قطب الدین نجتیار کا کی رحمۃ اللہ علیہ کے مزاریرا نواریہ جاتے ۔سارے راشے

بیں آپ پر ذوق اوروج رطاری رہتا۔ و ہاں سے اجمیر شرافیت پلے جائے اور صرات فواج رہوں الدین اجمیری کے بازار کی زیارت کرتے۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کو بڑی جو لیت بخشی تھی۔ بڑے بڑے کا مل مریدا ور ممتا زاولیا، آپ کی تربت میں رہے۔ آپ کے بیرو مرشد کا نام شیخ خانو گوار بائی تھا۔ وہ خواج صین ناگوری کے مرید تھے۔ آپ کو شیخ اسماعیل بن شیخ حس سرمت سے خرقہ فقر ملا تھا۔ اس کے علاوہ صفرت خواج اجمیری رحمۃ اللہ علیہ سے دو حانی خرقہ بھی حاصل ہو بیشنے نظام الدین کے بحائی شیخ اسماعیل بھی شیخ خانو کے مرید ہیں۔ شیخ خواج کی بری بھی انہی کے مرید ہیں۔ شیخ خواج کی بری بھی انہی کے مرید ہیں۔ شیخ خواج کی بری بھی انہی کے مرید ہیں۔ شیخ خواج کی بری بھی انہی کے مرید ہیں۔ شیخ خواج کی سی بری بھی انہی کے مرید ہیں۔ شیخ نظام الدین کے جائی شیخ نظام اخت رہیں شیخ خانو گوار لیا والے انہ بری بھی انہی کے مرید ہیں۔ انہا دالا و لیا والی انہا دالا و لیا والی دیا سے جائے شیخ نظام انہا دیا دالوں کی و فات سے 19 میں ہوئی۔ انہا دالوں کی و فات سے 19 میں ہوئی۔

نظام از دار دنیب چرن سفر کرد مدا بجنو د بروی باب جنت عیا نشد سن و صال انتقالش ۹۹۹ه

٣٠٠١١١

محب اولی مہتاب جنت وفات او نوسو ننانوے س<u>ام ۹۹۹</u> ہجری

اس حفرت الليم حثى كے مربد مجى تھے الليم حثى كے مربد مجى تھے الليم حثى قد س سر الله الله مجى تھے جب الليم حثى سفر ج الله موت تو آپ مجى آن كے ساتھ تھے۔ جے سے دالى پر گجرات بنجے توشنی اللیم حشی نے احمد آباد میں مقرد کر دیا۔ شنج محد شیروانی اور لعبن دوسر سے عزیق کو مجى اللیم حشی کے ساتھ دہتے کا حکم دیا۔ شنج طل بانے عرض کی صفوراس علاقے کو مجى اللیم کے ساتھ دہتے کا حکم دیا۔ شنج طل بانے عرض کی صفوراس علاقے

میں بڑے بڑے اولیاء الندمی جن کی شہرت الدے ہندوتان می عیلی ہوئی ہے یں بیاں دہ کر کیسے کام کوسکوں گا۔ آپ نے فرمایا بیتمام لوگ تہارے مطا لے اور فرما يردار بن جائيس كے يضخ طا ما احد آبادي قيام بذير بوئے و مال كے بردگول نے کیا باطنی امتحال لیا۔ اور پھر آپ کے تالبدار بن کررو مانی فائدہ ماصل کرنے لك معادج الولايت كمصنف لكهة بن كراكرك ذمان مي مظفر بوائى كو گجرات کاملطنت تاریا کیا. وه صزت شیخ کی قدمت میں حاصر ہواا وراتماس کی كرشخ افي المحصاس كى كررتيواد باندھ - تاكر ہندوتان كى سلطنت اُس كے زيز كميں رہے حصرت شخ نے جاب ديا كہ ہندوتان كو الله تعالىٰ نے اكبر باوشاہ سرد كردياب مي كون بوتا بول كرأس مي تبديلي كى كوشش كوول بيربات سنتے ہی مظفر عقے سے عبر ک اٹھا اور کہنے لگا اکبر کے فتکرسے اور نے کی کائے میری موار تہا رہے خوان سے تر ہوگی ۔ شخ نے کہا میرے اور آپ کے درمیان ایک ہفتے کی مہلت ہونی جا سیئے اس کے بعد جومرحتی ہو کہ نا- ابھی ہفتہ مذکررا عقا کہ اکبر ما دشاہ کی قوجیں گجرات آ پہنچیں اور گجرات رو قبضہ کر کے مظفر کو وال

> شخ طا م کی و فات سند شه هجری میں ہوئی۔ چو طا م بلطف حت دا و نبی ازین دیر دون شد بجنت روال

> > DI ...

شود وصال ترحيس آن شاه دين زمح ذوم مرحوم طا باعيسان

ہے بڑے کا مل درولیں اور کمل ولی اللہ استے صرّت خاجر معین الدین کے دوحانی فیض یا فتہ تھے۔ کہتے ہیں کہ آپ بینی سال تک خاجرا جمیری کے دوخد منورہ پھیل یا فتہ تھے۔ کہتے ہیں کہ آپ بینی سال تک خاجرا جمیری کے دوخد منورہ تے آواز سنی کہ اے مٹہ تم کو د لی کا مل بنا دیا گیا اورولایت کا کرون تمہا دے حوالے کردی گئی ہا والے وہ ای کا کرون تمہا دے حوالے کردی گئی ہا والے وہ ایک قالم تام چزیں تہادے تقرف میں مول گی۔ شخ مٹہدا جمیرسے آتھے تو کا کرون آگئے۔ ایک خانقاہ بنائی۔ اور دوگول کی ہدایت بین شنول ہوگئے۔ کا کرون آگئے۔ ایک خانقاہ بنائی۔ اور دوگول کی ہدایت بین شنول ہوگئے۔ آپ کی دفات سنات ہجری ہیں ہوئی اور آپ کا مزاد کا کرون ہیں

-450

اذت وصل خدا در خلدیا فت مثهه سپید با خبر شیرین کلام از دل سردر وصل پاک او شدعیان والا قدر شیرین کلام به ریم سرسین اهدم

وفات ۱- دوس موتین رسان هری)

آپ شیخ تعمیر مولا به قلاس مسره ایکی شیخ تقی کے مریدا در فلیفہ تھے ذائے مریدا در فلیفہ تھے ذائے مریدا و در با کمال ولی اللہ شار ہوتے ہے اپنی ولایت کے افراد کو الامت کی چا در میں پوشیدہ رکھتے تھے اپنے وقت کے مرا عدوں کے امام تھے۔ آپ نے ہندی ذبان میں بہت اشغار کے ۔ جو ان کی مبند کاری اورا علی تخیل کے آئینہ وار میں ۔ اگراک کے کلام میں تحقیق اور تجمیش کہا جائے تو وصل عذا و ندی کے عمدہ منونے ملتے میں وہ میدان وصل میں فراق کی کیفیت کوسل عذا و ندی کے عمدہ منونے ملتے میں وہ میدان وصل میں فراق کی کیفیت کوسل عندا و ندی کے عمدہ منونے ملتے میں وہ میدان وصل میں فراق کی کیفیت کوسل منہ بیں آنے دیتے ہندوشان میں ندی زبان میں حرشخف

ك حقالى والمعادف رب سے بہلے بيان فراتے ہيں وه صرت شخ كبير بى تھے۔ ال کے عتلف ہندی اشعاد منتے ہیں۔ لیکن ال میں زیادہ بشن پدوساکی کی قسم یا ئی جاتی ہے اگرانفات ہے آپ کے کلام کودی جائے تو بول معلوم ہوتا ہے كرا بنول نے زبان كے ترازوسے حقائق كے موتى توسے يہ بہيں ايسے حقائق دوسرے شعراء کے کلام میں نہیں ملتے محقق ہندی جن کاہم بعد میں ذکر کریں کے دہ بھی اپنے کلام میں شنج کبیر کا ہی تباع کرتے ہیں کبیر نے جن ساکھیوں اور بشن مدده کا ذکر کیا ہے عققِ سندی نے اُنہی کو ووالوں میں نظم کر دیا ہے ۔ اس کی باطنی قوت ریمند وا در مسلمان وونول ریکا مل اعتقاد رکھتے تھے .اور ہر طبقه انبیں اپنے ندبب میں قرار دتیا ہے۔ چنانچر سلمان انہیں پر کمیر کتے ہی ادر سندوا نہیں بھلت کبیرے نام سے یا دکرتے ہیں۔ آپ کی وفات سان الله بجری میں ہوئی تھی۔ مشدز دنیس بجنت اکبر چ کبیرازعط کی قدیر رملتش صاحب الثادت فوال ہم بدان بیل بہت کبیر

کئی سال ہے آپ کی فدمت میں حاضر ہیں بہیں کچھے حاصل نہیں ہوا۔ اس میں کیا راز ہے ۔ آپ نے فربایا شنخ ولی اپنے کو مگر تمام چیزوں سے بیٹر کو کے پکا کرلائے تھے میں نے اُس میں صرف نمک ہی ڈالا ہے اور وہ تیا رہوگئی۔ آپ لوگوں کو پختہ ہوتے ہی وقت مگے گا۔

> آپ کی دفات ۲۰۰۴ بجری تھی۔ یافت از حق و لایت جنت چول دلی حرث را و کی اللہ جا مع فیض گو تر حیلے شس

هم ولی مشیخ او لیاون را مهم ای

کباکرمجد بھی ہمارے ملک میں ہے بہاں سے بھی با ہرنکل جاؤ اورکسی دوسرے ملک میں چلے جاؤ آپ ہندوتان سے نکلے تو بہت اللہ مشراجی کوروا نہوئے چے کہ نے بعد والیں ہندوستان آئے۔ بادشاہ کے علم سے آپ کے کھانے میں زہر طاد یا گیا اور اس طرح آپ کی شہادت واقع موئی۔ آپ کی ہہت سی تصانیف اہل علم کے لئے مشخل راہ بنی۔ مقانیف اہل علم کے لئے مشخل راہ بنی۔ میں منابی کا در اس میں منابی الدیسا وعفد قبلان ارتبان میں مدر مشدی مدر کہ میں میں کہ

چنانچ کشف الصد منها ج الدین ا در عفیفترالانبیار زمانه بحر مین شهور بوئی -آپ کی شهادت کا واقعه سلننگ ترجم ی بین بهوار از عبادت یا نت عب رالله فلد

رطت آن على مكان آنتاب فقر عبد الله كد نيز منه ما آنتاب عاشقان نيز منه ما آنتاب عاشقان

01004

آپ نظام الدین نار فدلیک افترا رالدین مرواتی قدس سره از خلیف الدین نار فدلیک افتیا رالدین مرواتی قدس سره از خلیف خلیف افتیا رفان تقاجب جذب الهی دا من گیر به واتوآپ اجیری چلے گئے .ادر کافی عرصہ صفرت خواج اجمیری کے باذاریں پٹے دن آپ نے صفرت خواج اجمیری کوخوا ب بین دکھا توآپ نے فرایا کر تنہا دے پیر نار نول میں بی اُن کان م نظام الدین ہے تم جاذ آپ نے صفرت بیخ نظام الدین کو دکھا کہ ایک بوائی چاریائی پر معظے بین ادر سرھیکا ، تواہد - آپ کے دل بین خیال آیا کہ جوشف ندیندیں او نگھتا رہتا ہووہ میری اصلاح کیا کہ سے کا حضرت شخ نے نوریا طی سے اختیا دلدین کے اس خدست کو معلوم کیا اور سرا کھا کو فرمایا کہ آپ کو صفرت فواج معین الدین کے اس خدست کو معلوم کیا اور سرا کھا کو فرمایا کہ آپ کو صفرت فواج معین الدین

نے جیجاہے ان کے حکم سے میرے پاس آئے ہو۔ اب ان حالات میں شک کرنا یا ڈرنا کیا معنی رکھتا ہے۔ شخ افتیا دالدین صرت کی بات ش کر شرمندہ ہوئے یا وُں چے ہے ا در مرید ہوگئے۔

آپ نے اِن کی تربیت کی اور پایٹی کیل تک پہنچ دیا۔ اختیار فان کا نام بل کر اختیار الدین رکھا۔ صرت شِخ نظام الدین نے آپ کوخر قر مقلافت بہنا کران کے دطن بھیج دیا وہ کا اکا پی کے نزدیک قیام فرا ہوتے دیں آپ کا مزار شاہے پھر آپ کی اولاد اور دو سرے رشتہ وار و ہاں سے اُٹھ کوشش آبادیں آباد ہوگئے۔

> اپ کی وفات سان ہے ہجری میں ہوئی اختیار الدین چر باصد افتخار گشت خودمخست ردد فلد ہریں سن وصال ارتحاش اعظم است نیز سنداند دل عیال شیخ این

آپ کا نام مبلال خان تھا پھانو مشخ جلال الدین کاسی شیتی قدس سر کہ اسے کاسی تعبیہ کے بہت بڑے رئیس تھے بیٹر شاہ موری کے درباریں اعلیٰ منصب پر فائز سے سلطنت افغانان کے ذوال کے بعد مغلوں نے انتقامی کا روائیاں شروع کمیں توجلال خان کے ول سے دنیا کے جاہ و جلال سے ول اچا ٹے ہوگیا اور شاہ محرج نیتی قدس سر کہ کی فدمت میں حاصر ہوئے مرید ہوئے گرایک عرصہ کک فیج کے دروا زے نہ کھل پائے ایک عرصہ کے بعد شاہ محدج نیتی نے تبایا۔ کہ آپ کے معاملات شیخ

بدرالدین صاحب ولائت کے اختیاریں ہیں۔ وال جائیں علال خال ال ینیج توایک عرصہ مک خانقاہ کی جاروب کشی کرتے رہے. فارغ اوقات میں قرآن یاک کی تلاوت کرتے رات کو مجاہدات اور ربیاضات میں گزارتے - آخر الندتعالى نے نصل كيا توان كے مرشدنے ايك نگاه سے انہيں منازل سلوك ط كرا ويني : مرارا تدس سے أواز آئي- جلال مدرالدين - مدرالدين جلال-اسطرح آپ کما لات کو پنیج - لوگول میں بڑی شہرت می بے پنا ہ لوگ آپ کے ملقارات میں آنے لگے۔ایک دل آپ کے دل میں خیال آیا کاش میراکوئی فرز ندمعنوی وا تومی بھی اسے ان فیوضات سے مالا مال کرتا۔ یہ خروقت کے صاحب ولایت كوىلى . توآپ نے فرما يا - اب سم تها رے كئے فرزندر شيد كا بھى بندولبت كرير كاس كى تربت مي كوئي كسرا علانه ركهيس-اتفاقاً اسى علاقه بيرايك ہندو کا سختے قوم سے تقاوہ لکھنوکے دربارسی منصب دار تھا۔ اس کا ایک جودہ ساله بینیاظا ہری حس و حال میں اپنی مثال آپ تھا وہ ان دنوں معدی کی كتاب گلتان برهمتا عقامیب وه گلتان كے دیبا جرمیں اس شعر پہنچا۔ يلغ العسلي عجب بذ كثف الدجي تجب لل منن جميع خفس اله صلواه عليب وآلا

ر کے نے اپنے اسا دسے پوچھا یہ کون شخص ہے جس کی اتنی تعربیت کی گئے ہے۔ اس و نے بچے کوسیّد الانبیاء صلی اللّٰہ علیہ کے حالات سے واقف کیا۔ اور بڑی تعربیت فرمائی بچے کے دل ہر اس کی گفتگو کا اتنا اثر ہوا کہ وہ کلمہ بیچھ کہ مملیان ہونے کی خبرنے ہندوگوں میں ایک طوفان بریا کردیا

ہندووں کے شوروہیجان سے وہ بچہ گھرسے تکلا۔ بدایوں شرحابینچا وہالے جلال الدين كى خانقاه ميں رسائى مونى او حرصا حب ولايت تے دوعانى طور يو حفرت جلال الدين كوا كاه فرمايا حِس معنوى بيط كى تلاش ميں نفے وہ تہارے پاس ا پہنچا ہے اس کا نام مخدوم عبداللدر کھو۔ یہی متبارا جانشین ہوگا۔ سے علال الدین نے اس بے کی تربیت کی ۔ اُسے ظاہری اور باطنی علوم سے بیرہ ور كيا ادهرصاحب ولايت كى دو حانى نكاه نے بچے كى شخفيت كوا وراہم بنا ديا بھزت ین کامعول تھا۔ کہ اوھی وات کو اُسطے صاحب ولایت کے اس ندیر بنیج کر تلاوت قرآن كرتے مبع نماز كے بعد اپنے اہل وعيال كى طرف شهر مل علے جاتے تھے۔ ايك ون آپ جارے تھے کرراستہ میں جوروات کا مال تقیم کررہے تھے۔ انہیں شک گذراکہ بیشخص ہمارے حالات سے داقف ہوگیاہے کہیں ہم بکوے نہ جائیں۔ آپ بہتروں کی بارش کردی جسے آپ شہید ہو گئے۔ آپ کو اپنے صاحب ولايت كم مزارك ياس وفن كياكيا-آب كى تنهادت اكبر اوشاه ك آخری دور اقتداریں ہوئی تھی میرایک ہزارتیرہ صدی بجری تھی۔مخدوم عبداللہ آپ کی جگرمندارانادی بعظے۔ بڑی شہرت می اوگ جق درج ق آنے گے مخدم عبدالله كىكشف وكرامات كى تنهرت وور دور ك يصلن للى مخدوم عيد المدراي سادىدات عبادت كرتے اكثراتي ايك ياؤل يكوس كوس كرارويتے تقے اس علاقہ کے اکثر لوگ آپ کے ملقہ ارادت میں استے گئے ان دنول قصبہ رائے بہلی ك ايك دسكين طا باليمي آب كي عقيدت مند بوك عقراس في عبى ترك ونياكم کے یادالمی کواپنی زندگی بنالیا مخدوم سیدجها نگیر یاد شاه کے عبد حکومت ایک ہزار چوتیس ہجری میں فوت ہوئے اور اپنے مرشد شیخ جلال الدین کے بیلو میں دفن كرديتے كئے يشخ طابانے آپ كى سندسنھالى-

چوں جسول آل دلی اہل کھال صورت سرو مشد نباغ جنال مست سنیخ نیطانے تاریخیش مست سنیخ نیطانے تاریخیش نیز مشتاق می جلال مجوال نیز مشتاق می جلال مجوال

سدمز ما سینتی قدس سرفی سیدمز ماحیتی شیخ عبدالوہاب جوہند دان ان سیدمز ما سینتی قدس سرفی کے اکابر سادات میں سے تھے۔ کے بیٹے ہیں۔ آپ نے جوانی کے عالم میں اپنے پیرومرشد کی نگرانی میں بڑی ریاضتیں اور عجا ہدے کئے کئی کئی دامین قیام اللیل فرماتے اپنے مرشد سے اسنے فیصنان مائے۔ کہ صاحب کوا مات و کما لات بن گئے۔

آپ کا خیم نصب کیاگیا۔ایک دن ایک قلندر آیا اوراس سے دریا فت کیا۔

یدمزیل واقعی آپ اپنے والدسے منا چاہتے ہیں۔ آؤ۔خیم سے باہر آؤ۔وہ باہر

آٹ توقلندر نے کہا اب آپ دو بارہ خیم ہیں اندر عاؤ۔ آپ کے والد کھڑے

ہول گے بیندمزیل آگے بڑھے۔ دیکھا کہ اُن کے والد مرحوم کھڑے ہیں وہ ڈھاریں
ماد کر دو تے دوتے والد کے قدمول میں گرگئے۔لیکن حب سرائٹا یا نہ وہاں والد
عقی نہ قلندر۔والیں اپنے پرومرشد کی خدمت میں حاصر ہوکورں را واقعہ سنایا۔
آپ نے فرمایا۔ تم نے بے صبری کا مظاہرہ کیا۔ورنہ والدسے باتیں کو نے کا بھی
موقعہ لل جا نا تھا۔

میدمز مل ایک عرصہ مک اپنے پیرومرشد کی خدمت میں دہے اور کمالات ماصل کرتے دہے ۔ آخر کا در ہانا ہے میں فوت ہوگئے ۔ بجنت رفت از دنمیں ئے فانی چل آس سیدمز مل خواجہ دہر ولی سینج جہال وصلش رقم کن بخوال سیدمز مل خواجہ دہر

حفرت فالواده چنیته میں بڑے معروت ولی اللہ اسلامیں بیائے معروت ولی اللہ اسلامیں بیائے ہوئے سے پہلے دہا کے بہت بڑے دوسا میں شار ہوتے تھے۔ ایک دن صفرت شیخ سلیم چنی کے ایک مربدسے کہنے لگے جھے ایسے پیرکی تلاش ہے جو جھے پہلی ملاقات میں ہی اپنی طرف کھنے ہے۔ اوراس کا دویاد دنیا سے ساکر اللہ کی طرف لگلے میں اس بیرسے بعیت کرول گا۔ اس نے کہا۔ یہا وصاف قومیرے پرشنج سیم خی

میں اینے جاتے ہیں جو فتح لور میں رہتے ہیں۔ سید چھونے فرما با۔ میں اس کے یاس اس صورت میں جاؤل گا۔ کہ وہ خودمیرے استقبال کے لئے تشر لف لائنی اسمريدنے كماآپ اپنے چاہے والول كى آرزوئي بورى كرتے ہيں۔ آپ میرے ساتھ چل کر تو دکھیں۔ دونوں فتح بور کی طرف روا نہ ہوئے توشیخ اسلیم اقبال كوندأت بيريديوكاسا عقى كمينا ريا -بس اليمي آتے ہوں كے مگر دولول فتح لور کے دروازے مک جاپہنچے مگرآپ استقبال کو ندآئے۔ حتی کددونوں آپ کی خالقاً یں جا بیٹے گراس کے باوج و حضرت سلیم حیثی ان کے سلام کا جواب بھی دینے نہ آئے بیدجو کی رگ جیت اور دنیا داری محرولی ۔ آپ غفے سے اعظے اور دہلی کر روا نہ ہونے مصرت شخ اللم نے ساتو اپنے ایک فاص مرید کو پچھے ووڑایا کہ ا نہیں والیں نے ہمیں وہ مریدا بھی کھے کنے مذیا یا تھا۔ کرسید چو گھوڑے سے اترے اور فاموشی کے ساتھ سر ھیکا کروائیں صرت اللیم حثیتی کی فانقاہ کی طرت على يدے صرت سننے كى زيارت ہوئى تربے فود ہوكر قدموں مي كرم سے تين دان یک مدہوش رہے جمیرے دن ہوش آیا تو آپ نے بڑی شفقت اور محبت سے اینا یا دبعیت سے مشرف فرمایا فرقه خلافت دیا اوروطن کوروا نه مونے کی اجازت دی۔

شخ سیدچبو کی وفات می است میں ہوئی آپ کامزار دہلی میں ہے۔ رفت چو ل سید نجلد عباد دال یافت از ویرا ہذت نی اماں گربهال وصل تاج بوتراب مقتدائی مہدی عرف نی سخواں آب ناہ بکاہی جنی کے مرید تھے اور اپنی فرائی ہے ہونے ہے ہوئے کے مرید تھے دولت آباد میں اپنے پری فدمت میں حاضر ہتے تھے۔ پیری دفات کا دقت قریب ہیں اپنوا ہوں نے اپنی کی فدمت میں حاضر ہتے تھے۔ پیری دفات کا دقت قریب ہیں اپنی اور اپنوں نے شاہ نعمان کو اپنے پیری دفات کے میں جائیں اور اپنا حقد جا کروصول کریں۔ شاہ نعمان اپنے پیری دفات کے بعد دولت آباد سے دوانہ ہوئے اور ہر ماین پورہ پہنچے۔ اور شاہ بکا ہی کی فدمت میں عرض کی کہمیں حاضر ہول۔ آپ نے فرما یا تہا رے آنے سے پہلے تہا ہے بیری زیر درت منا دش ہنچ علی ہے۔ اس کے بعد آپ نے شاہ نعمان کو اپنی بیری زیر درت منا دش ہنچ علی ہے۔ اس کے بعد آپ نے شاہ نعمان کو اپنی خاص تیبیج اور مشاع عنا بیت فرمایا۔ اور اپنی نظر مقام عصر کا قامل بنا کر قلعہ عیصر کی طرت روانہ فرمایا۔

معارج الولایت میں کھا ہے کہ جب شاہ نعالی قلعہ عبصر کی طرف جانے

کے لئے رضت ہونے گئے۔ توشاہ بکا ہی کی فدمت میں عرض کی کہ حضور اُس
قلعے میں شاہ محدد پہلے ہی موج دہیں میرے وہاں جانے میں کیا حکمت ہے
آپ نے تبایا کہ آج دات تمام اولیا داللہ حضور کی بارگاہ میں حاضر تھے۔ ہیں
نے عرض کیا کہ قلع عمصر شاہ نعالی کوعطا کیا جائے۔ بادشاہ محود کے پاس ہی
دہے۔ صفور نے حکم فر ما یا کہ سم نے بہ قلعہ شاہ نعالی کو دے دیا ہے اور شاہ
محود کوحکم دیا ہے کہ وہ اپنامصلی وہاں سے اعطائے۔ اُس دل کے بعد شاہ
نعالی قلعہ عیصر میں ہنچ گئے اور قیام بذیر ہوئے۔ اپنی دوری کے با وج دعلی
درس کے وقت صفر ت شاہ نعالی اُڈ کوشا نہی بکا ہی کی عبل میں ہر دوز برال لیا
بہنچا کر تے تھے درس سننے کے بعد اجا اُرت نے کروا پس چلے آتے ۔ اگر کوئی چیز
بہنچا کر تے تھے درس سننے کے بعد اجا اُرت نے کروا پس چلے آتے ۔ اگر کوئی چیز
تخف کے طور یہ موج دہوتی تواپنے گھر مبعظے ہی ہاتھ بڑھا تے اور صفرت شاہ بکا ہی

کی فدمت میں پیش کردیتے۔ شاہ نغمان سلائے میں فدت ہوئے۔ برفت از جہال در بہشت معلیٰ چواک شاؤروئے زمین شاہ نغمان بگو عاشق مقبت دارا رتحالش بگو عاشق مقبت دارا رتحالش بگو میشوائے یقین سٹ ہ نغمان

01.14

ی آپ صرت بیر قبار کی اولادسے يشخ عاجى ادبي وتوزى قدس سرة بسته ينانون بي دودى تبيله ببت باعظمت اورببت باوتارسے آپ اُسی قبیلے تعلق رکھتے تھے۔ آپ كوبير قباكى رومانيت سے بڑافيض ملا تھا جن دنوں آپ جج كرنے آئے توحفرت اولس كرني في كان يادت كرف كان ينج اور ديا ل سے وطن والس آئے۔ معارج الولايت ميں مکھا ہے۔ بننج حاجی کے گھر بوط کا پيدا ہوا تو اُس کا فام داؤد رکھاآپ کی بیری نے مبادک دی فرانے تھے یہ ایسالہ کا نہیں ہے کہ اکس کی پیدائش پرمبارک دی جائے تو دا قع جب وہ رو کا جوان ہوا تو یا گل ہوگیا شخ كوالتدف ايك بيني دى رجب وه جدان عوى تواكب نة ايك لوست نامي نوجان كوكهاكم من ايني مبني كى شادى تم سے كرناچا سابوں ا اگرتم تبول كرور تو مجے تباؤنوجوال نے کہا کہ میں اپنی والدہ سے متورہ کر ناچا ہتا ہوں۔ آپ نے فرمایاتم میرے قلوص کو تھکواد ہے ہو۔ تم نے میری لائی قبول نہیں کی جاد تہارے ال کھی اولاد بہیں ہوگی۔ خانچہ ایسے سی ہواکہ شخ اوست نے بے شار عورتو سے نکاح کئے لیکن کسی کے ہاں بھی اولاد نہ ہو بی بینے عاجی اولیں قصور

یں پیدا ہوئے وہی ذند کی گزری اور وہاں ہی ال کا مزادہے۔ آپ کی و فات كالعثين بوئى- بم فادير برقبار حتى كاذكيب بم أل ك فود س عالات معادج الولايت اخبارا لاولياء اور شخرا حيثتيه سے مكھنا عاہتے ہيں- آپ كانام نامى شخ ولا تقااورلوگ انهيں پر قبار بن شورا بن شكى كئے تھے فئليرني اور خش کی پیمانوں کے تبیعے ہیں وجیتی فقراسے تعلق رکھتے ہیں بشعور پیمانوں کے تین بعض قدايك كانام برقباد تقارد وسركانام حين فلى تويرك كانام خلف خنکی تقا۔ اِن مینوں میں بیر قبار بڑے بھی تھے اور بزرگ بھی تھے جب ان کے دِل مِن النَّدي طلب كي آگ عِير كي توه وه كي يركابل كي تلاش من تكلے-وه برے برے براول کی فدمت میں ماخر ہوئے مگر دل کرتسلی مذہوئی۔ آخر صبیب تطيالدين فواجرتنى كى فدمت مين عافر بوك حقرت فواجر في كواين پاس مجمایا وراینی فانقاه میں رکھ لیا۔ اور حکم دیا کہ نظر کا کھا تا پکلنے کے لئے یانی لایا کروپر قبا چالیس سال مک نظر کے لئے یانی لاتے رہے جس و تت واج كى وت كاوقت قريب إيا تواك في برقبادكوافي ياس بلايا اور فقر خلانت خصوصي عمّايت فرما يا ادرا جازت دي كه وه اپنے وطن واليں چلے جايئن چي مكرير قبار كوخوا جرسے بطرى محبت مقى -آپ وطن كوواليس سر آئے بھزت خواج كى دفات كے بعد أن كے مزارير وہى فدمت سرانجام ديتے رہے ايك رات واج نے خواب میں ارتاد فر مایا کہ اب تم اپنے وطن کو دالیں چلے جاؤ کئپ وطن والیں آئے يتادرك كومتال كے بھال بڑے ملك دل سے ابنوں نے آپ كى بزر كى كوت من كياا وربزر كى كى سندطلب كى -كيف كك كداگراسى وقت ذو كتو بره يكلى أرشق أرشة آيش ادرنتهارے كربيان مي كس جائي اور يا زوك داستے يا برنكليں جربين تىلى بىدىگى كىرتم دىلى الله بهو- چانچە قائبسے دو كتويدائے ادر كريان بى كىس

گئے اور بازد کے راستے باہر لکل آئے . یہ کوامت دیکھ کر بیٹا ور کے قریب کے لوگ آپ کے مرید ہو گئے خصوصاً خشکی قبیلہ آپ کا عقیدت مند بن گیا ۔ پیر قبار نے ان کبور وں کے میں میں دُعاکی اور مریدوں کو حکم دیا کہ آج کے بعد کوئی شخص نہ کتوبہ کا شکار کرسے اور مذ فریج کرے ۔

آپ نے اعلان کیا کہ ج شخص کبوتر دس کو تکلیف دے گایا وہ مرصائے گا۔ یا ہے اولاد رہے گا۔ یا تنگ دست ہوجائے گا۔ آج یک خشکی بیٹھا نول میں بیدسوم علی آئرہی ہے کہ کوئی کبوتر کا شکار نہیں کرتا ۔ مقین نومرید ین میں مکھا ہے۔

چول زوتو خرارق عا دات خوان سته قوم بر کمشو فات دو کبو تر موا نق گفت د زاستین دو شخ سشد طیار قدم راگفت سشنج بعد ازان چونکه سند برولاتشین بر بان جنس این طرز اخر ندهیب گرمریدان حن م وال بیند این کی خوا رق از یز دان بود خارقش وا کجب سشمار بود

STONE OF

اگرچ بیر قبار کی تو جسے بے پناہ مخلوق کو ہدایت ملی گرآپ کے ریکا بل فیخ بطق تھے۔ آپ بڑے صاحب کوامت ولایت اور ہدایت کے مالک تھے بعض دگوں کا خیال ہے کہ وہ خشگ کے بیٹے آپ کے مریدا ور پدر ڈا دہ تھے بعض بھتے ہیں کہ فیخ بطق فواج حیثی کے بیٹے آپ کے مریدا ور پدر ڈا دہ تھے بعض بھتے ہیں کہ فیخ بطق فواج حیثی کے بدتے ہے۔ اُلی کے والد کا نام عمر خفا۔ اور حضرت بیر قبار نے

اُن کے حق میں دُھاکی تھی کہ قیامت مک اُن کی اولاد میں مصرف یا تی رہے گی پیر قبار سردھ میں فوت ہوئے تھے۔

آپ كوابوالس خرقانى ثانى كمق تق انوندسىدىشور يانى قدس سرۇ تانى : - كىونكە آپكوالدالحس خرقانى س خرقه الانفاءاسي طرح آپ كوبير قباركى روعانيت سے تربيت عاصل مونى عق جب آپ درج کمال کرہنے تو بھی ہروم شد کی خدمت میں حاصر مذہوئے۔ شرایت ك احكام كے نفاذ ميں بڑے ہى سخت تے .آپ كى نظر مي با دشا ہ فقرا كي جيے ہی تھے ملک بعض اوتات فقرول سے زیادہ محبت اور شفقت کرتے تھے۔امیرول سے دور رہتے اور اُن کو اپنامر مدیمی نہ بناتے تھے۔ قوالی سنتے سماع کی محبس میں بن بلائے بھی چلے جاتے اور وہاں پہنچ کروجدا ور رقص کرتے۔ اخبارا لاوليا، ا ورمعارج الولائت میں آپ کی بڑی بڑی کرامتیں تھی گئی ہیں۔ چانچہ کھاٹالچاتے ہنڈی میں زیادہ نمک ڈال دیتے لیکن جب میں جاتا ۔ بھر جو بھی کھاتا اس **کو بورا** مكتارايك دفعدايك آدى كجرات حلاكيا مرت كتدف كع بعداس كى كونى خريدانى اس کے رہشتہ داروں کو بڑی فکر ہوئ ایک دن ایک شخص حضرت اخوند کی فدمت میں ہیا۔ اور ام کر گم شدہ آدمی کے رستہ داروں کارنج کیا۔ آپ نے تھوٹی سی فاموشی کے لید فرمایا کہ فلال شخص فلال مہینے فرت ہو گیا ہے۔ محقو السے سی عرصے کے بدگرات سے اُس کے فوت ہونے کی خبر پہنچی تو مہی تاریخ تھی جو صرت اخو ندنے تبائی بھتی ایک بارایک مندورا جوت ماصر ہوا کہنے لگا کہ اکبر باداناه مح سے اراض ہوگیاہے۔ آپ دعاکریں کہ درہ راضی ہوجلتے آپ جوہدیہ کہیں گے میں میش کروں گا۔

آپ نے فرمایاتم بادشاہ کے پاس چلے جاد کوئی کرینکرو۔ میں نے بادشاہ

کی زبان بندکردی ہے جبتم پنچو گے توباد شاہ انعام دیں گے جبتم انعام کے کروالیس آؤا ورایک موٹا سا د نبر میرے لئے لانا۔ راجوت دریاریں بنجیا باد شاہ سے طلعت پائی تو د نبول کا ایک ربوٹ کے کرھزت کی خدمت میں حاضر ہوا ۔ آپ نے فرما یا مجھے تولیس ایک ہی د نبردو۔

حصرت اخ تدسيدكي وفات ماناه مين بوئي - اوداب كامزار تصور

200

وصل شد بادصل حق بع ن انه جهال پیرحق گو سینیخ حق آمین سید نفل حق دان سینیخ حق گور علتش نیز کن تخسر ریه خیر دین سعید نیز کن تخسر ریه خیر دین سعید

رشخ نظا الدین بن شخ عمان زنده بیربانی بتی قدس می آب شا نخچشت بزدگ تقد د بدو تقوی در ح و فقرین بهد و بیربانی بتی قدس می از مین برسه مودن مقد این سف اپنی والد مقان زنده پیرست بی بعیت کی تقی سید و بیالی تقد برا سے بیا اور دوحانی کوشق میشن کمال تقا و برا سے می اور دوحانی کوشق سی بیان کمال تقا و برا سے بی مال و جال تقد آب نے اپنی علمی اور دوحانی کوشق سے بڑا نام پایا تقا و اکا برین و قت نے شاہ کمال کو اپنے والد کا جانشن قراد دے کوسیادہ نشین بنا دیا گیا ۔ مگر شاہ کمال نے انکار کو دیا ور ذکر کو بی ا پنایا ۔ کر سیادہ نشین بنا دیا گیا ۔ مگر شاہ کمال نے انکار کو دیا اور ذکر و فکر کو بی ا پنایا ۔ کر منادہ نشین بنا دیا گیا ۔ اوراپنے والد کے سا کہ و جاری رکھ کر فدمت خان میں معروف ہو گئے ۔ آپ کی دفات میں اور کی تھی ۔ اوراپنے والد کے سا کہ کو جاری رکھ کر فدمت خان میں معروف ہو گئے ۔ آپ کی دفات میں اور کی تھی ۔

چوں نظام الدین نظام دوجہاں ادجہاں آخر بحبت سند مقیم مال ترحلیش پوجستم اذخرد شدعیاں محندوم میوب کویم

اسے پرکیاری اولادیں سے رحمت السر شوریا تی قدس سرہ اسے اور اہنی کے سدین وائی فدس سرہ اسے اور اہنی کے سدین وائی فنی باین معادج الولائیت بیں کھا ہے کہ السر تعالیٰ نے آپ کویر ندول جرزدل اور در ندول کی یا بین معاوم کو نے کی صلاحیت عطاکی تھی ۔ آپ جده عالی اللہ کی ہرتسم کی خلوق سے باتیں کر لیتے اور ال کی س لیتے تھے۔ ایک دن ایک بہت بڑے سانپ سے باتیں کو رہے تھے۔ جب لوگ قریب آئے توسانپ ابنی بل میں گھس گیا اور آپ اپنے داستہ پر چل دیئے۔

آپ کی و فات محلیات میں ہوئی زار پر انوار تصور شہر میں ہے۔ آپ نے وصیب فرمائی تھی کہ میرا جازہ پڑھا نے کے لئے ابک شخص غیب سے آئے گا اسی کی اما مت کوا نا۔ اور مجھے میرے آبائی قبرستان میں دفن کرنا۔ الیا ہی ہوا کہ بیب نماز جنازہ کے لئے صفیل درست کیں تو غائب سے ایک بزدگ آئے جنہوں نے نماز جنازہ بڑھائی۔

چ ککه دهمت ابد رهت بجبرام از جهال در دهمت می شدنها ل سال وصلش پیردهمت اقدس بهت مقدد ائے عشق سم کا مدعیس ال

01.10

مك بنتياب آپ كے بزرگ جون بود ميں دستے تھے برونتہر گرات ميں بيدا سوئے چھوٹے ہی محے کہ والد کا انتقال ہوگیا . نوجوانی میں حضرت شخ گجراتی کی فدمت میں صاصر ہوئے اور خرقد اجازت پایا۔ گر مکدمعظم علے گئے دہاں بارہ سال شائخ متقین کی فدمت میں رہے والی ہندوبتالی آئے اورا حد آباد میں قیام کیا۔ و بال ہی آپ کی شادی ہوئی ۔ شخ الدین گجاتی کی محلس میں میچے کرظا ہری علم عاصل کئے۔ بھر حضرت شخ خال جون پوری کی فدمت میں گجرات جلے گئے۔ شخ فال نے اُن کے والد ما جد کی ندبان سے ساتھا۔ کہ ہمارا بٹا قطب الوقت ہو گا آپ نے شیخ محد کی بڑی ہی عزت کی۔ شیخ الجمع صفریتی آپ کے والد کے مرید تق ا ورقعه علير من ربت تق عقر - إب ني شخ وحيدالدين اور شخ ماه كولكهاكم ای کامنہا زاھی برواز نہیں کر دیا۔ انہوں نے جواب میں مکھا کہ اس کی برواز آپ کے محتمیں ہے۔ چانچہ شخ محرکو عیسر بھیج دیاگیا۔ و ماں جاکہ دهدوحانی نعمتیں عاصل کیں جو آپ کے والد بزرگوارنے بٹنج حضر بیتی کے سپرد کی تقین و ہاں سے والیں ہکر برہان لور میں تیام کیا نظا ہری اور باطنی علم کا سلماری كيارا ورحينتيول كمشهور بزرگول بي شار بون لكي شخ محركو صنور نبي كريم سے إتنى أورت محبت اورافلاص تقاكه برسال بافتيار موكرمدينه مشرلف كيطرت روانہ ہوجاتے اور کئی مزلی طے کرتے کے بعد صنور کے حکم سے والی آتے. آپ کی صبح شام سنت نبوی اور شرابیت محدی کے مطابق گرد تی عقی - جننے نذرانے آتے اُس كے تين صے كر بيتے ايك صربوى بجيل كوديتے ايك صر درولینوں اور سکینوں می تقسیم کردیتے اور ایک حصر سالا سال جمع کر کے مرینہ پاک

بھیج دیتے

سفینة الاولیا، کے صنف نے آپ کی وفات برد زموموار ارماہ رمضان موال کا دیا ہے مصنف نے آپ کی وفات برد زموموار ارماہ رمضان موال کے اور کے دفات ابن فضل الله آپ کی مورد کی مورد کی مورد کی مورد کی سے۔

آپ پر قباری اولادسے تھے۔ مولانا شیخ احد شور مانی قدس سرؤ: - آپ کے دالدخار علام معدلات خواج فيشوكى تق جبنول في معارج الولائية اوراخاراوليا وملهى سے آپ بہت بڑے اور مطریجاب کے شخ کا ال تفے نظاہری اور باطنی علوم حضرت اسماق بن شاہ کا کو لاہوری سے ماصل کیا۔ شیخ صاحب حضرت فریدالدین گنخ شکر كى اولاد سے تھے۔ لا ہور میں آپ كى علمى فضيلت اور رو حانى درجول كا حينظ المرا د ما تقاربہت سے لوگ آپ کی شاگردی سے دالبتہ تھے بنن احرتصورے اُکھ كر سين اسحاق كى فدمت ميل الهور آئے اور على اور ادبى سرمايه حاصل كيا-غوليكي اورشوره بيها نول ميس اتنا براظامري علوم كاعالم اورباطتي رموزكا واقف کوئی نہ تھا۔ زہرا ورعبا دت میں بے مثال تھے۔ قرآئی دعا میں و ظیمفے کے طور ب يرصف عقر جيل اسم دعا في سيقى اورحزب الجر بورك أواب اورشرالط س یر صفے تھے۔ فراکف کے علاوہ ہردوزنفل اشتران سنی اور تہجد باقاعد کی سے ا واکرتے و شکل مسائل علماء سے مل مدہوتے تھے۔ آپ کے یاس عل ہوتے تھے آپ شخ احدفادوتی سربندی مجدد الف ثانی کے ہم عصر تھے۔ اسی طرح سیرخ عیدالی دہوی اور شخ عیلی سدھی مرمان اوری آپ کے احباب میں سے تقے يرتمينون زدگ آپ كى برى عزت كرتے تقے شيخ عبداللطيف برال بورى فرما يا كرت عظ كريس في ايني عربس دو شخصول كوظا مري احديا طني علوم مي ما مرديكما

ہے ایک شخ عیدا لوہا ہے متنی اوردوس سے شخ احد تو اہانی میں نے اگ سے لاقات
کی ہے۔ اگن جیبا علوم جاننے والا کوئی نظر نہیں آیا۔ اگر آپ کے پاس کوئی طالبعلم
بنجا ب سے جا تا آپ اسے والی بھیج دیتے اور فرماتے جب متہارے پاس قصور
سے شخ احد شیو لائی نٹر لعیت اورطر لقیت کا دربار بہا دیا ہے تو تم بیا ہے اس چشے
پرکیوں آئے ہوتم اُن کے پاس چلے جا وُ تہیں خدا تک بہنچا دیں گے۔ شخ احد
کتا ہیں مکھنے سے اجتماب کرتے تے اور کہا کرتے تھے کہ پہلے بزدگوں نے اتنا پکھ
کتا ہیں مکھنے سے اجتماب کرتے تے اور کہا کرتے تھے کہ پہلے بزدگوں نے اتنا پکھ
محما ہے کہ اب ہمیں وقت منا کو نہیں کرنا چاہئے۔ ہاں ان کی ایک تا بوالا

کشیخ احد مرسال برجری بی فوت ہوئے۔

مشیخ احد مربز م محد درجن ان محد درجن المحسدی
احد آن مائی دین احسدی
احسسد واعظ برگو تاریخ او
نیز یا دی احسسد فاضل ولی

من و سلم من چی ما بری لا بوی قدس سره این شخ محرصدین چینی لا بوی قدس سره این شخ محرصدین چینی لا بوی قدس سره این خلیفهٔ کامل تق آپ کا عشق و محبت ، جذب دسکر بهاع و وجدا و دفقر میں مبند مقام کے مالک تق آپ کا صوفیا میں بھی بڑا مبند مقام تھا۔ سماع کے دوران آپ کو مد کیفیت ہوئی کہ بعض و قات میں گئی میں مودو تین بنن دن مست اور بے بوش رہتے میں گمان بہو تاکہ آپ فوت ہوگئے میں مودو تین بنن دن مست اور بے بوش رہتے اسے کا درسان دہجری میں اس دیتا ہے کوجہ کرگئے۔ آپ کا مزاد الینے بیرو مرشد کے

مزاد کے بیہو میں میدان زین فال میں ہے.
پوا ز دنیا بفردوسس بربن رفت
سلیم آن شیخ عالم شاہ حق بین

بگوس ال د صال آنشه دین دگر نیض سلیم آید و صالت

DI.W.

ابتدائے كارى صرت ابوالاعلى نقتبندى ميركيد كوكاليي قدس سرة الترسرة كى فدمت بس ما فرجوكومريد ہوئے اورسلسلہ نقشیندیہ کی تربیت حاصل کرتے دہے ۔ ایک بار صرت خواج اجمیری کے درباد میں حاضر ہوئے ۔ دوضہ کی زیارت کی . صرت نواجہ نواب میں معے اورارشاد فرمایا - کہ ہمارے مل میں آکہ ہمارے طریقہ حیثیتہ برہی حیث جانے معاع كى مجالس ميں عاضر ديني جائية - جيانچه آپ دو حاني طور پير صرت نواجيعيل اين ا جمیری کے مربد ہوگئے .اور ماطنی طور راس حیرُ فیض سے سیراب ہونے لگے فیضا چنتیر کے علاوہ آپ کود وسرے سلاسل تصوت سے بھی نیض مل تھا ،آپ سماع می برا غلوفر ملتے اور سرسال حضرت خواجراجمبری کے مزاد میا نوار کی فریارت کو جاتے ایک دن آپ کے روضہ افور کے سلمنے بیٹے سے کہ آپ پر بے ہوشی اور بے فودی طادی ہونے ملی کہ حفرت خواج روضے سے با ہر تشرلیت لائے اور آپ کے منہ مِن بال ركها توآب موش مي آگئے اگرچريد ملاقات روحاني اور ما فني عقي-مگرحب آپ کو ہوش آیا تووہ پان آپ کے مندمی موجود تھا۔ پیر صرت خاج اجميرى سے اتنی قربت ہوگئی كہ جب دل جا ہتا زيارت ہو جا يا كرتی تھی اور فيال ماصل کر لیاکرتے تے مہینہ تدرایس میں شغول رہتے۔ اوگ آپ سے ہرسلسلہ سے

فائدہ عاصل کرتے تھے۔ افنیا امدام اسے دُور دہتے اگر کوئی رئیں آجا تا تواس کی تنظیم نہ کرتے ہال عزیا اور مساکین کو نوارتے کئی یار باد بناہ آئے گر آپ تغطیمًا نہیں اعظے۔ آپ نے تفییر سورۃ فانحہ لکھی اور اس کا نام روا نجے رکھا تھا۔ آپ ساسوں جی نوت ہوئے۔

چ در فلد منور گشت او کش جناب ماه گفت سید محسد زشمس المتقین جوار تحی کش دگرست مندا کسید محد دگرست فدا کسید محد

ایک شخص الله دیا جو آپ کا مرید تھانے آپ کے مفوظات اور واقعات
پراکی کتاب تھی جس کا نام جوابراعلیٰ تھا۔ اُس میں آپ کے تنام حالات
اور مقامات مکھے گئے ہیں۔ ان کا اپنانام عبدالسلام تھا مگر شنخ نظام نار نولی
نے آپ کوشاؤا علیٰ۔

سیرالاقطاب کے مصنف فرماتے ہیں کہ شاہ اعلیٰ ابتدائی عرمیں بابرے ایک امیرخرا خان کی نوکری کرتے تھے۔ کچھ عرصے کے بعدان کا کاروباراس قدر کھال

کوبنجاکہ بابر کی سادی فوج میں ان جیباکوئی تیر انداز نہ تھا۔ آپ نشکر سے انکا کہ طالب اہلی دہلی سے پانی بت بنجے۔ اور والدِ محرام کواپنے ولی کیفیت سے آگاہ کیا۔ والد مکوام کے حکم بہ آپ بینی شخص الدین تدک پانی بتی کے روف کے کہا تھے کہ ایک واقتیں اور مجا کہ کہ کہ نے بیجے گئے آپ بہاں بڑی ریا فتیں اور مجا ہو کہ کہ ایک دلی جرب کا دروا ذہ بند تھا کتیے نظام الدین نادنولی جربے کے اندالتہ لیف لائے اور فرایا کہ مہارا باطنی صدیم سے ان اولی چربے کے اندالتہ لیف لائے اور فرایا کہ مہارا باطنی صدیم سے بیاس ہے تم میرے پاس نادنول میں آؤ ۔ آپ بے فردی کے عالم میں گرتے پڑے نادنول بہنچ اور شیخ نظام نادنول کی فدمت بی صافر ہوئے آپ کے کام کی تکمیل ہوئی خرقہ فلافت ملا اور شاہ اعلی کے فطاب صدیمتانہ ہوئے۔

شخ الدویا جا آپ کے مفوظات کا موقت ہے اور آپ کا مرید فاص بھی ہے کہ کھتا ہے کہ کی بار میں نے صفرت شخ مترف الدین بوعلی قلندر کی بارگاہ میں ندرمانی میراگام میری مرضی کے مطابق ہوا۔ تو میں ایک و ن ندرا دا کرنے کے لئے شاہ اعلیٰ کو لے کر حضرت بوعلی قلندر کے مزاد کی طرف روانہ ہوا۔ را سنے میں سخت بارکش نے ایس کی میں سخت بارکش نے ایس کی میں سے دیکھا کے اور فا میں گور ہا دیش تم پر نہیں بہسے گی۔ میں نے دیکھا ہم سے وس دس قدم و دون صلے پر بارش ہور ہی ہے لیکن ہم برایک قطرہ می بیس گرد بار اس طرح ہم محفوظ حضرت قلندر کے دو صفر بر پہنچ گئے۔ ہم نے ہال دیگیں رکیا دئی۔ اس طرح ہم محفوظ حضرت قلندر کے دو صفر بر پہنچ گئے۔ ہم نے ہال دیگیں رکیا دئی۔ انہیں تقبیم کیا۔ لیکن اتنی ذور دار بارش کے باوج دسم برایک قطرہ میں میں نانی مقا۔

سرالاقطاب میں کھاکہ شاہ اعلیٰ کے مرمدوں میں سے ایک مرمد نے سونے کی کچھ اسر فیاں عرامے کے تقیلے میں ڈال کراپنے جرمے میں دفن کر دیں جند میں وال

کے بدیجب اُسے صرورت بیش آئی تواسر فیاں تلاش کیں۔ قدیمی کھو دی گئی۔ لیکن اخر فیوں کا نام وشان نہ ملا مقل ہارکر شاہ اعلیٰ کی فدیمت بیں ماضر ہواا ورمورتحال پیش کی بھرت شاہ اعلیٰ بنات خوداس کے گھرتشر لیف ہے۔ گئے ابھی اُس کے گھر نہ پہنچے تھے داستے میں ایک کئی ذبین پرماری اور فرما یا یہاں اپنا مال تلاش کرو۔ اس تحق نے وہاں سے ذبین کھودی اسے اپنے چڑے کے تھید میں انٹر فیاں بڑی مل گئی وہ میران دہ گیاا ورعوش کی کہ میں نے اپنی انٹر فیاں مجرے میں دفن کیں تھیں لیکن اب میران دہ گیا اورعوش کی کہ میں نے اپنی انٹر فیاں مجرے میں دفن کیں تھیں لیکن اب میران دہ گیا اورعوش کی کہ میں نے اپنی انٹر فیاں جرے میں دفن کیں تھیں لیکن اب میران دائے ہے۔ آپ نے فرما یا بیا سرار الہٰی میران کا انگشاف نہیں کیا جا سکا۔

صرت شاہ اعلی کے دولوئے تھے ایک کا نام شاہ منصورا وردوسرے کا نام شاہ نورتھا۔ دو نول آپ کی ذندگی ہی ہیں فوت ہوگئے البتہ شاہ منصور کا ایک لوگ کا شاہ محد زندہ تھا جواپنے دادا بزرگوار کی مندِ ارشاد پر ببٹیا۔ صرت شاہ اعلیٰ کی فائقاہ میں ایک کنوال ہے جوا آپ نے دکھو دا تھا۔ جب وہ محمل ہو گیا تواس کا یا تی کھا را نکلا۔ مریدول نے آپ کی فدرت میں اس پانی کے متعلق شکا بیت کی۔ اتفاقاً وہاں ایک متحق چندرو ٹیال صرح ت خواج تطب الدین بختیار کا کی کے مزارسے لے کر حاصر ہوا صرت الله ما مالی اورفرایا شاہ اعلیٰ نے ان دوٹیوں کواپنے ما تھسے تو ٹراا ورکنو ٹی میں ٹال دیا۔ دعا کی اورفرایا کراپ پانی نکالوا در بہو یہ بپانی نکالا گیا تو وہ میٹھا بھی تھا اور مصند المحق ۔ "

شاہ اعلیٰ ولادت ، ۹ م ہجری میں ہوئی اور وفات ۳ س ا ہجری میں ہوئی اور وفات ۳ س ا ہجری میں ہوئی اور وفات ۳ س ا ہجری میں ہوئی اپ کی عمر ۱۳۲۶ سال تھی بمیرالا قطاب کے مصنعت نے آپ کی قادیخ ولادت لفظ فیان سے ہدا مد کی ہے ۔ آپ کے فوت ہوئے کے چند سال بعد ایک ضعیعت عورت جس کا شاہی فاندان سے تعلق تھا۔ آپ کا مزار بنانے لگی عمارت شروع ہوئی گر عمارت بنانے والے معمار نے فواب میں وکھا مزار بنانے لگی عمارت شروع ہوئی گر عمارت بنانے والے معمار نے فواب میں وکھا

كرصرت شاه اعلى سے اپنى قبرك سر باتے كوسے بيں اور فرما رہے بيں كم عمارت كاج چوتراتم بنارب ہواس سے ہمارے صندوق كاتخنة لوٹ كيا ہے اورايك انیٹ صندوق میں گر گئے ہے۔ مناسب ہے کہ تم چوڑے کو گرا دو۔ انیٹ کو صندوق سے باہرنکالوا درصندوق کے تختے کودرست کرکے دوبارہ چوترا بناؤ صبح بوئی تووہ معاراس شاہی خاندان کی مورت کے پاس گیا اور رات کے خواب کا تقد بیان کیاائس نے کہا کھس طرح شاہ اللانے مکم دیا ہے اُس بیمل کیا علئے منمرك بڑے بڑے اوك جمع ہو نے جوزے كى عارت كو با ديا كيا -صندوق إ مرنكالا كيارس لوگول في ديجها واقعي صندوق كاتخته لوشا جواب اورائس کے اندرائیٹ پڑی ہدئی ہے یہ اپنیٹ صرت کے زانوں کے نیچے تھتی۔ دایاں يادُ ل درا زيمة اليكن بايال بإدُ ل اينك كي وَج سے كم البوكيا تما الوكول نے دىكيماكه آپ كاسارا سيم صحيح وسالم موجود ب أنتهيس أسى طرح روش بين لول موس ہوتا تھا كرحفرت آمام فرماد ہے ہيں جنانچہ شہركے دہنے والے چو لے بھے ہے دیدار بڑا اوار سے نیض یاب ہو نے صندوق کے تختے کودارت کیا گیا اور ازمرفوعارت کی بنیادکو تبارکر کے اعظایا گیا مناب شاه اعلى پيركلام نظام دین و دنسی شخ والا بحو بالغ تخوان غالب بتريل

على الرياق و ديك يان والا بگو با لغ سخوان غالب بترجيل دگر سرورمعليٰ شاه اسلیٰ دگر سرورمعلیٰ شاه اسلیٰ

عفرت بایز برتبک زی قدس سرا ید مقصرت شیخ تبک سے

رمیت دوهانی ملی مقی معادج الولایت کے مولف مکھتے ہیں۔ کہ ایک دن صفرت
بایز بدیحلیں سماع میں موجود تھے طبیعت بہناوت کا غلبہ آیا۔ فرمانے گے ہے کوئی
جے میں خدار ریدہ نبادول مجلس میں شورہ جلیلے کے تین بیٹھان بلیٹے تھے۔ ایک
سیر خان امجودی دوسرا پایندہ امجودی تبیہ اسنے صدرالدین و تو ذی تھا بینول
اسٹے دصرت شنخ سے معالقہ کیا اسی وقت تبینوں ضلار ریدہ بن گئے۔ اس کے
بعد صرت شنخ حب بھی مجلس سماع میں بھٹے تو وجد کی حالت میں ہم کلمذ ذبان
پولاتے۔ اوراس طرح سیکووں لوگ خدار ریدہ ہوگئے۔ ایک دن محلس میں البا
برگانہ آدی موجود تھا جوان مقامات کو مذجا تنا تھا اُٹھا اور سیخ سے معالقہ کونا

حصرتِ شاہ با بن ید کی اہمیر فرماتی ہیں کہ میں صبح کی نما تہ کے بعد شیخ کو باہر مصلی پر بنیٹے دیکھا کھی تؤوہ ایک ضعیف بوڑھ سے کی طرح نظر آتے اور کھی نوجوال خولھورت دکھائی دیتے۔ کھی ہیں دیکھیتی کہ وہ ایک چھوٹے بیچے کی شکل میں بنیٹے ہیں اور کھی یوں محسوس ہوتا کہ بہت بڑا شیر بنیٹا ہے۔ جیب میں نے بہلی مرتب انہیں سیٹر کی شکل میں دیکھا تو میں ڈرگئی۔ فوٹ وحراس کی وج سے کا نہنے لگی۔ انہیں سیٹر کی شکل میں آگئے اور کہنے گئے ڈرو نہیں۔ النڈ کے سیرول کے گھر

جگل کے شیر نہیں آسکتے۔ ایک بادش خوسفرکرتے کرتے آگرہ متہریں پہنچ ، انہوں نے دیکھا کہی تخف کی کھو بڑی داستے میں بڑی ہوئی ہے آپ نے چاہا کہ اُس سے بات کریں ، آپ نے اُسے غورسے دیکھا توائس نے اپنے سارے حالات بتادیئے ۔حضرت بڑخ نے اُسے عورسے دیکھا توائس نے اپنے سارے حالات بتادیئے ۔حضرت بڑخ نے اُس کے لئے فاتحہ بڑھی اور دعائے مغفرت کرکے آگے چلے۔

سينخ فال ام جدزى جراب كافيض يافته تقادرات بي مارم عقاكمايك مت باتقى دوراً تا ہوا آرم تھا. م تقى والے نے دورت كماكم با با ہد جاؤ۔ اعتى مت ب كيف لك مت كومت س كمياكام بعب اعتى آب ك نذويك بنیاتوسر هیکا دیا ، آپ نے اس کے سرکو اٹھاکرا ویچاکیا ورفر مایا اگریں اِس کے سركوسهادا مذويتا تويدقيامت مك اسى طرح بيراد متا- ايك دن مشرفان مجدين بیطے تھے کمایک بور هی عورت آئی اور آکر کہنے لگی میراایک عزیز سخت بھار ہے ادر سرنے کے قریب ہے۔ آپ اُس کی شفا کے لئے دعا فرما میں آپ نے چند مع سرهما يا وري وره على عورت كوكيف لكاس كى عرقة خم بوكنى بي نے بڑی تلاش کی لیکن اُس کی حیاتی مذیا سکا-اب اِس کے بغیرهایدہ جبیں کرمن ابنی عرائع دے دول سیکه کرآپ نے اپنی جا درزین بر بھیانی اس رہلیں گئے۔ اورد کھتے ہی دیکھتے جان التنکے والے کردی - اُسی دن سے اُس لور هم عورت كاعز ينيبياشفاياب بوكيا-

شخ صددالدین المتہور شخ صدو بھی آپ کے دور رے فلیفہ تقے وہ بھی مردِ کا مل تھے لیکن دیوانوں کی طرح بازادوں میں گھوشتے بھرتے تھے ، ستہر کے بچے ان کے پھیے سنور میاتے اور کہتے با بارد ٹی دے ۔ وہ اپنی کوامت سے بنل سے رد شیاں نکالے جاتے اور بچیل کو دیتے جاتے ایک دن اپنے دوستوں کے ساتھ کہیں جا دہے تھے کہ داستے میں سخت بارش سنروع ہوگئی کہیں بناہ کی جگہ نہ تھی فرمانے گئے نکر نہ کہ و بارش تم پر نہیں برسے گی۔ الیا ہی ہوا چاروں طرف بارش برستے گی۔ الیا ہی ہوا چاروں طرف بارش برستی دہی کے الیا ہی ہوا چاروں طرف بارش برستی کے ۔ الیا ہی ہوا چاروں طرف بارش برستی دہی کے ۔ الیا ہی میں ان بیر ایک قطرہ بھی نہ گرا۔

عرمي اپنے بھائيوں سے ليٹھ بُرد كوتھود كو هجور ااور موضع خور ميں چلے گئے

باقی عمرو ہيں رہے جہال آپ كو بڑى مقبوليت ملی و مضرت شخ با يزيد مصل ہجرى ہيں فوت ہوئے تھے

رفت از دنیب چر در فلد ہري عالم اسراد عب مل بايزيد

اہل حق فيب عن گو تاديخ او

نيز فر ماسشيخ كا مل با يزيد

ئواجەنظام الدین بن شخ عبدالور المخی تفانیسری قدس سرہ ایسیدوتار بڑے ولی التُد تھے خلاہری اور باطنی تقرف کے مالک تھے مذہبیًا حنقی تھے اورحیثی صابری تقے آپ کی نسب حضرت عمر فاروق رضی الله عندستے ملتا ہے آپ یشخ ملال الدین تھانیسری کے بھتیج تھے اور داماد بھی تھے۔فلیفہ بھی تھے اور مانشين عبى عقد اوراك كے مى سجاده نشين عقد اگر چراك نے ظاہرى علوم ين أنتاد سے ايكسين نديد صاحفا ليكن الله تعالى في البين علم لدلى سے آپ کونوازہ تقااور آپ بیظا ہری اور باطنی علوم کے کما لات منکشف ہو گئے تے. بادون کرائی تے مرباے بند حقائق اور نقط بیان کیا کرتے تھے۔ آپ کی گفتگو موتی کی اولی ای تقیس اُحی ہونے کے با دجد آپ کی تصانیف ترح لمحات مى ومدنى يدى مشهور موئى - ايك رساله حقيقت تطيفه باطن وجدد لكها دیاض القدس کے نام سے قرآل کے ہ خری دوسیاروں کی تفیر المعی -ام غزالی كے رسالے كى مقرح مكھى۔ علما ديلخ كے اعتراضات كا جواب رسال ملخى ميں ديا۔

ساع کے جواز میں ایک ممل کتاب مھی آپ کوسلان عالیہ حینیتہ میں خاص مقام عاصل عقاده بات كرنے يركسى كے مقلد بنيں تقے جوالى ميالند كى طرت سے كشف موتا ده ابنى كتابول مي مكود ياكرتے تقے وه مشركيت اورطرلقيت عوم میں اپنے دفت کے تمام علماء سے بڑھ گئے تھے۔ ان علوم کے علادہ آپ کو علم کیمیا وسیا وربیا وربیمای برای مهارت تقی مفائب کے خزانے اورزمین یں دبے ہونے سونا چاندی کے ذخرے آپ کو نظر آجاتے تھے۔اپنے بیرو مرشد کی وفات کے بعد سجادہ نشین بنے . تواہب کی کوامتیں اور کوا مات دنیا میں بسيل كيس منهزاده مليم نورالدين محدجها لكيرباد شاه آپ كابرا معتقد تقار النول نے ہی اُسے ہندوستان کی بادشا ہی کی بشارت دی تقی حیب اکیر بادشاہ ایک ہزار گادہ ہجری میں مرگیا تو شہزادہ سیم مہاتگیراناہ کے خطاب سے تخت نثین ہوا۔اس کالوکا شہزادہ ضروباب کے خلات اُتھ کھڑا ہوا اور بغاوت کرکے اكبرأ الدس بنجاب كى طرت براها واست مين تها نيسرك مقام برصرت شيخ نظاً الله کی فدمت میں ماضر ہواا در دعا کوائی مصرت شخنے اسے بڑی اچھی نصیحیں دیں ادر فرمایا که باپ کے خلات بغاوت کرنے سے باز آجاؤ۔ مگر آپ کی بیر باتین شہزادہ خرو کے دماغ میں ندائم میں۔ وہ وہاں سے اپنا شکرے کردریائے بیاس كى طرف جلا گيا - اس و تت حضرت شيخ نظام الدين كے مخالفوں نے موقعہ سے فائدہ اٹھا یا اورشنے کے فلاٹ بہتال طرازی کرکے بادشاہ جہا ٹگیر تک بیربات پہنچائی کر شیخ خسروٹاہ کوسلطنت ولانے کے لئے دعا کردہے ہیں اور انہیں سلطنت کی بشارت بھی دے دی ہے یہ بات س کرجہا مگر روا خفا ہوااوراس نے دل میں فیصلہ کر لیا کہ شنخ کو مہدوسال سے بامرنکال دیا جائے تا کہ وہ پھر يهال نداكة يضخ اس وا قدس بيل بي ج بيت الندكا اداده كريك عقروه

بندوستان سے اعظے اور کوبتہ اللہ کی طرف روا نہ ہوتے پہلے کمہ پہنچ ۔ جج اوا کیا اور پھر مدینہ پاک کی حاصری وی اور کئی سال دہیں قیام کیا وہاں ہی آ ب نے بخرح ولعات کھی ۔ جس میں خواب ہیں صفور صلی اللہ علیہ وسلم کے روحانی اشارہ پر رخصت ہو کہ بلخ کو چلے گئے اور وہاں کچے عرصہ تقیم رہے وہاں آپ نے سات سولوگوں کو کمال تک بہنچا یا ۔ ان وقول بلخ کے باوشاہ امام قلی خان از بک بھی آپ کے حلقہ ادادت میں آستے اس طرح بہت بڑی مخلوق علما رومشا رئے آپ کے مرید بن گئے اور آپ کو بٹری شہرت ملی ۔

حس وقت حضرت خواج کے کمالات کی شہرت بلخ میں عام ہو تی اور بادث ہ دقت بھی اُن کامرید ہوگیا یشہر کے علماءان سے حدکرنے لگے۔ بادشاہ کو کہا گیا کہ یشخ نظام الدین سنت رسول کا تارک ہے ۔ وہ نماز جمعہ اداکرنے کے لئے جامع سید میں نہیں اتا اورا پنی خانقاہ میں ہی مازاداکر ایتا ہے۔ حالا مکم حدیث میں آیا ب كدايك شرس دومقامات يدنماز عبور جا أز نبيس - باد شاه قے صرت شخب پوچاتوآپ نے فرمایاکہ آپ کا امام افضی ہے میں اُس کے پھے ماز نہیں پڑھ سكاكيونكه ميرى غازدا نفنى كے پیچے نہيں ہوتى ۔ يربات سن كر بلخ كے لوگول ميں بنكامه بوكيا ابنول في كماكد الرين نظام الدين الم وافقى بونا تابت مذكر سك تواہیں یا د شاہ قتل کرنے کا حکم دے۔ بادشاہ یہ بات س کر صرت شخ کے یاس آیا اورساری کیفیت بیان کی آپ نےساری بات سن کر باوشاہ کونستی دی اور فرمایا کہ آپ فکر مذکریں یہ جاتنے بھی مخالفین میں یہ اپنے اعمال کی سزایا میں گے۔ابھی میربات کوہی دہے تھے کہ تنہر اول کا ایک ہجوم بارہ ہزارا فراد رہ شمل شنخ کی خانقاہ کے دروانسے بہآگیا الم خود ننگی تلوار سف صرت شخ کے سامنے میا ورزبان درازی شروع کردی اور کیا کہ آپ نے مجھ پر جو بی جمت ملائی ہے میں

اَنجُوْتِلَ كُردول توجا رُنہے بصرت شِخ بادشاہ كوكہا كدامام كے جوتے اترواكرانہيں چھاللہ جائے ابھی اِس كارنفن ظاہر ہوجائے گا۔ بادشاہ التظااورامام كے پافلی سے اُس كاج تما اُتروا بااورائس كو بچاڑا گیا اس میں سے ایک كا غذنكلا جس میں جھڑ عمراً ورصرت عثمان كا نام لكھا ہوا تھا۔ شہروالوں نے آپ كی بركوامت دھی توامام كوو بیں تمش كرد يا اور تمام صفرت يشخ كے مريد بن گئے۔

ایک با دھرت بینے بلخ کے پہاڑ کے دامن میں گئے دہاں پانی مہ تھا نماز فہر کا وقت ای آو آپ کو وضو کے لئے پانی نہ طاا پنا عصا کمیٹر کرایک بیتر ہے مارا حس سے فوشگوار پانی کا حیتہ جاری ہو گیا۔ یہ بات بلخ ستہر میں ایک نجو می نے شی وہ کہنے لگا اس میں بینے کا کیا کمال ہے۔ اُس وقت آبی ستارے برُج سرطان میں سے آس کو جہ سے بیترسے پانی نعل آیا۔ اِس کو بینے کی کوامت نہیں سمجھنا چاہئے۔ کئے اُس کی مرمد نے آپ کو آس نجو می کی بات من کی آپ خاموش رہے کچے دقول بور شیخ کی کوامت نہیں سمجھنا چاہئے۔ کسی مرمد نے آپ کو آس نجو می کی بات من کی آپ خاموش رہے کچے دقول بور شیخ کی کو بھی ساتھ لے لیا۔ جبگل میں میر کورنے تشریف لیے گئے اور اُس نجو می کو بھی ساتھ لے لیا۔ جبگل میں بین ہنیں تقا۔ آپ نے بجو می سے پوچھا کہ کمیا اِس وقت تو آتشی سالے میں بیں باہیں ۔ نجو می نے اپنے علم کی وجسے خور کیا کہ اس وقت تو آتشی سالے میں بیں بہیں سے پانی برآ مدمونا ناممکن ہے۔ صفرت شخ نے اپنا عصا دیں بر مارا اور پانی کا ایک میٹھا جیٹھ جاری ہوگیا۔ نجو می چرابی رہ گیا اور آپ کے دیں بی گریا۔

ایک دن ایک گذریا جو بالل جا مل تقاطلب حق کے لئے صرت شخ کی فدت یس آیا شخ نے اُس پر قوج کی اُسے جامع کمال بنا دیا اُس پر وینی اور و بیزی علوم کے اسرار ظاہر ہونے لگے۔

صرت شخ ٨ ما ٥ رجب المرجب بر وزجمعه ١٠١٧ بجرى مين فزت بوئے - آپ

كامزار بلغ بيسے -

ین آگئے۔ محد معد محقانی اولاد تھے آپ کے دو بیٹے خواج محد سعیدا ورعبدالی ہندو تالی میں آگئے۔ محد سعید تھا نیسر میں اورعبدالی کرنال میں رہنے گے۔ اگر چینے کے خلفا، کی تعالی محد سے زیادہ ہے مگریم چند ہزدگوں کے نام مکھتے ہیں۔ خواج الوسعید گنگو ہی ۔ شیخ صین بہو ہری ۔ شیخ ولی محر نار نولی ۔ شیخ پابیندہ سنوری ۔ سیدالہ نخش لا ہوری بیکری ۔ شیخ عیدالکریم لا ہوری والہ ہے کا مزار نوال کوٹ لا ہودیں ہے ، حضرت بین بندگی ۔ شیخ الد داد لا ہوری ۔ شیخ دورت محدلا ہودی سیشیخ مصطفے ۔ شیخ عبدالفقاح اندری ۔ شیخ عبدالرحان سینے دورت محدلا ہودی ۔ شیخ مصطفے ۔ شیخ عبدالفقاح اندری ۔ شیخ عبدالرحان سینے نوبی ۔ سینے اسی اکر آبادی عبدالرح ان الله واری دا ہو کی مرا نہوری ۔ شیخ عبدالرحان سینے نوبی ۔ اورا سماعیل اکر آبادی شیخ عبان الله وری د آپ کا مزار مہال سکھ کے باغ میں ہے) یہ سب بزدگ آپ

نظام الدین ولی بلخی !! چوانه دنیب بجنت راسی وصالت ناظم پاکیزه حبشتم دوباره سند عیان نظم المی

ملاد ماحب المتیاس الافراد و مواطع الافراد بخیخ محداکم مدوسی و مرتبه ۱۱۳ مفصرت فواج نظام الدین بخی قدس سرهٔ کی ذندگی کے کوالف کو بڑی تفصیل سے بیان کیا ہے آپ نے مفتی علام مرود لا مودی دحمۃ المتُدعلید کے بیان کردہ خلفاء کے علادہ شیخ محدمرذا مرہندی کا نام بھی تکھاہے مادد پھر بہ تبایا ہے کہ مہندو شال کا کوئی مثر یا قصیہ الیا مذتھا جہال شیخ نظام الدین بنی و باتی حاشیہ الگیا صفح رہی

مشیخ جان الله چرا مجسستم قفنا زین جہال رفت ہوتے دار جنال ہمت نیض المحن تبار مخیش ہم وگرا ہل نیض جان جنال

ربقیہ حارثید، کاکوئی مزکوئی تربت یا نبہ فلیفت خالی ہوتا رصغرکے باہر قدمان عربتان میں بھی آپ کے کئی خلفاء کام کر دہ ہے تھے۔ آپ کے خلیفہ بننی الند کوئی فلا موری کے کا لات کو خصوصی طور بربر و تلم کیا گیاہے بننی نظا الدین بلنی رحمۃ الله علیہ نے مسئد وحدت الوج دحفرت کینے اکبرا بن عربی کے نکات ہے اعلیٰ اسراد کا اظہار فرما ایسے اور شری لمعات کی اور مدتی میں ایسے اسرا د کا اظہار کیا ہے دویت بادی تعالیٰ برآپ کے خیالات سا لکان تصوف کے لئے باعث اطینان بی آپ کی تصانیف میں سے صاحب خزینہ الاصفیاء کی بیان کردہ کے علاوہ رسی اد حقیبہ تسانیف میں سے صاحب خزینہ الاصفیاء کی بیان کردہ کے علاوہ رسی اور دور مسا ما اولایت در سے ذکر کیا ہے۔

آپ صرت بنے فلا الدی الدی الدی الدی الدی با نظا الدین الدی الدین الله بنے الدی کے مریدا ورفلیفر سے اپنے وور کے برید اورفلیفر سے اپنے دور آپ کے مریدا ورفلیفر سے اپنے تو آپ نے صرت سے بعیل آپ نے صرت سے بعیل کے بعد وست کی اور ایک عرصہ کمک ہمپ کے دیر تربیت رہے بجیل کے بعد وست دئی قبیلہ کی طرف چلے گئے ۔ یوسف زئی قبیلہ کے بدائل کے اور ایک عبد الکم یم آپ کے ملقہ اوا دت میں آئے صرت مولانا وہر ویزہ اور ان کے اور کے عبد الکم یم آپ کے مرید ہوئے اور صاحب کمال ہوئے مخزن اسلام میں آپ کے احوال و مقانا کے مرید ہوئے اور صاحب کمال ہوئے مخزن اسلام میں آپ کے احوال و مقانا منے ہیں ۔ اس کمآب میں کھا ہے کہ آپ اپنے زمان کے غرف اعظم ثانی ہے ۔ آپ کو قوامی کرنے سے اس کے صوتی چننے میں غوامی کرنے سے اس کے صرف مرت مرت مرت مرت دیا تو اس کے صوتی ہوئے ہیں مرج عفوامی کا خطاب و یا تقا ، آپ خوامی کرنے سے اس کے صوتی ہوئے آپ کا مزاد برا نواد بوسف ذیوں کے علاقہ میں مرج عفوامی کا مزاد برا نواد بوسف ذیوں کے علاقہ میں مرج عفوائی ہے ۔

چوند دوغوطه در کجب و صل خدا علی سفه مخواص والی دلی سخی پیرامحب علی سال اوست بخر مادگر ششیخ م و ی علی بخرمادگر ششیخ م و ی علی

آپے دالد کا اسم گرای ہوست تھا۔

مرف نیوں کے دہنے دالے تھے۔ نیج معنوب الحال اور صاحب سکر مزرگ تھے۔

دانیال میں کے فلیفر تھے۔ آپ مغنوب الحال اور صاحب سکر مزرگ تھے۔

جس طرع بیض حضرات نے انا اللہ دانا الحق اور سجانی کہا تھا۔ آپ انا المہدی

کانوہ لگاتے ہے۔ گرجب ہوش رصی ہیں ہوتے۔ تودوسرے بدرگان دین کی طرح دعویٰ مہدیت سے قربہ کرتے تھے اس ذمانے کے جاہل عوام نے آپ کی اس تردید کو قبول بنہ کیا۔ اور آپ کو مہدی موعود ماننے گئے۔ اس طرح وہ اپنی جہالت کی ساہیوں میں پھنے دہ ۔ انہوں نے اپنے طور پر ہی بہتر فرقول کے علاوہ ایک فرقہ مہدیہ بنالیا۔ بعض علماء نے کھھا ہے کہ صفرت کے انا المہدی کے دعویٰ سے مرادم مہدی موعود و نہ تھا۔ بلکہ بادی مہدی تھا۔ جس طرح بہت سے اولیا، بادی اور مہدی کے القابات سے ملقب ہوئے ہیں۔ لطف کی بات یہ اولیا، بادی اور مہدی کے القابات سے ملقب ہوئے ہیں۔ لطف کی بات یہ کہ صرت سے محدود قد مہدی تنا سے جس قدر دور دہتے تھے لوگ اسی قدر دولی مہدیت کو درست قراد دیتے تھے۔ چنانچہ بیر فرقہ ایک عرصہ تک مہندو سان میں مہدیت کو درست قراد دیتے تھے۔ چنانچہ بیر فرقہ ایک عرصہ تک مہندو سان میں رائح دیا۔

آپ کی وفات ملامناه میں ہونی تھی۔

چ ل محسد مهدی بادی و دین عال مجانال دا درفت ا ندر جنال گربت ریخ وصال ادبیغ سم محدمهدی فیاض خوان ۲۲ داه

کوچیلاتے رہے سماع کی مجالس میں آپ کو دجداور دقت طاری رہتی ۔ نو ربیع الاقل سلام ناہ میں فوت ہوئے اور آپ کا مزادا حد آباد میں ہے ۔

بعلمت شد جو در سند معتی
محدا عظم آں فرخندہ انجام
دصائش نضل اسلام است پیدا
دگر از ول عیال شدشنخ اسلام

ا چاہر کباری وادیے پشخ ماجی گلن شور مانی قصوری قدس سرہ : سے اہل تجرید - تفریدادر تقدى مى بدرج كمال كويني بوت تقدمات يارج كيا- جرب بدرقعد ركها كرتے تھے تاكدكى ناموم كى ماموس نكاه نديات بيكن إسك باد جدوان كے ول بروه كينين طارى نه برئى جو كاميا بى كى علامت برتى ب ده كئى ادليا.الله تے یاس گئے۔ا نتجا میں کیں۔ا ماد طاب کی گر کام نہ نیا جب وہ ساتذیں بارچ كرنے كئے تود بال كھرے ہوكوا ندس دوكوالتجا ،كى غيب سے ما تف آواز دى كمرآب كاكام شخ عيلى منواني سرانجام ديس ملح بنانچه كمدے على كرمندوتان آئے ادر شیخ علی مٹوانی کی فدمت میں پہنچے سینے علی ملامتیم طراقیہ کے مالک تنے وہ کھلے عام سراب نوشی کرتے سنے حاجی ج مکہ بہت ہی نیک اور متفیٰ آدی تخے وہ سینے علیلی کے پاس نرگئے اورول میں آبا کر بیاں سے لوط عبلوں بشیخ عيلى فكشفى طور بيآب كے ول كى بات معلوم كرنى اور آوازوے كرائے إس بلا یا اور فرمایا تم حس شخف کے پاس بھی گئے ہوتہا را کام نہیں ہوا آغر کعتم اللہ بیں جاكرتم نے التي وكى اورومال سے بيرے پاس آف كا حكم ہوا۔ اب سات كے

بغروابس چلے جا ناعقلمندی نہیں۔ شخ عیلی کی زبان سے یہ باتیں س کرماجی گگن بے صدمعتقد ہو گئے اور قدموں میں دو زانوں ہو کر بیچھ گئے ۔ شخ عیلی نے اثارہ كياكه وه شراب كى مراحى بدى ب أسا الظاكرمير ياس لاد - شخ ماجى أصفة اعتق رك كم اوران ك ول بيالكار كا عليه دوباره آكيا - فيانچر شخ عيلى أعد متراب کی صراحی کو بکرٹا اور کینے حاجی کے منہ میں انڈ صلتے گئے۔ پیننے متراب کے چند گھونٹ پی کر بے خود ہو گئے جب ہوش میں اسے تو زید د تقویٰ کا خیال ول سے نكال دياعتن ومجت كياس مي مبوس بو كئے - تمام كيرے الار يجينے -صرف صروری ستر کے لئے ایک حیادر بین لی اکتربے ہوش رہے اور نماز بھی ا وا نہ كرنے دنیا دالوں سے نہ علتے سرداڑھی ابردا درمز كان كرصات كر دبا اور كمنے مكے يه ونيا غداروں كى زينت ہے اس كو دوركر وينا يا بينے - اكثر ساع كى محلبول يى بیٹے اور آگ کا ایک آتش وال سامنے رکھتے ۔ کچیلوگ آپ کے سامنے خود آگ جلا دینے آپ کے پاس جو بھی ندمانہ آتا آپ اُس آگ میں ڈال دیتے۔

معارج الولایت بین کھاہے کہ آپ نے پاس ایک افغانی آباحیس کی اولاد
مارج الولایت بین کھاہے کہ آپ نے فرما یا کہ بین اس خرط پردھا کو اللہ بین تقی اُس نے اولاد کے لئے النجاء کی آپ نے فرما یا کہ بین اس خرط پردھا کو الاور آگ بیل بہلا بیٹیا جھے دے وینا جب بچے پیدا ہوا تو شخ نے وہ بچرائس سے لے لیا
اور آگ بین بچینک دیا وہ اور می بیرصورت عال ویجھ کروہشت ذوہ ہوگیا اور کھنے
لگا کہ بین اپنے بیٹے کو جلا نے کے لئے نہیں لایا تھا آپ نے فرما یا ججو ڈواس کی دو۔
دوائس آوی نے غضے بین آکر کہا میرے بچے کو آگ سے نکال کر چھے وے وو۔
دوائس آوی نے فرما یا بین نہا ہے کو جو الایا نہیں اپنے گھر جاؤ وہ نیگھو ڈے میں کھیل
دیا ہوگا وہ گھر آ یا بین نہا ہے کو صبح سالم نیگھو ڈے میں کھیلتے دیکھا۔

كتة بي كرماجي ملكن اس ك الك جلائ وكت تقدان كى طبيعت علالى

عتی اور الند کا جلال اُن بیفالب عفالی بھی جو کما گھی فلمولال الی ہے آب اُسے این اُسے این است رکھتے اور اینے سلمنے رکھتے اور اینے سلمنے رکھتے اور اند ما ناکرتے تھے کہ اگر ہما را فلال کام ہوگیا تو ہم جمعوات کی دات کو صرت شخصاجی کے لئے ایک جلا میں گے جیب وہ کام ہوجا تا تو ایک حلائے رکھتے ۔

شخ عاجی سام المه بجری مین فوت موئے اور آپ کا مزار برُ افوار قصور میں

موجود ہے۔

چوهاجی فتب کهٔ ابل جنان سند سال دهلت آل سنیرخ اعظم دلم من رموده هاجی صاحب ذکر فرد گفت د که هاجی فخرع الم فرد گفت د که هاجی فخرع الم

بخان فجمِع نیفن تاریخ او بعند ما محرم فلیل فلیل سام اص

آپ کے والد سینے

سنے حاجی معیدالکر پھی جینی لا ہوری قدس سرہ نہی خدم المک عبداللہ
الضادی ہے۔ آپ خاندان عالیہ جینیہ صابریہ میں شنے نظام الدین بلخی کے مرید
تھے۔ جب آپ کے والد بزرگوار کو اکبر باد شاہ نے ہندو شان سے نکال دیا تو
دہ کو بتر اللہ میں چلے گئے سینے عبدالکر ہم بھی آپ کے ساتھ گئے جج کیا اور دالد
کے ساتھ ہی ہندو ستان والیس آگئے۔ جن دنوں آپ کے والد کو زہر دے کہ
شہید کر دیا گیا۔ آپ لا ہور آگئے اور بیہیں تیام فرمایا۔ ہوایت خلق میں مشنول ہو
گئے بہت بڑی دنیا آپ کے ملقہ ادادت میں آئی اور آپ سے بڑی کوامات
سامنے آئیں۔

کتا بول میں لکھا ہے کہ ماجی عیدا مکویم دو باد جے کے سفر ریسگے ایک دفعہ
ا نے والد بزدگاد کے ساتھ اور دو دری یا دیند دوستوں کے ساتھ بیا دہ خشکی
کے داستے بیت اللہ کی طرن جل پڑے سفر میں داستہ بجول گئے اور ایک ویران
بیا بان میں جانگلے جہاں دو دو دورتک پائی کا نام و نشان نہ تھا سب دو تول ہو
پیاس طادی ہوگئی۔ آپ نے آسمال کی طرت منہ کرکے وعا فرائی تو تبول ہو
گئی۔ اُسی وقت ایک میر آپ کے سریواُڈ تا ہو اآیا تو آوا ذویتا ہواایک طرت
جواگی آپ سمجھ گئے کہ جہاں پرندے ہوتے ہیں وہاں پانی صرور ہوتا ہے۔ تھوڈی
وگدرائسی طرف گئے تو مسیطے پانی کا ایک حیثہ طار سب نے پانی بیا۔ وصوری غیل
کیا اور کیڑے دھوئے۔ فرمایا کہ جو نکہ تیتر کی وجہ سے ہمیں پانی طا۔ چنا نچہ جو بھی

میرا مرید ہوگا منتیز کا شکار کرے گا اور مذکوشت کھائے گا جنانچہ اُس دن نے آپ کے مرمدوں نے تیتر کا گوشت کھانا بند کر دیا۔

ایک دن حاجی عبدالکیم اپنی فانقاه سے اکھ کہ بیر تدیدی کے مزادی طرف
ہے گئے۔ آپ کی جانقاہ زیب الساء کے باغ دفال کوٹ لا ہود ، کے بالکل ساتھ
میں داستے ہیں ایک شخص سٹیرا نامی طا۔ یہ عید کا دن تھنا گر سٹیرے نے کہا کہ حزت
جی وہ کنتے فوش قسمت لوگ ہیں جا آج چی کر دہے ہوں گے اور سم کس قدر بریخت
ہیں کہ ہم اس نعمت سے محروم ہیں آپ نے فرمایا کیا تم چی کرنا چاہتے ہو؟ انکیس
بدکروا و دہادے پیھے قدم قدم اٹھاتے چلے آؤ بر شرے نے آئھیں کھولیں قودیکی بدکروا و دہادے پیھے قدم قدم اٹھاتے چلے آؤ بر شرے نے آئھیں کھولیں قودیکی کرمائی عبدالکریم کے ساتھ میدان عرفات میں کھڑاہے۔ چی کیا و رچ سے فاد رخ
ہوکر جس طرح گیا بھا۔ اسی طرح لا ہوروالیں آگیا ۔

بدبات یا یہ تبوت کو بنجی ہوئی ہے کہ حضرت حاجی کے چاد بیٹے ہیں۔ ایک کانا کا فیخے کا علی صفور تھا الی جادوں میں شخ کی بڑے حما حب کا نام عبدالحق اور چھے کا اعلی صفور تھا الی جادوں میں شخ کی بڑے حما حب کال اور صاحب علم بزدگ تھا اُن ہے بڑے لوگوں نے نیفن یا یا۔ یہ یائے مشہور تھی کہ ایک دن خیرو نامی ڈاکو موضع سید والاسے اُگھ کو لا ہور ڈاکر ڈالے آئے ہیا وہ لا ہور کے بازادوں میں گھوتنا رہا لیکن اُس کو کوئی موقعہ نہ کو لا ہور گا ایک اُس نے دو بیل دیکھے اُنہی کو گیا اور حالت ہوئی تو شخ کی کی خانفا ہ میں آبہنجا وہ ال اُس نے دو بیل دیکھے اُنہی کو گیا اور حالت ہوگیا لیکن تصور ٹی کی خانفا ہ میں آبہنجا وہاں اُس نے دو بیل دیکھے اُنہی کو گیا اُنہی کے بیاس با ندھا اور اندھ حاج کو ایک کو نیا یا۔ اب خرور کھی اُنھ کو آب کی خانفا ہ کے بیاس با ندھا اور اندھ حاج کو ایک کو نیا یا۔ اب خرور کھی اُنھ کو آپ کی خدمت میں عافر بین نے خروکو دیکھا تو شخ کیلی کو نیا یا۔ اب خرور کھی اُنھ کو آپ کی خدمت میں کا تو را سے کا ما دا دا تھ عرص کر کے معانی ما نگنے لگا۔ آپ نے فرایا تو نے سے کہا ہے کا سادا دا تھ عرص کر کے معانی ما نگنے لگا۔ آپ نے فرایا تو نے سے کہا ہے تا تو را بیا تو نے سے کہا ہے کہا تھا تو را بیا تو نے سے کہا ہے تا تو را بیا تو نے سے کہا ہے کا سادا دا تھ عرص کر کے معانی ما نگنے لگا۔ آپ نے فرایا تو نے سے کہا ہے کہا ہے تا تو را بیا تو نے سے کہا ہے کہا ہے تا تو را بیا تو نے سے کہا ہے تا تو را بیا تو نے سے کہا ہے کہا ہے تا تا تا دا تا تا دو تا تو تا کہا کہا کہا تا تا دا تا تا مور کی کو تا بیا تا دا تا تا مور کو کو کھی کو تا بیا دیا تا تا دا تا تا مور کو کو کھی کو تا تا یا۔ اب خور کی کی کو تا بیا تا دا تا تا مور کی کے معانی ما نگنے لگا۔ آپ نے خرایا تو نے نے کہا کہا ہے کہا تا تا دا تا تا مور کو کو کھی کی کو تا بیا دا تا تا مور کی کے معانی ما نگنے تا گا۔ آپ کے خرایا تا تا تا دا تا تا مور کی کو تا بیا کہا کے کو تا بیا کو تا تا کہا کہا کو تا بیا کہا کہا کو تا بیا کہا کے کو تا تا کا کہا کو تا تا کی کو تا تا کا کو تا تا کیا کو تا تا کا کو تا تا کیا کو تا تا کا کیا کیا کو تا تا کا کو تا تا کا کو تا تا کا کو تا تا کا کو تا تا کیا کیا کو تا تا کا کو تا تا کا کو تا تا کا کو تا تا کا کو تا تا کا

اس لئے تم رحم کے قابل ہو۔ پیرا نیا ہا تھائس کی آئکھوں پر مارا وہ اُسی وقت بینا ہوگیا اور شخ کے مریدوں میں شامل ہو کومر تنبۂ کمال کو پینچا۔

یاد آب کرسینے عبدالکریم لاہوری بڑے عالم فاضل انسان سے نظاہری موم میں بھی بڑے نضل د کمال کے مالک عقے آپ کی تصانیف میں سے شرح فصوص کی میٹری مشبول ہوئی اسی طرح آپ نے ایک اور کماب اسرار عجیب مکھی حس میں چینتیہ سلطے کے اور کالدوم شاغل درج ہیں۔

مشیخ عبدالکریم مصل مہری میں ، اورجب کوفت ہوئے آپ کا مزارلا ہور میں باغ ذیب النساء کے مصل موضع نوال کوٹ لا ہور میں واقع ہے مصل موضع نوال کوٹ لا ہور میں واقع ہے اکرم کر میں با اکرام

عرمت یا نت چون بسری مقدای شفیق دان سالش نیز برحق کرم کاشف دین

آپ میربید علی غوساص کے مولانا ورویزہ پینا ورکی تینی قلرس مسرف مرید تھے ظاہری باطنی عدم مولانا ورویزہ پینا ورکی تینی قلرس مسرف مرید تھے ظاہری باطنی عدم میں ماہر تھے اپنی ولا سے کوچپائے دکھتے تھے۔ اور تدریس و تعلیم کو اپنا یا ہوا مقاآپ ہے دیزل اور شیول کے فلات جاد کرتے تھے۔ جہال کہیں کسی مہلدیا رانفنی کاسنتے تو خود و ہال پہنچ اسی سے مناظرہ کرتے اور اس لا جواب کردیتے

ما : صاحب اتب سالانواد نے آپ کے ایک اور دمامے مصباح العادین کا ذکر بھی کیا ہے جس میں سلد چیتیہ قدر سید کے مشاخل درج میں اس دمامے میں کینے عبد الفدوس گنگو ہی رحمۃ المدعلیہ کے حالات و مقامات بھی تفصیل سے مکھے گئے ہیں۔

آپ نے علینی ہوتی کے ساتھ بڑے مناظرے کئے دو مزی طرف ایک ملحد ہیں کا اس میں بوتی کے ساتھ بڑے مناظرے کئے دو مزی طرف ایک ملحد ہیں کا م بایزید تھا اوراس نے آپ کو پیروکشن کے نام سے منہور کرر کھا تھا سخت مناظرہ کیا ، اورافسے روشنی کے بجائے تادیکی نام دیا ، ان دونوں کا نام آپ نے اپنی کتاب مخران الاسلام میں ذکر کیا ہے ۔ مخران الاسلام ایک الیسی کتاب ہے کہ آپ فے اُسے نیٹنو ذبان میں کھھا مگرہ ہ کتاب نام ممل دہی آپ کے بعد آپ کے دوئے مولانا عبد الکہ میم نے اُسے محمل کیا ۔ اس کتاب میں بڑے حقائن و معادف یائے جاتے ہیں اورا حکام سٹر لعیت کو تفصیل سے بیان کیا گیا ہے ۔ معادی الولانیت کے مصنف نے مخران الاسلام کی ایک سٹری مکھی ہے جب کانام سٹرے کھا تقالوفیات کے مصنف نے مخران الاسلام کی ایک سٹری مکھی ہے جب کانام سٹرے کھا تقالوفیات دکھا تھا۔

مولانا درویزه سهمالیم بجری میں نوت ہوئے۔ ز دنیب رفت در فرد دکس والا چوآن درویزه دردلیش معظم زوائی رصن بوا رتحاکش بخوان در دیزه معشوق مکوم بخوان در دیزه معشوق مکوم

ایک شخص درونشوں کے کمالات کا منکر تقاص بزرگ کے پاس جا آ اکہا بیں طالب فدا ہوں محنت ولیا ضعت میں تہیں کرسک جھے کوئی الیا بزرگ چاہئے جو اپنی ایک نگاہ سے مب کچے سکھادے۔ وہ محنق بزرگوں سے ہونا ہوا شخ ابوسید جشتی کے پاس آ یا آپ کے ہاتھ ہیں اُس وقت ایک ڈنڈا تھا۔ آپ نے فرمایا آ تھے ہیں اِس ڈنڈ سے سے فدا یک پنجا تا ہوں یہ کہ کر آپ نے ایک ڈنڈا اس کے میں اِس ڈنڈ سے سے فدا یک پنجا تا ہوں یہ کہ کر آپ نے ایک ڈنڈا اس کے مرب بالا عالم ملکوت اُس برطا ہر ہوگیا دو سرا مالا تو عالم جروت طاہر ہوگیا ۔ ہمین تم سرا مالا تو عالم شہود لاکیف منکشف ہوگیا ہے ہوش ہوکرند میں بہگر پڑا۔ ہمین دن میک پڑا رہا۔ ہوش میں آیا تومر یہ ہوکر دیا ضیمی اور مجا ہدے کئے اور آپ کی تربیت ہیں دہا۔

سواطع الافوار بین مکھا ہے کہ شخ الوسید کے بڑے فلفاء تھے۔ آپ نے ان ب کو تربیت دی اور پایئر تکمیل تک پنجایا۔ اُن بیں سے چندا کیس کے اسمارگرای

-01

١- سينخ محرصادت گنگوہى

٧- سنيخ محدا برابيم سيدلودي

۳ سینخ محب الشصدلیقی صدر لودی دم ۱۰ م۱۰ مردی

٣- سيخ ايواسم مهادنيوري

٥- سينخ خوا جرياني بتي

مراة الاسراريس آپ كى د قات موسل بجرى كھى ہے۔ آپ كامزار

گوسر مارگنگوسی --

چه خرنجب کم تضارفت مجنت زونیب بدار بعبت بوسید

ندات زول سال تاریخ او که محت دوم ایل صفا بوسیب هم ۱۰ه

أب حضرت بيركباركي اولادس سفنخ الدوادولوزى قدس سرة برے مؤكل اور مورع بزرگ تے اپنے جره میں معتلف رہا کرتے ہتے۔ اورغم وشادی پیھی یا ہرمنہ اتنے تھے۔ جیب آپ کو نفس مجود کرتا کہ جرے سے باہر آئیں تواندر سی اندر دایا ربنا کا مشروع کردیتے عرتف جاتے تو دیوار گرا دیتے اور عرجے میں ہی عبادت میں معروت ہوجاتے تقے حزت اخوندریشوریانی آپ کی بے پناہ عزت کرتے تھے کہتے ہی ایک بار آب نے دعا کی" اے اللہ تو نے مجھے کشرالادلاد بنا یا ہے۔ ان میں بعض بیک میں اور بعن برے میں میری الدعاہے کہ تام کو خبل دے عیب سے ما تف نے آواددی كمايك سخت كمان اعقاد - اوراس بياك تيرركه كردور تعينكو بهال مك تير جات كا - قدم ورتمس اولاد ول كا-آب نے تبر مينكا توجار قدم بيجا بيا-آب تے سم لیا کہ میری اولا و چارلینیوں مک رہے گی جنہیں التد تعالیٰ بخش وے گا۔ آپ اوا ایک کو فوت ہوئے مزار تصوری ہے۔ لوگ آپ کے مزاد کے علا وہ آپ جرے کا طوات کرتے ہی تومرادیں پاتے ہیں۔ رنت از د نیا بعنسردوس بری يول الزواد آل ولي ابل عاه كن رئسم صدل مجذوب عزيز بهرك ل انتقالت خواه مخواه

اپ کوشنے محد جانسی قدس سر ان القب محق بهندی تفاق آپ کا الله دادتدل ملک محر جانسی قدس سر ان القب محق بهندی تفاق آپ شیخ الله دادتدل مرا کے فلیم میں اینے پیرومر شد کی بڑی تعرلیت کی گئے ہو آپ کو البرباد شاہ کے دربار بس لا باگیا تواس و قت آپ کو زلبنت دکبرے ، ہو چکے تھے بادشاہ آپ کی شکل وصورت دیکھ کو ہنس بڑا۔ آپ نے فرابا باوشاہ حضور آپ چھوٹے پر ہنس رہ جی میں یا بڑے پر یہ توسب اس کے بنائے ہوئے بیں ماوشاہ اس بات سے متنبہ ہوگیا ، اور آپ کی باقول سے بہت متا تر ہوا۔ آپ نے ہندی ذبان میں بہت سی کتا ہیں کھی تھیں۔ جن میں سے پدماوت کھاوت اکبروتی کہ ان ان میں بہت سی کتا ہیں کھی تھیں۔ جن میں سے پدماوت کھاوت اکبروتی کہ ان ان میں بہت ہوگی امر بڑی مشہور ہوئیں تھیں ہے ہیں کہ آپ اکبروتی کہ ان ان میں بہت ہوگی المد داد کے ذیر تربیت دہ کو بڑے بلندم تفامات برفائن ہوئے تھے سے اس کے البر ان میں مون میں میاری الولا بیت نے لکھا ہے کہ آپ اکبرباد شاہ کے ہرف میں میاری الولا بیت نے لکھا ہے کہ آپ اکبرباد شاہ کے ہرف میں میاری الولا بیت نے لکھا ہے کہ آپ اکبرباد شاہ کے ہوئی میں الی اقتدار تک نہدہ مقالے۔

محد حجد ل زونی از دحق رفت بال رحلت آل سنه عالی یخ نفنل کمال ا دلیب خوال دگر نسب می محد سنین خوال دگر نسب می محد مشین والی

آپ کا پہلانام محدرت معدد مخدوم شیخ عبد الرست برج نبوری قدس سرة: عبدالرست برج نبوری قدس سرة: عبدالرست ادر محدوان تحالیف محدوات میں بہی نام لکھا کرتے تھے۔ اقتبض الدین ۔ نیاض اور دیوان تحالیف والد شیخ مصطفیٰ عبدالحمید خان کے مرید تھے۔ آپ کے والد شیخ محدین شیخ دالد شیخ مصطفیٰ عبدالحمید خان کے مرید تھے۔ آپ کے والد شیخ محدین شیخ

نظام الدین انبی ی کے مرید سے جو شیخ حضروت جنوری کے مرید سے دہ شیخ الدین المندواد شارح کا فیہ کے مرید سے اوروہ راجی حامد شاہ اور دہ شیخ حام الدین قدس مریم کے مرید سے آپ کو شیخ طبیب سے خلافت ملی تنی ۔اسی طرح آپ کو دوسرے لوگو ل سے بھی فیض ملا تھا۔ آپ وقت کے کا ملیں اور مبند مرتب شائخ میں سے تنے ،ا بتدائی زندگی میں درس و تدراس میں معروت رہے مگر آخری عمری آم کو ترک کرکے بڑی بٹری بلند با پیکتابوں کے مطالعہ میں شنول رہا کرتے تھے بحر بی کتابیں خاص طور پر پڑھے تھے حضرت شخ محی الدین کی کتاب اسرارا المخلوف ت پر زبردست مشرح تھی۔ ذکر با الجہرکے کے سمارے کی مجالس میں غلو کی مدیک سے کرتے تھے علم مناظرہ کی مشہور کتاب در شید ہے۔ زا والسائیس مقصود الطالبین اور ایک دیوان آپ کی یا دگاریں ہیں ، اشعار میں شمی تخلص تھا۔ سنینے عبد الرشید ایک دیوان آپ کی یا دگاریں ہیں ، اشعار میں شمی تخلص تھا۔ سنینے عبد الرشید قدس سرہ کہ 20 الرہ ہے کہ میں فوت ہوئے۔

چول در شید آن مرشد ابل د ناد با هزاد ال در شد در حقیقت رسید افضل الاقطاب گوتا دیخ او نیز قطب الا و لیا عارت رسید

آپ ید محدکے بیٹے بھی تھے اورمید میرکتیدا حکد کمیسو در از قدس سر ہ، میں طاہری اور باطنی علوم ہیں جامع تھے سکر و جذبہ - حقائق معارف عشق وعبت سماع و وجد کے رہے یا تھے ۔ ظاہری اور باطنی علوم کے ماک تھے - ہندی اور فارسی ہیں اشغار کہا کرتے تھے منکرین اسلام سے مناظرہ کیا کرتے تھے ۔ مرائل توجید پر گفتگو کرتے بیخ می الدین ابن عربی کے خیالات کو اعلا نیر بیان فرما یا کرتے تھے فرض نماز پڑھنے کے لید نو باد کلم لا الم کا ورد

کرتے ہے وہ آپ سے نا راض ہے۔ آپ کے ساتھ جو بھی منا تو جیدوساع پیناظرہ کرتے ہے وہ آپ سے نا راض ہے۔ آپ کے ساتھ جو بھی مناظرہ کو آت ہے ہوقت تم نفتنبندی تو نہیں ہو۔ چو بکہ آپ کو بزرگان جینت سے ضوصی سگاؤ تھا۔ آپ ہوقت اس سلسلہ کی تعرفیف میں رطب اللسان رہنے خصوصًا حضرت خوا جرگسیو در از سے بڑی جمت دکھتے ہے آپ نے عربی میں ایک کتا ب مکھی جواسحائے حسنہ کی منزرے تھی۔ اس کا نام جوا مع الکلم دکھا تھا۔ اس میں آپ نے بڑے حقائی ومعارف بیان فرملئے میں آپ کے گئیسو بھی اپنے مخدوم اور ممدوح حضرت خواج بید محد گئیسو درا زکی جمت اورا تباع میں سے۔ آپ نے ایک کتاب فارسی میں کھی تھی۔ جس کا نام م مثابرات تھا۔

آپر ۱۹۵۰ میں فرت ہوئے تھے۔ انجہاں چوں نور حجب ما حدی رفت در ہزم محب مدیا فت ما رملتش فیاض می مہدی بخوال سم مخدال احب مدشفیع مقدا

آپ صرت شخ سنخ محرصاد ق بن شخ فتح السركنگوسى فدس مربها، الدسيد كنگوسى كے برادرزاده بھى تقے اور فليفہ بھى تقے - وجدوساع ذوق شوق ميں كمال د كھتے تقے مريدول كى تكميل و تربيت ميں بڑا كام كيا تھا - آپ كى كوا مات اور خوارق ندما تذہيں مشہور ہو ئيں تھيں -

ایک بار آپ سہانپورشہرکے با ذاریں جارہے تھے۔آپ کی نگاہ ایک ماللار اوردولت مند ہندو دکا ندار پر بڑی۔ اس ہندوکے دل میں عشق المیٰ کی آگ جڑک اکٹی۔ دکالی سے اٹھا۔ شنخ کا دامی بکر الیا مسلمان ہوگیا۔ مرید ہوگیا۔ آپ نے اس

كانام عبدالسلام ركھا۔ ذكر حق كى تلقين كى اور كاملان وقت سے بناويا۔

صاحب سواطع الانوار دا تعباس الانوار ف لکھاہے کہ ایک بارص ت کو دوران مگنا تھ کے مقام پہنچے ۔ با ذار ہیں ایک پھرکے بت کو نصب دیکھا جے ہند و لچ جا کر د بھنے گئے ۔ بت نے کہا ۔ ا د المحبود لو تعبد سوائی ، ہیں متہا دا معبود ہوں میرے سواکسی کی عبادت نہ کر د بصرت شخ اگرچاس و قت مغلوب الحال سے گراپ نے قبلہ دو ہو کہ سجدہ کیا اور بت کو نظرا ندا ذکر دیا ۔ ہندواس بت کو سجدہ کرتے دہے پھرا وا ندائی فا بن ما تو تق اخ بن الله عب طرف الله کے مراف الله کی مورت شخ سے با و کے ، مورت شخ سے با و کہ ہو کہ الله عبوب مرم صوت میں ما الله عبوب مرم صوت میں الله عبوب مرم صوت میں میں الله عبوب مرم صوت میں کہ مورت کی مورت کے اس ایمان کے با دعج دکہ الله مرط و ن موجود ہے کو تدا لله کو سی کو کا قرار دیا ہے ۔ میں آپ کے احکام کی نا فرانی کیسے کو سات ہوں ۔ بت نے یہ کو سی کا نہ مورت ہے کہ مذات ایک بات سی تو خوا جمور صادق کی توریق کی۔ اور کہا تم سیے ہو۔ بت کے مذہ ہے آپ بات سی تو خوا جمور صادق کی توریق کی۔ اور کہا تم سیے ہو۔ بت کے مذہ ہے آپ کے سیا ان سن کو بہت سے منہ و میں اللہ میں کہ کہ کے ۔ اور کہا تم سیے ہو۔ بت کے مذہ ہے آپ کی سیا ان سن کو بہت سے منہ و میں اس کو سیا ان سن کو بہت سے میں و میں اس کو سیا ان سن کو بہت سے میں تا ہوگئے۔

آپ کا ایک مرید عبدالحق نامی تھا۔ اس کی نئی نئی نادی ہوئی تھی آپ ال
کے باغ میں سرکرنے گئے ان و نول باغ میں آموں کے درخوں پرچیل موجود تھا

آپ نے عبدالحق کو فر ما یا۔ ہمارے آم لاؤ۔ ان و نول آموں کا آخری ہوسم تھا۔
عبدالحق کئی ورخوں پرچواھ کو آپ کے لئے بطی شکل سے سات آم لا یا اور پیش کئے
چوتو ان میں سالم تھے مگرا یک ناتص تھا۔ آپ نے کھا کو فر مایا ۔ تنہیں الٹرتعالی سات والے کو سے گا۔ ان میں سے ایک ناتس اور ہمار ہوگا۔ چیانچہ اس کے چھے لوٹ کے
لیڈرست، و تو انا ہوئے اور ایک معذور تھا۔ وہ گیارہ سال کا ہوگیا تو گو تھا۔
گندرست، و تو انا ہوئے اور ایک معذور تھا۔ وہ گیارہ سال کا ہوگیا تو گو تھا تھا۔
گفزت سین کو ایک باریخ عبدالحق کے گھر جانے کا اتفاق ہوا۔ وہاں کے علا تہ کے

الوگوں نے آپ کی خدمت میں بہت سادی متھائی پیش کی بھزت نے متھائی تام ھاڑین میں تقیم کردی عبدالحق کے بیٹے بھی متھائی لینے آئے گرانہوں نے اپنے گونگر بھائی سے اس کا حصد زیردستی چیس لیا ۔ اس نے فریاد کی آپ نے فرمایا اس بچے کومیر سے
پاس لاڈ۔ وہ خودوا تعد بیان کر ہے دہ آیا۔ حضر ت نے آپ لعب دہن اس کے منہ
میں ڈالاوہ اسی وقت باتیں کرنے لگا آپ کی دفات مارم میں میں ہوئی تھی ۔ آپ کا مزاد گلنگوہ میں ہے آپ
کے بہت سے خلفاء تھے۔ مگر ہم چیندا یک کے اسمائے گرامی بیاں لکھے جاتے ہیں۔
ا۔ سینے داود داآپ کے بیٹے بھی تھے ،
ا۔ سینے داود داآپ کے بیٹے بھی تھے ،

٣- سينخ ابرابيم مراد آيا دى ٣- سينخ عبدالبحال سها نبورى ٥- سينخ عبدالمجليل الهمآ بادى ٣- سينخ جال كاهچو ٤- سينخ مبارك

۸- سینخ پوست کا بلی ، قدس سر ہم ۔ دنت صا دق چ ل ز دار بے حیات سال ترحلیش بعب رصد ق ولیتین وارث دین محسد سرصاد ق است

یا رو بیگرصا و تی حینت تشبیل ما: ماحب انتباس الا فارنے آپ کے حالات و مقامات کوم بی تفصیل سے مکھا ہے ۔ آپ کے

احال اور کوا مات کی تفصیل دی ہے۔ پیر آپ کی روحانی تربیت اور اسلام خلن کے معاملات کو قلمبند کیا ہے آپکے خلفاء کا تفصیل مذکرہ اس کتاب میں مثناہے آپ کے انتقال اور خور ص بحالدات کا ذکر بھی کیا گیا ہے

بق ہوئے آپ ان ہے میں اہور میں فت ہوئے۔ آپ کا مزاد صرت طاہر بند گی میددی کے اماط میں میاتی کے قررت ال میں ہے۔

چوں مناب عارف حیث تی ولی موئے جنت مشدازیں عالم روال مال وصلش گونسدیدی برست بار و مگر عارف حیث تی مجذال

آپ اکبر آباد کے بلندیا یہ مشخ اسماعیل حقیق اکبر آباد کی فلدس سرہ اسماعیل حقیق البر آباد کی فلدس سرہ اسماعیل حقیق البر آباد کی فلدس سرہ اسماعیل حقی البر آباد کی فلدس سرہ اسماعی میں سے تھے اظام کو دو دنیا جھی۔ دو نول فیض باب ہوتے تھے۔ فرما یا کوتے کے کرد نیاداد کا کام کو دو اسکے۔ دل میں درونیشوں سے مجبت پیدا ہوگی اللب حق کا بھی کام کرواس کے دل میں مذاکی محبت جاگزین ہوگی۔ چ نکہ آپ دین و دنیا کے دو نول قسم کے لوگوں کی جا بالس سماع میں بڑا صد لیتے تھے۔ آپ کے دروا آسے پدلوگوں کا ہجوم رہا تھا۔ میالس سماع میں بڑا صد لیتے تھے۔ آپ کے دروا آسے پدلوگوں کا ہجوم رہا تھا۔ میالس سماع میں بڑا صد لیتے تھے۔ آپ کے دروا آسے پدلوگوں کا ہجوم رہا تھا۔

کھاہے۔ مزار اکبر آباد میں ہے۔ خلیب ان ہر اساعیب ان ان بہنتی مشدج آل نبیب کو سرشتے تناریخ وصالش گفت سرور

ولی الدین اساعیل چیشتی

كے مريد تھے بيض تذكرہ ميں آپ كوشاہ اعلى پانى يتى كا غليفه مكھا ہے كام كرتے تو صحرائی جا قدر بھی متا تر ہوتے۔ آپ کی محفل سماع میں اُڈتے پر ندے گرتے تھے اور ما ضرب مرغ ليمل كي طرح ترفية تق - ايك دن صرت ايك درخت كيني ماع كردب محة ودخت برايك فاختر ببيقي على زين بركرى اور ترسيف للى ايك شخص الماس تے اس تو بتی ہوئی فافتہ کو میرا - اور ذبح کمے لے گیا۔ آپ کو جربوئ توبرے ناراض ہونے وہ شخص دلیا نہ ہو گیا۔ اپنے بھائی کو قتل کردیا۔اس کے جم یں فود پھانسی برچراھا۔ شخ سیدفال کانام میں فوت ہوئے۔

باسادت شدي ورمندين کشیخ اسد ما دی دیم سید قلمة م فيض است سال وصل او سم معلیٰ متفی اکبر سعید

معادج الولايت في كو مردكا الماسخ جو گي افغال قدس سره ١٠ مكما الله الله كار كروماني تربيت يا فبتر تق ساع ميل غلوكرت تق مع ع كرت توكئي كني و ن ساع مي ربة ايك ون محلس ماع مي تق بنبي چاست مقد كدرات خم بورميع قريب آتى قرآسمال كى طرف اشاره كرتے بھردات جھاجاتى وگ جيران تھے آج كيا بات ہے اول گراكر شخ جاگر ج آپ كے سم عصر تقے گئے۔ آپ نے فرا يا فرا مذكرو- أج شيخ بجو كى كى محلس ماع ير باب رات لمبى بدكى - أخ حفرت في ماع خم كي توسيح غودار مو ئي-

جن دنوں آپ مرص الموت میں مثل ہوئے ۔ لوگوں کو اپنے قریب سے سادیا۔

فرما یا جب مک مجھے صور سیدالا جمیا ، کی ذیارت جہیں ہوگی میں اپنی جان نہیں دول گارتم لوگ دور رہور زیارت کی تا ب جہیں لاسکو گے ، فرما یا و فات کے پہلے چیت میں ایک بڑا شکات ہوگا ، جہاں سے صفور تشرلیت لا میں گے ، دروازہ کھلا ۔ قو واقعی جھیت میں شکاف تھا ۔

ین مجوگی موانی کو فرت ہوئے مزاد تصور ہیں ہے۔ چوکشیخ جہاں ہیسے بھچوگی ولی شدہ اقر جہاں سوئے جنت رواں شود سال ترحیب ل تاریخ او آکستا مذعشق مجوگی عیب ال

آن میجائے کہ جان در دست اوست

ميد بدجان الربيرچت بار

دومیحا جس کے قبینہ میں میری جال ہے اگر میں ہزار بار بھی مرحاوس تو وہ میری جال دوا دے گا) شخے نے بیٹغر ک نا تو وجد میں آگئے نا گاہ ابک خف اپنے بھار بیٹے کو جوموت کے کٹارے پر پہنچا ہوا تھا جار پائی پرڈا لے ہوئے ملب میں لے آیا اور دعا کے لئے التجاد کی ۔ شخ اسٹے بہی شغر بڑھا اور بھار بہ با تھ پھیل دہ اسی وقت شفایاب ہوگیا۔

سینے عارث ہفتم ماہ ذی الجر المنار بیجری میں فوت ہوئے آپ کامزار در میں ہے۔

سنیخ عار ن ابل کمال سند چانه دنیب بخلدجاددال رحلت شارت نه یاه گو سم بخوال عار ت شهنشاه جهال سم بخوال عار ت شهنشاه جهال

آپ حزت بولانا عبدالکریم بیتا وری قدس بسره ایستان بیتے سے اور میربید علی فواص کے فلیفہ سے آپ کو ظاہری اور باطنی ترببت اپنے والد بزدگوارسے بلی انہیں بھی لوگ اخ ند کریم دا د کے نام سے بھی یا د کرتے ہیں ۔ آپ نے اپنے اسفار ہیں ہی نام استعال کیا وہ صاحب بنٹر بیت طریقت اور خفیقت بزدگ ہے آپ کا کلام مخول الاسلام کے آخری حصے میں ملت ہے فلاصتہ الجرمیں آپ کو محق افغا نستان لکھا گیا ہے سکتے ہیں جب مولان نے کتاب مخران الاسلام مکمل کی قومات کے وقت سفید کافتہ کا کا کی کی سے سکتے ہیں جب مولان نے کتاب مخران الاسلام مکمل کی ورات کے وقت سفید کافتہ میں میں اپنے جربے مبادک میں نے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے مبادک میں نے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے مبادک میں سے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے مبادک میں سے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے مبادک میں سے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے مبادک میں سے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے مبادک میں سے جاتے اور چراغ دوشن کے بغیر کھتے جاتے اور جراغ دوشن کے دیتے اور ایس طرح تیا م مخزن الاسلام مکمل کردی۔

معادج الولايت بب لکھاہ کہ ايک شخص نے مولانات بي جھا کہ غوت كسے كہتے ہيں اوراً س كى كيا تعرفیت ہے آپ نے فرما يا جب غوث فرت ہو تا ہے تو جو شخص تھي اُس كے چہرے بينظر ڈا لہت تودہ مسكراتے نظرات بيں آپ كى وفات كاجب و قت آيا تو وہ شخص امتحان كے لئے آپ كے پاس گيا۔ اور آپ كے چہرے كود يكھا تو آپ مسكراتے ہوئے دكھائى ديئے اور يول محسوس ہوتا تھا كہ ابھى وہ كود يكھا تو آپ مسكراتے ہوئے دكھائى ديئے اور يول محسوس ہوتا تھا كہ ابھى وہ

بات كرنے مكے ميں وہ شخص اپنے خيالات سے تائب ہوا اور كہا بس مجھے إسس سے زيادہ كسى دليل كى صرورت نہيں ۔

ایک بارمولا ناعیدالکریم نے اپنے باپ سے کہاکہ جس دن آپ میری والدہ سے نکاح کرکے اپنے گھرلائے تھے تو کیا داستے بین لکا صسے پہلے آپ نے دست اندازی کوٹ ش کی کھی اور فلال درخت کے تنے سے آواز آئی کہ انجی کل یہ عورت مہارے گئے نامج م ہے : لکا صسے پہلے دست اندازی کونا درست بنیں بلکدارے گئے والم ہے بدآ وا ترمیری تھی۔

مولانا عبدالكريم المعنار بجرى مي قت بوت آپ كامزار يوسعت ذي

علاتے میں ہے

يون كريم واكرم ابل كرم باكرامت كشت درجنت مقيم ابل فلوت سال وصلش بهت ونيز والى عرف ان كريم ابن الكريم دالى عرف الله على الكريم

آپ قوم کے گجر تھا در ورقت کے کال شائخ یہ بیٹی بیٹی لیٹا دری قدرس سر افہ ہیں سے تھے۔ عبادت میں مشغول ہے تھے چنیتہ سلیلے میں سراکرم رہے آپ کاطر لقہ مولانا درویزہ لیٹا دری کاطر لقہ تھا۔ آپ مخرن الاسلام کا ب کو بڑی دلجی سے پڑھتے تھے۔ دوگوں کو بھی اس کو پڑھتے کی ترفیب دیتے تھے۔ آپ اگر چیلٹینڈ میں بات کرتے تھے لیکن شعرفا رسی میں کہتے تھے کبھی کبھی ہندی نہ بان میں بھی گفتگو کرتے۔ آپ کے مرحدوں میں مولانا چیل کی میان شخوشاہ جہاں پوری ادر شیخے علی بڑے مشہور ہوئے۔ آپ کی مجلس میں جو بھی پہنچ جاتا

دینی علوم میں ماہر ہو جاتا ۔ آپ سائے۔ انہ ہجری میں فرت ہوئے ۔ آپ کامزار پشاور میں ہے۔

چ پنجو رستم سرنچب عشق زونی گشت در ذات خداطاق دسالش عار ن اخلاص گفتم دگر کرم ار دست فیاض آفاق دگر کرم ار دست فیاض آفاق

آپ ظاہری اور باطنی علوم میں کا مل تھے مستخ بير محرسلون قدى مرة به بي فيخ عبداكريم كر يد ي بابك اکثر مریدصاحب علم فضل اور ریاضتول مجاہدہ میں کا مل ہوئے ہیں ۔ آپ کے زملنے میں بیر محد کمینوی بھی محقے وہاں کے لوگ جن میں علماء و فضل بھی مخفے مِشْخ پیر محرمینوی سے نفرت کرتے تھے اور ان کی طرف رج ع کرتے تھے ۔ حتی کہ شخ بیر محد كينوى مجرداورا كيلے مقے اور لباس نقريبناكرتے تقددوسرى طرف بير محد اون الله تنده اورعيال وارتقا ورمثا مخ كالباس يبنة تقدا خار الاولياء كے مصنف نے آب کی بڑی کرامتیں نقل کیں ہیں۔وہ لکھتے ہیں کہ شخ پر محرا پنی شکل وصورت ہیں الندى ايك نشاني عقد وهص صورت مي جائة ايني صورت بنالية بهندى اور فارسى مين شعركماكم ترفيق آب كى وقات المكالم من بونى واصل وصل محديب ددين ياقت ازحق دولت وصلت بدست رملتش كو عارف جنت كرم ہم بخوان پر محدی یات

ہے فاندان حینت میں بٹسے بابرکت اور ا ور شخریجی گیرانی قدس سرهٔ اساعظمت بزرگ تھے۔ ہیں کے آباد اجداد کا كاسلسانقطب المشائخ نصيرالدين محودجراغ ولوى دحمة التدس ملتا عقازمدورياضت یں بڑی کوشش کرتے کئی بارج کی سعادت سے مشرف ہوئے۔ آخ کار صفور بنی کرم کے حکم بریدینہ پاک میں سکونت افتیاد کرلی حرمین الشرفین کے مشا کخ اورعلا نے سپ کی مشیخیت کا اعتراف کر لیا۔ اگر چرسارے عرب میں خواج نفیسل بن ایا نہ۔ سلطان ابابيم ادهم اورخا جرهمان إرونى كى سلسد حيّت مي روى مترت عتى سيكن حرمین متریقین میں آپ کے آنے بہلسائہ چٹتیر میں ازسرے نو تازہ رونی آگئی۔ شيخ کيلي ٥٠٠ اهين فرت جو تے آپ کامزار مدينه ياك بيں ہے۔ یافت درجنت حیاست دایمی ع بکه میمی زنده دل سیسر بدا بودعشق حق مسرا يا ذات او ارتحالش سنسد عيان عشق هذا

آپ نانی جنید بندادی تے بنرلیت

میر خوبنید مو مانی بیشتی قدس مره به وطراقیت بین کیاں کا ماتے بوبان

میں کانی عوصہ کونت کی بھرسندی میں چلے ہئے ، مو ہاں کے قیام کے دوران رات

کودریار چلے جاتے اور ذکر بالجمر کرتے تھے ۔ نیند آئی تو یا نی میں کھڑے ہوجاتے

اور ذکر جلی میں شنول ہو جاتے تھے ۔ ذکر جلی بورا ہو تا تو ذکر ضفی میں شنول ہوجاتے

تھے۔ دل کے دقت حجمل میں چلے جاتے ۔ کو ایاں جمح کرتے بازاد میں لاکر بیجے ۔ اوراسی
سے گزرا دقات کرتے تھے جو بی جاتا نقرار میں تقییم کر دیا کرتے تھے۔ بالس سماعیں

شرکت کرتے - آپ کے استحار مزبان فارسی سبندی اور عربی میں ملتے ہیں - جن میں فصاحت و بلاغت ہوتی - آپ کی بہت سی تصانیف ہیں ان میں سے ایک کتا ب کا نام برطبق ہے بیہ آپ نے اس کی شرح مجی تکھی ہے یہ فقی ماٹیل پر بڑی دلجی ہے کتا ہے کی و فات سے ایک مزاد پرافار مستد بار میں ہوئی۔ مزاد پرافار مستد بار میں ہے ۔

سینخ عالم مبنید و قت د مبنید سُند چ شبی بوئے منسلد ہیں خواحب مبنتی بگو سالٹس ہم بھنسر ما مبنید سینخ ا مین

ہب بنگال کے دہنے والے تھے رفیخ سنے مبیب جعفری قارس سرہ: محدمالیہ سے بیت تھے۔ بڑے ماب عظمت وشهامت بزرگ تھے پہلے تصبہ حالیہ بی رہتے تھے۔ پھر ببنر چلے آئے تیس مال تک صرورت کے بغیرا پنے مجرہ عبادت باہر نہیں نکلے ہمیشدوزہ رکھتے تقے لوگوں سے تذرانے تبول بہیں کرتے تھے۔ ذکراسم ذات میں مشنول رہتے تھے أب كى كشف وكرا مات بهت مين - خِيا نچرصاحب معارج الولايت ملحة بين كدايك بار حزت فيضف يرع عماني عبدالتاركو فرما ياكه تنهارا بهاني فلان فلان تاريخ كوفلال فلال منصب بيافا رُز بهو كا حِيثا نجِه الياسي مبوا- ايك دن ايك سياسي وفرط ملے کہ تم عنقریب شاہ عالم بادشاہ کے درباریں حاصر ہو کر نوکری کرو گے بنیا نچر الیا ہی ہوا۔ آپ کی وفات وعالیہ میں ہونی۔ آپ کامزادادرنگ آبادیں ہے يول محب حندا عبيب ذمن مشد بجنت بسال رهلت اس

متقی شه اکبراست بگو نیز اعظی ولی حبیب بخوان

آپ بلے کا ل اور ممل درولش تھے جرین شنج پیر محد مکھنوی قدس سر فلاس سر فلاس سر فلاس سے مقرت ہوئے۔ الب كا صلى وطن توج نبور عقار مراب تي تعليم حاصل كرت كري في تعليم ول من قیام کیا ایک عرصه یک ویلی رہے اور ویال ہی پڑھتے دہے وہال سے تنوج آئے۔ اور وہاں کے علماء کوام سے تعین کتابیں بڑھیں۔ وہاں سے تکھنو یلے كئة اوربيد عبدالقادر كھنوى سے جندكتابي راهيں و مال سے ہى جذب المي داس گیر بواران دنول ایک چینی بزرگ شاه عبدالندسیاح کوه بستان میں سکونت ندید منے آپ نے ساری اسلامی دنیا کی سرکی تھی آپ انہی کے مربد ہو گئے فاندان چنتیسے فاص فیض ملا۔ ہے کو دوسرے الساوں میں بھی بعیت کا تشرت ملا تھا۔ تدريس وتعليم مي مشغول رہے عنوق مذاكومدا بت كرتے رہے ۔ مكھنومي آپ كوم شركا مي في م د ياكدوريا خ كومتى كار عاكردياضت كري و بال آپ ایک طرف اداکول کوروعانی تربیت دیتے دوسری طرف طلبار کوکتابی راحاتے تے آپ بینتومات کے دروانے کھل گئے جوندرانے آتے اللہ کی راہ میں خرج كردياكرت عقد عرف ايك دن كى دوزى اپنے ياس ركھتے تھا اگر اپنے ياس كها نامة موتا - بإزار سے منگواكرمهانوں مي تقتيم كرويتے تقے سماع سے برى وغبت عتى - چندقوال مروقت آپ كى خانقاه بررستے - جو كير آئاس سے جي تھا حصته قوالوں کودے دیتے تھے مکھنو کے علما دفقرار کو بھی ان فتوحات سے مدد کرتے دہتے تھے۔ ددیا نے گومتی کے پارجانے کے لئے کتنی بربوار ہوتے اوراینے سائھول كى ومددے كرما تق ليق مركى كا ياؤل تك بھى ترة ہوتا-

معادج الولا بیت کے معنف نے مکھاہے کہ میں نبگال سے ہوتا ہوا مکھنہ بینی و فرخ بیر محد کی خدمت میں ماضر ہوا۔ آپ نے جھ پر بٹری شفقت اور محبت فرمائی آپ نے میری کتاب بجالفرارت مترح دیوان مافظ ملا خذرمائی۔ تو بٹری کیند کی فرط نے گئے۔ یہ توایک بجرب کرال ہے کئی ماہ تک مطالعہ میں دکھی ہجے بعض اشغال کیا جائز بھی دی اور مجبل اسم ترالیانی بھی دی اور مجبل اسم ترالیانی بٹر سے کو دیں۔ آپ بٹرے مما حب تصافیف تصوف میں مکتوبات اوراد بع منازل کھیں اسی میں مکتوبات اوراد بع منازل کھیں اسی طرح معول میں آپ کھی ہوت ہیں کتابیں ملتی ہیں۔

یشخ ببرمحد منظم میں فوت ہوئے۔ آپ کا مزاد کھنویں ہے محد بیسے در بزم محسد چوسند تا ریخ آل سردارآ فاق بگوسنے یقین وسنی حق میں سف رینا ہ محد سیسے عشاق

1.40

زونیارفت در حند معلی چومدین آل ولی راه تحقین رقم سند شخ قدسی سال تاریخ بدیگر بارشع عشق صدرین بدیگر بارشع

آپ برسط میمت اور برسنخ محرد اور بن محرص اوق گنگویسی قدس مسرف وی الحال بزدگ تھے کالات دلایت بجین سے ہی ظاہر اور ہو بدائقے۔ اقتباس الانوار کے موقت نے آپ کی بڑی کوامات کھی بیں ادر بڑے مفصل حالات قلمبند کئے بیں۔ ہم اسی کتا ب سے چند سطری درج کورسے ہیں ۔

صرت شغ جناب بدنا فوث الاعظم منی التدعد کے سالانہ عرس برایک پر وقار مجلس ترتیب دیا کہتے تھے ۔ اس ہی غربا اور مساکین کو بڑا عمدہ کھا تا ہمیا کہتے تھے ۔ اس ہی غربا اور مساکین کو بڑا عمدہ کھا تا ہمیا کہتے تھے ۔ ایک بادعرس قریب آگیا۔ گکر آب کے بائے کسی دو مست قرض لے لا فلیفہ شیخ سوند ہا کو فر ما یا کہ عرس غوث پاک کے لئے کسی دو مست قرض لے لا فود یہ کہر کر سوگئے ۔ اعظے تو دوبارہ کشیخ سوند ہا کو بلایا ۔ اور فرمایا ۔ عرس شرلیت کے لئے قرضہ نہ لینا صرت غوث پاک ا مداد فرما ہی گے ۔ آپ نے تنام ا فراجات کی دوج بیفتوج تشرلیت لائی ۔ مجھے ذمردالہ ی ہے۔ ہی سویا تقاکم صنور کی دوج بیفتوج تشرلیت لائی ۔ مجھے گیارہ روپ نقدا و دا کی اسٹر فی عطا فرمائی ہے اور حکم دیا ہے ہی عرس کے افراجات پورے کرو۔ ہیں اُٹھا تو یہ رتم ہیرے ہا تھ ہیں تھی ۔

آپ کا ایک مرید میلی می بیشا-اس مکان می کنار کا درخت عقا-اس مید کوب عبوک ستاتی تو کنار کے درخت کے پتے کھالیتا - جلد پورا ہوا تو کہنے لگاریں

نے چالیں دن کچے نہیں کھا یا۔ آپ نے فرما یا تم کنار کے بیٹے کھاتے ہے ہواس نے انکار کیا تو آپ نے درخت کو مخاطب کیا اس نے جھک کواپنی فالی ہٹنیاں بیش کردیں قوصنور ان ٹہینوں کے پتے کھاتے رہے ہیں۔

ادرنگ زیب عام گیر سنات می تخت نشین ہوا۔ بعض معاندین اورها سدین نے باداتاه كحصورتكايت كي شخ داود توساع ستاب اوركئي قسم كى بدعات بيعزق رہاہے۔ سرایت کے احکام کی فلات ورزی کرتاہے۔ بادشاہ نے شخ کی واب طبی کافرمان جاری کرد یا بینے دملی پنے اوشاه نے قاضی ملاقوی کوبلایا - يد قاضی صوفیا کے فلات بڑا متعصّب سے اس نے بیٹنے کے پاس ہر کرایس مختف سوالات كغ خصوصًا سماع برسخت اعتراضات كئے آپ نے فرما يا۔ آپ نے مدیث میں بڑھا ہوگا اسماح لاھامیاح: سماع کی المیت د کھنے والے کے لئے مباح ہے) میں سماع کے سننے کی المبیت د کھتا ہوں ۔ اگر بیمنلہ قال کی بجائے حال كى كيفيت برمعوم كرنا چا ست بين تويل بركبول كاركه ان قوالول كوكم وع كي انہیں ہتاہے منائیں۔ قوالوں نے سانا مٹردع کیا تو آپ نے ملاقدی کو کہا لے جائل مين فودصاحب شرايبت اوراحكام الهياك نا فذكرنے والا ہول عجست سماع کے جواز کی ولیلیس طلب کرتے ہو۔ کتے ہیں آپ تے جب ملاقوی کو جابل كما قدواتعى اس كے سينے سے تمام علوم سلب بو كئے اور جابل محض بوگيا ده كوئى بات كرنام إبتا تقا . كرنيان اس كاسا تقديني ديتي تقى اس فيدونا شروع كرديا ورصرت كے قدموں بيكر بيال بيكواس بيترس كيا۔ فرما ياتم ان دنول در بارشاہی میں ملک العلماء ہو-تم فوا ہ مخداہ دردلیثوں کو تنگ کرتے ہو اپنامعامددرست كرجاد متبيل علوم سلسروا را بول-اس كے بعد ملاقوى آپ كالمعتقد بوكيا-

صفرت شیخ کے وصال کا دقت قریب آیا۔ اپنے بھیو سے بھائی شیخ محد کو فرایا میرے لئے تابوت تیاد کرو۔ کیونکہ آج تین دا تیں ہوگئی ہیں مسلسل نبی کوئم صلی اللہ علیہ وسلم کی فواب ہیں زیارت کر رہا ہوں۔ فرماتے ہیں۔ دا و دہم تہارے مشاق ہیں۔ ہمارے یاس علد آؤ۔ چنا نچے شیخ محد نے تابوت تیبا دکرایا ، یا نچ ماہ دمشان المبادک سے فوا فطادی کے بعد قوالوں کو بلایا مجلس ساع بر یا کہائی سادی دات وجد میں دہے۔ مسی ہوئی تو عالت سماع میں ہی فوت ہوگئے۔ آپ کو قعائد تسماع میں ہی فوت ہوگئے۔ آپ کو قعائد تسماع میں ہی فوت ہوگئے۔ آپ کو قعائد تسماع میں ہی فوت ہوگئے۔ آپ

شخ سوند ما بن عبد المومن مشخ ملاتی کھتیلی سید عرب التد کیراندی مشخ ابدالمالی انبیطری سرور شخ عبدالقا در سوری آپ کے قلقا رہی سے تھے۔

> پوداؤد سردر انتضائے الهیه ازیں دہر در فلد جنت نشین بگوسین داؤد حق بین بسال دگر بار داؤد دسین یقین

ہپہندوتان کے حضرت شاہ الوالمعالی بیتی صابری قدس سرہ بسادات فاندان سے تعلق داؤر جیتی صابری قدس سرہ بسادات فاندان سے تعلق داؤر جیتی کے فلیفد تھے اگر چہ آپ کو شیخ محرصا دی گلکو ہی سے تربیت ملی تھی ۔ گر آپ نے شیخ داؤ دستے کمیس بانی ۔ اوراُن سے خرقہ فلانت عاصل کیا ۔ آپ کے دالد سید مجدا شرت سہا رنبور کے قریب تصباط

یں رہتے تھے جب اُن کی وفات ہونی تو شاہ الجالمالی ابھی تھیں ٹے مقے سآپ کی والدہ آپ کوسٹنے محدصا دق گنگو ہی کی خدمت میں سے گئیں اور التجار کی

کہ آپ اس کی تربیت کریں۔ آپ نے انہیں اپنے پاس رکھ لیا۔ اور ظاہری علوم مکمل کروائے۔ وفات کے وقت اُنہیں شیخ داؤ دکے حوالے کردیا حزت شخ داؤ دنے آپ کی تربیت بھی کی اور خرقۂ خلافت بھی دی۔

شاہ ابوالمعالی کا ایک ہمسا ہے بھی تھا جوبڑا بدطنیت اور بدخو تھا۔ آپ سے حدکہ تا اور مردقت آپ کے خلاف ہی سوچا دہتا۔ آپ کا نام مقادت سے لیتا اور طرح طرح کے دل آڈار قدام کہ تا۔ صرحت شاہ ابوالمعالی کے مریدوں نے کئی بارا آپ سے اجا زت لی کہ اسے درست کریں گراآپ نے کبھی اجازت نہ دی اورائس سے بدلا لیننے کی کبھی خوا ہش نے ۔ آنفاقاً دہ ہما ہے مرگیا ، آپ کوخود ہوا صدمہ ہواکئی دوراآپ ماتم اور گرید کر سے رکھا تا بھی نہ کھاتے آپ کے خادم اور مریدوں نے اس غم کی وجو بھی تو آپ نے فرمایا کہ عام ناموت میں انبیادا و دیا ، کے اکثر دا من دینا کے غیارسے موث ہول کے اور مید غیار بدگوا در بدخوا نسانوں کی کا لیوں کی وجر سے دور ہوگا۔ آب وہ شخص قرت ہوگیا ہے برے دامن کے غیار کورے دامن کے غیار کورے تو دورکرے گا۔ وہ شخص قرت ہوگیا ہے برے دامن کے غیار کورے دامن کے خیار مدمد مہے۔

صفرت شاہ الوالمعالی جوانی میں اکثر یا دالہی میں خرق اور محدہ ہے۔ آپ
کو دنیا اور ما فیالی خبر نہ تھی۔ ایک بار توالیا ہواکہ تین ماہ تک آپ نے کچھ نہ کھایا
پیا۔ نماز کا وقت ہوتا تو آپ کے خادم آپ کو بڑی مشکل سے آگاہ کرتے وصو
کرواتے اور مصلے پر کھڑا کر دیتے۔ یہ کیفیت آپ پر تین سال تک رہی۔ پھر جاکہ
دینی اور دئیا وی امورسے واقف ہوئے۔ مریدوں نے پوچھاتو آپ نے فرما یااب
فرص اور کنتیس خود شالی شکل ہیں میرے سامنے آگر مجھے آگاہ تربیت میں اوراد آتگی
پر مجبور کردیتی ہیں۔ اب مجھے تہاری طرف سے کسکی گاہی کی ضرورت نہیں۔
مخرت شاہ الوالمعلی کے گھریں اس قدر تنگ دستی اور بے سروسامانی کا

دوردورہ تقاکہ کئی کئی دن فقر و فاقہ ہیں گذار دیتے بیض فاص لوگوں ہیں آپ
کے فلیفہ تید میران بہیکہ کک بینجائی - انہوں نے یہ بات سن کر شاہ صاحب کے
گرگئے اور آئی کے فلر دان میں ہا تقرق الا تو دیکھا کہ اس میں غلہ موجود ہے آپ
نے فرما یا یہ غلہ قیامت میک کم نہیں ہوگا۔ اِسے نکالتے جاد اور پیکاتے جاد اور پیکا تے جاد صورت
شاہ ابدا لمعالی نے اپنے گھروا لول سے پوچھا کہ دو ہمینے گزرگئے ۔ گھر میں فلے کی
می کی شکایت آئی اس کی کیا و جرہے ۔ گھروالوں نے صورت حال سنائی تو آئی نے
غلردان مشکواکو اُسے اُلٹاکر دیا اور فرما یا کہ سید میران بہیکہ ہمارے توکل میں خلل

دال ديتين-

ا يك دن قصبه تقانيسر من شائخ كي ايك محلس منعقد بوني اس مي حضرت شاه الدالمها بي ميران سيد بهيكه شيخ الوا لفتح - شيخ تو ندها بوهري - شيخ بلاكي شيخ محد شاه محدشاه محد لدست بشيخ عبدالقدرسنوري شاه نصيرالدين كموسى والا-اور سيدعزيب كيرانوي جيسے بزرگ موجود تھے۔اس محلس ميں كام طيب لا إلا البرالا مند كا ذكر مور با تقا حضرت شاہ ابو المعالى نے فرما ياكم من لوگوں نے إس كلمے كود ل كى كرائيون سے بيدهاہے اگروه لفظ لا بيده كركسى عا نداد كے كان بي جيد ك دين تووه مرجائے گا-اور اگر الاالندر مرحور کھونک ماری تووہ پھر زندہ ہو جائے گا۔ مامزين ميس من إس يات كامتمان ليخ ك لفرت شاه كي فدمت براتماس كى كەمىس اس الدوكائے .آپ الح توات كرك عن بى جو كائ كورى تى اس كے كان ميں لاء كالفظاكها وہ أيبى وقت كريٹى اور تراپ كرمر كئى بيب لوگوں نےدیکھاکہ وہ مطندی ہوگئی ہے تو آپ نے اُس کے دوسر سے کان میں الا سند كما توده زنده بوكواعظى ادرىب كے سامنے كھاس ير ناستروع كر ديا۔ شاه ابوالمعالى كى دفات الممالية من بونى صاحب شجر المحتلية في آب كاسال

وفات شهنشاه مجتياس نكاللب-

رفت اذ دنیب ج در شدری پیررهبرالدا لمعالی ایل فیض سال وصل اوست تاج البت کین بار دیگه برالمعالی است فیض بار دیگه برالمعالی است فیض

آپ جالند منهر کے سادات یں بیسٹے عبد الرشید حالند من قدس مرہ نے سے تھے۔ والد کانام بیدا تنرف تھا۔ آپ بھیدٹے ہی تھے کہ آپ کو تلاش من کی گئی نگل گئی۔ ظاہری عوم پڑھنے کے بعد اپنے وطن سے نکلے اور مختلف منہروں کی سیر کے تے صرت شاہ ابوالمعالی کی فدمت میں ما صربوئے آس وقت مصرت شاہ ابوالمعالی کا محرکا فی ہو چکی تھی۔ آپ نے یشنی میں ما صربوئے آس وقت مصرت شاہ ابوالمعالی کا محرکا فی ہو چکی تھی۔ آپ نے یشنی عبد الرشید کو میدمیران بہیکہ کے حوالے کر دیا جنہوں نے آپ کی تربیت بھی کی اور خرقہ فلافت بھی دیا۔

آپ یکم ماہ رہیے الاول بروز حمد را اللہ اپنے مرشد کی زندگی میں ہی وت بو گئے ۔ جالندھر میں ہی آپ کامزار نبایا گیا ۔ آپ کے وصال کے بعد میراں

William !

بهيكرني آب كے بيٹے سيد علام محى الدين كو بيت كيا اور ابنيس كمال مك تربت دى صرت عبدالركشيدال بيردين چ زونی رفت و در جنت رکسد سال وصال اوست عارف حق ريست يار دير كرورعالم ركيد

آپ صرت شخ داؤر شخ سوندهاد لدیشنج المومن شتی صابری قدس سره در سینی گلوی کے مرید غلیفها ورجانشین عقے۔آپ نے مربدوں کی تربیت اور تکمیل میں بڑاا ہم کردارا داکیا آپ جس بينگاه دا لتے دواس كے قريب ہوجا تا اگر وجدا درساع كى حالت بي كسي ب نظر براجاتی تودہ بے خوداورمت ہوكر كر باتاكب كے آباد اجداد كى نبت صرت الديكم صديق فليف اعظم سرور عالم صلى المدعليه وآله وسلم سے ملتى تقى -آپ كے والد بزرگوار سنخ عبدالمومن دہلی کے باوشاہ کے جاگرداد تھی سے اور دربار کے امیر بھی سے ان کی جاگیرمفیدون تصبه میں تقی اور آب دہیں رہتے تھے۔ دہ فوت ہوئے توشیح سوندیا ابھی بچے تھے۔ چونکہ بیس سے ہی آپ کی پیٹانی بد بزرگ کے آثار نا یال نظر آت تق وه النّدوالول سي خت اعتقاد ركفته عقر الله وقت ألم يا كم حفرت شخ واورد رعة المندس بعيت بوئ توكمالات كى مزل بديني اورصاحب كم امت اور فوارق

مواطع الانوارك مولّف مكفت بيل كمآب كى ذندكى كا عجى ابتدائ زمانه تقا

وا ومواطح الانواد كع مصنف علام مصرت سينح محداكم قدوسى رحمة التدعيد وباقى الطعصفي ويالخطروائي،

که آپ قصید او بهرکا امیر حواج نظام الدین اولیا دا للّه کے عرس بید جارہے تقے
اتفاقاً اسی دن او بهر کا امیر حواج ب کا عقیدت مند تھا کا اکاو تا بٹیا مرکیا ، باپ بیٹے
کی نعش اٹھا کہ آپ کی خدمت میں جا پہنچا - اس مجلس میں بہت سے مشارئخ اور صوفیا
موجود تھے ۔ غزوہ باپ نے جاتے ہی حصرت کو نما طب کہ کے بیر شعر بیٹے حا۔
مرد ال حشد افدا نبا سشند
لیکن زحمن دا جدا نہ باستند

آج آپ براهٔ کرم میرے بیٹے کو زندہ کردیں۔ صرت کوان کے حال زار پر بڑا ترس آیا اپنی نشست سے اعظ کومردہ اولے کے سریانے جاکھڑے ہوئے اور فرمایا

البتيه ما سنيد اصرت سنخ موندها قدى مرة كرم بدخاص اور فليف تق - آپ نا بنى اس كمآب بن محرت بنخ سوند ما قدى مرة كرمف ما الات و مقامات كله بن - يركناب الانكارة و والجريب كيبيتى والمدخين سيال حين ما برى كرة عبرا كرود بن المسليس الا بور كين شن قدا المري كرة عبرا كرود بن المسليس الا بوركين شن قدا المواد كرا من من الواد كرا من من الحري من المواد كرا مات مقامات سوك - ديا منت و مجا بدك الميان الملك كي ما حزى علماد و من المخ كي دو هاني تربيت بهر سلم حين تيد ما به يقدو مير كرمنا على او فرخوى اوراد كرتفييل سن كلها ب - آپ في كي دو هاني تربيت بهر سلم حين تيد ما به يا به كرا يا كاليك او الادكامي تذكره كيا ب - اور تبايا به كرا يكاليك او الادكامي تذكره كيا ب - اور تبايا ب كرا يكاليك بين بن من الميك ما عقر مسلم المين في بري والده كرا يك من الميك من الميك من الميك كرا الميك كرا المين تربي بي الميك فلها كما ي في من الميك فلها كما ي خوال وتقامات المن كرنا الوى من تبي بري بري موسدين كون يك من المنك تقد س مر مم كا حال وتقامات بي بي من من الميك فلها المن يتم من من الميك المن فلها من من من الميك المن الميك من الميك ال

ا ذر بگذر فاک سرکوئ ستما بود هرنا فرکه دورت کشیم سح ا فناد

كربياً اس حي القيوم كے حكم سے اعظو إمرده لوكے نے ہنگھيں كھوليں اور زنده بوگيا۔

ایک بارصرت شخ سوند ہا فیٹوں کے بھٹے کی ایک بھٹی میں گر پڑے آپ اس دقت جذب دمستی کی حالت میں مقے ۔ پیدا ایک بیمراس آگ کی بھٹی میں رہے مگرجب باہر آئے تو بدن کے ایک بال مک کوکوئی تکلیف نہیں بینجی عقی ۔

ایک بارتفریکتی بی محفل سماع منفد بوئی مضرت بنی بھی ان میں موجود تھے مجلس میں ایک درولیش نے د جدیں اکر کہم دیا ۔ لوگو اس لورصرت خواج میں الدین اجمہری ہندوری اس لورصرت خواج میں الدین اجمہری ہندوری اس کے سپنیر ہیں جو نکہ ایک ولی کوئی کہنا خلات مشرع ہے شہر کے قاضی نے حکم دیا کہ ایسے زندان کو گرفتا رکر لباجائے اوراسے قبل کر دیاجائے صفرت شیخ سوندالے بڑا ت خود قاضی کے پاس گئے اور استدعا کی کہ العاشق والمجنوں معدود کو عاشق دلانے موزور ہوتے ہیں۔ اس درولیش کو بھی چھوڑ دیں گرفتا صفی نے آپ کی اس بات کونرا ان اس کو تا می کو تا می کہنے والی تنم عاشقوں کے قبل بر کمرہ لب تہ ہو۔ ان ان دالی موت کئے کی طرح عو عو کرتے آئے گی . قاضی کو دو سرے دل ہی ان ما انتا دالی میں اور چندرو زمیں با نیکتے با نیکتے مرکیا۔

ایک بارا ہے تھے۔ راستہ میں ایک گاؤں سے ڈاکو نظے انہوں نے بڑوکو اپنے گھر کی طرف آرہے تھے۔ راستہ میں ایک گاؤں سے ڈاکو نظے انہوں نے بڑخ کو اور اپنے ساتھیوں کو دوٹنا چا ما محفرت شخ کے جہرے کے دعیہ سے مرعوب ہو کہ حلہ مذکر سکے۔ مگر آپ کے قاضے کا ایک دروئش جو پھے دہ گیا تھا۔ ان کے قالو میں آگی۔ اس کے کیڑے اتا ریخے اور سامان تھیمیں لیا۔ دروئیش نظار و تا ہوا آپ کے گیا۔ اس کے کیڑے اتا ریخے اور سامان تھیمیں لیا۔ دروئیش نظار و تا ہوا آپ کے پاس بہنی اور صورت مال بیان کی۔ آپ نے فرما یا۔ میں حیران ہوں کہ اس گاؤں کو آگی لیسٹ ہیں کیوں نہیں لگ جاتی۔ آپ اور بات کر رہے تھے کہ وہ سارا گاؤں آگی لیسٹ

میں آگیا شعلے تمود ار مونے ملے گاؤں والے جان بجا کرجنگل کی طرت بھا گے۔ پکر آپ کی خدمت میں آئے۔ اور اپنے کئے بیٹنا دم ہوکر معافی کے فواسٹگار ہوئے آپ نے معات کیا اور گاؤں کی آگی بگے گئی۔

آپ ایک علب سماع میں تشراعیت فرما تھے وجد وسی میں آتے قریبے آپ کا سرتن سے جدا ہو گیا - بھرتن بھی غائب ہو گیا - چند لمحوں کک مفقود رہے بھروا پس عبلس میں آگئے اور اپنی حالت میں تشراعیت فرما نظر آئے محبس ختم ہو تی قرا کی شخص نے آپ سے پوچھا کر یہ کیا معاطر تھا۔ فرما یا معشوق کا نور عاشق کے قرر بہ غالب آگیا تھا۔ اس نے عاشق کے نور کو اپنے انوا دمیں بھیا لیا تھا۔

وفات كاوتت آيا- آب فوالول كوبلا ياادر فرما يا حافظ شراندى كايتمر فيها مو

مجت غیر نخوا هم که بود عین حفور باخیال توچرا بادگراں پرو از م

مشیخ سوند ما چهل زد نیارخت بست
سال وصلش سرورا ذروئ بست
گفت سوند ما متفی رسبر ویل
گفت سوند ما متفی رسبر ویل
محرم مشتماق - فرنسوا المحسنین

آپ صبح النسب عنی سد تقد ادر تر قدی سادات کی شاخ سے تقد آپ کانچوه سب جده اسلول سے حفرت سد ناحیین رضی الند عنہ سے ملتا ہے۔ محد سبد میرال جسکہ بن سد محر دوست سوانیہ بن سد قطب شاہ بن سد عبد الواحد بن سیدا حد بن سید المرسید بن سید نظام الدین سید عزیز الدین بن سیدشاہ تاج الدین بن غرالدین نوبهاله بن سید خان بن سید نظام الدین سید عزیز الدین بن شاہ نہ برسالا دیشکہ بن سید میرا حر زا ہد بن سید میں اس سید علی شاہ رہبر کا کی بن سید میرا میں میں سید میرا علی بن سید محر مدنی لقب جمیض بن سید طبی شاہ رہبر کا کی بن سید میرا میں الما قد بن سید میں بن سید میرا میں الما دین بن سید میرا میں الما دین بن سید میں بن سید میرا میں الما دین بن العالم بین بن سید میں الما میران رضی اللہ بن بن سید الما تھیں المام حسین رضی اللہ عنہ ۔

حصرت میران شاہ جمیکھ کی دالدہ ماجدہ بی بی ملکہ بھی مادات سے تقیں۔آپ کا سد ترب چندواسطوں سے شاہ زید سالار نشکرسے جا متا ہے صرت بمران عبکھ کے آباؤا جدادسے شاہ زید سالار نشکر پیلے شخص میں جو تر بنسے ایک زور دار نشکر سے کر مہندوت ان میں جہاد کے لئے دوارہ ہوئے اور بیال آکر سیوار نہیں قیام کیا و ہال کا

راجرسوان بڑے ماسدا در عصیل نے اس نے اپ کو خاز بڑھتے ہوئے شہید کردیا اپ کے صاحبزادگان نے جنگ شروع کی اور راج سبوا نہ شکست کھا کر جھاگ کیا۔ ان ساوات کوام نے بیوانہ میں قیام کیا حضرت سلطان شمس الدین التمش شہنشاہ دہلی آپ کی کوا مات سے متاثر ہو کر تو اپنی بیٹی سید شہاب الدین کے نکاح میں دے دی بیشا بالدین سیدز پر شہید کے بیٹے ستے۔ بہ خاندان دو لت اور ٹروت کا مالک بن گیا۔

تمرة الفواد کے موقف نے تھاہے کہ صنرت سید میراں بھبیکھ توسال کی تمر میں متیم ہو گئے تھے ۔ آپ کی والدہ ماجدہ نے آپ کی میرورش میں بڑا گہرا صدیب اورا خوندفر مدی مذمت میں نے گئیں جہال آپ کوظا ہری اور باطنی تعلیم ملی تحصیل علوم کے بعد آپ سید شاہ الوالمعالی حیثتی قدس سرۂ کی قدمت میں حاضر ہو کہ بعیت ہوئے اور آپ در جُر کمالات کو پہنے ۔

صفرت شاہ بھیکھ کاایک مرید ہوضے او ندہن میں دہا کہ تا تھا۔ اتھا قااس کا دس سالہ

یجہ فوت ہوگیا۔ اسی و قت صفرت شاہ اس کے گھرتشر لیف لائے اس نے مردہ بچے کو

ایک علیٰ دہ کمرے میں بند کر دیا۔ اور خود اور اس کی المید صفرت کی قدمت میں سرو قد

کھڑے ہوگئے۔ حب نک صفرت پروم شدا وران کے ساتھ بھالی کھانے کے دستر خوال

پر نہ بلیٹے کسی نے بچے کی موت کی اطلاع نہ دی کھا نا کھانے سے پہلے صفرت سیدمیراں

بیسکھ ہے اپنے مرید کو کہا کہ اپنے بیٹے کو لاور وہ بھی جارے ساتھ کھا نا کھائے اس نے

بیسکھ ہے اپنے مرید کو کہا کہ اپنے بیٹے کو لاور وہ بھی جارے ساتھ کھا نا کھائے اس نے

بیسکھ ہے اپنے مرید کو کہا کہ اپنے بیٹے کو لاور وہ بھی جارے ساتھ کھا نا کھائے اس نے

بیسکھ ہے اور ار فرما یا وہ جہاں ہو اسے تلاش کرکے لایا جائے۔ ہم اس کے بغیر کھا نا نہیں

کھا میں گے جنا نچر میز بان نے ساری صورت صال بیا ہی کردی۔ اور زار زار رونے دیگا۔

آپ نے فرما یا متم ارا بیٹا مرا نہیں سویا ہواہے ۔ اسے اعلیٰ کرلا و وہ اندر گیا۔ یہ کے کواٹیا یا

وہ اُٹھ کر با ہم آگیا۔ اور صفرت سید کے قدموں میں آگا۔ حاضرین میں ایک نفرہ بادیموں

گیا۔اس وا تعد کو دیکھ کم ہزاروں لوگ آپ کے مریدین گئے .ایک ہندوحس کا نام بیریہ تقا۔ وہ موضع بی بی لور رہتا تھا۔ اُسے سلانوں سے بہت دشمنی عتی وہ صبح سوریے کسی ملان كامة ديجينا بهي بيندنه كرتا تحاراتفا قاوه كسي رواني اورسركاري حكام س مقابد کرنے کے جرم میں گرفتار ہوگیا ۔ صوب سرحد کے حاکم نے اُسے موت کی سزا دی۔ چنانچہ دوسرے دن سر سند کے مازار میں اس کے بھانسی لگانے کا علان کیا گیا۔ چانچاك جيل سے يا ہرلاكر بازاد كے چك ميں بھانسى لگانے كے لئے جارہے تھے۔ داستے میں حصرت شاہ میران عبیکھ کی سواری ہو رہی تھی اُس نے ہے کو دیکھا قربیا ہیوں سے بھال کر آپ کے یاؤں میں جاگرا۔ اور رو روکر کنے لگا مجھے زندگی کی امیدختم ہو چکی ہے کوتوال میرے قتل کے لئے انتظار کر رہاہے۔ جلاد م تھ میں طوار مکیا ہے ابرارہاہے اورادك ميرے قتل كا تماشا و يھے كے لئے جمع ميں -اس مشكل وقت ميں الراتب میری مدد کریں تو میں کلمۂ تو حید ریاد کرملمان ہوجاؤں گا۔ آپ نے فرمایا خکر مذکر وتہیں مجر بنیں بولا۔ آپ یہ کد کرائی سوادی کو آگے مے گئے بیا میوں نے بیر برکو قتل گاہ پنیا دیا۔ ابھی اس کوقتل مذکیا گیا تھا تو کوقوال کونیا حکم بنہاکدی فی بی بورکے زمیندار کوہا سے در يار مين صاحركيا جائے وه وربار مين لا يا گيا توحاكم وقت نے اس كى سزائے موت معا کردی اس کو اس زاد کردیا گیا اور نیا لیاس بینا کولسے رخصت کردیا گیا وہ اُسی وقت حضرت شاه كى خدمت ميں ما عربوا كلمة ريس اورمر ريبوگيا -آپ نے اُس كا نام بيرشاه ركھا۔ ایک شخص آپ کی خدمت میں عاصر ہوا تاکہ مربد من سکے بیکی ول میں بیرخیال کیا كداري بركاب توقي ايم فراوزه ديس كے . حالا مكه يه خراوزوں كاموسمنهيں تقا حضرت شاہ نے اس کے ول کی بات نور باطن سے جان لی اور ایک فادم کو کہا کہ آج يت جرب كة ماك مي تصف خريد ذه اس تخف ك الخد مكا غفاد بال سے أعظا لاؤ-ادرائے کھلالاؤ۔سائل نے خوبدہ سے لیاا درسے دل سے مرید ہوگیا۔ ایک دانایک

بزار مارسوسنیاسی فقر ج مندو مفصرت میرال کی خانقاه یس مهان بن کرا گفتینکه آب کالنگرمندوسلمان کھ عیسائی سب کے لئے عام تھا۔ لگر کے ملازموں فے صفرت کی فدمت میں گذادش کی کرائے ہمارے یا س صرت ایک سرائلہ اورچندمی غلر وجدب اب كيا حكم ب آپ نے فرمايا آثاا ورجيني اور دوسري چيزي ميرے پاس اواور ايك بشے برتن ميں ڈال اور آپ نے اس برتن ميں مائة ڈالاا ورفرماياا برايك فقركو دودورو ثيال ايك ايك بإؤ فتكرا ورايك بإؤكهي ديتے جاؤ. نسبم التّدارعن الرحم پڑھ کر دیتے جاؤ۔ التدبرکت دے گا۔ فادموں نے تقسیم مثروع کر دی اور ایک سراد جارسوفير بيد عبركرا مظ - ابجى ٢ مّا ور هكر بافى بيع بعد نے مق كر ده كما كميك ا ایک بار حصرت شاه میرال مجیکی د بلی متهر میں نواب متوار زمان کے گر تشرایت فرماتے ۔ ایک فادم چند پان لے کواورائے تشریمیں دھ کہ اسپ کی فدمت میں لایا البيان ما عزي على كقتيم كئے مكر تبوار فان كو بالى مذديا - تبوار فان كے دل میں خیال از راکہ عدامعوم مجھے کیوں نظرا نداز کیا گیا ہے یہ خیال آتے ہی تشری سے ایک پان تود مخود اٹرااور متہوارخان کے ما تقدیس علا گیا۔ آپ نے فرما یا تہوارخان متمارى مراد بدرى سوكى وه أعما سرهيكاكرات كے قدم يوسف لكا۔

آپ نوماه رجب بروزا توار سلامات مي بجرى كو بديا بوئ تق اور پانچ دمفان ماسال مي بورا بور انتقال مهوا آپ ماسال مي جب آپ كا انتقال مهوا آپ كوقصبه كمرام بين د فن كيا كيا - آپ كے مربد نواب دوشن الدولا نے آپ كا روضهٔ مبادك تعرير دوايا - قرة الغواد كے مصنعت نے آپ كی تا دیخ و فات مثاه مجيكي مقبول خدا كے لفظول سے نكال ہے ۔

ہم بہاں وصفاحت کردینا صروری خیال کرتے ہیں کہ شاہ بیرال جیکھ کے بے شار طفاء سے بہال ان بزرگان وین کا تذکرہ کرنا مشکل ہے۔ تا ہم چند خلقاء کے اسائے

1.04

كرامى مجلاً بيان كرام مرورى خبال كرتے ہيں۔

اقل نشاه محد باقر قدس سرهٔ جوشاه الوالمعالى حيثى رحمة التدعليد كے فرز نلار مجند تھے۔

دوم د. شاه امام الدین موصرت شاه محد ما قر کے بیٹے تھے۔ مرحد شنزار میں اس جریب میں شاہر کی اقد کر دوسر سر میشر تھے۔

موم: شاہ نظام الدین جرحفرت شاہ محد باقر کے دوسرے بیٹے تھے۔

چارم رشاه محرجنهول نے صرت پرومرشد کی موج د گی میں ایک عبس ساع میں جان

دے دی۔

بنجم ديشاه عابد كومله والا - قدس سره -

سنت میرویدالمومی چنہیں ادادت توشاہ الوالمعالی سے متی مگرخرقهٔ خلافت آپ سے ماصل کیا تھا۔

بمفتم. شاه نعمت الله آپ بھی شاہ الوالمعالی رحمته الله علیه کے مرید عظے مگر خلافت شاہ

بھیکھے علی۔

بضم : شاه نورنگ قدس سره-

منهم : فواج منظفر أواب روش الدوكه وظفر خان بهادر ،

دسم دواب كمهارى خال ولدروش الدوله عنهول في الموركي سنبرى ويدنالي عقى

يازيم . مشخ امال المدرحة المدعليه.

دوانديم . بيد مرجوادر عمة النرعليم آپ شاه زبر شيد كي اولادس تق-

ميزويم: ميال التدينده رحمة التدعليه.

چهاردیم : پیرمحدنعیم رحمة التدعلیه

یا زدهم در مرتصنی کردیزی قدس سره

شانزديم ديد غلام اللدائب ما فظ قرآن كريم عقر

مفتريم ارميال محدثا بدرعة التدعليه أب يبلع مغليد فوج مي سرمزادي منصب

فالزعے۔ پھرتدک دنیاکر کے آپ کی فدمت میں آگئے برديم : شاه سجاول قدس سرهٔ نوردهم رعاجي بيت الله صاحب عال وفال تق آب في صرت بيكم قدس سرة كاوال دا تارىببت بدى كتاب كلى عتى. بستم در میال کرم علی جائب کے عرم دازاور بادان باک بازیں سے تق قام مرید آپ کی وساطت سے باریا بی باتے۔ آپ کامزار کم عقد میں ہے۔ بت ويم . ين محرجات مدفون سارنگ متصل انباله بست دووم افرا جرعبدالله ميرشاه جريي بي ليد كامتعصب مندو تقار مكراب كي نكاه سے مسلمان مواا ورصاحب کمال ہوا۔ بست وسوم ١- سناه عيدالرهن ببلول ور بست وجبارم : شاه عنائيت مدفون ببلول بويه ببت وسجم رمال علام محديس مال مك معتلف رس بت وسمع الشيخ موسى فال مدفون كم تقله-بستر دختم د- مولوى غلام حيين مرفون يحتى زر دسهار نيور بت وسيم الشيخ محدقدس سرة -بست دہنم ، عمد افضل ساما مذات بدر یائے جنا کوکشتی کے بغیر عبور کرتے۔ اور آپ کا يا وُل مجى ترية بوتا -سى تيم در ميال محداعظم جر لنگرا وروظا لف كي تقتيم برمقرر تق ی ویکم در سننے چھو جن کامزار صرت کے دا رہے میں ہے۔ سی دودم در میال محدطا بر قدس سرهٔ سی وسوم ارمیال محدانفنل فان اس کا مزار صرت کے دا زمے بیں ہے۔

سى دجيارم: كشيخ محدمنيرتناه آبادي رحمة النّدعليه. سى دىنچم برحيفر على خان ولد مرزا مار بيك كه پيد مغليدا فواج مي مفت بزارى منصب بيفائز تقے۔ سي شم وميال الذكنبش قدس سرة -سى دمفتم د. كيدمليم الله جالندهري قدس سره سى دشتم إصوني محدصد لن قدس سرة سي دينم . ميال محدموا د قدس سره ى چىلى استىخ جول قدس سرة يه عاليس فلفائ نا ندادوه تقيم سلسله حيّتيكوم افروغ مل ان د نول (موتف مفتی غلام سرورلا جوری قدس سرهٔ کے ذما رئم تصنیف بیں اکپ کے سجادہ شین صزت سيدبهإ درعلى شاه بين جرما مع صفات اورصاحب اخلاق حميده اورىنيديده بين آپ جا لندهر کے مجے النب سادات سے پ فارس الله ميشي قدس سره استان الا بري اور باطني كما لات كم الله مقا شاہ الجالمعالى حيثى كى فدمت ميں رباكرتے تھے۔سارى عمرعباذت ورياصت ميں گزار دى - آپ كى و فات ماه شعبان السال يمين مو فى تقى -زدنیائے دول چھ افردد کس رفت زدنیائے دول سیب بران علیق شنهناه عشق السيت تاريخ او ودماره عومب رميرال عيق

اسپ سائیس ماه صفر ساسالہ میں فوت ہوئے ایپ کا مزار مربین طیبیمی ہے اسپ ایک سونمنیس سال کی عمر میں فوت ہوئے تھے۔ بازیجلی زندہ دل شب ندندہ طار

بریبی د مدارل طب د مده دار گشت چیل زنده بخاست النعیم کن رئست عاشق سنی تاریخ او نیز یمیلی حبنتی مستقیم اسلام

ہوئے ادرا ہیں کی خدمت ہیں رہ کر کھیل کی واپس شاہجہاں آباد آئے اور قلع اور المع مع معد کے درمیان ایک عظیم الشان مدرسہ کی بنیاد رکھی مخلوق خدائی تقین میں معروف ہوگئے آپ نے علوم حقائی دمعارف میں کئی بند یا یہ کتا بیں تصنیف کیس بوالبیل کشکول علیمی تلک عشرة کا ملہ مرقع کلیمی حییبی ملند یا یہ تصانیف آج تک موجود ہیں۔ آپ کے مرید صاحب حال وقال ہوئے ہیں آپ کی لگاہ فیض جس مربع ٹی آپ کی لگاہ فیض جس مربع ٹی آگاہ فیض جس مربع ٹی آب جا دربیع الاول ملاکات میں فوت ہوئے ما

ہپ منا خرین شائے چنت

سنخ نظام الدین اور نگ آیادی قدس مرفید میں بڑے صاحب کوامت

بزدگ تھے۔اور جنربی مندوت ان میں سلد چنتیہ کی اشا عت کے سلد میں بڑا اہم کروار

اداکیا تھا۔کسی دو سرے چینی بزدگ کے لئے اپنے بزدگان دین کی فتو مات دبرکات

کے دروا زے منیں کھلے تھے۔ آپ کے آبائے کوام سلسلہ مہرددویہ کے پیرو کا دیمے

جن کی لبت سینے التیون صفرت شہاب الدین مہروردی سے ملتی ہے۔ آپ صفرت

مادر شاہ کلیم اللہ شاہج ال آبادی قدس مرہ کے مفصل حالات کے لئے تادیخ مشائخ بیشت ا دخلیت احد نظای

شاہ کلیم التّدجها نبادی کے مرید خاص اور خلیفہ اکمل تھے۔ آپ کے مریدوں کی تعداد ايك لاكه سي يمي زياده عقى وال بين اكترصاحب قال وعال عقر الن بين ظاهري و باطنی حس وجال کی دولت تقی آپ کی کوا مات اورخوارق کا ایک زمانه معرف ب كئى بارمردے زندہ كرنے كا وا تعد تھى آيا ۔ آپ كااصلى وطن مترتى مندوستان كے قعبله تصبات لورہ ہے۔ آپ و بال سے تعمیل علوم ظا ہری کے لئے دہلی آئے اوگول کی زبان سے شیخ کلیم الندجہال آباد کی تعریف شی ۔ تو آپ کے ہی درس میں دا خدر لیا مناقب فخریب کے مولف مکھتے ہیں کہ پہلے دن شخ اورنگ آبادی صرت سف كليم الندكى قدمت مي حاصرى كے لئے گئے تو محبس سماع برباعتى حضرت برمالت وجدطاری تقی اعلیار کے لئے یہ دروازہ تبد تھا۔ شخ اور مگ آبادی بھی صرت کے دروازے یہ جاکہ کھرے ہو گئے۔ آپ نے دستک دی محزت نے اندرے کسی فادم كومكم ديا ـ د يجيوكون ب إمريد درواز _ ديكوكروالي اكرع من كيا صنور كوني اعنبى وى اينانام نظام الدين بتاتاب فقراند لباس ب اورعامياً چرہ ہے۔آپ نے فرمایا اسے اندرے آومامزین محلس نے عرض کی صور اس بریکانے شخص کے آنے سے محلس سماع کا لطف جاتارہے گا۔ ایسے مالات میں جب صوفیاء ایک فاص مجلس میں محدوجد ورقص ہوں بیگانے بوگوں کاآتا مجلس کومکدر کردیتاہے۔ آپ نے فرمایا۔ یارو انجھے اس نام سے محبت ہے اور مضف بلگا منهي للما اس اينائيت كي فوشو آرسي سے اسے اندر ہے آؤ۔ آپ کو اندر لایا گیا حضور نے اپنے پاس عمارا وال بچھا تواسی دن سے نظام الدین کومحلس فاص کا حلیس اورسماع و وحد کا اتیس بنالیا۔وه صبح و شام آب کی مجانس میں دہنے لگے کھی کھی کتابیں میں بڑھ لیتے گرزیادہ تر سلوک جنتيكى منازل طي كرت نظر تصحرت شيخ نظام الدين ابتدائ كارمي صفرت كيم لله

کے مریدول میں فوق سوق ۔ آہ و فراری سکروسورش وجددیے قراری کی کیفیا دعجے قربہ ہے جرال ہونے اور دل میں بہتے کہ ان لوگوں کو کس چیز نے اس طرح بنا دکھا ہے کو ل سی چیز انہیں مدموش و بے خو د بنا دیتی ہے ۔ ایک روز حضرت مکیم اللّٰہ کی قدمت میں مدینہ پاک سے ایک الیا شخص آیا جو حضرت کی مدنی اجماب کے پیرومر شدھے کا مرید تھا۔ اس کی لگا ہیں صفرت کے چہرے پر بڑی ہی تھیں ۔ کم بیرومر شدھے کا مرید تھا۔ اس کی لگا ہیں صفرت کے چہرے پر بڑی ہی تھیں ۔ کم بیرومر شدھے کا مرید تھا۔ اس کی لگا ہیں صفرت کے چہرے پر بڑی ہی تھیں ۔ کم بیرومر شدھے کا مرید تھا۔ اس کی لگا ہی صفرت نے تھے سے بو چھنے لگے ۔ یہ کیا معاملہ ہے وانہوں نے تقصیلی طور پر آپ کوان ہمتیوں سے اسے بو چھنے لگے ۔ یہ کیا معاملہ ہے وانہوں نے تقصیلی طور پر آپ کوان ہمتیوں سے آگاہ کیا تو آپ کی عقیدت ارادت میں اضافہ ہو لگیا۔

ایک دن ایبا ہواکہ صرت ناہ مکیم الدین مجلس سے اُٹھ کہ گھر جانے گے۔ تو نظام الدین اور نگ آبادی اسطا ور آپ کے جونے لے کردر وازے کے پاس کھڑے ہوگئے اور آپ کے حونے لے کردر وازے کے پاس کھڑے ہوگئے اور آپ کے بائے رکھ دیتے آپ نے ہا بیت مجست کی ٹگاہ سے آپ کو دیکھا۔ اور فرایا۔ نظام الدین ہمارے پاس عوم ظاہری ماصل کرنے آسے ہویا باطنی۔ نظام الدین نے کھے کہنے کی بجائے سعدی میٹر اذی کا بیٹ فریڈ صاد

سپردم بتر مایهٔ نولیش را و دانی صایم کم وسبیش را

دیں نے اپاسب کھا آپ کے سرود کردیا ہے۔ آپ ہمارے کم و بیش کے مالات کو جانتے ہیں ، چواآپ کے سرود کردیا ہے۔ آپ ہمارے کم و بیش کے مالات کو جانتے ہیں ، چونکہ صرت شنخ کیلی مدنی قدس سرہ نے صرت بنا ہ کلیم اللہ جہال اوری کو مدینہ پاک ارتاد فرمایا تھا۔ کہ متہارے سلسلہ میں ایک شخص نظام الدین دا فل ہو گا۔ اور بہشعریش سے گا۔ اور بہشعریش کلیم اللہ تے مالاند تے سناتے ہی اپنے پرکافر مان سامنے دکھا اورا تھا کہ گلے لگا لیا اور دوسرے روز منعرسنتے ہی اپنے پرکافر مان سامنے دکھا اورا تھا کہ گلے لگا لیا اور دوسرے روز

بعیت کرلیا۔ شب وروزروحانی تربیت دی تیمبل نک پنجا دیا۔ آپ فرقروفلافت دے کرملک دکن کی طرف بھیج دیا۔ جہاں آپ کوبٹری قبولیت ملی۔ جوق در ج ق طا لبان حق پنجیاں تو ج ہوگئے اور بے بیناہ مخلوق آپ کے ملقۂ اوادت میں آئ فراب نظام الملک آصف جا ہ جوفواب غاذی الدین صنف منا قب فخریہ کے داوا مقصب سے بہلے آپ کے مربد ہوئے۔ اورا نہوں نے المہرا اللساکین کے نام سے کتاب کھی۔ اس میں شیخ نظام اللہ بین اور نگ آبادی کے تفصیل حالات مقے۔ کتاب کھی۔ اس میں شیخ نظام اللہ بین اور نگ آبادی کے تفصیل حالات مقے۔ اس میں سی میں فوت ہوئے۔

پواز دیا بعند دوس برین رفت نظام الدین دیی پاک مجورب وصالش طرفه سیخ العالمین است د مگرفت رمانظام الدین مطلوب

سال وسلش سليم اعظهم گو بارد نگر سليم سشيخ کلال ا د ال

آپ صرت شاہ جیکے حثی کے شاه بہاو ل بر کی جینی صابری قدس مرہ انظادم سے افغان قرمے تعلق ر کھتے تھے اور جالندھر میں دہائش تھی ۔ آپ نے ظاہری علوم سیدعبدالرشدسدكبير اورسدعتین الندمالندهری سے ماصل کئے۔ آپ کالباس قلندرانہ تقام صرت شاہ بھیکھ کی وقات کے بعد آپ لا ہور آگئے۔ اور شیخ شاہ بلاق قدوری لا ہوری سے نیف کا مل ماصل کیا۔ آپ نے اپنی عربی نوے علدی تعدیقت کیں۔ ان می فوائد التاريشرح ديوان فوا جرها فطابط ي مشهور مومئين-آب كاا پنا بھي ايك ديوان ہے جوہبت اعلى شغوول ريشتل ہے . آپ مولوى جان محدر تركى جوبات عالم اجل تے على وعظ كرت رست تق ابنول في الذي كتاب من أن كي ضيلت اور كرامات كا ذكركياب ہے کے شاکردوں میں سا چندلا دراور عظمت خال برکی صاحب دیوال ہوتے ہیں تید علیم النرجالدهری عبی ظاہری علوم بن آپ کے شاگروستے۔ آب كى دفات سكالم بجرى من بوئى اورآب كامزار يدانواد جا لندهر كى ديدگاه -4012

چوازهکم تصن دخت مفریست ز د نیاشاه عالی مشاه بهلول مورتاج عشق آید وصالت دگرمحن دم نامی شاه بههلول

0116-

اپ صفرت جمیک حتی کے مریداور خادم شاہ لطف الدر بنی قد س مرؤ: عقد ا نبالہ ہیں رہتے تقے ابھی بچے ہی سے توصرت شاہ محیکہ حیثی نے ایپ کو اپنی بودش میں سے لیا دین اور دینری علوم سکھائے آپ نے ایک کتاب تمرۃ الفواد کے نام پر مکھی حب میں شاہ جھیکھ کی کا مات اور مقامات کا ذکرے۔

ای بروز مفته مین فرادجا لندھرے ایک المرادجا لندھرے ایک کامر ادجا لندھرے ایک میل کے فاصلے پہنے ۔

ت د چ لطف الله بالطات آبه بد فوت خود لفرب حق ت بول کن د قم ا بل نظر تا ریخ ۱ و باد دیگر کن بیسان فیض رسول باد دیگر کن بیسان فیض رسول

آپانے وقت
مولانا فخرالدین فخرجہان شاہ جہال آیا دی جنی رحمت الدیما او لیاراللہ
عالم دین تھے۔ اور خنیتہ سلسائے بہت بڑے بینے تھے۔ بینے نظام الدین او لیاراللہ
کے فلیفہ بھی تھے اور بیلے بھی تھے شریعت کے علوم اور طریقت کے دمونے وا تف تھے
ظاہری اور باطنی کما لات میں بے مثال تھے۔ والدی طری سے ہپ کاسلسائہ نسب
بینے شہاب الدین مہروردی سے ملتا تھا۔ اور والدہ کی طری سے بندہ نوازید محر
گیبو دراز سے نبدت تھی آپ یا پنج بھائی تھے۔ محد عماد الدین۔ غلام معین الدین۔
فلام بہاوالدین ۔ غلام حکیم الندا ور پانچوال فود محد فخر الدین فخرجہان تھے۔ نوا ب
نظام الملک غازی الدین فال منا قب فخریہ بین محصے بین کمرولانا فخر الدین احماہ باد

یں پیدا ہوئے۔ شخ نظام الدین ابنیں شخ کلیم اللہ جہاں آبادی کی فدمت ہیں لے گئے

آپ ابنیں دیکھ کر بہت فوش ہوئے اور اپنے سب نہ عالیہ کا ایک خوفہ تیار کیا اور

مولانا فخر الدین کے نام مخصوص کر دیا جس شخص نے سب سے پہلے فخر الدین کے حق

میں لفظ مولا نا کا استعمال کیا وہ شخ کلیم اللہ تقے۔ آپ کی عرسا کھ سال ہوئی وصور

اکرم صلی اللہ علیہ وہ الموسلم نے فواب میں تشریف لاکر قبیہ ویکے یا پنج وائے عطا

ذرائے۔ آپ بیدار ہوئے تو وہ دانے آپ کے ہاتھ میں ہوجود تھے۔ آپ کے والد

شخ نظام الدین صبح آپ کے پاس تشریف لائے اور دات کی خواب سے پہلے واقف

شخ نظام الدین صبح آپ کے پاس تشریف لائے اور دات کی خواب سے پہلے واقف

شخ فرمانے گئے برخود دار سیدکو نین کی عطا کردہ چیزیں اکیلے نہیں کھانی چا ہئیں۔

ہے۔ دوزی کمان یہ کہ نہ تنہ نے وری

چانچرمولانا نے ان پانچ دانوں ہیں سے دددانے تو خود کھا گئے اور باتی اپنے والد کی خدمت ہیں بیش کر دیئے۔ صرت نظام الدین اور مگ آبادی جب فوت ہوئے قام کوئے تو مولانا کی عمرا مطال تھی آپ نے نظام الدین اور مگ آبادی جب فوت پھیل سال کی عمرا مطال تھی آپ نے نظام کا ورباطنی علوم پڑھانے ہیں محروت بھیل سال کی عمری د بلی تشرلیف لائے۔ نظام کی اورباطنی علوم پڑھانے ہیں محروت ہوگئے۔ چر دہلی سے پدل میل کر الجمیر نظر لیف حاض ہوئے و ہاں سے پاک بین پہنچے۔ اس سفریس شنخ نوائ محر نہا مان فی دچشتیاں ایر کلوا ور نوشخال آپ کے ہمراہ تھ وہاں اس سفریس شنخ نوائ محر نہا من فی دچشتیاں ایر کلوا ور نوشخال آپ کے ہمراہ تھ وہاں کی ذیارت سے میشرف ہوئے۔ و ہاں سے لا ہور آسے میرموم اللہ نفشنبندی سے ملاقا کی ذیارت سے مشرف ہوئے۔ و ہاں سے لا ہور آسے میرموم اللہ نفشنبندی سے ملاقا کی ۔ کچھ عوصہ صرف ہوئے۔ و ہاں سے لا ہور آسے میراد پرا حکا من کیا۔ اور بڑا ہی نیش ہوری میں گئے بخش ہوری میں دیار دو ہاں کیا۔ اور بڑا ہی نیش ماصل کیا۔ لا ہور کے بزدگان دین کے دو مر سے مزاد ادات کی بھی ذیارت کی اوروہ ہی ماصل کیا۔ لا ہور کے بزدگان دین کے دو مر سے مزاد ادات کی بھی ذیارت کی اوروہ ہی ماصل کیا۔ لا ہور کے بزدگان دین کے دو مر سے مزاد ات کی بھی ذیارت کی اوروہ ہی ماصل کیا۔ لا ہور کے بزدگان دین کے دو مر سے مزاد ادات کی بھی ذیارت کی اوروہ ہی ۔ ماصل کیا۔ لا ہور کے بزدگان دین کے دو مر سے مزاد ادات کی بھی ذیارت کی اوروہ کی اوروہ کی کئے۔

مناتب فزيه مي لكها ب كم مولانا كوصرت خاج ندرسبل من في رحينتيال

مهار سترلف ، کے علاوہ سیکر وں خلفاء ہیں۔ خیانچہ شاہ عید التدرشاہ ظہوراللہ مولدی روح الله رسيداحد شمس الدين - بديع الدين - مولوي فريد مولوي ليم مولوی مکوم مولوی فریدالدین ثانی مولوی روسش علی مولوی حس محد مولوی نتج الله صوفى مارمحد بشاه محد ببدار - حاجى محدواصل سيدمحد مولانا ميرصنيا والدين يستد في الدين مست يشخ كل محد ما فظ معد الله وشاه مراد مشنخ محدمرا ويشخ محد ما ف مولوى علا كالدين - سينخ صنيا والدين - مولوى محرصالح - عبدالوماب بريكا بنرى مُرقطب الدين - ما جي خدا نخش اورمُدغوث كرت يوري مُحدغوث صاحبرادي اور دوسرے کئی علماء دمشائخ آپ سے ظاہری اور ماطنی خلافت سے سرفراز ہوئے تھے إن خلفاء میں حضرت شاہ نیاز احد بر مدی بڑے ہی عبوب اور مرغوب خلیفہ تھے۔ صونی بادمحدایک مغل تقادہ حضرت سلطان شائخ نظام الدین قدس سرہ کے مزار ہے ہی رستا تھا۔ ایک بار دہ اتنا بیمار ہوا کہ جینے کی اسمید مذرسی ایک دل کئے لگاکاش مجمع اتنی ہمت ہوتی تو میں مولانا فخز الدین کی فدمت میں ماضر ہو کہ ا بنی صحت کے لئے دعاکرا آیا۔ رات ہوتی تو اس نے خواب میں دیکھا کرولانا فخوالات غودتشرلین سے آئے ہیں آپ نے فرمایا یا دمحد تہیں آنے کی طاقت ندیقی سم خود آ گئے۔ جاؤ میں سے تندرست ہوجاؤگے ۔ میں اصاتو وہ تندرست عقار چندون لعد خنکرید اداکرتے کے لئے وہ مولا ٹاکی خدمت میں حاضر ہوا لوگ بیٹے ہوئے تھے وہ ساری بات کہنا جا ہتا تھا کہ ولانانے اشارہ کرکے اُسے منع کردیا۔ ایک پیرزادہ گنگا جنا کے درمیان ایک گافرل میں رہتا تھا۔ یہ گاؤں و ہی سے چالیس میل کے فاصلے پر تضا۔ایک دن دل میں سوچنے لگا اگر مجھے کا موں سے فرصت ہوتی توہیں د بلى جاكر حضرت مدلانا فخر الدين سع بعيت كدتا -كيا بى اليمي يات بوكم مولان كمي ہمارے گاؤل تشرلیف ہے آئیں - اتفاق کی بات الیبی ہونی کہ مولانا اُسی دن اُس

کے گاؤں پہنچے بیرزادے نے دیکھا تو آپ کے قدم چم لئے اور مرید ہو گیا۔ بعد میں اس نے لوگوں سے سُنا کہ صربت مولانا نے وہلی سے باہر کھی قدم نہیں رکھا یہ محصٰ ان کی کوامت تھی ۔ ان کی کوامت تھی ۔

قاضی الورضاسوی بت میں دہتے تھے۔ انہیں تپ دق ہو گیا جب میخار نو ماہ کک مذاترا تواپنی زندگی سے مایوس ہو گیا۔ انہوں نے کسی طرح اپنے آپ کو حضرت مولا تا فخرالدین تک بہنچا یا۔ آپ نے قاضی صاحب کو اس حال میں دیکھا تو بڑی مجت کے ساتھ اُن کو گلے لگا یا وہ اُسی وقت صحت یاب ہو گئے۔

پھاؤں میں سے دس آدمی ایسے تقے جواس کے دشمن تھے۔اوروہ اعلانیہ كهاكرت عظ كه عم اب كوقتل كرديك جب يرخرولا ناكوبني توات في تحمي پداہ ندی ایک دن اپ حضرت خاج قطب الدین بختیاد کا کی کے عرس برتشرافید الے كن على ساع كرم عنى ده دس ادمى قاصى عيدالدين نا كدى كى ديوار بيع قدار ك بايد بند عتى - چرال ال كر بيي كنه اور باندا وازس كاليال دينا شروع كردي حضرت مولانا کے ایک خادم بدیے الدین اعظے اور آپ کی خدمت میں عرض کی یا صرت آپ کب تک انہیں نظرا نداز کرتے رہی گے۔ اِن بدمختوں کی باتوں سے ہمارے دوق سماع میں خلل آتا ہے۔ صفرت مولا نانے یہ یا ت سی کوائی کی طرف ایک تیز نظردالی وہ بے ہوش ہوکرد اوارسے ذیبی برا بوے - اور محلس میں آگر وجد کرنے گئے آپ کے قدموں میں سرد کھ دیا اور آپ کے مرید ہوگئے ۔مناقب فخرید کے مصنف نے یہ واقعہ بیان کرنے کے بعد پر شعر مکھاہے۔ نگابت دشمنان را دوست کرده اثر بادر رگ ودر پوست كرده

ایک دن اولانا کے مریدرقص و وجدین مصروف عقے سنہر کے دو بدمعاش

مجلس مین آپہنچ اور کہنے مگے ان برعتی کچی کود کھیو کہ کس طرح ناچ دہ ہیں ہیں بات صفرت مولا نانے سن کی ۔ ایک تیز نظرے اُنہیں دیکھا تو دو نوں مجلس میں ناچنے مگے اپنااسلحا ورکڑے اٹارکر قوالوں کو ا نفام دے دیااور صرت مولا ناکے یا وُں کو جُرم کرم ید بنانے کی درخواست کی ۔ آپ نے فرما یا ہم جیسے کچوں کے ساتھ رقص و سرود کر مالا ورم ید ہونا اچھا نہیں ۔ انہوں نے دو ناسر وع کر دیا گتا خی کی معافی مانگی اور مرید ہوگئے ۔ مولان فخ الدین نے اپنی جیسے قوالوں کو دس دینا دو بینے اور ال کے مرید ہوگئے ۔ مولان فخ الدین نے اپنی جیسے قوالوں کو دس دینا دو بینے اور ال کے کہا ور اسلے والیس لیا۔

ایک دن مولانا اپنی فانقاہ کے جوزے پر بیٹے بڑھارہے تھے ایک پھان ما تھ ای چیری سنے آئیا ورسلام علیکم کھنے کے بعد کنے لگا۔ تولوی صاحب آپ اتنے عالم فاضل ہوتے ہوئے بھی سماع سنتے ہیں یہ کس طرح منارب ہے آپ نے فرمایا میں تصور وار ہوں آپ میرے لئے د علئے خیرکریں . یہ بات سنتے ہی اُس سیان نے آپ پرھیری سے علد کرد یا مگر آپ زخی نز ہوسے۔ وہ دونری بار برطا مگرولانا كے ايك خادم نے اس كا باتھ كير ليا - مولانانے اپنے خادم كو جروك كركها اس كا الم تقد محيورٌ دوا وراياس ميارك أس ك الك حيكاكر فرما ياكه حاصر بول ميرايد بيكار مركسي كام كانبين اس كوهرى سے كاشد دو ده تفض شرمنده بوگيا اور چلاگيا -دوسرے دن صفرت مولا نا الح البنے طربی تشرافیت فرماتے. اندرسے میتنی ملی ہوئی عتى كرائسى بدىخت نے دروازہ كھٹكھٹا يائس كے سائة دواورساعتى بھى تھا بنول نے وویارہ دروازہ کھٹکھٹا یا تومولانانے فرمایا جولوگ دروازے کے باہر ہیں انہیں ا ار آنے دودروازہ کھلاتو وہ شخص اپنے ساتھیوں سمیت آپ کے سامنے کھوا ہوا۔ مولانا اپنی ما دت كے مطالق اس كى تعظيم كوا مے آپ كے پاس عتنے جھوٹے بڑے تھے وہ بھى تعظیماً اکھ کھڑے ہوئے آپ کومعلوم ہو گیا تفاکہ وہی دشمن اپنے ساتھیوں کے ساتھ

مجھے قتل کرنے آیا ہے آپ نے ان برایک تیزنگاہ ڈالی یو بنی تدنوں برنظریں بیٹریں دہ دمین پر کر بیٹے اور ترشیخ کے ۔ وہ مجھیلی کی طرح ترش برسے سے اُس کے سرفرش کی امنیٹوں سے لگ کر ہولہاں ہو چکے سے ۔ کچھ و قت گز را تو ہوش میں آئے۔ بعیت ہونے کی درخواست کی ذار زار رونے گئے۔ مولانانے انہیں معاف تو کو دیا لیکن بجت مذکل درخواست کی ذار زار و نے لگے۔ مولانانے انہیں معاف تو کو دیا لیکن بجت مذکلیا و دیکھ افقدی دے کو انہیں رقصت کر دیا ۔

منا قب فخرید میں یہ وا قعر کھا ہو اسے کہ ایک دی حضرت سلطان مثا کے نظام الدین اولیار کے مقرے بیمیس ماع کرم بھی مولانا فخرالدین بھی اس مجلس میں تشرکیف فرما تھے۔ اُس مجلس میں ایک الیا نوجان تھا جس کی داڑھی اور مو بھیں مذھیں وہ حالت وجد میں تر پ ب مقاا چانک قوالوں نے کسی ضورت کی بنا پرگانا موقت کر دیا اور سماع کی مجلس ضم ہو گئی۔ لوگوں نے دیکھا کہ وہ فوجان مردہ پڑا ہے اور طفنڈا ہوگیا ہے تمام اہل محلس اس کے گر دجم ہوگئے دیکھا کہ اُس میں کوئی موکت مولان اور میں ہا ہوگیا ہے تمام اہل محلس اس کے گر دجم ہوگئے دیکھا کہ اُس میں کوئی موکت مولان کے قدموں میں گربیا ہے تمام اہل محلس اس کے گر دجم ہوگئے دیکھا کہ اُس میں کوئی موکت مولان کے قدموں میں گربیا ہے تکا میرا تو ہی ایک بیٹیا ہے اُس نے اِس مالت میں جان دے دی ہے میں گربیا ہمنے لگا میرا تو ہی ایک بیٹیا ہے اُس نے اِس مالت میں جان دے دی ہے اب میں ہو جوان نے ابھی اپنی جان عزیز الشرکے حالے نہیں کی تم تسلی دکھوا ور کھر آپ اس فوجان نے ابھی اپنی جان عزیز الشرکے حالے نہیں کی تم تسلی دکھوا ور کھر آپ اس فوجان نے ابھی اپنی جان عزیز الشرکے حالے نہیں کی تم تسلی دکھوا ور کھر آپ ان فی ایک میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالی میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کی فرایا کہ میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کی فر میں کا میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کی فر کو میں کی کھوں کو میں کو کو کھوں کے خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو فر میں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو کو کھوں کے خوالوں کو فر ما یا کہ میں خوالوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے خوالوں کو کھوں کو کھوں

یک لب لعل توصد جان مید مد خفنسدا ساا ب حیوان میدمد مرده گر باشم بحسالم باک نمیت جان بوصل خواسیش جانان میدمد

جب قوالول نے بیا سفار پھے تواہل میس جس وخروش میں اسکے چند

لموں بعدائس فرجان میں حرکت پیدا ہوئی اور اُس نے وجد کی حالت میں زمین پہ بیٹنا متروع کر دیا کھے دیر لبد ہوش میں آگیا۔

ایک شخص مولوی مرم نامی سماع کے معاملے میں مولانا کورو کا کرتا تھا ایک ون عین عبس ماع میں مولانا سے بحث کرنے کے لئے آگیا ۔ مولانانے ایک تیزنگاہ سے اسے دیکھا یہ لکاہ مذیخی کو یا ایک تیر تنا جومولوی مکرم کے دل میں بیوست ہو گیا۔ وه ب اختیار و حدیس الی اور رئیصا پیاها نا محبور کر سعبت موگیا اور دل و جان سے طرابقت میں معروف ہوگیا۔ ایک وال وہ حضرت کے سلمنے عاشقاند نعرے مارا ما تقااوركمدر با تقالوگو و كليومولوى كى ايك نگاه تير في محتسب كوشميد كرديا بي مولانا نخزالدین نے اس کی متانہ باتیں ٹنیں اور مسکراتے رہے ۔ ایک دن صفرت مولانا نے ابتدائی کتابیں پڑھنے والے ایک بچے کو مولوی مرم کے حوالے کردیا اورار شاد فرمایا اس بيچ كوعلم صرف ردها بين اوركتابين مزان العرف يا دكرا دين جو نكه مولوي مكرم عنن اورمبت كى وجر سيسبق برهاني سيعربهو چكے عظم آپ كياس مكم يران موسة با دل خواسته دوتين دن تك اس طالب علم كوري طايا -تمسرے دن اُس لوٹ کے نے صرب زید عمرا پڑھا ۔اس نے اسادسے بچھا كرزيد قے عرکوکس گناہ پر مارا تھا۔ مولدی مرم نے کہا کہ بابادین کے معشوق ہے گئاہ عاشقول كومارت مى دہتے ہیں بركم كركتاب كنوال ميں پھينگ دى اور ليوي سر سے اُتارکہ ناچنا سروع کر دیا اور بے ہوش ہو کرزین ریگر بڑا۔جب یہ خرمولاتا فخزالدین کو پینچی تو آپ نے فرمایا مولوی مرم کو کھینچ کرمیرے پاس لا ڈ جب وہ ہوش یں آئے تومولا نافخ الدین نے فرما یاکم دوی صاحب عزب و ید عمرا کے لفظ سے یہ حالت ہوگئی ہے۔ مولوی مرم نے عرض کی صرت لس اس میں نے بچے کودو دن من پڑھایا تومیری یہ حالت ہوگئی ہے ایس بھے معاف فرائیں۔اگر بھے تتل بھی

کردیں تومی مرف و نونین بیا صاف گاء مولوی طرم چنددن صرت مولا نافخرا لدین کے در تربیت رہ تو کا ملال وقت سے ہوگیا۔

ایک بادیولوی محرم الدا یا دیے دارو خدرید محرفان کو ملفے کے لئے الدا ہا واکئے
ایک دن الدا ہو میں محیس ساع گرم بھتی مولوی مکرم وجد کر رہے تھے کہ ا جا کہ الدا ہا د
کے قاضی کا د ہاں سے گزر مہوا یولوی مکرم کو اِس حالت میں دیجھ کر کہنے لگا۔ یولوی کرم
کوکیا ہوگیاہے کہ اس طرح ہل رہا ہے اُسی رات قاضی اپنے گر میں سوبا توحشرت
مولانا فخزالدین کی شالی صورت اُس کے سامنے اوئی آپ نے قاضی کو لیترسے اٹھا کرنین یہ دورے مالا اور فرما یا لے نالیکار قاضی تم میرے مردوں کو الیسے لفظوں میں یا دکرتے
ہوجی سے بے ادبی ہوتی ہے ۔ قاضی صح کے دقت اٹھا توا س کے بھی طرت بھو ڈالکلا ہوا تھا ۔ دہ اُس کے دورے دن رات تھ پتا جب اس کا کوئی علاج نہ ہوسکا تو مولوی کرم کی خدمت میں حاض ہوا اور معانی ما نئی بھرمولوی کرم کی دعاسے اُسے شفا ملی .

مولانا فخزالدین کے فلیفرها جی احد مدینه منوره میں رہتے تھے ایک دات خواب ہیں مطرت مولانا فخزالدین کے فلیفر ماری میں دیکھا آپ نے ماجی احد کو حکم دیا کہ وہ مولانا فخرالدین سے معنوت کے دیا کہ دیا گاہ میں دیکھا آپ نے ماجی احد مدینہ منورہ سے بیادہ چل کردہلی پنچے اور بعیت سے مشرت ہوئے۔ بھرظا ہری اور باطنی کما لات ماصل کئے۔

مناقب فخرید کے مصنف کھتے ہیں کہ ایک و فعہ مرسے ہاں بیٹیا پیدا ہوا ہیں نے صفرت مولانا فخرالدین کی خدمت میں خلاکھا اور بیٹے کانام رکھنے کی التجار کی آپ نے جواب میں مجھے مبادک کھی اور نام نہ تبایا ہیں سمجھ گیا کہ میر میرا بیٹیا زندہ نہ رہب گا۔ پہنانچہ وہ ایک ہیں ہیں کہ میرا ایک بیٹیا وہ ہا کے مصنف کھتے ہیں کہ میرا ایک بیٹیا ہو الدنامی مقاوہ بھی تین سال کا مقا کہ سماع کی حالت ہیں و جد کرنے مگتا۔ وہ بیجار ہوا تو بیل نے ضراب کے صفرت مولانا سے ایس کی صحت کے لئے دعا مشکو ان آپ نے فرمایا۔

اس د فعد شفا پائے گا۔ وہ تندرست ہوگیا۔ گرایک سال بعد چیک کی بیاری سے فوت ہوگیا۔

ا کیے عرس رد دہی کے روساء جمع تھے ۔ حصرت مولا نا فخرالد بن نے علب سماع موقدت كرك ما قطرعيدلقا درقادرى كوفرماياكم مجه تعييده برده كے چندا شارانا واس نے چنداشفاریٹھے دقت اچھا تھاساری محلس میں جوش وخروش بریا ہوگیا اور ہر شخص د جد کرنے لگاکئی لوگ د ہا و بی مار کرروتے عقے اور کئی زمین بیرو تے تھے بہت ہے لوگ اپنے عال سے بے عال تھے۔ا تفا قامیر رسی جوسخت بیار تفارو تارو تا حضر كىسامخ الى اورمال بيان كياآب في أس بدتوج فرما في تواسى وقت تندرست بو گیا۔ایسامعلوم ہو تا تفاکر کیجی اس کو بیماری تفتی ہی نہیں مو نوی محدروش علی اور کسید محدم زاج نواب روش الدوله کے عزیز تھے اُسی دن آپ کے مرید ہوئے۔ حضرت مولا نافخ الدین کی ولادت المسلام بجری میں ہوئی اوران کی و فاست ، جادی الثانی موالم ہجری میں مونی -آپ کامزاری افوار د بلی میں ہے - مولوی مالح د مادی نے آپ کی تاریخ و قات لفظ علام حین سے نکالی ہے۔ مشه كونين فخ الدين اللام كرذاتش الدى راه لعيتسين لود بوحبتم سال ترحليثس خرد گفت بگومعتبول د نیا فخز دبن لود

ماد ، حضرت شاہ فخرنے اپنی گرال قدر نصافیف نظام العقائد درمالم رجداد وفخرالس می علم عفائد صرت غوث الاعظم کی کتاب غفیۃ العالمیں کے لیمن مقامات کی تشریح اور ملسلہ تینید کی نسبت سید ناعلی کم اللہ وجہ سے تابت کی ہے ،حضرت مولانا فخر الدین کی الی تصافیف کے علادہ دباتی ماشد المعظم و کھیں،

سید علیم اللّه بن سیر عتبی الله چشی جالندهری قداس مره ایس مادات گرانے سے تعلق رکھے تھے۔ آپ کا سٹج و نسب زید بن صن رضی الله عقہ سے مقاہب آپ شاہ الوالمعالی قدس سرہ کے مرید تھے بھا ہری علوم میں کمال حاصل کیا۔ اور علما، وقت میں مماذ ہوئے آپ کی تصانیف میں انہاد الا سراد سٹر ج بوتنان سعدی نوہ شالکین شرح اخلاق نامری۔ زیدہ الروایات نشر الجوا ہر جوا ندر سرجان کا فارسی ترجمہ ہے جس میں بلند پایکتا ہیں یا دگار زمانہ ہیں بجین میں ہی صفرت شاہ الوالمعالی حیثی کی فدمت

شاه فخوالدین کا زمامة محصول کی بربریت کا ذما شرعقا پنجاب کے مسلمان کی وں کی تلواروں کاجیارہ بن چکے مقے آئیب کو اس بات کا بے صدصدم مقطا- آپ نے کئی بارمغل درمیار کو ال مظام کی طرف توج دلائی مگر مغل فرما فرواؤں کی عیبائتی۔ نما تفاتی اور نا ابلی کی وجے سے حالات کو درست مذکیا جا سکا د باتی حاشیہ انگا صفح پر،

یں رہنے گئے نظے گر بڑے ہوئے تو آپ کوسید میراں جبیکھ سے خرقہ خلافت ملا۔ آپ کی سادی عمرطلبا کی تعلیم اور خدا بین کی تنقین میں گز دی آپ کا شعری مذاق بڑا بلند تقااور شعرفاص انداز میں کہتے تھے ہم آپ کی ایک عزل کا مطلع و مقطع دیتے ہیں۔

> یادا زخلوت گهر قدسی عیا ن تاخت. تبغ استفنا بگردن مائے اعتباد آخته

مقطع : - اذ تو نهائے و شکریبال گا علیم بچوسخ افردہ گا ہے چول مک بگداخت

آپ کی کرامات اسرار تعلیم مولفہ شخ عبداللہ قدس سرؤ بین کمڑت سے بیان کی گئی ہیں مگریم بیاں آپ کے تصرفات کا ایک واقعہ بیان کرتے ہیں۔ آ دین ہیگ فو مبدار دو آبہ مبال تدھر کے ذما نہ میں ایک شخص صدیق بیگ کو تصبہ نور محل کا حاکم بنادیا گیا۔ اس نے نور محل بنجتے ہی سب سے پہلاا قدام یہ کیا کہ ایک سید جو جا لندھر کے ساوات ہیں سے تقالی تمام جائیداد ضبط کہ لی ۔ اور سائقہ ہی تیس رو یے جرما نہ بج طلب کر لیا اس سے نصرت شاہ علیم اللہ کی فدمت میں حاضر ہو کر سفارش کی اشد عالی اسے تا ما کم نور محل کے نام ایک سفارشی وقعہ کھیا۔ گر حاکم نے قبول نہ کیا اور بڑی ہے بودہ با تیں کمیں۔ دو سرے ہی ون آ دینہ بیگ نے اس حاکم کو کسی بیانے جرم بی مول یہ کی مقرر کرد یا گیا۔

دلقيه حاشيه) آپ نے معامترے کی اصلاح کی ہے حدکوششیں کیں اوران کے ترات بھی دہ تد ہوئے۔ آپ نے ادباب علم کی ایک ذہود مت طیم تیار کی حس نے سلساد حیثیتہ فخرید کو ملک بھر میں بھیسلا دیا ۔

آپ بائیس جادی الاقل الماله کو پیدا ہوئے اور سول اصفر سنالہ کو فوت ہوئے۔ آپ کامزار جالندھر شہر میں ہے۔ آپ کے مزادیر آفقا ب سیشنیہ سے ناریخ کال کر سچر ریکھی ہوئی ہے۔

صاحب صدق وصفا خيرالانام ماحب صدق وصفا خيرالانام نيض ديداداست توليدكش عيال سال ترحيلش بي سفيخ الكرام سال ترحيلش بي سفيخ الكرام

آپ حضرت ولانا اب مفر المين المي كے خليفه اعظم تقے حضرت مولانانے جوا نوابات اورالطات آپ كوعنايت فرائين ا بنے کسی دوسرے فلیفہ کو نہیں دے سکے مناقب فخریہ میں لکھا ہے کہ حفرت سننے نور محرص تناه فخ عالم كالشب وروز كي عليس محلس ا ورخاوم خدمت تع. ابتدائى دوريس آپ نے ايك د ال صرت خواج نور محدكو فرما يا تقاكم نور محد-الله كي خلوق ایک دن تھے سے بہت کھے عاصل کرے گی۔ ہمپ کود ل ہی دل میں خیال ہیا۔ کمیں تر الك ملين اودكمترين وروليش بهول خطريني بكار من والابعدل حس مقام كا حضرت ا شارہ کردے ہیں مجھے کب نصیب ہوسکتا ہے میکن ایک وقت آیا کہ ہزاروں طالبا عق آپ کے دروازے پر کھاے رہتے تھے اور معیکو وں انسان آپ کی و ساطت سے فدارىدہ ہوگئے آپ كى كوامات كاحدوشارىنى آپ كے ياس وشخص جا آاس كے دل میں جو کھے ہونا آئے خودبان فرما دیاکہ تے سے چراس کا جواب بھی عنا بیت کرتے تے ہے کادادت مندوں سے ایک تفض مولوی فلام حیبی تھے ج آ بے گھر

سے ایک سومیل دوررہے تھے۔ فرت ہو گئے تو بوگوں نے دیکھا کہ صرت فواج اور گئے۔ ان کے جانے میں شریک ہیں۔

ا مي شخص دېلي کا بهت برا سر دار تفاره و دل سے نمالف تفاعمرا کيد ول وه مولانا فخزجهال كى محلس مين حلالكيا اور محلس ماع مين متشر كيب بولكيا اورة بهشة أميته آپ سے بعیت بھی کر لی۔وہ منا نقاب آپ کی مجالس میں علا آتا تقاب وقت حضرت فحزالدین کی مجانس میں لوگ وجد در قت میں آگر ترطیقے اور بے تو دیموتے توبد دل بی دل می مذاق كرتا اور سنتا اس كی اس حركت و ك واقف بو ي وانبول نے صرت فخر جہاں سے شکایت کی۔ گرا پ بہشرنظر انداز فرمائے اور فقراء کی اس عادت كا تبوت ديتے جوال كے بال صبروتحل نے بيداكر دى ہوئى سے ايك دن حفرت ملطان المشائخ كے عرس بيميس ماع بريا تھى۔ ميرسد بديج الدين جاتپ كے اخص الخاص غلام تقے اس کی اس مادت بدسے آگاہ ہوئے ۔ آپ نے صرت فخ جہان کی ضرمت میں گذارش کی صنور ایک بے کادا وی کی دج سے تمام اہل دل کا كام خواب بوتاب اس نكال دين ياس بدمزاج كاعلاج كرتاجا بيئ يربات سنة مى صرت مولانا في الدين على سے أسط اور بامروضوكر في تشرليف الدين على اور صرت خاج نور محدینا بی کوهکم دیا که آپ اس نا دان کی خرگیری کریں تاکه عیراس کا دل منافقت سے دور ہوجائے صرت شخ نور محدور شیدہ نگاہی سے دوتین باراس نا يكارى وكات كود يجية رہے كر ايك بارتيز نكاه سے ديكھاده بے ہوش ہوركلي يس بى كرويا كيرا عياد ف لكا رقص كرف لكا ورزين ير يبيت لكا عام ابل علس كے دل اس كى حركات سے ذخى تھے ۔كونى تھى اس كى طرت متوج مذہوا - وہ ترطیتار با اورفرش کی انیٹوں سے سر میردر مار باده اس قدر زخمی ہوا کر تراب تراب كر هندا بوكيا سانس رك كلي حكيم مرحين محيس ميں بي تصنبن ديكه كركنے

کے۔ یہ خص تو مرکبیا ہے۔ یہ خرسنتے ہی لوگ با مرصرت فخرجہاں کی فدرت بیں گئے
اور آپ کو تبایا کروہ شخص جو مذاق کیا کہ تا تقاتی پر ٹی پر کر گیا ہے آپ اندر آئے۔
اس کے چرے پر مانی چر کا عرق گلاب منہ میں ڈالا برید شک کاعرق چر کا وہ ہوش
میں آیا عرض کرنے گے۔ صفور آپ نے یہ کیا کر دیا مجھے آپ نے مہلت مذدی کہ
میں شہید عشق ہوجا تا۔ یہ ایم الدین نے فرما یا۔ تم اپنے اعمال بدا ورح کات شنید کی
وج سے اس لائی نہیں تھے۔ کہ اس دولت مر مدی سے بہرہ ور موت القصر اس
دن کے بعدوہ صدق دل اور نمیت سے صلقہ اجاب میں شامل ہو گیا اور اپنی حرکات

ضية الانوارك مولّف في ملهاب كمفراج نورمدمها ردى قدس سرة بنجاب س چل كرد بلى بنيج -ان كى خواسش على كرقران باك حقظ كراد ل- وه د بلى ك مختلف علماء كام كى مذمت ين عامز بوت قرآن بإهاكتابي بإهين وقت الماكم صرت مولانا فخرالدین کے مدرسمیں داخل ہوئے اور تمام علوم مروج میں تکمیل کی۔آپ نے اس عالم دین کو مطابق میں اپنامرید بنا لیا۔ اور کھیے یا طنی امرارسے بھی نوا زا پر دوری روحانی تربیت کرمے خرقهٔ فلانت عطافرهایا آب حضرت فخرجهان قدس سرهٔ كاراتاديراني وطن الوت بنجاب آئ ورياست بهاول لوري قصيدمها رالي فردکش ہوئے ۔ یہ مقام پاک تین سے چا لیس میں دور فرب کی طرف ہے۔ اسپ کے ارد گردمريدول كى ايك فاصى تعداد جع موكئ جنبين آب في فلي طور بيطن كرديا-اس سے آپ کی شرت دُوردور مک بھیل گئی آپ نے بڑے بڑے جبیل القدرصوفیاء كوتربية دى ال بي سے لعق اتنے معروت مثا أنح بوئے جنبوں نے مخلوق خداكى مرايت برمراكام كياآب ك فلفاريس سي خاج نور محدثاني ويد عالم فاضل تق آب وظیفہ کا ضوصی لقب دیا گیا تھا۔ آپ صرت واج مہاروی کی خاص ترج کے

مالک تھے آپ کامزار حاجی پورہ ہیں ہے مولانا قاصی محد عاقم قدس سرہ آپ کے خاص مربیہ تھے آپ کو شمیر میں آرام فراہیں۔ آپ کے علم وفضل سے پنجاب بھرکے طلبا رمتفیض ہوئے نواج محد جمال قدس سرہ کو کامزار مثمان ہیں ہے تھی آپ کے فاص فائر دیتھے۔ نواج محد جال کے شاگروں کا ایک وسیع علقہ نیجاب ہیں بھیلا ہوا تھا صفرت فواج سیمان و تسوی تھی آپ کے سربر آوا دہ فلفار میں سے تھے۔ فافوادہ شہتہ کا فیضان آپ کی وساطت سے دورو و رشک بھیلا۔ اور آپ کا لقب فاتم الخلفاد تھا میں فیل اسے بین کوس شخ فور محر مہا دوری جنتی قدس سرہ کا وصال تاج سرور دمہا دال سے بین کوس

Bright with the second second second

عاد المراجع ا

のからはあった。からいからないのできまれたができる。

The sea of the control of the second of

would an parison by the best of the

کے فاصلہ پی سے معالم میں ہوا تھا۔ وہاں ہی آپ کا مزار پر انوارے۔
کشنے دین نؤر محد مقسدا
گشت نہ وروکشن جہاں نزدیک و دور
نزری مشتات کو تر حیب ل او
ہم ولی مجتبیٰ مہت ب نور

منے محدسیر بینی الم مری شرقوری فرس مراف الا مدے بین میل کے فاصلہ برقابہ اللہ میں میں کے فاصلہ برقصبہ شرقید میں رہتے تھے ہو کہ آپ فاجہ تھا بتدائی زندگی میں عام فرم افراد کی طرح تجارت کرتے تھے۔ فلہ یمبری کے فروخت کرتے تھے بیض افقات گذم اور پہنے فرید کر فقات میں فروخت کرتے تھے۔ بیض اوقات سرقورت مولی کے بینے فرید کر فقات مالا قول میں فروخت کرتے تھے۔ بیض اوقات سرقورت مولی کے بروں بیول دکر لا ہور للتے تھے اور اس کا روبار میں گزراد قات کرتے تھے۔ ایک بار دوسرے بوبالول کے ساتھ مشرقیور سے لا ہور آ کر ہیں کے قد بی مدرس گیند داللے نزدیک پننچ تو آپ کے بیل کی ٹائک ڈوٹ گئی۔ اور فلر ذیبی پرآگا ایس کے ایک میرا فلے مقورا مقوراً القیم کے لا ہور اے بیور گر

ہومی تھی۔ اوراس علاقہیں مکھوں کے حقے دگوں کولوط لیتے تھے۔ شیخ محرسیداسی حالت میں بے یا دوردد کارر ہے۔ اوراس ویانے میں میں سے دہے دات ہوئی۔ ہے بیان تے۔ تاچارا تے وقت وہی میٹ رہے۔ د عاکی۔رو روکرزادی کرتے رہے۔ ہمجی دات كادقت عقاداكي هو داسواره ورسي بنجا و نزديك آيا ـ تو دورس اوا دى ـ كماكس اندهری دات میں تم کون ہو۔اس دیانے میں کیاکردہے ہو۔ متما ماکیا نام ہے . کیاکرتے ہو يفلمرس پاس لاؤ محدسعيد تے سمجد ليا يركوئي داہران سے ص كے باتقول آج فير بہیں آپ نے برحال جاب دیا میں ایک غریب آدی ہول جو نثر تبورسے فلہ ہے کو لاہورجا رہا تھا کہ میرے سل کی ٹانگ ڈٹ گئی۔اب میں بے یارورد کاری ا ہول استخض نے کہا۔ غلمیرے پاس لاؤ۔ اور تہارا سل تندرست ہے اس میغلمالادوو آب نے بتایا کرسارا غدمجرا کیلے سے اعظایا نہیں جاتا۔ اس شخص نے کہا۔ اپنے بیل كوا كفاؤد كي كماس كا ياو ل درست موكباب، يشخ محرسيد في مكها توبيل واتعى ندرت مة عاما منون نے خال كيا يدكوئي فيسي العادب ير تفض دامزن منيں دامنما ہے اب سوار نے علے کی بوری کے پاس کھرا ہو کر نیزے کی انی سے اعظا کر بیل کی لیشت میر دکھ دیا اوروہ نوجوان بادصیاری تیزی کے ساتھ وہاں سے جل دیا . شخ محدسعید نے کہا آپ میرے عن بن عد کاریں میں آپ کا نام اور مقام پیھے بغیرجانے نہیں دول کا شیخ محدسيدف بشااصراركيا اورفديون سے جيش گيا سوارنے تباياكري اسدالندانغالب على بن افيطالب بول-مين النوك حكم عقماري الدادكور يا بول جا والشكوك يه كبدكرات فائت بوكف ـ

سنیخ محرسید شرقبور آئے۔ اپنا مال وستاع اللہ کے ملاہ میں لٹا دیا عبادت خداد مر میں شغول ہو گئے سنسلہ شہتیہ صابر رہیں سعیت ہوگئے اور مقبولان خداسے ہو گئے اگرچہ آپ سے ہزاروں کرامیس طاہر ہو کئیں اور ان صفحات میں ان کی تحرید کی تنجاتی

بھی نہیں۔ صرف ایک دو باتیں مضع نمونذا زخوداسے بیاں کی جاتی ہیں۔ خرادد دل کاموسم مقا۔ آپ خرانے لا دکرنٹر قبور سنجے۔ ایک نیل کر کی دکان کے بجوزے يبعظ كرخ وزے فروخت كرنے لكے وك خووزه كھاتے اور اس كے بھلكے وظریز کے برتن میں پیپنیک دیتے جس سے برتن میں خراد تدوں کے بیج اور پھیلے جمع ہو كُف وَكُرية بيصورت عال ديكي كركيراكيا - الحيى وه سوج رما تفاكرستين معيد قدس سرة كوكهول كريان سے أعظر چلے جائيں مرابہت نقصال ہوچكاہے ائپ نے اس كے ولك خطرے کو خود ہی بھانپ لیا ۔اورجس قدر خروزے باتی بچے تھے۔ چرکران کے بیج اور كاشيرضمين عينيك كرفرما يالومتبارا نيل تفيك كرديك اباس من تازه نيل والنه كى صرورت نہيں آئے گى -اسے عمر بھراستعال كرتے جاور كيرے ديوتے جاؤاور رنگ كتد مرود وا تعى ايسا مى موا . وظريز جب تك زنده ربا - نيانيل داك بغير كمطر في الماريا. حفرت شيخ محدسيد شرتنوري كاسلسلط لقيت چندواسطول سے شيخ جلال الدين چنی تنا میری سے ساہے آپ کے عظم خلیفہ شخ شمس الدین بن محرصین لا ہوری تھے آب وجدوتوا جدس اینا ثانی نبس رکھتے تھے۔ سین محدسید ساالم میں فرت ہوئے لفظ در لغ سے آپ کی تاریخ وفات برآ مد ہوتی ہے یہ تاریخ آپ کے مزار پرکندہ ہے ۔ اللی کامرز ا تصبہ سے تبور

آپ بیرعلیم النّه جالندهری قدس سرهٔ کے ...

آپ بیرعلیم النّه جالندهری قدس سرهٔ کے ...
یس قصبه را قرل میں رہتے تھے طاہری اور باطنی علوم میں لگا مذروز گار تھے۔ سا دی زندگی تعلیم و تربیت میں گزار دی۔
زندگی تعلیم و تربیت میں گزار دی۔
آپ ۱۹ زوالحج مزلم کا ہے میں فوت ہوئے آپ کی تاریخ وفات ہے۔

بُد محد سعيد سشيخ زمان

آپالہورکے بشخ خیرالدین المعروف بخیرت و بخیرت و اللہ وی قدل م اللہ عظم فلفائے چنیتریں سے ہیں شخ سلیم شخ لاہوری کے فلیفہ تھے۔ سماع اور وجد ہیں بے شال سے۔ آپ کا لنگر عام وفاص کے لئے کھلا تھا آپ انیس ذوالج مرمس کوؤ ت ہوئے۔ آپ کا مزاد لا ہور ہیں ہے۔

الب سلسر بران مجیکھ کے فلیفاعظ سے الب سلسر بران مجیکھ کے فلیفاعظ سے الب سید اظم بیتی رو برحی قد س مسرہ الب ہے و بھتے عبت فدا و ندی کا تو گر بنا دیتے تھے ایک وات بداعظم اپنی گھوٹری پیسوا وا پنے گا وُں سے دو سرے گاؤں بی عاد ہے تھے واست بیں وا ہزوں نے آگیرا ۔ آپ کی گھوٹری کا مطالبہ کیا ، آپ نے بڑے وصلے سے بجایا کہ جس گھوٹری بر بین سوا د ہول ۔ بہا بیت کمز و دا د د لاغر ہے اس کی کوئی قیمت نہیں ، ہاں میرے گھوا کی اور گھوٹری ہے وہ میں دے سکتا ہوں اگر آپ وگھوٹری ہے وہ میں دے سکتا ہوں اگر آپ وگھوٹر اساوقت بیہاں تظہر ہی تو میں انجی لاکہ و سے دیتا ہوں ، چانچہ آپ اپنے گھڑ آئے اور انجی گھوٹری نے جاکر دا ہزوں کے توالے کہ دی ۔ وا ہزی گھوٹری نے کو ہے فی دو سرے دن تمام ڈاکوا پنے اہل وعیال کو ساتھ سے آپ کے گھرائے گھر بنچے ۔ تو بہ بی کہ کہوٹری کے ماتھ نذرانے بیش کرکے معانی کے خواستگار ہوئے ۔ تو بہ آپ کی گھوٹری کے ساتھ نذرانے بیش کرکے معانی کے خواستگار ہوئے ۔ تو بہ آپ کی گھوٹری کے ماتھ نذرانے بیش کرکے معانی کے خواستگار ہوئے ۔ تو بہ آپ کا مزادر دیڈ میں ہے ۔

آپ اعظم دوپڑی کے فلیفہ تھے مانک پوری فلرس مرہ: ابتدائی زندگی میں قلیفہ تھے کے فلیفہ تھے کے فلیفہ تھے کو تقدیمی کا کہ میں تعلیم کرتے تھے۔ دوبیویاں تھیں جب الناسے مگن کلی تو در نول کو طلاق دے دی۔ ایک عوصة تک دیا صنت اور مجاہدہ میں شخول دہے اور آپ اس عرصہ بہول بوردو ہے میں عرصة تک دیا صنت اور مجاہدہ میں شخول دہے اور آپ اس عرصہ بہول بوردو ہے میں ا

قیام پذیر دے ذندگی کے آخری صدیمی روپڑسے پل کہ مانک پور دہنے گئے۔ یہاں بے پناہ نملوق آپ کے دروازے پہانے مگی۔ حالت عذب وستی یہاں مک بینچی کہ بوشخص بھی آپ کے دروازے پر آتا عذب وستی کا صد پاتا تھا۔ اُپ اس مین جب پڑگاہ ڈالتے اسے اپنا منظور نظر بنا لیتے تھے بعض صزات تو آپ کی ایک نگاہ سے عبدوب بن جاتے تھے۔ چانچ کریم شاہ اور محد شاہ اسی علاقہ کے مشہور بجد دب آپ کی ا

آپ سول ماہ دمضان المبادک بروز مہفتہ میں فرت ہوئے آپ کا مزار مانک پور میں زیاد ماہ دمضان المبادک بروز مہفتہ میں فرت ہوئے آپ کا مزار مانک پور میں زیادت گا ہ عوام وخواص ہے آپ کے با کمال خلفار میں سے مولوی امانت علی امرو ہوی۔ غلام معین الدین المعروث شاہ خاموش دکنی بنوا چوبداللہ امروی المیان الدین المعروث اللہ اور بیریشاہ سجادہ نشین جیسے کئی بزرگ اس سلسلہ میرکار بندر ہے۔

بهردیداری چواز دُنیک رفت در ملک جاود ال موسلی کن رفت مال رحلتش سرور زیب دین حظ مارهب ال موسلی سرور

آپ صرت شاہ مولان فخرجهاں سیدن اہ نیاز احدمولوی شیقی قدس سروہ افخرالدین نے اعلیٰ اوراعظم فلیفہ سے بیسے صاحب دازونیا زاور مالک سوزوگراز تھے عشق وعجت میں اپنی مثال آپ تھے عوم فلام و باطنی میں یگا ندروزگار تھے مطالبان حق کوالٹد کر رسائی کما تا ان کے کمالات میں شامل تھا۔ شوق و ذوق کا گھوڑا میدان عشق میں دوڑاتے رہتے تھے آپ

كى خانقاه فيوض ريانى كاخزينة الانوارسجانى كامطلع تفا-بزارون محرزده دل آپ كى دل جونی سے مذارید ہیں گئے اور سعیر وں بے خراللہ کی معرفت حاصل کرنے میں کامیاب ہو تے آپ کے والد بزرگوار کا اسم گرامی سیدها چی عکیم شاہ رحمت سر ہندی قدس مرہ تھا۔اسی طرح مولا ناسٹرلیٹ بھی آپ کے ہم ترب تھے۔حب آپ کے والد كانتقال ہوا توآپ الجى بچے ہى تھے آپ كى والدہ ما جدہ جررالجة عصر تقيس نے آئي نظرول میں بھا یااورا نی زیرنگاہ تربت دی بھرظاہری و باطنی عوم کے لئے حضرت شاه فرالدین کی فدمت میں بیش کیا حضرت مولانا فخر قدس سرہ نے بھی شاہ نیاز کو برى توج اورشفقت سے ديورتعليم سے الاستركيا - اب سره سال تك ظاہرى اور باطنی علوم کی تھیں می معروت رہے ہے کہد کومعفول منقول فروغ واصول عدیث وتفير فقه ومنطق جيسي علوم مروجيس ورج كمال كسينجا ديا-دت ارتضيلت عاصل كيف كے بعدانيس سال كى عربي بعيت كى . چندرسوں ميں باطنى علوم ميں كمال كال كرف كے بدخرة فلانت بايا عرصرت بيروم شرك حكم سے بانس بريلي كے فطر میں روحانی تربیت کے لئے مامور مہوئے ہیے نے وہاں بیٹی کر خلق خدائی کی بڑی را ہنان کی بے بناہ لوگ آپ کے صلفہ الاوت میں آئے دور دراز کے علاقوں سے اكر اوگ آپ سے بعیت ہوتے اسی طرح آپ کے نلفا مجی ملک کے خلف علاوں ين بيلين مگے رايك وقت آياكرآپ دام پور ملے كئے اور وہاں صرت شاہ عباللہ قادری سے بعیت موكرسلسلہ قادريدين وافل موسے سيدشاه عبدالله صرت فوث الاعظم صنى التدعيذ كى اولاد سے تھے - انہيں صرت نيا زبر بوى كے استعار سے بھى بڑا لگاؤ تھا حضرت شاہ نیاز کی شاعری کی دھوم سارے برصغیر میں می ہوئی تھی ادر آپ سرزبان می شعر کتے تھے آپ کا دیوان بای عمدہ شاعری کا نمونہ -اسے صونیارا بنی مجانس می بڑے شوق ذوق سے سنتے ہیں

صفرت شاہ نیا ذریلوی قدس سرہ سکالے میں پیدا ہوئے اور بر بی بین شغم اہ جادی الثانی سفتائے میں فوت ہوئے آپ ستر سال کی عمر سی د نیاسے تشراف کے آپ کا مزار پر انوار بر بی بین نہ یا دت گاہ عوام وخواص ہے۔

د سکتے آپ کا مزار پر انوار بر بی بین نہ یا د تو سی ۔

د سفل د بانی بگر تو سی ۔ الا محلت و بیندار کے شیخ بے نیا ز بال ارتحال شی شد عیا ں باز سال ارتحال شی شد عیا ں باصفا محن دوم شاہ بے نیاز

آپ حرس نواج محرسیمان حتی تونسوی قدس سرهٔ دچتی کے خلفا در احاب یرے تے کشف و کوامات میں ہے مثال سے -آپ کی ریاصت اور عبادت مشرق و مغرب میں مشہور موئی۔ آپ کا اصل وطن کرجی کو ہتان عصار تبدائے کا رمیں کو ط منطن آئے تاصی محدما قل کے مدرسہ میں زیرتعلیم رہے کچے عرصہ تعلیم حاصل کرنے کے بعد ذات حق كى تلاش كاشوق دامن گير بوا- البيس دنون خاج نور محدمها ددى جنتيال سے ایک قافله علما وطلبا دکے ساتھ کو ط محص آئے اور محدوم جہانیاں جہاں گشف قدس سرؤ کی خانقاہ برتیام کیا۔ نوا جرمحد بلیان نے بھی آپ سے بہاں ہی بعیت كرلى ويندسال زيرتربيت ربي كميل سوك جينتيك بدخر قدفل فت ماص كرايا اپنے بیرومرشد کے مکم بیا بنے گھر گرجی سے تیس کوس کے فاصلہ پرتونسہ کے مقام پرسكونت پذير موئے . ماين فلق كادروا ذه كصلا توبے شاروگ آپ كى خدمت میں عاضر ہونے ملے چانچ ایک لاکھ انسان جی میں کفار ۔ فجار اور فناق ہرتسم کے لوگ شامل تھے آپ کے ہاتھ پتائب ہو کوراہ بدایت پانے میں کا میاب ہوئے

آپ کے مریدوں میں ہزاروں کوصاحب اوہ بنا دیا گیا اور دور درا ذعلاقوں میں سلم
چشتہ کی اشا حت ہونے گئی۔ گراآپ کے خلفا میں سے تین اشخاص ایسے نکلے جنہوں
نے متقبل میں بڑی شہرت یائی۔ اور عرب وغم میں مشہور ہوئے۔ ان میں سے ضخ محدیار
قدس سرہ جنہوں نے ریاضت اور مجاہدات میں کمال کردیا وہ فریدا لعصرا وروجہ الدھر
ہوئے۔ مافظ محد علی خیر آبادی قدس سرہ آپ کے حلقہ الادیت میں دکن اور عربت ان
کے لوگ جمع ہوگئے تمیسرے مولوی محد علی مکہڈی قدس سرہ جنہوں نے پنجاب اور
شالی علاقوں میں جنبتہ سلسلہ کی اشاعت میں بڑا اسم کر دارا داکیا ا

صرت خاجریای تونسوی قدس سرہ مہنتم صفر بروز جموات کا ۱۲ میں دا صل بحق ہوئے۔ آپ کا عزار پُرالوار تونسر منر لیف میں دا صل بحق ہوئے۔ آپ کا عزار پُرالوار تونسر منر لیف میں ہے آپ کی عمرا کی سوسال کے قریب تقی ۔ ال و نول دمفتی غلام سرور کے ذما نہیں ، آپ کے لچے تے خواج بہ اللہ مختی تونسوی مسند ارشا دیر عبوہ فرما ہیں۔

گشت از دل سال ترهیش عیال قطب حق مرشد سلیمان با دست ه راغب دین سند هم از سرد برقم رطلت آن با دست ه ۱ بل باه

ماد فین احد نظای نے اپنی کی باریخ من کے جنت ادر مودی احد علی بنی کی بات مرعان کی ایک کی ایک کا بات مرعان کی حضرت خواج سیان کی ہے ۔ آپ کی دوحانی خدمات محضرت خواج سیان کی ہے ۔ آپ کی دوحانی خدمات مسلمہ حبت نتیہ کے فروغ واشاعت علی اور عرفانی سرگرمیاں ۔ بجر آپ کے خلفاد کی شہرت اوران کی تعلیم کے اثرات پر راج ی تفصیل سے دوشنی ڈالی گئے ہے یہ دونوں کی بین ان دنوں کی بی دنیا میں مشہور ہیں۔ کا دئین تفصیل سے دوشنی ڈالی گئے ہے یہ دونوں کی بین ان دنوں کی بی دنوں کی بین مشہور ہیں۔ کا دئین تفصیل مالات کے سائے ان کی بیل کو صرور سامنے دکھیں م

آپ سلاج تیہ صابیہ کے مولوی علام مصطفے بیتی وزیر آبادی قدس مرؤ : منائخ بیں سے تھے بڑے صاحب دل اورصاحب باطن بزرگ تھے۔ آپ بنے اللہ و تاکے مرید تھے وہ سینے کہ اللہ ین کے وہ عامہ شاہ کے اور محرصدین کریے اللہ ین کے وہ عامہ شاہ کے اور محرصدین لاہو۔ ی قدس سرتم کے مرید تھے د آپ سے ۲۲ اور میں نو ت ہوئے ۔ بہادر شاہ لاہوی فار بی تاریخ دفات نفظ خدا پرست لکال کی ہے۔ آپ کے خلفا۔ بی سے سید فار بی تاریخ دفات نفظ خدا پرست لکال کی ہے۔ آپ کے خلفا۔ بی سے سید چراغ شاہ سرتر فاری جا آپ کے خالد ذاد جائی بھی تھے ہڑے معردت ہوئے اور وہ بی آپ کے سیادہ نشین ہے ۔ آپ کے سیادہ نشین ہے۔

چواند د نیالعندردوس بری رفت غلام مصطفی با دی عس کم وصالش مخت ن شرع است سرور دو باره حلوه گرست دور اعظم دو باره حلوه گرست دور اعظم

آپ شخ محدوسی مانک بوری کے خلیفہ اور عبادت مولوی امانت علی جنی قد سرمسرہ نہ تھے بڑے صاحب دیا ضب اور عبادت بزرگ تھے دنیا اور ابل د نیا ہے انہیں کوئی کام مذتھا۔ بیرروش ضمیر کی و فات کے بعد آپ تنمیر ہیں شیراحد شاہ ایک کا مل بزدگ تھے۔ ان سے مرید ہوئے والیں آکر امر دہمیں نیام فرما ہوئے۔ آپ کی تاریخ و فات ایمیل فی فیور ۱۳ کے اللہ دہمیر میں سال کی عمر میں ایس کے مرید ول مال کی عمر میں ایس کے مرید ول میں شیخ عبد الرجمان اور شیخ سمیع اللہ پیمیا وی بڑے مشہور بزرگ بیں میں شیخ عبد الرجمان اور شیخ سمیع اللہ پیمیا وی بڑے مشہور بزرگ بیں میں شیخ عبد الرجمان اور شیخ سمیع اللہ پیمیا وی بڑے مشہور بزرگ بیں

چوں امانت علی ایس نبی !! دفت آخر بعزت انه ونیا سال وصلش تو خرکش بگر سرور رفت اہل امانت انه ونیب

شخاجی رمضال جنی لا ہوی قدس سرہ: سرہ کے مریتے ۔ بڑے اً ب فواجبليان قرنسوي قدس ذابدوعا بدصائم الدهراورقائم الليل مي مخلوق سے دورا ورالندے قريب بن بهينه خانه خدامین قیام ہے اور عیادت بین شغول ہیں جانس سماع میں بوری فرمر داری سے شریک ہونے ہیں اور وجدوا ضطراب میں دہتے ہیں آپ جے بیت اللہ رعمی كَيْ تَصْ فِلْقِ فَداس مِيك فَلَقَى اور مِيت سيش آت بين جوه ورت درميش ہوالتیسے دُعاکرتے ہیں جوقبول ہوجاتی ہے غرض کہ اس زمانہ میں وہ مشہور صوفیادیں ہیں لیکن گم نام دہنے کے لئے گوٹ نشین دہتے ہیں۔ اب رمضان المبارك عنا الله من بيدا الوسة اور تبن رمضان المماليم انتى سال كى عمر من قوت بوسة آپ كامزار لا بورقبرستان ميانى صاحب ميں شنے محدطا ہرلا ہوری کے مزاد کے قریب ہے۔ حضرت رمضان که نام نا میش بود مترک جو رمعت ن برزبان المداندوماه رمضان برزمين مم برمضان سند براوج أسمان گرچراغ علم ال يطلش نيز كامل نده دل يصاب غال

آپ لاہور کے صاحب مال ورصاحب اَپ لاہور کے ماحب مال درماحیہ سے فیصل کیش لاہوی قدس سرہ اورماحیہ میں سے تھے۔ آپ سید حدر علی شاہ کے مرید تھے اوروہ سیر شاہ لاہوری کے خلیفہ تھے آپ راشیم کے کیارے بناكر گذرا وقات كرتے تے اور ہرسال ميں آپ سره عرس سالاند كيا كرتے تقعين مين مرور عالم صلى التُدعليه وآلاركم حضرت على مرتضى -عاشوره مبارك عرس حضرت غوث اعظم عرس حفرت فوا جرمعين الدين الجميري عرس حفرت فوا حِرَطالبِ عِنار ا درعوس صفرت فاج على احدصا برمنا باكرتے تھے . انع مول بريطا بيدخرج كرتے ادرسماع کی مجالس قائم کرتے تھے۔جس برضوصی توج دیتے دہ مت اور بے ہوش ہو عامًا-آپ کے مریدول بن آپ کی کوامات بڑی متبور ہیں ہم اس مختصر سی کتاب بیں وہ کرامات نہیں مکھ سکتے۔ ہردات تین مارغسل کرتے اور اللہ کی عیادت میں ساری رات گزار دیتے۔ دنیا کی مذید چزوں برہز کرتے۔ بعض اوقات علوے میں مرجیں ڈال دیتے اور زرد ہے میں نمک ملا لیتے ۔ موت قریب ہی تو محرقہ بخار میں مثلا ہوئے اور چندون بیادرہ کررجب کی نو کملال او وت ہوگئے۔ آپ نے مرنے سے چند کمے بہلے ما فظ قادر بخش نعت ثوال کو بلایا اور کہا کہ مجھے سرور عالم صلی اللہ عليه وآلاديكم كي نعت سائين -انس في يدنعت سروع كي-منم فاک در کوئے محسب الير علوت و في على تنيل نوك مضمشر نكالبض منهد تيغ ابدك عسم

یا نعت سنتے ہی آب پر و جد طاری ہوا ۔ تر پنے ملکے جم لیدی سے شراور ہدگیاا دراسی حالت میں جان قربان کردی ۔

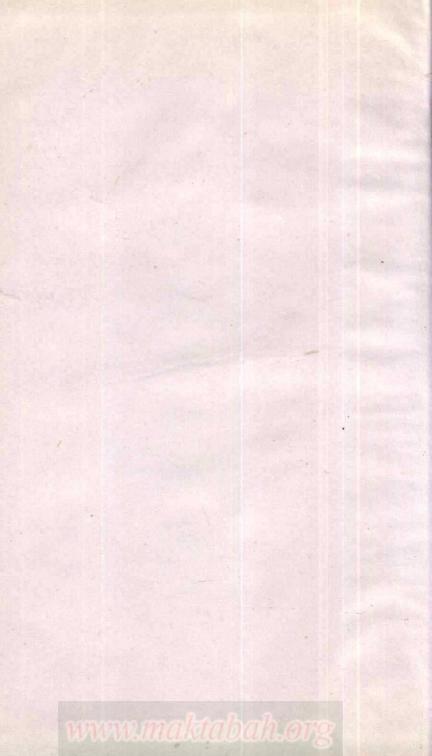
زدارا لفناسوى فرددكس رفت چو آن نیض بخش صفا ایل فیض بلو محرم نيفن حق سال ا د المهماني " د گرم و اہل عطا اً ہل فیض

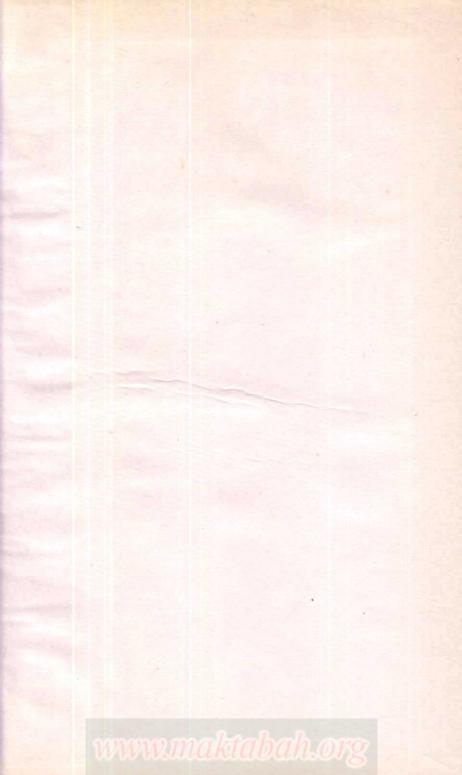
الحدُ لند - خزينة الاصفياء كے سلكر چنت كے صے كا ترجم كمل ہو كياہے -دوسرے سلاسل تعوف میں سے سلسلم قا در سیاد رستفرق سلاسل مجا زیب - اور صالحات امت کے تراجم زیورطبع سے آراستہ وکر آجکے ہیں بالسار نقشبند میراور سلسدسہردردیہ زیرتر عمد میں جوانشارا لله عبد ہی قارئین کوام مک سنجیں گے۔

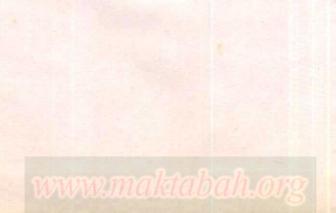
AND THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE

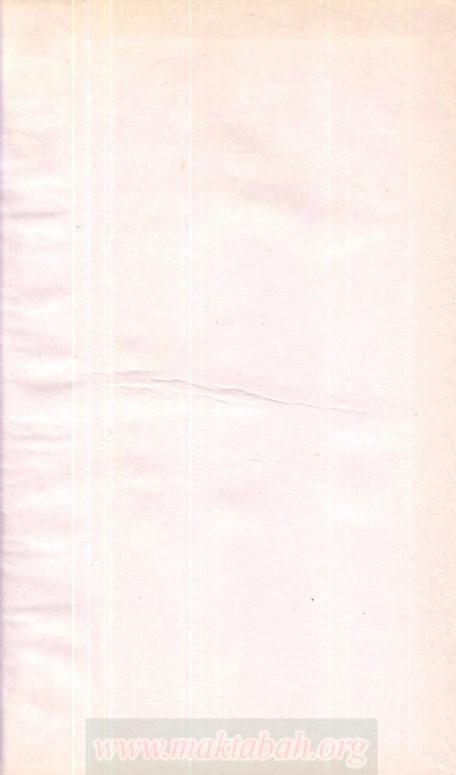
STATE OF IT STATES

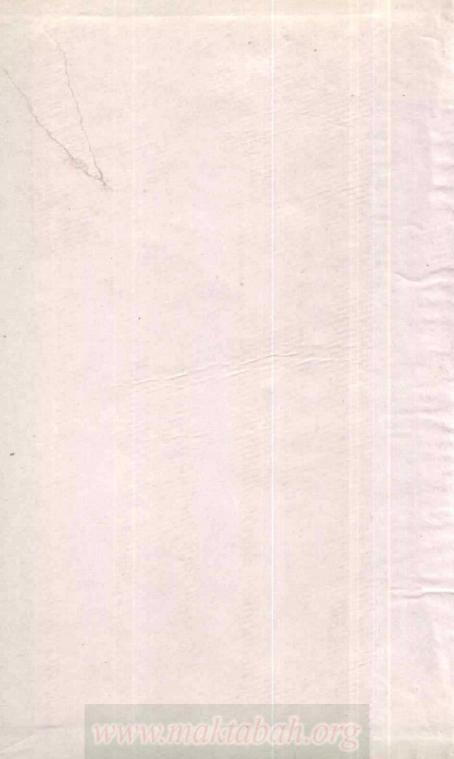
بيرزاده اقبال احرفاردتي دمتراهم خزنيته الاصفياء)











Maktabah Mujaddidiyah

www.maktabah.org

This book has been digitized by Maktabah Mujaddidiyah (www.maktabah.org).

Maktabah Mujaddidiyah does not hold the copyrights of this book. All the copyrights are held by the copyright holders, as mentioned in the book.

Digitized by Maktabah Mujaddidiyah, 2012

Files hosted at Internet Archive [www.archive.org]

We accept donations solely for the purpose of digitizing valuable and rare Islamic books and making them easily accessible through the Internet. If you like this cause and can afford to donate a little money, you can do so through Paypal. Send the money to ghaffari@maktabah.org, or go to the website and click the Donate link at the top.